गीतावली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन

एवं

वैज्ञानिक पद पाठ

डॉ० सरोज शर्मा

उषा पब्लिशिंग हाउस

जोधपुर–जयपुर
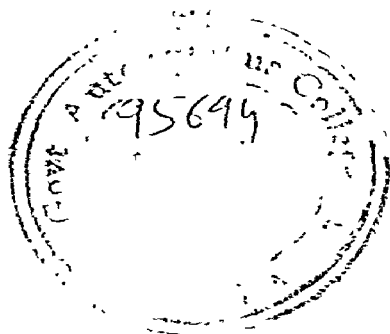
संचालिका : उषा थानवी
उषा पब्लिशिंग हाउस
नीम स्ट्रीट, वीर मोहल्ला
जोधपुर (342001)

शाखा : माधो बिहारी जी का बाग
स्टेशनरोड, जयपुर

संस्करण : जून, 1980

मुद्रक : राजस्थान प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर

गीतावली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन

दो शब्द

मैंने श्रीमती सरोज शर्मा के "तुलसीकृत गीतावली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन एवं वैज्ञानिक पद पाठ" शीर्षक पुस्तक की पांडुलिपि देखी। इस पुस्तक की मुख्य उपलब्धियां हैं कि गीतावली के पाठ संपादन की जो पद्धति अपनाई गई है वह शुद्ध है और इस प्रकार के पाठालोचन के अनन्तर निर्णीत पाठ के आधार पर गीतावली की भाषा का संरचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

यह अध्ययन एक सघन अध्ययन है और इस दृष्टि से एक श्लाघ्य प्रयत्न है। गीतावली की भाषा दूसरी साहित्यिक भाषा और बोलियों से प्रभावित है इस पर भी संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है।

मुझे विश्वास है कि लेखिका के अध्ययन का क्षेत्र इससे भी अधिक सघन और विस्तृत होगा।

क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ
आगरा विश्वविद्यालय
आगरा

विद्यानिवास मिश्र
निदेशक

समर्पण

यह मेरा सम्पूर्ण प्रयास और श्रम
आदरणीय चाचाजी की ही
प्रेरणा है।

—सरोज

अवतरण विधान

1.1 तुलसी की रचनाओं में गीतावली का वैशिष्ट्य :

गोस्वामी तुलसीदास राम-साहित्य के प्रधान कवि है। इन्होने अनेक रचनाएं की है परन्तु कहीं भी उनके नाम अथवा संख्या नहीं लिखी है। इन रचनाओं के सम्बन्ध में एक कवित्त मिलता है जिसके आधार पर इनकी बारह प्रामाणिक रचनाएं मानी जाती है जो इस प्रकार हैं - (1) रामचरित मानस, (2) जानकी मंगल, (3) पार्वती मंगल, (4) गीतावली (राम गीतावली, पदावली रामायण), (5) कृष्ण गीतावली, (6) विनय पत्रिका, (7) दोहावली, (8) बरवै रामायण, (9) कवितावली, (10) वैराग्य सदीपनी, (11) रामाज्ञा प्रश्न और (12) राम-लला नहछू। इसके अतिरिक्त एक अर्ध प्रामाणिक रचना सतसई तथा उन्तालीस अप्रामाणिक रचनाए भी कही जाती है।

गीतावली प्रामाणिक रचना है। यह गीत प्रधान काव्य है, इसमे काण्ड-क्रम से राम के चरित का वर्णन पदों में किया गया है। बालकाण्ड में राम की बाल्या-वस्था के बहुत कोमल चित्र है। जनकपुर प्रसंग भी विस्तार से वर्णित है। अयोध्या में वन-गमन प्रसंग, वसंत और फाग का वर्णन है। अरण्यकाण्ड में जटायु-वध, शबरी प्रसग वर्णित है। किष्किन्धा काण्ड केवल दो पदों में रचित है। सुन्दर काण्ड रस की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं। इसमें वीर, वियोग, शृंगार और रौद्र-रस के साथ साथ शान्त की भी उपस्थिति है। लकाकाण्ड में करुणरस का चित्रण तथा उत्तर काण्ड में राम का सौन्दर्य-वर्णन, हिंडोला और फाग का वर्णन है।

तुलसी की अन्य प्रामाणिक रचनाओं में गीतावली का महान् वैशिष्ट्य है क्योकि अन्य रचनाओं की तुलना में गीतावली में कवि का मधुर भाव ही दिखाई देता है। इसमें रामचरित के भावुक स्थलों का ही वर्णन है—इसी कारण राम के तापस-वेष, भरत-मिलाप, जटायु-उद्धार, सीता की वियोग दशा, विभीषण का राम की शरण आना आदि करुण-भावों का कवि ने मर्म स्पर्शी चित्रण किया है लेकिन परशुराम-क्रोध, लका दहन आदि परुष स्थलों को कवि ने छू भर दिया है। यहां तक कि युद्ध और रावण वध जैसे परुष प्रसंगों की तो कवि ने चर्चा भी नहीं की है। इसका संबंध परम्परागत संस्कृत, प्राकृत की वर्णन पद्धति से भी अधिक स्फुट है। रघुवंश आदि संस्कृत की वर्णन पद्धति का भी इसमें अनुगमन है और प्राकृत की सेतुबन्ध आदि का भी।

इसके सभी पद गेय है-सम्पूर्ण ग्रन्थ में कवि का कोमल एवं मधुर भाव ही दृष्टिगोचर होता है। प्रबन्ध काव्यो के स्रोत ग्रन्थों की छूटी हुई कथाएं या प्रसंग भी इसमे आ गए हे जिन्हें तुलसी उन काव्यों में न ला सके थे। इसके अतिरिक्त यह ग्रन्थ एक लम्बी अवधि को घेरे हुए है जो उसके रचना काल से स्पष्ट है। यद्यपि गीतावली की रचना तिथि विश्वस्त रूप से निर्धारित नही की जा सकती फिर भी उसके संबध मे कतिपय साक्ष्य मिलते हैं। बाबा वेणीमाधवदास ने 'मूल गोसाई चरित''[1] मे गीतावली (जिसका नाम उन्होंने राम गीतावली रखा है) को तुलसीदास की रचनाओ में प्रथम स्थान दिया है और उसका रचना-काल सं. 1620 माना है।

मूल गोसाई चरित के आधार पर बाबू श्याम सुन्दर दास ने गीतावली की रचना का समय स. 1616 से स. 1628 के बीच बताया है। और उसका संग्रह काल स 1628[2] माना हे।

रामनरेश त्रिपाठी गीतावली का रचना काल स. 1625-28 के बीच बताते है और 'रामचरित मानस' से पूर्व की रचना मानते है। 'मानस' और 'गीतावली' की कथा-व्यवस्था मे अन्तर हे अत उनकी मान्यता हे कि पहले तुलसी ने राम कथा को राग-रागनियो मे लिखकर गाया होगा उसके उपरान्त व्यवस्थित रूप में 'राम चरित मानस' की रचना की होगी। गीतावली मे तुलसी कवि अधिक हैं और मानस मे भक्त। इस प्रकार पं. रामनरेश त्रिपाठी गीतावली का स्थान मानस के पूर्व का मानते है।[3] डॉ. माताप्रसाद गुप्त का मत इससे भिन्न है। वे गीतावली का रचनाकाल सं. 1646 और स. 1660 के बीच का मानते है और पदावली रामायण के पाठ को स. 1658 का और उसका लिपिकाल स. 1666 का मानते है।[4]

डॉ. रामकुमार वर्मा ने गीतावली का रचना काल सं. 1643 के आस-पास का माना है। इसका स्थान वे मानस के बाद मानते है। इनके अनुसार ये उस समय की रचना है जब कवि सस्कृत ग्रन्थो से अधिक प्रभावित हुआ होगा क्योंकि गीतावली की कथा उत्तरकाण्ड मे वाल्मीकि रामायण से साम्य रखती है।[5]

डॉ उदयभानुसिह ने गीतावली के अन्तिम संपादन का समय सं. 1670 के लगभग माना है और इसके प्रारंभ के समय मे उनका मानना है कि गीतावली

---

1. मूल गोसाई चरित (33/3)
2. गोस्वामी तुलसीदास, पृष्ठ 66-67.
3. तुलसीदास और उनका काव्य, पृष्ठ 324.
4. तुलसीदास, पृष्ठ 244-48.
5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ 289.

"मानस" रचना काल में भी लिखी जाती रही होगी। उस बीच भी कवि राम कथा विषयक भावों को पदावली-बद्ध करके अभिव्यक्ति देता रहा होगा। मानस के पश्चात् भी यह क्रम चलता रहा है और अन्त में रामकथा संबंधी गीतों को 'गीतावली' नाम से कवि ने संगृहीत किया होगा। इस प्रकार गीतावली का रचना काल सं. 1630 से सं. 1670 के बीच रहा होगा।[1]

वास्तव में गीतावली के गीतों की रचना बहुत विस्तृत समय में हुई होगी और इसका नामकरण बहुत बाद का रहा होगा—अतः उसका रचनास्थान 'मानस' के बाद का है और ये तुलसी की प्रथम रचना नहीं है जो भाषा की रूपावली के वैविध्य से स्पष्ट-पुष्ट है।

इस प्रकार गीतावली तुलसी की अन्य रचनाओं की एक लम्बी परम्परा को जोड़ती है। यह सटीक ब्रजभाषा का ग्रन्थ है अतः इसके अध्ययन से उनकी सभी ब्रजभाषा की कृतियों का अध्ययन हो जाता है।

1.2 प्रस्तुत विषय की मौलिकता एवं उपादेयता :

तुलसी साहित्य का विविध दृष्टियों से अध्ययन हुआ है परन्तु तुलसी की ब्रजभाषा को लेकर भाषाशास्त्रीय अध्ययन कम हुआ है और तुलसी की केवल एक कृति को लेकर भाषा शास्त्रीय अध्ययन तो अभी तक देखने में ही नहीं आया।

अभी तक तुलसी से संबंधित जितना अध्ययन हो चुका है उसे दो वर्गों में रखा जा सकता है।

(1) तुलसी विषयक साहित्यिक अध्ययन।
(2) तुलसी विषयक भाषाशास्त्रीय अध्ययन।

तुलसी विषय साहित्यिक अध्ययन के अन्तर्गत बहुत से परिचय ग्रन्थ, समालोचनात्मक, कृतियां, टीकाएं एवं कोष ग्रन्थ लिखे गए हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

परिचय ग्रन्थ–

1. बाबा वेणीमाधवदास का मूल गोसाई चरित
2. आचार्य भिखारीदास का काव्य-निर्णय।

समालोचनात्मक साहित्य के अन्तर्गत मुख्यतः निम्नलिखित ग्रन्थ आते हैं–

1. नोट्स आन तुलसीदास	डॉ. जार्ज ग्रियर्सन
2. रामायणी व्याकरण (नोट्स आन दि ग्रामर आफ रामायन आफ तुलसीदास)	एडविन ग्रीव्स
3. मिश्रबन्धु विनोद	मिश्रबन्धु

4. नवरत्न	मिश्रबन्धु
5. मानस-प्रबोध	विश्वेश्वर दत्त शर्मा
6. रामचरित मानस की भूमिका	रामदास गौड़
7 तुलसीदास	आचार्य रामचंद्र शुक्ल
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास	,, ,, ,,
9. जायसी-ग्रन्थावली (भूमिका)	,, ,, ,,
10. तुलसी-ग्रन्थावली (भूमिका)	,, ,, ,,
11. तुलसीदास और उनकी कविता	संपादक रामनरेश त्रिपाठी
12. रामचरित मानस (भूमिका)	,, ,, ,,
13. इण्डियन ऐंटीक्वेरी और इलाहाबाद यूनीवर्सिटी-स्टडीज में प्रकाशित कतिपय निबन्ध	डॉ. बाबू राम सक्सेना
14. मानस दर्पण	चंद्रमौलि सुकुल
15. तुलसीदास	डॉ. माता प्रसाद गुप्त
16. रामचरित मानस का पाठ	,, ,, ,,
17. विश्व साहित्य में रामचरित मानस	राजबहादुर लमगोड़ा
18. विशाल भारत में प्रकाशित कुछ निबन्ध	अम्बिका प्रसाद बाजपेयी
19. तुलसी के चार दल	सद्गुरु शरण अवस्थी
20. मानस व्याकरण	विजयानंद त्रिपाठी
21. संस्कृत साहित्य और महाकवि तुलसीदास	डॉ छोटेलाल शर्मा

स्फुट टीकाएं एवं कोष ग्रन्थ–इसके अन्तर्गत निम्नलिखित ग्रन्थ आते हैं—

1. मानस-पीयूष	अंजनीनंदन शरण शीतलासहाय
2. तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	जय गोपाल बोस
3. मानस-कोष	अमीर सिंह
4. विनय-कोष	महावीर प्रसाद मालवीय
5. मानस-कोष	रघुनाथ दास
6. मानस शब्दानुक्रमणिका (इंडेक्स वर्बोरन आफ-दि रामायण आफ तुलसीदास)	डॉ. सूर्यकान्त शास्त्री

तुलसी विषयक भाषा शास्त्रीय अध्ययन के अन्तर्गत बहुत कम अध्ययन देखने में आते हैं। कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन इस प्रकार हैं। डॉ० 'देवकीनन्दन श्रीवास्तव' ने अपनी पुस्तक "तुलसीदास की भाषा" में व्रज और अवधी दोनों भाषाओं का विस्तृत विवेचन किया है जो परम्परागत ढंग का है इन्होंने इस पुस्तक में भाषा वैज्ञानिक विवेचन और साहित्यिक विवेचन दोनों ही पक्षों पर प्रकाश डाला

है लेकिन उसमें साहित्यिक पक्ष अधिक प्रभावशाली रहा है। इस कारण भाषा-वैज्ञानिक विवेचन सम्यक् रूपेण नहीं हो सका है। अतः यह अध्ययन शैली विज्ञान में अधिक सहायक है अपेक्षाकृत भाषा वैज्ञानिक पाठ के।

डॉ० जनार्दन सिंह ने अपनी पुस्तक "तुलसी की भाषा" में तुलसी की अवधी कृतियों को आधार बनाकर उनका वर्णनात्मक दृष्टि से विवेचन किया है। तुलसी की कृतियों को लेकर किया गया यह प्रथम भाषा-तात्विक अध्ययन है। अतः इसकी अपनी मौलिकता है—तुलसी की किसी एक कृति को आधार बनाकर भाषा तात्विक अध्ययन करने वाले को दिशा-निर्देश अवश्य करेगा लेकिन चूंकि इस पुस्तक में केवल अवधी की रचनाएं आधार रूप में ली गई हैं इस कारण प्रस्तुत अध्ययन में उक्त पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकी है परन्तु फिर भी अनेक दृष्टियों से यह ग्रन्थ सहायक है।

डॉ० बाबूराम सक्सैना ने "इवोल्यूशन आफ अवधी" में अवधी बोली के विकास क्रम का अध्ययन प्रस्तुत किया है साथ ही 'मानस' की भाषा के अनेक रूपों का गठनात्मक विश्लेषण करके उनके ऐतिहासिक विकास क्रम को भी देखा है—इस ग्रन्थ में सक्सैना जी की दृष्टि अवधी पर केन्द्रित रही है अतः उनके अध्ययन का दृष्टिकोण अलग है, भाषा वैज्ञानिक विकास एवं व्याकरणिक विश्लेषण का प्रथम प्रयास होने के कारण ही महत्वपूर्ण है किन्तु संकालिक पद्धति से उसका कोई संबंध नहीं है।

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा रचित ग्रन्थ "ब्रजभाषा व्याकरण" का तुलसी की भाषा से प्रत्यक्षतः कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि इसमें वर्माजी की दृष्टि केवल ब्रज भाषा के व्याकरण पर केन्द्रित रही है। इसमें गीतावली के यत्र-तत्र उद्धरण अवश्य मिलते हैं जिनमें ब्रजभाषा के व्याकरणिक रूपों का स्पष्टीकरण होता है लेकिन इसमें न तो समूचा अध्ययन ही है और न संकालिक व्याकरण की दृष्टि ही।

"तुलसीकृत गीतावली विमर्श" डॉ० रमेशचन्द्र मिश्र द्वारा रचित ग्रन्थ में गीतावली के साहित्यिक पक्ष भर का अध्ययन है। इसके एक अध्याय में गीतावली की भाषा पर विचार विमर्श है जो सतही आगत शब्दावली तक ही रह गया है।

भाषा शास्त्रीय अध्ययन के अतिरिक्त पुस्तक में गीतावली के "वैज्ञानिक पद पाठ" पर भी विचार प्रस्तुत है। हिन्दी में पद-पाठ परम्परा को प्रारम्भ हुए अभी अधिक समय नहीं हुआ। उसमें भी अन्य ग्रन्थों पर तो पद-पाठ से संबंधित कुछ कार्य अभी तक प्रकाश में आ भी चुके हैं परन्तु गीतावली पर ऐसा कार्य अभी तक नहीं हुआ है। डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने अपनी पुस्तक "तुलसीदास" में "कृतियों का पाठ" नामक अध्याय में तुलसी की रचनाओं के पाठों पर विचार किया है परन्तु केवल एक अध्याय में तुलसी की समस्त कृतियों के पाठों का वर्णन सूक्ष्म रूप से कभी नहीं हो सकता। हां, दिशा-निर्देश इस कार्य से अवश्य मिल जाता है।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने इस पुस्तक में तुलसीकृत गीतावली की तीन महत्व-पूर्ण हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख किया है—

1. संवत 1717 की प्रतापगढ़ (अवध) के राजकीय पुस्तकालय की खंडित प्रति ।
2. रामनगर (बनारस स्टेट) के चौधरी छुन्नीसिंह की प्रति जिसमें केवल सुन्दर काण्ड एवं उत्तर काण्ड के पद हैं और वे भी पूर्ण नहीं है ।
3. संवत 1689 की प्रति जो स्वयं लेखक (डॉ० माताप्रसाद गुप्त) को प्राप्त हुई थी ।

उक्त ग्रन्थ में केवल इनके आधार पर रचना काल के निर्धारण का प्रयत्न किया गया है न कि पद पाठ का ।

गीतावली के अनेक मुद्रित एवं प्रकाशित संस्करण मिलते है यथा— (1) सरस्वती भण्डार, पटना द्वारा प्रकाशित पाण्डेय रामावतार शर्मा की प्रति, (2) मूल मात्र (तुलसी ग्रन्थावली में संग्रहीत) नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित (3) राम नारायण बुकसेलर द्वारा प्रकाशित श्री रामदेवजी की टीका, (4) नवल किशोर प्रेस लखनऊ की वैद्यनाथ की टीकावाली प्रति, (2) खंगविलास प्रेस की महात्मा हरिहर प्रसादकृत टीकावली प्रति, (6) गीता प्रेस गोरखपुर की प्रति एवं (7) सिद्धान्त तिलक (पं० श्रीकान्त शरण द्वारा लिखित)

परन्तु इन सभी प्रतियों मे न तो पाठ की समानता है न कवि के अन्त श्चेतन में व्याप्त काव्य रूपों की पनरावृत्ति का ध्यान है, न अर्थ के सौरम्य की प्रधानता है । यहाँ तक की सभी प्रतियों में पदों की संख्या तक असमान है । ये सब प्रतियां एक संस्कृत निष्ठ सुधारवादी दृष्टिकोण में मुद्रित एवं संकलित हैं ।

अतः इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता बनी हुई थी । इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु प्रस्तुत कार्य किया गया है जिसके प्रस्तुतीकरण का ढंग भी नया और गणितीय है ।

मुझे आशा है कि भाषा वैज्ञानिक निष्कर्षों के आधार पर तुलसी संबंधी विभिन्न मतों (मूल भाषा आदि के संबंध) का संतुलन हो सकेगा । प्रस्तुत कार्य के माध्यम से तुलसी कालीन ब्रजभाषा का स्वरूप और अधिक स्पष्ट हो सकेगा । पद-पाठ के माध्यम से तुलसी जैसे महान् कवि की कृतियों का प्रारंभिक रूप भी सामने आ सकेगा और उनकी प्रामाणिक भाषा भी हाथ लग सकेगी जिसके विषय में इतना ऊहापोह है ।

इस प्रकार के अध्ययन में प्राकृत भाषा का निर्माण तो स्वतः हो ही जायेगा; साहित्यिक क्षेत्र में कवि की प्रवृत्ति भी स्पष्ट हो जायेगी । इस प्रकार यह नूतन प्रयोग एवं दृष्टि सिद्ध होगी । इसके अतिरिक्त तुलसी की अन्य कृतियों के तुलनात्मक अध्ययन में भी इससे मदद मिलेगी ।

इस प्रकार एक नवीन परम्परा का निर्माण हो सकेगा जिस पर आगे चल-कर अनेक अंधकारमय तथ्य सामने आ सकेंगे ।

इस अध्ययन में कवि के प्रयोगों का तुलनात्मक सांख्यिकी और भाषा वैज्ञानिक संरचना के माध्यम से कवि के मूलपाठ तक पहुँचने की चेष्टा की गई है। इस तरह का प्रयत्न अभी तक देखने – सुनने में नहीं आया। यही इस ग्रन्थ की उपादेयता और मौलिकता का आधार है ।

1.3 अध्ययन–विधि :

1.3.1 पाठ-संकलन–विधि :

प्रति की प्रामाणिकता की परीक्षा हेतु गीतावली की हस्तलिखित प्रतियों की खोज की गई। अनेक निजी एवं सरकारी संस्थाओं से पत्र-व्यवहार के अनन्तर यथेष्ट सामग्री–संकलन हो सकी। सामग्री दो स्थानों पर मिली—
(1) साहित्य सम्मेलन प्रयाग, (2) नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

साहित्य सम्मेलन प्रयाग से केवल दो हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त हो सकी हैं (1) ग्रन्थ संख्या 16/2078 की संवत् 1854 की प्रति तथा (2) ग्रन्थ संख्या 15/1637 की संवत् 1908 की प्रति ।

नागरी प्रचारिणी सभा बनारस मे प्राप्त होने वाली प्रतियाँ इस प्रकार हैं–

1. ग्रन्थ-क्रमांक 161/73 की संवत 1856 वि. की प्रति
2. ग्रन्थ–क्रमांक 162/74 की संवत 1891 वि. की प्रति
3. ग्रन्थ–क्रमांक 1148/763 की प्रति में लिपिकाल नहीं लिखा
4. ग्रन्थ–क्रमांक 2199/1382 की प्रति मे लिपिकाल सं. 1809 वि.
5. ग्रन्थ–क्रमांक 2592/1537 की प्रति में लिपिकाल नहीं लिखा
6. ग्रन्थ-क्रमांक 2669/1610 की प्रति में लिपिकाल नहीं लिखा

इसके अतिरिक्त नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की खोज–रिपोर्ट सन् 1900–1935 तक प्रथम–खण्ड, संवत् 2021 वि. में प्राप्त गीतावली की अन्य हस्तलिखित प्रतियों से भी सहायता ली गई है जिनका विवरण प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खण्ड के तृतीय अध्याय – " प्रतियों का वंश वृक्ष और प्रामाणिक पाठ" में दिया गया है ।

प्राप्त सभी हस्तलिखित प्रतियां कवि हस्तलिखित प्रति की प्रतिलिपियों की भी प्रतिलिपियां हैं फलतः (अपनी मूल कृति से दूर एवं दूरतर होने के कारण) अनेक विकारों से परिपूर्ण होती गई है। इसके अतिरिक्त प्रतिलिपिकार की क्षेत्रीय प्रवृत्ति एवं लेखन शैली आदि कारणों से भी उनके पाठों में विविधता एवं अन्तर मिला है ।

उपरोक्त सभी प्रतियों का सूक्ष्म अध्ययन पाठ मिलान के बाद पूरा किया गया है। सभी हस्तलिखित प्रतियों के परस्पर तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त कुछ

पाठ–वैविध्य एवं पाठान्तर मिले हैं । प्रतियों में मिलने वाली असमानताओं पर सामान्य रूप से निम्न शीर्षकों में विचार हुआ है –

1. स्वर-परिवर्तन एवं स्वर–संधि
2. एक पदग्राम अथवा वाक्य के स्थान पर भिन्न पदग्राम अथवा वाक्य
3. लोप

प्रतियों में मिलने वाली असमानताओं के अनुमानतः निम्न कारण मिले हैं–

1. लिपि जन्य विकृतियाँ
2. स्थान विपर्यय
3. पर्याय
4. प्रमाद

लिपिजन्य–विकृतियों के अन्तर्गत वे विकृतियां ली गई हैं जो मूलपाठ में प्रतिलिपिकार के दृष्टि भ्रम अथवा लिपिभ्रम के कारण अथवा अन्य किसी संभव कारण से हुई है । सभी प्रतियों में किसी न किसी स्थान पर किसी न किसी प्रकार की विकृतियां मिलती हैं जिनके कारण पाठ में अंतर मिलता है ।

प्रतियो में एक पाठ का प्रतिस्थानी पाठ भी अनेक स्थानों पर मिला है जो प्रतिलिपिकार के भ्रम अथवा क्षेत्रीय आदत के कारण संभव प्रतीत होता है ।

वहुधा प्रतिलिपिकार कठिन पाठ के स्थान पर उसका सरल पाठ रख देते हैं– कुछ प्रतियो में स्थान विपयय मिला है ।

भूल के कारण कुछ प्रतियों में पाठों का लोप भी मिला है ऐसे लोप प्रतिलिपिकार की असावधानी का परिणाम प्रतीत होते हैं ।

प्रतियों में मिलने वाली उपरोक्त सभी असमानताओं का अध्ययन प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खण्ड के द्वितीय अध्याय "प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन" में किया गया है ।

तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त प्रतियों का प्रतिलिपि संबंध निरखा-परखा गया है । प्रतियो में मिलने वाले 'पर्याय', 'लिपिजन्य विकृति' आदि कारणों से प्रतियों के प्रतिलिपि संवंव को समझने में सहायता मिली है ।

प्रतिलिपि संवंध के आधार पर प्रतियों का वंश वृक्ष तय किया गया है । जिस प्रति का पाठ सर्वाधिक प्रामाणिक एवं न्यूनतम त्रुटित मिला है और जो प्राचीनतम् प्रति भी है उसे मूल प्रति के नजदीक की मानकर अध्ययन का आधार वनाया गया है । लेकिन कहीं-कहीं इस 'क' मूल प्रति के अतिरिक्त अन्य प्रतियो में प्राप्त पाठ को भी सर्वाधिक प्रामाणिक मानकर अध्ययन में स्वीकार किया गया जैसे 'घ' प्रति में प्राप्त "पेपन को पेषन" 1.73.1 तथा " मीच तें नीच" 5.15.3

का पाठ तथा 'च' प्रति में प्राप्त "निसि" 6.17.2 का पाठ सर्वाधिक प्रामाणिक स्वीकार किया गया है ।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन में मूल प्रति की समीपस्थ प्रति ढूंढ़ने का प्रयास किया गया है जो भाषा-विषयक निष्कर्षों के मेल में है ।

1 3·2 विश्लेषण-विधि

प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत गीतावली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । भाषा शास्त्रीय अध्ययन हेतु गीतावली के व्याकरणिक रूप—सम्बन्धी कुल (28865) अट्ठाइस हजार आठ सौ पैंसठ कार्ड बनाए गए हैं । प्रत्येक कार्ड पर एक पद, उसका संदर्भ, नीचे की ओर काण्ड-संख्या, पद संख्या एवं पक्ति संख्या लिखी गई है ।

व्याकरणिक रूपों का विश्लेषण वर्णनात्मक अथवा अमरीकी पद्धति पर किया गया है । प्रत्येक रूप को उसके व्याकरणिक—गठन के अनुसार ही व्यवस्थित किया गया है । विश्लेषण के समय धातु अश को अलग कर, उसम जुड़ने वाले रूपिमों को स्पष्ट किया गया है । इस प्रकार रुप गठन एवं आवश्यकतानुसार कहीं-कहीं अर्थगठन के आधार पर रुपों का विश्लेषण किया गया है । अध्ययन मे समस्त रुपों को लिखना अनावश्यक समझकर कुछ रुपों को उदाहरण स्वरुप लिखा गया है तथा शेष की आवृतियां गिना दी गई हैं ।

सभी व्याकरणिक रुपों की आवृत्तियां भी प्रस्तुत की गई हैं । इस प्रकार यह अध्ययन पूरा हुआ है ।

1.4 अध्ययन-विवरण :

प्रस्तुत अध्ययन दो खण्डों में विभक्त है । प्रथम खण्ड में वैज्ञानिक पद-पाठ का निर्माण किया गया है । इसके प्रथम अध्याय में गीतावली के पाठ-संपादन में प्रयुक्त प्रतियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है । द्वितीय अध्याय में प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत है । तृतीय अध्याय में प्रतियों का प्रतिलिपि सम्बन्ध उनके वंश-वृक्ष के आधार पर तय किया गया है—इसके चतुर्थ अध्याय में प्रामाणिक पाठ का निर्धारण है । प्रामाणिक प्रति तैयार होने के बाद उसका भाषा-शास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन किया गया है जो द्वितीय खण्ड में प्रस्तुत है ।

द्वितीय खण्ड पाँच अध्यायों में विभाजित है जिसके प्रथम अध्याय में 'ध्वनि विचार' पर विचार प्रस्तुत है । इसके विषयक्रम 1.1 में स्वनिम प्रस्तुत हैं । विषय-क्रम 1.2 में लिपि सम्बन्धी विशेष-विवरण दिया गया है । 1 3 में स्वर-स्वनिम वर्णित हैं । स्वर-स्वनिमों के विवरण में 1.3.1 में स्वर-वितरण तथा 1.3.2 में दीर्घस्वर विवेचित है । विषय-क्रम 1.3.3 में ह्रस्व स्वरों पर विचार किया गया है । 1·3.4 में अर्धस्वरों की चर्चा की गई है । इसके पश्चात् 1.3.5 में अनुस्वार एवं 1.3.6 में अनुनासिकता पर विचार प्रस्तुत है । 1.3.7 में स्वर संयोगों का

अध्ययन विस्तार से प्रस्तुत है तत्पश्चात् 1.3.8 में गीतावली की आक्षरिक संरचना को प्रस्तुत किया गया है।

स्वर स्वनिम के पश्चात् 1.4 में व्यंजन-स्वनिम वर्णित है। 1.4.1 में व्यंजन खंडीय स्वनिमों का विस्तार से अध्ययन है। सर्व प्रथम व्यंजन वितरण 1.4.1.1 में प्रस्तुत है इसके अनन्तर संस्वनात्मक वैविध्य के मुख्य आधारों को विषय क्रम 1.4.1.2 में प्रस्तुत किया गया है और 1.4.1.3 में व्यंजन स्वनिम तथा उसके सस्वन वर्णित हैं। 1.4.1.4 में व्यंजन-संयोग की चर्चा की गई है। 1.4.2 में खण्डेतर स्वनिमों पर प्रकाश डाला गया है इसके अन्तर्गत विभाजक, सुरसरणियां और सुरसरणि परिवर्तक सभी पर संक्षिप्त विचार संलग्न है।

दूसरे अध्याय में पद-विचार के अन्तर्गत नामिक, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और क्रिया विशेषण तथा अव्यय का विस्तृत विवेचन नवीन एवं वर्णनात्मक पद्धति से किया गया है।

विषय-क्रम 2.1 में नामिकों पर विचार संलग्न है जो नवीनता एवं मौलिकता लिए हुए है। 2.1.1 में प्रतिपदिक वर्णित है। नामिकों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है। विषय क्रम 2.1.1.1 में एक भाषिक इकाई वाले प्रातिपदिक वर्णित हैं। विषय क्रम 2.1.2 में मुक्त-वैविध्यों को देखा गया है। 2.1.3 में स्वरीभूत रूप तथा 2.1.4 में अवधारण के लिए प्रयुक्त कुछ संयोगात्मक रूपों का वर्णन है। 2.1.5 में एकाधिक रूप और 2 1.6 म लिंग-विधान पर विचार सलग्न है। 2.1.7 में वचन-विधान को देखा गया है। विषय-क्रम 2.1.8 में कारकीय-विधान प्रस्तुत है जो कुछ मौलिकता लिए हुए है। गीतावली में प्रयुक्त कारकीय संरचना को दो भागों में वाटा गया है—(1) विभक्ति मूलक संरचना जो विषय-क्रम 2.1.8.1 में वर्णित है (2) चिह्नक मूलक सरचना जिसका अध्ययन 2.1.8.2 में किया गया है। विषय-क्रम 2.1.9 मे परसर्गीय पदावली का वर्णन है। विषय-क्रम 2.1.1.2 में नामिको के दूसरे वर्ग 'दो रूपिमों के योग से निर्मित प्रातिपदिक' का अध्ययन है जो सरचना की दृष्टि से तीन प्रकार के हैं—

(1) बद्ध पदग्राम + मुक्त पदग्राम
(2) मुक्त पदग्राम + बद्ध पदग्राम
(3) मुक्त पदग्राम + मुक्त पदग्राम

सभी का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत है।

विष.-क्रम 2.2. में विशेषणों का अध्ययन तीन दृष्टियों से किया गया है। 2.2.1 में सरचनात्मक जो अरुपान्तरित तथा रूपान्तरित दो भागों में विभक्त है। रुपान्तरित पुनः दो भागों में बंटे है : मूल और यौगिक। यौगिक विशेषण पदों को तीन भागों में बाँटा गया है—

(1) बद्ध पद्ग्राम + मुक्त पदग्राम

(2) मुक्त पदग्राम + बद्ध पदग्राम

और (3) मुक्त पदग्राम + मुक्त पदग्राम

सभी का यथा स्थान विस्तार से वर्णन किया गया है। विषय-क्रम 2.2.2 में विशेषणों का वर्गीकरण 'अर्थगत' किया गया है। इसके अन्तर्गत दो प्रकार के विशेषण आते हैं। 2 2.2.1 में सार्वनामिक विशेषण और 2.2.2.2 में संख्या वाचक विशेषण वर्णित है।

विषय-क्रम 2.2.3 में विशेषणों का तीसरा वर्गीकरण 'प्रकार्यगत' है जिसमें विशेषणों का अध्ययन उनके कार्यों के आधार पर किया गया है। इसके पश्चात् उनके लघु-दीर्घ रूप, अवधारणा के लिए प्रयुक्त रूप और विशेषणों में तुलना देखी गई है।

विषय-क्रम 2.3 में सर्वनामों का अध्ययन है जो वर्णनात्मक ढंग का है। इसमें पुरुष वाचक, निश्चय वाचक, अनिश्चय वाचक, प्रश्नवाचक, संबंध वाचक, निजवाचक, आदर वाचक, नित्य संबंधी और संयुक्त सर्वनाम आते हैं सभी सर्वनामों को उनके मूल एवं तिर्यक रूपों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

विषय-क्रम 2.4 में क्रिया रुप-रचना प्रस्तुत की गई है। सर्वप्रथम 2.4 1 में धातुओं के दो वर्ग मूल और यौगिक किए गए हैं। मूल धातुओं की आक्षरिक संरचना पर प्रकाश डालते हुए योगिक धातुओं को सोपसर्गिक, नाम धातु एवं अनुकरण मूलक धातु-तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। इसके अनन्तर वाच्य (कर्तृवाच्य और कर्म वाच्य) पर विचार है। इसके बाद गीतावली के प्रेरणार्थक वर्णित है।

विषय क्रम 2.4.2 में गीतावली में प्रयुक्त सहायक क्रियाओं पर विचार संलग्न है। विषय क्रम 2.4.3 में गीतावली की कृदन्त रचना वर्णित है। 2.4.4 में काल रचना का अध्ययन है। गीतावली की काल-रचना तीन भागों में विभक्त है 2 4 4 1 में कृदन्त काल, 2.4 4.2 में मूल काल और 2.4.4.3 में संयुक्त काल का अध्ययन है। विषय क्रम 2.4.5 में संयुक्त क्रिया का अध्ययन है।

विषय-क्रम 2.5 में क्रिया विशेषण तथा अव्यय वर्णित है। क्रिया विशेषणों का अध्ययन 2.5.1 में दो प्रकार 'अर्थ के आधार पर, और संरचना के आधार पर) से किया गया है। 2.5.2 में अव्यय वर्णित है जो सामान्य सूचक और विस्मय सूचक दो प्रकार के हैं।

अध्याय तीन में गीतावली की वाक्य-संरचना वर्णित है आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त वाक्यों को संरचना की दृष्टि से तीन वर्गों में विभाजित किया गया है 1—वाक्य 2—उपवाक्य 3—वाक्यांश।

विषय-क्रम 3.1.1 में वाक्य विचार वर्णित है। गीतावली में प्राप्त वाक्य दो प्रकार के हैं— एक बहुउपवाक्यीय वाक्य और बहुवाक्यीय वाक्य—एक उपवाक्यीय

वाक्यों का अध्ययन उपवाक्यों के साथ हुआ है, बहुउपवाक्यीय वाक्यों का अध्ययन वाक्य संरचना के अन्तर्गत किया गया है। बहु उपवाक्यीय वाक्य तीन प्रकार से वर्णित हैं–

1. द्विउपवाक्यीय वाक्य
2. त्रि उपवाक्यीय वाक्य
3. अधिक उपवाक्यीय वाक्य

सभी प्रकार के (द्वि, त्रि, अधिक) उपवाक्यीय वाक्य संयुक्त एवं मिश्र दो प्रकार से वर्णित है। सभी का यथा स्थान विस्तृत वर्णन है।

विषय-क्रम 3.1.2 में उपवाक्य संरचना वर्णित है, संरचना की दृष्टि से दो प्रकार के उपवाक्य मिले हैं –(1) पूर्ण उपवाक्य (2) अपूर्ण उपवाक्य—पूर्ण उपवाक्यों के अध्ययन के अन्तर्गत दो प्रकार के उपवाक्य वर्णित हैं पूर्णार्थक क्रिया युक्त उपवाक्य, अपूर्णार्थक क्रिया युक्त उपवाक्य।

पूर्णार्थक क्रिया युक्त उपवाक्य को सकर्मक पूर्णार्थक एवं अकर्मक पूर्णार्थक– दो प्रकार मे वर्णित किया गया है। सकर्मक पुनः कर्त्ता सहित सकर्मक एवं कर्त्ता रहित सकर्मक दो प्रकार के हैं—

अकर्मक पूर्णार्थक उपवाक्य भी दो प्रकार से वर्णित हैं—सामान्य अकर्मक, गत्यर्थक अकर्मक

अपूर्णार्थक क्रिया युक्त उपवाक्य दो प्रकार से वर्णित हैं –

(1) सकर्मक अपूर्णार्थक जो कर्त्ता सहित सकर्मक एवं कर्त्ता रहित सकर्मक दो प्रकार के हैं–

(2) अकर्मक अपूर्णार्थक जो कर्त्ता सहित अकर्मक एवं कर्त्ता रहित अकर्मक दो प्रकार से वर्णित है–

अपूर्ण उपवाक्य दो प्रकार से वर्णित हैं–

(1) अंशतः अपूर्ण उपवाक्य (2) पूर्णतः अपूर्ण उपवाक्य

विषय-क्रम 3.1.3 में वाक्यांश संरचना वर्णित है, गीतावली में प्राप्त वाक्यांशों को 5 प्रकार से वर्णित किया गया है–

(1) शीर्ष विशेषक वाक्यांश
(2) अक्ष सम्बन्ध वाक्यांश
(3) समावयवी वाक्यांश
(4) शीर्ष विश्लेषक वाक्यांश
(5) संगुम्फित क्रिया वाक्यांश

अध्याय 4 में गीतावली में प्राप्त बोलीगत वैविध्यों पर प्रकाश डाला गया है और मूलाधार बोली का निर्णय किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन के पंचम अध्याय में उपसंहार वर्णित है जिसमें समूचे अध्ययन का सार है।

अंत में, जिन गुरुजनों विद्वानों संस्थाओं आदि से सहायता प्राप्त हुई है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं—

सर्व प्रथम मैं आदरणीय डॉ० छोटेलाल शर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष भाषा विज्ञान विभाग वनस्थली विद्यापीठ के पथ-प्रदर्शन एवं ज्ञान की अत्यंत आभारी हूं जिन्होंने इस कार्य में अपना पूर्ण सहयोग एवं निर्देशन दिया।

प्रोफेसर विद्यानिवास मिश्र, निदेशक क० मु० हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ, आगरा विश्व विद्यालय, आगरा के प्रति मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूं जिन्होंने अपने बहुमूल्य सुझावों से लाभान्वित किया। प्रकाशन के समय दो शब्द का आर्शीवचन लिखकर मुझे अत्यधिक प्रेरणा दी है।

डॉ० बी० पी० सिंह वरिष्ठ आचार्य एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, के प्रति मैं विनम्र आभार प्रकट करती हूं जिन्होंने इस कार्य की सराहना कर मेरे उत्साह को बढ़ावा दिया है।

मैं डॉ० रामस्वरूप शर्मा के प्रति कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस प्रकार के अध्ययन की प्रेरणा दी।

कुमारी सुशीला व्यास, आचार्या ज्ञान विज्ञान महाविद्यालय, वनस्थली विद्यापीठ के प्रति मैं आभारी हूं जिन्होंने इस कार्य में मुझे हर संभव सहायता दी है।

मैं डॉ० विमल, डॉ० पन्ना एवं डॉ० रवीन्द्र शर्मा के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ हूं जिन्होंने पुस्तक के प्रकाशन में आद्योपान्त अनेक प्रकार से सक्रिय सहयोग दिया है। साथ ही शोभा पाण्डेय के सहयोग के लिए मैं धन्यवाद देती हूं।

पूज्य अम्मा एवं भाई साहब के आर्शीवाद से ही मैं पुस्तक को पूर्ण कर सकी हूं इसके लिए मैं उनकी अत्यधिक आभारी हूं।

आदरणीय बड़े भाइयों—श्री हरीमोहन, श्री ललितमोहन, श्री प्रेममोहन एवं श्री चन्द्रमोहन का स्नेह एवं आर्शीवाद बचपन से ही मेरा मार्गदर्शक रहा है, उन्हीं की प्रेरणा से मैं आज इस कार्य को पूर्ण कर सकी हूं इसके लिए मैं उनकी अत्यधिक ऋणी हूं।

वास्तव में, पुस्तक के प्रकाशन का सर्वाधिक श्रेय मेरे श्रद्धेय पति श्री वीरेन्द्र शर्मा को है जिनकी अत्यधिक प्रेरणा एवं स्नेहपूर्ण सहयोग के परिणाम स्वरूप ही यह कार्य पूर्णता पा सका है। उनके इस अकथनीय सहयोग के लिए मैं हृदय से उनकी अत्यंत आभारी हूं।

दोनों बच्चों-विभाष और अभिषेक को मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने यथा संभव अपना कार्य स्वयं करके एवं बारम्बार पुस्तक की पूर्णता की जिज्ञासा जाग्रतकर कभी मुझे हतोत्साहित नहीं होने दिया।

साहित्य सम्मेलन प्रयाग, काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, केन्द्रीय पुस्तक मंदिर वनस्थली विद्यापीठ एवं अन्य पुस्तकालयों से मुझे जो सहायता मिली है उसके लिए मैं वहां के अध्यक्षों एवं कार्यकर्त्ताओं की कृतज्ञ हूं। इसके अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना; गीता प्रेस गोरखपुर, उत्तर प्रदेश; राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे; साहित्य अकादमी, दिल्ली; मानस संघ (रामवन); राजस्थानी शोध संस्थान चौपासनी, जोधपुर, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान (जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, कोटा, अलवर, चित्तौड़गढ़) से हस्तलिखित ग्रंथ संबंधी पूर्ण जानकारी मिली है उन सभी का आभार मैं शब्दों में प्रकट नहीं कर सकती।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली के प्रति मैं हृदय से आभारी हूं जिसने वित्तीय सहायता देकर प्रकाशन कार्य को यथा शीघ्र सुलभ बनाया।

उषा पब्लिशिंग हाउस, जोधपुर की संचालिका श्रीमति उषा थानवी एवं श्री पुरुषोत्तम थानवी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होने इसे शीघ्र प्रकाशित किया। राजस्थान प्रिन्टिंग वर्क्स, जयपुर के सभी अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को मैं धन्यवाद देती हूं जिनकी तत्परता से मुद्रण कार्य शीघ्र हो सका।

30, अरविन्द निवास
वनस्थली विद्यापीठ
चंद्रवार श्री गंगा दशहरा, 2037 वि०
दिनांक 23.6.80

डॉ० सरोज शर्मा

संकेत सूची

संकेत	अर्थ
1	बालकाण्ड
2	अयोध्याकाण्ड
3	अरण्यकाण्ड
4	किष्किन्धाकाण्ड
5	सुन्दरकाण्ड
6	लंकाकाण्ड
7	उत्तरकाण्ड
आ.	आवृत्ति
उपवा.	उपवाक्य
क. मु.	कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी
क्रिवि./ क्रि.वि	क्रिया विशेषण
खो. रि.	खोज रिपोर्ट
ग्रं. सं.	ग्रन्थ संख्या
गी.	गीतावली
ग.	गन्तव्य
गो. गो.	गीता प्रेस गोरखपुर
सं.	संवत्
ए. व.	एकवचन
ब. व.	बहुवचन
पु.	पुलिंग
स्त्री.	स्त्रीलिंग
प्र.	प्रधान
प्राति.	प्रातिपदिक
मू. रु.	मूल रूप
ति. रु.	तिर्यक रुप
स	स्वर
व	व्यंजन
विशे.	विशेषण

संकेत	अर्थ
वा.	वाचक
संप	संज्ञा पद बंध
अपूर्ण क्रि.	अपूर्ण क्रिया द्योतक
स.	सकर्मक
प्रे.	प्रेरणार्थक
अक्तू.	अक्तूबर
इ. प्रे.	इण्डियन प्रेस
ई.	ईसवी सन्
कं.	कम्पनी
द्वि. सं.	द्वितीय संस्करण
न. प्र.	नवनीत प्रकाशन
ना.	नामिक
ना. प्र. स.	नागरी प्रचारिणी सभा
ने. प. हा.	नेशनल पब्लिशिंग हाउस
प्र. सं.	प्रथम संस्करण
वि.	विक्रम संवत
वि. वि. हि. प्र.	विश्व विद्यालय हिन्दी प्रकाशन
वि. पु. मं.	विनोद पुस्तक मन्दिर
मि. प्र. प्रा. लिमि.	मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
सा. सं.	साहित्य संस्थान
सित.	सितम्बर
हि. ए.	हिन्दुस्तानी एकादमी
पं.	पंडित
ठा.	ठाकुर
डा.	डाकखाना
आ.	आचार्य
डॉ.	डॉक्टर

चिन्ह सूची

( )	कोष्ठक
/ /	स्वनग्रामात्मक लेख
[ ]	संस्वनात्मक लेख
{ }	पदरूपात्मक लेख
̥	अघोष स्वर चिह्न
ˆ	दीर्घता का ह्रास
·	दीर्घता की वृद्धि
̢	आतत युक्त व्यंजन
ˆ	पूर्णदंत्य
̦	पश्चदंत्य
O, ∅	शून्य प्रत्यय
≃	वैकल्पिक प्रयोग
√	धातु
↗	आरोहीस्वर
↘	अवरोहीस्वर
→	समस्वर
∞	पदग्रामिक विकल्प
≃	सानुनासिक ध्वनि-चिह्न
+	योग
>	विकार (सिद्ध रूप)

विषय-सूची

1

वैज्ञानिक पद पाठ

हस्तलिखित प्रतियों का विवरण

1.1. प्रस्तुत अध्याय में तुलसीकृत गीतावली का "वैज्ञानिक पद-पाठ" निर्धारित करने का प्रयत्न किया गया है-पाठ निर्धारण के लिए जो अपेक्षित सामग्री प्राप्त हुई है उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1.1.1. प्रतियां—गीतावली के पाठ सम्पादन में प्रयुक्त विभिन्न प्रतियों का विवरण इस प्रकार है—

गी. 'क'

आर्य भाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

ग्रंथकार—गोस्वामी तुलसीदास — गीतावली

लिपिकाल—1809 — लिपिस्थान—लवपुर

लिपिकर्त्ता—रमाशंकर याज्ञिक — पत्र—141

प्रति में प्रथम पत्र नहीं है तथा 140 वां पत्र भी आधा ही है। इसका आरंभिक अंश इस प्रकार मिला है—

सुष वरनि न जाई ।। सुनि दसरथ सुत जनम लिए सब गुरजन विप्र बुलाई ।। वेद विहित करि क्रिया परमसुचि आनंद उर न समाई ।। सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहुविधि बाज बधाई ।। पुरवासिन्ह प्रिय नाथ हेतु निज निज सम्पदा लुटाई ।। मनि तोरन बहु केतुपताकनि पुरी रुचिर करि छाई ।। मागध सूत द्वार बंदीजन जहँ तहँ करत बड़ाई ।। सहज सिंगार किये वनिता चलीं मंगल विपुल बनाई ।। गावहिं देहिं असीस मुदित चिर जियो तनय सुषदाई ।। बीथिन्ह कुंकुंम कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ।। नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भर देह दसा बिसराई ।। अमित धेनु गज तुरग बसन मनि जातरूप अधिकाई ।। देत भूप अनुरूप जाहि जोइ सकल सिद्धि गृह आई ।। सुषी भये सुर संत भू—

अंतिम पृष्ठ—नारी देषन आए ।। सिव विरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल बानी ।। चौदह भुअन चराचर हरषित आए राम राजधानी ।। मिले भरत जननी गुर परिजन चाहत परम आनंद भरे ।। दुसह वियोग जनित दारुन दुष रामचरन देषत बिसरे ।। वेद पुरान विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो ।। तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भगति दान तब मांगि लियो ।। इतिश्री विश्रपद रामायणे उत्तरकाण्ड समाप्त: ।। सुभमस्तु सर्वे जगतां-संवत ।।1809।। आषाढ़

अ्ुदि ॥ पूर्ण पंचदश ॥ बुववासरे इदं पुस्तकं भावदास आननी ॥ ····लवपुर मध्ये ॥ मंगलं लेखकानां च वाचकानां च मंगलं ॥ मंगल सर्वलोक ·· भूमि भूपति मंगलं—

विशेषताएं—पुस्तक अति जीर्णशीर्णावस्था में है लेकिन पठनीय है। 140वां पृष्ठ आधा फटा हुआ है—पुष्पिका में कहीं पर भी लिपिकार का नाम नहीं है। पुस्तक में ऊपर अवश्य नाम लिखा है।

लिपिगत विशेषताएं—ऐ के स्थान पर अै

गी. 'ख'

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	सं० 2078
ग्रंथ का नाम—रामगीतावली	ग्रंथकार–गोस्वामी तुलसीदास
विषय—रामकाव्य	संवत लेखन–1854
ग्रंथस्थिति—पूर्ण	आकार—8 × 5
पौष शुक्ल 11 बृहस्पतिवार	पृष्ठ—326

प्राप्ति साधन—श्री बालकृष्ण पाण्डेय प्रिंसिपल काव्य कुन्ज कॉलेज, लखनऊ

लिपि सम्बन्धी विशेषताएं—

सु — स्ु

सामासिक चिह्न नहीं हैं

छ के स्थान पर क्ष परंतु छ भी है

न के स्थान पर ण का प्रयोग

ए के स्थाल पर ये

ँ के स्थान पर c चिह्न का प्रयोग

संपादन संबंधी विशेषताएं—

वालकाण्ड में 30वां पद अधिक है—

क्षगन मगन आंगन डोलत तुतरि वचन स्ुक जु बोलत
स्ुनि स्ुनि हिय हरषि निरषि प्रमुदित महतारी
भूपन सिस्ु भूपित तन बसन हरन दामिनि दुति
क्षवि स्ुभाय स्ुदर उपमा न वारि डारी
कौतुक मृग विहंग धरत धावत नहिं पावत
लरषरत परत उठत देत तारी किलकारी
विरचित मनि कनक वाजि गज रथ करि रुचिर साजि
चढ़त चलत देपि स्ुमन वरपहिं स्ुर नारी
चाहि चाहि चारु चरित उमगित आनंद सरित प्रेम
वारि भूरि भूरि भरित पलक बीच वारी
राम भरत लषन लाल सोभित संग वलिहारी

इसके बाद दो पद 31 वें हैं। इस प्रकार संख्या वालकाण्ड की 110 ही है।

लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड में पदों की संख्या वही है परंतु लंकाकाण्ड में तृतीय व चतुर्थ पद एक कर दिया गया है वैसे ही उत्तर काण्ड में पंचम व षष्ठ-दोनों पदों को एक ही नंबर 5 डाला गया है और 7 नं० का पद छठा बना दिया गया है। आगे चलकर भी 33 व 34 दोनों पदों का नंबर 32 डाला गया है। इस तरह पद 38 होते हुए भी उनकी संख्या 36 है।

गी. 'ग'

आर्य्यभाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

गोस्वामी तुलसीदास	गीतावली
लिपिकाल 1856 वि०	पृष्ठ संख्या 1–9
बीच बीच के पद 50	लिपिकार–वेनी प्रसाद

प्रस्तुत प्रति में चुने हुए पद अनुदिन पाठ के प्रयोजन से संकलित हैं जिनमें भक्ति का वर्णन है—प्रति का प्रथम पद प्रति के बाहर के स्तवन से आरंभ होता है–

यथा– श्री गणेशाय नमः राग वसंत-वंदौं रघुपति करुणानिधान, जासौं कटैं भव-भेदज्ञान। रघुवंश कुमुद सुषप्रद निसेस, पद पंकज से व्रज अज महेस। निज भक्त हृदय पाथोज भृंग, लावन्य वपुष अगनित अनंग। अति प्रवल मोह तम मारतंड, अज्ञान गहन पावक प्रचंड। अति मान सिन्धु कुंभज प्रदान, जन रंजन अंजन भूमि भार। रामादि सर्प्पगण पन्नगारि, कदर्प्प नाग मृगपति मुरारि। भव जलधि पीत चरणारविंद, जानकीरमन आनंदकंद, हनुमान हृदय मानस मराल, निष्काम कामधुक को दयाल। त्रयलोक तिलक गुन गहन राम, भज तुलसिदास विश्राम धाम॥ राग विलावल–आज महामंगल कोशिलपुर सुनि नृप के सुत चारि भए, सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निसान हए, सजि सजि जान अमर किंनर मुनि जानि समय सुभ गान ठए, नाचहिं नभ अपसरा मुदित मन पुनि पुनि बरषहिं सुमन चए, अति सुष बेगि गुर भूसुर भूपति भीतर भवन गए, जातकर्म करि कनक बसन मनि भूपित सुरभि समूह दए, दल रोचन फल फूल दूर्वदधि जुवतिन्ह भरि भरि थार लय, भरहिं अवीर अरगजा छिरकहिं बंदिन्ह वांकुर विरद बय, कनक कलस चामर पताक धुज जंहँ तंहँ देत सकल मंदिर रितय, तुलसिदास पुनि भरोइ देपियत राम कृपा चितवनि चितय।2। राजजयी श्री गावैं विविध विमल वरवानी, भुवन कोटि कल्यान कत जो जायउ पूत कौशिला रानी, मास पाष तिथि वार नषत ग्रह जोग लगन सुभ ठानी, जल थल गगन प्रसन्न साधु मन दस दिसिहि हुलसानी वरसत सुमन वधाव नगर महँ हरप न जात वपानी, ज्यों हुलास रनिवास नरेसहि त्यौं जनपद रजधानी।3।

अन्य पद	गीतावली गोरखपुर–संख्या
(4) सुभग सेज सोभित कोसल्या	1.7
(5) पालने रघुपति झुलावैं	1 23
(6) पगन्ह कब चलिहौ चारिउ भैया	1.9

(7) आँगन फिरत घुटुरुवनि धाए	1.26
(8) या सिसु के गुन नाम बड़ाई	1.16
(9) रघुवर बालछवि कहौं बरनि	1.27
(10) नेकु, बिलोकि धौं रघुवरनि	1.28
(11) राम लषन यक वोर भरथ रिपुदमन लाल यक वोर भये	1.45
(12) महामुनि चाहत जाग जयो	1.47
(13) आजु सकल सुकृत के फल पाइहौं	1.48
(14) कौसिक के मष के रषवारे	1.60
(15) मेरे बालक कैसे धौं मग निवहहिंगे	1.99
(16) जब तैं लै मुनि संग सिधाए	1.101
(17) सानुज भरत भवन उठि धाए	1.102
(18) दुलह राम सीय दुलही री	1.106
(19) जैसे ललित लषन लाल लोने	1.107
(20) जानकी वर सुन्दर माई	1.108
(21) जननी वारि फेरि भुजनि पर डारी	1.109
(22) सुभग सरासन सायक जोरे	3.2
(23) कर सर धनु कटि रुचिर निषंग	3.4
(24) श्री राघव गीध गोद करि लीन्हे	3.13
(25) नीके के जानत राम हिय की	3.14
(26) मोरे जान तात कछू दिन जीजै	3.15
(27) सबरी सोइ उठी	3.17
(28) पदपद्म गरीब निवाज के	5.29
(29) महाराज रामपहँ जाउंगो	5.30
(30) आए सचिव विभीषन के कही	5.31
(31) विनती सुनि प्रभु प्रमुदित भए	5.32
(32) प्रभु बिहँसि कह हनुमान सों	5.33
(33) सचिहु विभीषन आए हैं	5.34
(34) चले लेन लषन हनुमान हैं	5.35
(35) रामहि करत प्रणाम निहारिके	5.36
(39) करुणा करकी करुणा भई	5.37
(40) मंजुल मूरति मंगल मई	5.38
(41) सब भांति विभीषन की बनी	5.39
(42) कहो किमि न विभीषन की बनै	5.40
(43) अति भाग विभीषण के भले	5.41

(44)	गए रामसरण सबको भलो	5.42
(45)	सुजस सुनि है नाथ हौं आयो सरण	5.43
(46)	दीन हित विरद पुराननि गायो	5.44
(47)	सत्य कहौं मेरो सहज सुभाए	5.45
(48)	नाहिन भजिवे जोग वियो	5.46
(49)	सुमिरत श्री रघुवीर की वाहैं	7.13
(50)	रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर	7.38

प्रति का अन्तिम पृष्ठ इस प्रकार है—

काज सुर चित्रकूट मुनिवेष धरे, यक नयन कीन्हे सुरपति सुत वधि विराध मुनि सोक हरे, पंचवटी पावन राघव करि सूर्पनषा कुरूप कीन्हे, परदूपन संवारि कपट मृग गीधराज कहँ गति दीन्हे, हति कवंध सुग्रीव सपा करि भेदे ताल वालि मारे, वानर रीछ सहाइ अनूज संग सिंधु वांधि जस विस्तारे, सकल पुत्रदल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टारो, परम साधु जिय जानि विभीपरण लंकापति तिलक सारो, सीता अरु लक्षन सग लै औरो जिते दास अाए, नगर निकट विमान आये सव नर नारी देषन आये, शिव विरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल वानी, चौदह भुवन अरु चराचर हरषित आये राम राजधानी, मिले भरत जननी गुर परिजन चाहत परम अनंद भरे, दूसह वियोग जनित दारुण दुप रामचरन देषत विसरे, वेद पुरान विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक किये, तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान वर मांग लिए ॥50॥

पुष्पिका—इति श्री तुलसीकृत गीतावली के विश्नुपद वीच-वीच के लिए हैं पचास-गीतावली वहुत है ॥ सुभ संवत 1856 वैशाष कृष्ण 13 गुरवासरे नाले-खियाउं वेनीप्रसाद नाम्वा ॥शुभ॥

लिपि संबंधी विशेषताएं—

सु भी है और सु भी है
एक के स्थान पर यक का प्रयोग है
ख के स्थान पर ष का प्रयोग परंतु कहीं-कहीं ख भी है
स के स्थान पर कई स्थानों पर श का प्रयोग है
इ के स्थान पर भी कहीं-कहीं य का प्रयोग है
सामासिक चिह्न नहीं हैं।

इस पुस्तक में अयोध्याकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड व लंकाकाण्ड का एक भी पद नहीं है- उत्तरकाण्ड के दो पद हैं शेष पद वालकाण्ड, अरण्यकाण्ड व सुन्दर काण्ड के हैं। लिपिकार पद संख्या लिखने में भूल गया है। उसने 35 के अनन्तर39 संख्या लिखी है। इस प्रकार कुल 47 पद ही हैं जिसे वह पचास कहता है।

गो. 'घ'

आर्यभाषा पुस्तकालय — नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

गीतावली रामायण — ग्रंथकर्त्ता–तुलसीदास

निर्माण काल — लिपिकाल–1891 वि०

पृष्ठ संख्या 11–73, 75–83, 85-97 = 95

यह प्रति 11 वें पृष्ठ से प्रारंभ होती है । इसमें 74 वां 84 वां पृष्ठ नहीं हैं । इसके प्रारंभिक पृष्ठ की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है—

श्री रामचंद्राय नमः ॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ श्री गुशांई तुलसीदासकृत गीतावली रामायन लिष्यते, श्लोक ॥ निलाम्बुज स्यामल कोमलांगं सीता समोरोपित वाम भागं, पाणौ महाशायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥ राग असावरी ॥आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई रूपसील गुनधाम राम नृप भवन प्रगट भए आई ॥1॥ अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ॥ हरषवत चर अचर भूमि-तरु तनरुह पुलक जनाई ॥2॥ वरषहि विवुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभ वजाई ॥ कौसिल्यादि मातु मन हरषित यह सुखवर्णन न जाई ॥3॥ सुनि दसरथ सुत जन्म लियो सव गुरजन विप्र वोलाई ॥ वेद विहित करि कृपा परम सुचि आनद उर न समाई ॥4॥ शदन वेद धुनि करत मधुर मुनि वहुविधि वाज वधाई ॥ पुरवासिन्ह प्रिय नाथ हेतु निज-निज संपदा लुटाई ॥5॥ मनि तोरन वहु केतु पताकनि पुरी रुचिर कर छाई ॥ मागध सूत द्वार वदीजन जंह तंह करत वड़ाई ॥6॥ सहज सिंगार किए वनिता चली मंगल विपुल वनाई ॥ गावैं देहि असीस मुदित चिर जिवौ तनय सुषदाई ॥

तथा अन्तिम पृष्ठ की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है–

करि टार्‌यो ताल वालि नृप मार्‌यो ॥ वानर रिक्ष सहाए अनुज संग सिंधु वांधि जस विस्तार्‌यो ॥6॥ सकल पुत्रदल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टार्‌यो ॥ परम साधु जिय जानि विभीषन लंकापुरी तिलक सार्‌यो ॥7॥ सीता अरु लछ्मन संग लीन्हे औरो जिते दास आए ॥ नगर निकट विमान आवत सुनि नर नारी देषन आए ॥8॥ मिले भरत जननी गुर परिजन चाहत पर्म आनंद भरे ॥ दुसह वियोग जनित ससृत दुष राम चरन देषत विसरे ॥9॥ व्रह्मादिक सुक नारदादि पुनि अस्तुति करत विमल वानी ॥ चौदह भुवन चराचर हर्षित आए राम राजधानी ॥10॥ देषि दिवस सुभ लगन सोधि गुर महाराज अभिषेक कियो ॥ तुलसिदास तव जानि सुऔसर भक्ति दान वर माँगि लियौ ॥11॥330॥38॥ इति श्री रामगीतावली उत्तरकाण्ड समाप्तः ॥ सिधिरस्तु सुभमस्तु ॥ सुभसंवत 1891 ॥ मासोन्त्तमे वैसाष मासे कृष्ण पक्षे दसरचांसनिवासरे इदं पुस्तकं लिषित् ॥ संपूर्नम् ॥सुभम्॥ रामायनमः ॥

प्रति अत्यंत जीर्णशीर्ण अवस्था में है। कुल 95 पत्र हैं बीच के 74 और 84 पत्र नहीं हैं। पुस्तक के 18 पृष्ठ से लेकर 55 पृष्ठ तक और इसके अतिरिक्त भी कई पृष्ठों पर पुस्तक का एक कोना गायब होने के कारण सभी स्थानों पर सफेद कागज़ गोंद से जोडा गया है। अतः संपूर्ण पुस्तक अपूर्ण है। लिखावट साफ है किन्तु अनेक स्थानों पर सफेद कागज बीच-बीच में भी लगाया गया है।

लिपि संबंधी विशेषताएं–स के स्थान पर श का प्रयोग है

प्रारंभिक ऐ के स्थान पर अै का प्रयोग है।

ख के स्थान पर अधिकांशतः ष का प्रयोग है।

सामासिक चिह्न कहीं नहीं हैं—

गी. 'च'

हिन्दी संग्रहालय—हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग–संख्या 163

नाम पुस्तक–राम गीतावली	ग्रंथकर्त्ता–तुलसीदास
संवत रचना– ×	संवत लेखन–1908 वि.
विषय–रामायण	पृष्ठ–286 पन्ना 143
दाता–क्रय की हुई	आकार–9 × 5 (अपूर्ण)

यह प्रति खंडित है और अरण्यकाण्ड के 211 वें पद से प्रारंभ होती है,यथा—

जबहि सिय सुधि सब सुरनि सुनाई। भए सुनि सजग विरह सरि पैरत थके थाह सी पाई। कसि तूणीर तीर धनु धर धुर धीर वीर द्वौ भाई। पंचवटी गोदहि प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई।

और अन्तिम पत्र इस प्रकार है–

नगर निकट विमान आयो जब नर नारी देखन धाए। शिव विरंचि शुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल बानी। चौदह भुअन चराचर हर्षित आए राम राजधानी। मिले भरत जननी गुर परिजन चाहत परम अनंद भरे। दुसह वियोग जनित दारुण दुष राम चरण देषत बिसरे। वेद पुराण विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो। तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भक्तिदान तब मांगि लियो ॥331॥

इसकी पुष्पिका निम्नलिखित है—

इति श्रीरामगीतावल्यां उत्तरकाण्डे समाप्तं ॥ संवत 1908

लिपीतं श्री सर्व सुपरायमवन नीवासी श्री महाराजधीराज कृपात्र

श्री बहादुर श्री विस्वनाथ सीह जु देव के शहर रीव नामु—

लिपि संबंधी विशेषताएं—ख के स्थान पर ष का प्रयोग

सामासिक चिह्न का प्रयोग नहीं है।

गी. 'छ'

गीतावली—तुलसीदास, लिपिकार व लिपिकाल नहीं है

आकार $13\frac{3}{4} \times 6''$ पन्ना 76

इसके प्रथम पृष्ठ की प्रतिलिपि—

निकसत कुमुद बिलषाई । जो सुष सिंधु सुकृत सीकर तें सिव बिरंचि प्रभुताई । सो सुप अवध उमंग रहो दुहु दिस कवन जतन कहो गाई 11 जो रघुवीर चरन चितक तिनकी गति प्रगट दिषाई अविरल अमल अनूप भक्ति दिढ़ तुलसिदास तहँ पाई 12 रागजैत 1 श्री सहेली सुन सोहिल सब जग आजु सपूत कौसिला जायो अचल भयो कुलराज 1 चैत चारु नौमी सविता तिथि मध्य गगन गत भान नपत जोग ग्रह लगन भले दिन मंगल मोद निधान 2 व्योम पवन पावक जल थल दस दिसहूँ सुमंगल मूल सुर दुंदुभी बजावहिं गावहिं हर्षित वर्षहि फूल 3 भूपति सदन सोहिलो सुन बाजे गहगहे निसान सहज सजहि कलस ध्वज चामर तोरन केतु वितान 4 सींचि सुगंध रची चौकें गृह आगंन गली बाजार दल फल फूल दूवदधि रोचन मंगल चार 5 सुनि सन सनंदस-स्यंदन सकल समाज समेत लिए बोलि गुर सचिव भूमिसुर प्रमुदित चले निकेत 6 जातक कर्म करि पूज पितर सुर दिय महि देवन दान तेहि औसर सुत तीनि प्रगट भए मंगल मुद कल्यान 7 आनंद मह आनंद अवध आनंद बधावन होइ उपमा कहौं चार फल की मोहि भल न कह कवि कोइ 8 सजि।

इसके अन्तिम पृष्ठ की प्रतिलिपि—

बालक सीय के विहरत मुदित द्वौ भाइ नाम लवकुस राम सिय अनुहरत सुंदरताइ 1 देत मुनि सिसु पिलौना लै लै धरत दुराई पेल पेलत नृप सिसुन के बालवृंद बुलाई 2 भूप भूषन वसन वाहन राज साज सजाइ वरन चरम कृपान सुर धनु तूल लेत बनाइ 3 दुषी सिय पिय विरह तुलसी सुषी सुत सुष पाइ आंच पय उफनात सीचत सलिल ज्यों सकुचाई कैकेई जौंलों जियत रही तौलों बात मातु सो मुंह भरि भरत न भूलि कही 1 मानी राम अधिक जननी ते जननिहु गँस न गही सीय लषन रिपुदमन राम रुष लषि सबकी निबही 2 लोक वेद मरजाद दोष गुन गति चित चष न चही तुलसी भरत समुझ राषी हिय राम सनेह सही 3 रामकली रघुनाथ तुम्हारो चरित मनोहर गावहि सकल अवधवासी अति उदार अवतार मनुज वपु धरे ब्रह्म स्वैं अविनासी 1 प्रथम ताडका हति सुबाहु वधि मष राष्यो द्विज हितकारी देषि दुषी अति सिला सापवस रघुपति विप्रनारि तारी 2 सब भूपनि को गरब हर्‌यो हरि भज्यो संभु-चाप-भारी जनक सुता समेत आवत घर परसराम अति मदहारी 3 तात बचन तजि राज्य काज सुर चित्रकूट मुनिवेष धर्‌यो येक नयन कीन्हौं सुरपति सुत वधि विराध रिषि सोक हर्‌यो 4 पंचवटी पावन करि सूपनषा

कुरूप कीन्ही पर दूषन संधारि कपट मृग गीधराज कहँ गति दीन्ही 4 हति कवंध सुग्रीव सषा करि भेदे ता—

लिपि संबंधी विशेषताएं—

ऐ के स्थान पर अै का प्रयोग है

ख के स्थान पर ष का प्रयोग है

प्रथम व अन्तिम पद खंडित है शेष पूर्ण है। लिखावट वहुत स्पष्ट है, सामासिक चिह्न नहीं हैं।

किष्किन्धा काण्ड में एक पद है—"भूषन वसन विलोकत सिय के" जवकि अन्य प्रतियों में दो पद हैं।

काण्ड के अन्त की पुष्पिका इस प्रकार है—

"इति श्री रामगीतावली वालकाण्ड प्रथम सोपान:"

"इति श्री रामगीतावली अयोध्या द्वितीय सांगयेव:"

"इति श्री रामगीतावली तृतीय कांड सांगयेव:"

"इति श्री रामगीतावली किष्किन्धा सांगयेव:"

लंका काण्ड और उत्तर काण्ड में पुष्पिका का यह अंश भी नहीं है।

गी 'ज'

नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी

गोस्वामी तुलसीदास कृत गीतावली

लिपिकाल × लिपिकार ×

पृष्ठ 316 पत्र संख्या 158

प्रति अत्यंत जीर्ण शीर्ण अवस्था में है, खण्डित तथा कटी-फटी है। इसमें 93 से 98, 1·2 से 115 तथा 129 से 132 के वीच के पत्र नहीं हैं। स्पर्शमात्र से पत्र बिखरने लगते हैं। प्रथम पद का प्रारंभिक भाग नहीं है, यथा—

गावहि देहि असीस मुदित मन जिवहि तनय सुषदाई।। वीथिन कुंकुंम कीच अरगजा अगर अवीर उड़ाई।। अमित धेनु गज तुरग वसन मनि जातरूप अधिकाई।। देत भूप अनूप जाहि जोई सकल सिधु ग्रह आई।। सुषी भये सुर संत भूप सुर षल गन मन मलिनाई।। सवै सुमन विगसत रवि निकसत कुमुद विपिन विलषाई।। जो सुष सिधु सुकृत सीकर तें सिव विरंचि प्रभुताई।। सोइ सुष अवध उमगि रह्यो दस दिसि कोटि जनन कहौं गाई।। जे रघुवीर चरन चितक तिनकी गति प्रगट दिषाई।।

और अन्तिम पद की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है जो खंडित है—

रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवधवासी।। अति उदार अवतार मनुज वपु धरे धारि उड़ी स्वर अविनासी।। प्रथम ताडुका हति सुवाहु

बधि मप राषिउ द्विज हितकारी ।। देषि दुष अति सिला सापवस रघुपति चिप्रनारि तारी ।। सव भूपन को गर्व हर्यो हरि भजिव संभु चाप भारी ।। जनक सुता समेत आवत ग्रह परसराम अति मदहारी ।। तात वचन तजि रामकाज सुचि चित्रकूट मुनिवेष धरो ।। ़येक नयन कीन्हौं सुरपति सुत वधि विराध रिषि शोक हरो ।।

संपादन संबंधी विशेषताएं—अरण्य काण्ड (9 पद) 'हिरन हनि फिरे रघुकुल मनि से प्रारंभ है–किष्किन्धा काण्ड में "भूषन वसन विलोकत सिय के" पद के पश्चात् एक अतिरिक्त पद है जो इस प्रकार है—

करि सुग्रीव सों मिताई हनुमान बिच अगिनि साष दै हम तुम दोनों चारी ।
पूछि दसा हति बालिराज दै गति सरदारी । लछिमन कोप राम अै पाले
किष्किन्धा पहुँचाई । यह सुनि तवहि राम पति आयो चरन गहे तव आई ।
तुलसी हरि सुग्रीव पाप बाटिका जे कि औसर नाहीं ।

इसके पश्चात् 'प्रभु कपि नायक बोलि कह्यो है' पद है—

इसी प्रकार सुन्दरकाण्ड में 16 और 17 वें पद के मध्य एक अतिरिक्त पद है जो अन्य किसी प्रति में नहीं है—

रघुपति पहँ मारुतसुत आयो
उठे कपि मासु देषि आतुर ह्वै प्रेम पुलकि जल छायो ।
आनंद भरि हनुमान पानि जुग जोरि चरन सिर नायो ।
श्री रघुवीर उठाइ कह गहि प्रेम सहित उर लायो ।
पूछी कुसल जानकी की प्रभु हियो अधिक पछितायो ।
तुलसी जाइ कह्यो जानकी सोई सोई कहि कपि गायो ।

सुन्दरकाण्ड में 22 वें पद का अभाव है

लिपि संबंधी विशेषताएं - ऐ के स्थान पर अै का प्रयोग है
ऋ के स्थान पर रि का प्रयोग है
छ औ भ की बनावट भिन्न है ।

अरण्यकाण्ड के बाद पुष्पिका इस प्रकार है "इति तुलसीदास कृते रामायन गीतावली अरनकांड तीसरो सोपान संपुनस्मापता" बालकाण्ड के पश्चात् केवल यह लिखा है "इति श्रीराम गीतावली श्री गुसाँई तुलसीदास जी के प्रथमो बालकाण्ड संपुरनस्मापता" । सुन्दरकाण्ड के पश्चात् यह लिखा है "संपुरनस्मापता"

गी 'झ'

ग्रथ गीतावली ग्रंथकार तुलसीदास
रचनाकाल एवं लिपिकाल नहीं हैं—
पत्र 16 पन्ना कुल 9 पद
प्रति खण्डित है —इसके प्रथम पृष्ठ की प्रतिलिपि इस प्रकार है—

श्री गणेशायनमः अथ रामगीतावली राग असावरी आजु सुदिन सुभघरी सुहई ॥ रूप सील गुन धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई। अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार जोग समुदाई ॥ हरखवंत चर अचर भूमितरु तनरुह पुलक जनाई ॥ बरहिं विबुध निकर कुसमत नभ दुंदुभी बजाई ॥ कौसिक

अन्तिम पृष्ठ की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है—

संभु सरास तनिहैं त्वै है व्याह उछाह बालिस जो सुमंगल षानि हैं भूरिभाग तुलसी कहि जे सुनिहै गइ बषनि हैं राम कामरिपु चाप चढ़ायो। मुनिहिं पुलकि आनंद नगर नभ निरषि निसान बजायो। जिहिं पिनाक धनुष सबहिं बिषाद बढायो।

कुल पदों की संख्या इस प्रकार है— गीता प्रेस गोरखपुर

1. आजु सुदिन सुभघरी सुहई	1·1
2. पगनि कब चलिहैं चारौं भया	1·9
3 सुभग सेज सौभित कौसिल्या	1·7
4. आगंन फिरत घुटुरुआ धायो	1·26
5. राम लषन जब दिष्ट परे री	1·76
6 जब तें राम लषन चितए री	1.78
7. सुन सषी भूपति भलौ कीयो री	1·79
8. अनकल नहिं सूलपानि है	1·80
9. राम कामरिपु चाप चढायो	1·93

लिपि संबंधी विशेषताएँ—न के स्थान पर ण का प्रयोग तथा आ के स्थान पर अ का प्रयोग है

विशेष—इस प्रति में केवल बालकांड के 9 पदों (1, 9, 7, 26, 76, 78, 79, 80, और 93) का अध्ययन है और वे भी पूर्ण नहीं हैं सभी पद अधूरे हैं। लिपिकार, लिपिकाल तथा लिपिस्थान किसी विषय की जानकारी नहीं है। मात्रा ज्ञान भी कम है। लिखावट अस्पष्ट है, अतः सभी प्रकार से अपूर्ण होने के कारण अन्य प्रतियों के साथ इसका अध्ययन नहीं किया जा सकता।

गी 'ट'

संख्या 484 आर गीतावली, रचयिता तुलसीदास (राजापुर बांदा) कागद देसी, पत्र 324, आकार $9\frac{1}{2}\times6\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) 19 परिमाण (अनुष्टुप) 19485, रूप प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी लिपिकाल संव० 1797-1740 ई०, प्राप्ति स्थान—महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ (अवध)

प्रारम्भिक पृष्ठ

श्री गणेशायनमः। श्री जानकी वल्लभो विजयते। नीलाम्बुज स्यामल कोमलांगं। सीता समारोपित वामभागं। पाणौ महासे एक चारु चापं। नमामि रामं रघुवंश नाथं ॥1॥ राग करना धरी। आजु सुदिन सुभघरी सुहाई। रूप सील गुन

धाम राम नृप भवन प्रगट भै आई ।। अति पुनीत मधुमास लगन ग्रह वार जोग समुदाई । हरष वंत चर अचर भूमि तरु तनरुह पुलक जनाई ।। बरषहि विवुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुंभी बजाई । कौसिल्यादि मातु मन हरषित यह वरनि न जाई । सुनि दसरथ सुत जनम लियो सब गुरुजन विप्र बोलाई । वेद विहित करि कृपा परम सुचि आनंद उर न समाई ।।

अन्तिम पृष्ठ

इति श्री राम सिता वल्प स्वामी तुलसीदास कृत भाषा सम्पूर्ण समाप्त । शुभमस्तु ।। संवत 1797 मिती जेष्ठ सुवादि तृतीया । वार सनिश्चर को पोथी लिखा प्रतापगढ । दोहा । लिपितं सिवनी प्राननाथ सुकथ जथा मति देषि । सुद्ध असुद्ध विचारि चित पंडित पढिहहि विशेष ।।

विषय—राम की कथा विविध रागों में वर्णन ।।

गी 'ठ'

संख्या 484 यस—गीतावली रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज देसी, आकार 8×6 पत्र 70, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ) 50, परमाण (अनष्टुप) 2250, पूर्ण रूप प्राचीन, पद्य, लिपि-नागरी, लिपिकाल संव. 1891 प्राप्ति स्थान पं. संकठा-प्रसाद अवस्थी, ग्राम कटरा, तहसील विसवां डाकघर कटरा, जिला सीतापुर (अवध) आदि अन्त 484 आर के समान—

पुष्पिका—इति श्री गीतावली तुलसीकृत सातोकाण्ड समाप्तं संवत 1891 कुमारवदी "लिषतं मुन्नू पांडे मेड़की वाले ।

प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं पाठ निर्धारण

प्रस्तुत अध्याय में प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है और उसके आधार पर सर्वाधिक प्रामाणिक पाठ का निर्धारण किया गया है जिससे मूल प्रति के समीप पहुंचा जा सके—

1.2 प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन—

1.2.1 'क' और 'ख' हस्तलिखित प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन 'अ' असमानताएं

काण्ड-पद-पंक्ति	'क'	'ख'
1.1.10	सवै	सवइ
1.4.1	गावै	गावहि
1.6.18	जनायो, सुनायो आदि	जनाए, सुहाए
1.81.1	पिकवैनीं	विधुवयनी
1.96.1	जैमाल	जयमाल
1.105.2	छवि सिंगार सोभा इक ठौरी	क्षवि सिंगार उपमा सोउ थोरी
1.107.3	देषि तिअनि के	देष वैयनि के
2.6.2	मुख मयंक छवि	मुख पंकज क्षवि
2·12.2	अजहुं अवनि विदरत दरार मिस	अवनि न विहरति दार वचन सुनि
2.13.2	करौं वयारि बिलंविय विटपतर	करौं वाउ मग वैठि विटपतर
2.17.1	कोटि अनंग	सत अनंग
2.20.2	तैसिअ	वैसिअँ
2.26.2	रूप पारावार	रूप के न पारावार
2.27.1	सुतिय-फंग हैं-तक तीनों पंक्तियां	तीनों पंक्तियां नहीं हैं
2.32.2	निफन निराए बिनु	नीके न निरए बिनु
2.32.4	पूरा पद है	वरषि""""तरिगे तक दो पंक्तियां नहीं हैं
2.45.2–3	पूरा पद है	लोने"" """सरघर है—तक चार पंक्तियां नहीं हैं

काण्ड-पद-पंक्ति	'क'	'ख'
2.45.2-3	विसाल भुजवर है	विसिष कंजकर हैं
2.46.6	वैर	वयर
2.48.1	मानो षेलत फागु मुद मदन वीर	मानो फागुन मुदित षेलैं मदन वीर
2.71.3	मेरो जीवन जानिग्र ग्रँसोई जैसो ग्रहि	मेरो पुनि जीवन जानिय जिय जैसे
2.86.3	चितवत⋯⋯⋯आए-पंक्ति है	पंक्ति नहीं है
3.5.1	ग्ररुन कंज वरन चरन	ग्ररुण वरण चरन
5.3.1	पूरा पद है	ग्रमिय⋯⋯ जालु-तक पंक्ति नहीं है
5.5.4	सुजनहि सुजन सनमुख होइ	सुजन सुन सुष होई
5.22.4	मरकट	मर्क्कट
5.28.3	कुवरे की लात	कूबर की लात
5.36.3	क्षेम कुसल	कुसल क्षेम
5.37.2	ग्रापु काढ़ि साढ़ी लई	ग्रापु काढ़ि मिसु साढि लई
6.4.1	पूरा पद है	पद की प्रथम पंक्ति नहीं है
6.9.9	पूरा पद है	ग्रन्तिम पक्ति नहीं है
6.22.11	हित सहित राम	हित राम
7.3.2	निरमल	निर्म्मल
7.18.5	सुहो	सुहव
7.21.13	ग्ररुण वरण पद पंकज	ग्ररुण चरण पंकज
7.22.1	राजाधिराजा, समाजा	राजाधिराज, समाज
7.22.3	छिरके	क्षिरकहिं
7.22.4	पहिरे पट भूषण सरस रंग	भूषण पट सुमन सरिस सुरंग

आ—समानताएं

काण्ड-पद-पंक्ति	'क'	'ख'
1.5.1	ग्रवध वधावने घर घर	ग्रवध वधावने घर घर

काण्ड-पद-पंक्ति	'क'	'ख'
1.50 3	अँ हैं	अँ हैं
1.81.1	औसर	औसर
1.105.4	इत ······ हिलोरी-तक दो पंक्ति का अभाव है	दोनों पंक्तियों का अभाव है
2.41.1	अँन	अँन
2.43.2.3	आठ पंक्तियां नहीं हैं	आठ पंक्तियां नहीं हैं
2.65.1	औघ	औघ
3.5.1	राघो	राघो
5.4.4	पठै	पठै
5.9.3	सुमिरन	सुमिरन
5.10.1	नैंन	नैंन
7.14.3	अनामैं	अनामैं
7.18.1	जैंग्रैं	जैंग्रैं
7.28.2	सर्वविद	सर्वविद

हस्तलिखित प्रतियाँ गी० 'क' तथा गी० 'ख' में प्राप्त असमानताओं पर निम्न शीर्षकों में विचार किया जा सकता है—

(1) **स्वर परिवर्तन और स्वर संधि**—उपर्युक्त प्रतियों में यत्र-तत्र स्वर संबंधी परिवर्तन मिलते हैं—

(अ) ऐ≃अइ, अय; यथा-सवै≃सवइ (1.1.10); गावै≃गावहि (1.4.1); वैंनी≃वयनी (1.8.1); जैमाल≃जयमाल (1.96.1); वैर≃वयर (2.46.6); छिरकै≃छिरकहिं (7.22.3)

(आ) ओ≃ए; यथा-जनायो, सुहायो≃जनाए, सुहाए (1.6.18)

(इ) औं≃ऐ; यथा-समौं≃समैं (6.14.2)

(ई) ओ≃अव; यथा-सुहो≃सुहव (7.18.5)

उपर्युक्त असमानताओं का अध्ययन जब समानताओं के संदर्भ में करते हैं तो ये क्षेत्रीय रंजन के अतिरिक्त कुछ नहीं रह जाती हैं क्योंकि दोनों हस्तलिखित प्रतियों में 'अँ'है–अँहौ, सुनिअै, पठै, अनामैं, जैअै सदृश अनेक शब्दों की सर्वाधिक आवृत्ति है। दोनों प्रतियों में 'औघ' का लेखन 'अवघ' के स्थान पर, 'औसर' और 'राघो' का लेखन 'अवसर' और 'राघव' के स्थान पर मिलता है। इससे भावात्मक गठन पर कोई असर नहीं पड़ता, परिनिष्ठित ब्रज में इसका सामान्य प्रचलन है।

ये रूप-वैविध्य के अन्तर्गत आते हैं। यही बात (आ); (इ) और (ई) के लिए भी समान रूप से ठीक है।

(2) **एक पदग्राम अथवा वाक्य के स्थान पर भिन्न पद ग्राम अथवा वाक्य**–एक ही अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दोनों प्रतियों में भिन्न-भिन्न पद अथवा वाक्य के प्रयोग मिले हैं; यथा—पिकवैनी≃विधुवयनी (1.81.1); तिअनि≃वैअनि (1.107.3); मुष मयंक≃मुख पंकज (2.6.2); कोटि अनंग≃सत अनग (2.17.1); तैसिअ≃वैसिअ (2.20.2); छवि सिंगार सोभा इक ठौरी≃क्षवि सिंगार उपमा सोउ थोरी (1.105.2); अजहुं अवनि विदरत दरार मिस≃अवनि न विहरति दार वचन सुनि (2.12.2); करौं बयारि बिलंविय विटपतर≃करौं वाउ मग वैठि विटपतर (2.13.2); रूप पारावार≃रूप के न पारावार 2.26.2); निफन निराए विनु≃नीके न निरए बिनु (2.32.2); विसाल भुजवर≃विसिष कंजकर (2.45 2); मानो पेलत फागु मुद मदन वीर≃मानौं फागुन मुदित पेलैं मदन वीर (2.48.1); मेरो जीवन जानिअ अँसोइ जिअँ≃मेरो पुनि जीवन जानिय जिय जैसे (2.71.3); सुजनहि सुजन सनमुप होइ≃सुजन सुन सुष होई (5.5.4); आपु काढ़ि साढ़ी लई≃आपु काढ़ि मिस साढ़ि लई (5.37.2); छेम कुसल≃कुसल क्षेम (5.36.3); पहिरे पट भूषण सरस रग≃भूषण पट समय सरिस सुरंग (7.22.4)

इन वैषम्यों के निम्न कारण संभव हैं—

(1) क्षेत्रीय प्रभाव जैसे-तियनि≃वैअनि, तैसिअ≃वैसिअ आदि में है

(2) पढने की अशक्ता अथवा अर्थ सामीप्य-यथा-पिकवैनी≃विधुवयवैनी, कोटि... सत, मयंक छवि≃पकज छवि आदि में है—

(3) लिपिकार की प्रवृत्ति यम के प्रयोग की ओर दीख पड़ती है जिसके कारण-स्वर, वाक्यांश आदि परिवर्तन हो गए हैं।

(3) लोप—कुछ स्थानों पर गी० 'ख' में कुछ शब्द व पंक्तियां छूट गई है यथा-सुतिय.........फंग हैं-तक तीनों पंक्तियां नहीं हैं; (2.27); बरषि.........तरिगे-तक पूरी पंक्ति नहीं है (2.32.4); चितवत.........आए-तक पूरी पंक्ति नहीं है (2.86.3); अमिय.........जालु तक पूरी पंक्ति नहीं है (5.3.1) सुनु.........बुझायो-तक पक्ति नहींहै (6.4.1); परी ...... हनुमान-तक पंक्ति नहीं हैं–(6.9.9) हित सहित राम .. हितराम (6.22.11); अरुण वरण पद पंकज.....अरुण चरण पकज (7.21.13) जैसे प्रयोग मिले हैं—

इस लोप की प्रवृत्ति का कारण लिपिकर्त्ता के प्रमाद अथवा किसी सांस्कृतिक आदर्श का सकेतक है।

हस्तलिखित प्रति 'क' और 'ख' में निम्न रूपों में साम्य है—

(अ) य के स्थान पर अ-यथा-भैआ, मैआ, जुन्हैआ, लुटैआ

(आ) ईकारान्त ब० व० याँ के स्थान पर आँ-यथा-पैंजनिआँ, नथुनिआँ

(इ) सामान्य व० व० न के स्थान पर न्ह-यथा-नैनन्ह
(ई) आकारान्त वि० रु० में ए-यथा-प्राणपिआरे
(उ) ए के स्थान पर अँ-यथा-अँसो—

निष्कर्ष—उपर्युक्त दोनों प्रतियों में प्राप्त साम्य और वैषम्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि दोनों प्रतियाँ एक कुल की नहीं हैं और गी० 'ख' प्रति गी० 'क' प्रति की प्रतिलिपि नहीं है क्योंकि 'ख' प्रति में बालकाण्ड के 30 और 31 वे पद के मध्य एक अतिरिक्त पद है जो 'क' प्रति में नहीं है संभव है 'ख' प्रति की आदर्श प्रति कोई और हो और उससे उसकी प्रतिलिपि हुई हो। अतः 'क' एवं 'ख' प्रतियां अलग अलग कुल की प्रतियां लगती है।

1.2.2. 'क'; 'ख' और 'ग' हस्तलिखित प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन

अ—असमानताएं

काण्ड पद पंक्ति	गी 'क'	गी 'ख'	गी 'ग'
1.3.3	जात करम	जात करम	जात कर्म
1.3.4	दूब दधि रोचन	दूव दधि रोचन	दूर्व दधि
1.4.1	गावैं	गावहि	गावैं
1.4.1	जायो	जाया	जायउ
1.45.1	इक ओर	इक ओर	यक वोर
1.45.1	भरत	भरत	भर्थ
1.47.1	चहत महामुनि	चहत महामुनि	महामुनि चाहत
1.48.1	सुकृत फल	सुकृत फल	सुकृत के फल
1.60.2	सुकर	सुकर	स्वकर
1.106.2	इतनोइ, लह्यो आजु	इतनोइ, लह्यो आजु	यतनो लषि पै जो
1.108.10	कह गाई	कह गाई	श्रुति गाई
1.109.1	भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी	भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी	जननि वारि फेरि भुजनि पर डारी
3.13.1	राघो	राघो	श्री राघव
3.13.	ओं (लीन्हों, दीन्हों)	ओं (लीन्हों, दीन्हों)	ए(लीन्हे, दीन्हे)

काण्ड पद पंक्ति	गी 'क'	गी 'ख'	गी 'ग'
3.14.	दियों हौं, जियौं हौं आदि	दियो हौं, जियौ हौं आदि	दिए हैं, जिए हैं आदि
3.15.1	मेरे	मेरे	मोरे
5.29.1	पदपद्दुम	पदपद्दुम	पदपद्म
5 34.1	आइ हैं	आइ हैं	आय हैं
5.35.3	भगतनि को हित कोटि	भगतनि को हित कोटि	भक्तन को सतकोटि
5.35 5	सोइ	सोइ	तव
5.36.2	भयो	भयो	भये
5.38.2	ओर तें	ओर तें	वोर तें
5.40.1	क्यों न	क्यों न	किमि न
5.40.1	चार्यौं	चार्यौं	चारिउ
5.42.2	निबह्यो	निवह्यो	निवहै
5.43.1	सुनि श्रवन हौं नाथ	सुनि श्रवन हौं नाथ	सुनि हे नाथ हौं
5.43 3	प्रनतपाल,करुणा-सिंधु सेवित	प्रनतपाल, करुणासिंधु सेवित	प्रनतपालक करुणा-यतन शेवक
5.46.2	कौंन	कौंन	कवन
7.13.2	सैल तें वंसि जनु जुग	सैल तें, वंसि जनु जुग	सयल तें धंसी जिमि
7.38.1	—	गावहि सकल	गावत शकल
7.38.1	—	ब्रह्म अज	ब्रह्म स्वै
7.38.2	—	सापवस	आपवस
7.38.4	—	एक नयन कीन्हौं	येक नयन कीन्हे
7.38.8	लछिमन	लक्ष्मण	लक्षन

आ० समानताएं

काण्ड पद पंक्ति	गी 'क'	गी 'ख'	गी 'ग'
5.29.3	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं
5.39.6	ऐसे	ऐसे	ऐसे

निम्नलिखित प्रतियाँ गी 'क', गी 'ख' और गी 'ग' में प्राप्त वैविध्यों पर निम्न शीर्षकों में विचार किया जा सकता है

(1) **स्वर परिवर्तन और स्वर संधि**—उपर्युक्त तीनों प्रतियों में यत्र-तत्र स्वर संबंधी परिवर्तन मिलते हैं—यथा करम≃करम≃कर्म (1.3.3); इक≃इक≃यक (1.45,1);—≃एक≃येक (7.38.4); आइहैं≃आइहैं≃आय हैं (5.34.1 दियौ हौं≃दियौ हौं≃दिए हैं (3.14); भयो≃भयो≃भए (5.36.2); ओर≃ओर≃वोर (1.45.1 तथा 5.38.2); सैल≃सैल≃सयल (7.13.2); कौंन≃कौंन≃कवन (5.46.2); राघो≃राघो≃श्री राघव (3.13.1); चारयो≃चारयो ≃चारिउ (5.40.1); भरत≃भरत≃भर्थ (1.45.1); सुकर≃सुकर≃स्वकर (1.60.2); भगतनि≃भगतनि≃भक्तन (5.35.3); पदुम≃पदुम≃पत्म (5.29.1);—≃सापवस≃श्रापवस (7.38.2); दूव≃दूव≃दूर्व (1.3.4)

उपर्युक्त स्वर वैविध्य से निष्कर्ष यह निकलता है कि जहां पर गी 'क' व गी 'ख' में इ; ए; ओ; ऐ; औ; स्वर हैं उनके स्थान पर गी 'ग' मे क्रमशः य; ये; वो; अय; अव; या आव के प्रयोग मिले हैं लेकिन इन असमानताओं के सवंध में एक निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता क्योंकि गी 'ख' में जहां 'ओ' का प्रयोग अव के स्थान पर मिला है यथा राघो, जायौ आदि में वहां उसमें 'सुहो' के स्थान पर 'सुह्व, का लेखन भी मिला है ।

इसी प्रकार गी. 'ग' में जहां 'औ' के स्थान पर 'अव' का प्रयोग है वहां उस में औरो, आयौ आदि का लेखन भी औरउ, आयउ के स्थान पर मिला है अतः ये असमानताएँ लिपिकार की लेखनशैली अथवा क्षेत्रीय आदत के फलस्वरूप संभव हैं क्योंकि कत्रे के अनुसार "प्रतिलिपिक शब्दों की प्रतिलिपि करते हैं न कि वर्णों की" (देखिए भारतीय पाठालोचन की भूमिका पृष्ठ 24)

गी 'ग' में करम, दूव आदि के स्थान पर कर्म, दूर्व आदि का लेखन है इसका कारण स्वर भक्ति का लोप हो सकता है लेकिन 'भरत' के स्थान पर 'भर्थ' का लेखन भृष्ट पाठ प्रतीत होता है । इसी प्रति में 'इ' के स्थान पर 'य' और 'ओ' के स्थान पर 'वो' पाठ मिलता है जो पूर्वी भाषाओं के प्रभाव का परिणाम है ।

(2) **एक पदग्राम, वाक्य के स्थान पर भिन्न पदग्राम, वाक्य**

आलोच्य प्रतियां गी 'क', गी ख' एवं गी 'ग' में पदग्राम अथवा वाक्य संबंधी परिवर्तन इस प्रकार हैं—

चहत महामुनि≃चहत महामुनि≃महामुनि चाहत (1.47.1); सुकृत फल ≃सुकृत फल≃सुकृत के फल (1.48.1); लह्यो आजु≃लह्यो आजु≃लपि पै जो (1.106.2); कह≃कह≃श्रुति (1.108.10); भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी

≃भुजनि पर जननी वारि फेरि डारी≃जननी वारि फेरि भुजनि पर डारी (1.10 9.1); हित कोटि≃हित कोटि≃शत कोटि (5.35.3); सुनि श्रवन हौं नाथ≃सुनि श्रवन हौं नाथ≃सुनि हे नाथ हौं (5.43.1); प्रनतपाल करुणासिंधु सेवित≃प्रणतपाल करुणासिंधु सेवित≃प्रनतपालक करुणायतन शेवक (5.43.3); घंसि जनु जुग≃घसि जनु जुग≃घंसी जिमि (7.13.2);—≃गावहिं सकल≃गावत शकल (7.38.1); —≃अज≃स्वै (7.38.1); लछिमन≃लक्षमण≃लक्षन (7.38.8);

एक शब्द के स्थान पर प्रतिस्थानी रखना, अथवा क्रम-भंग के प्रयोग लिपिकार के दृष्टि-दोष अथवा असावधानी के कारण हो सकते हैं, अथवा यम के प्रयोग के कारण कहीं कहीं व्यतिक्रम है।

निष्कर्ष— उपर्युक्त तीनों प्रतियों के तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि 'क' और 'ग' प्रतियों का कुल एक है यद्यपि 'ग' प्रति 'क' प्रति की पूर्ण प्रतिलिपि नहीं है। इसमें किसी विशेष भावना (संभवतः नियमित पाठ के प्रयोजन) से चुने हुए पचास पदों को ही लिया गया है लेकिन ये प्रति 'क' प्रति से अधिक मिलती है इसमें 'ख' की असावधानियां नहीं मिली हैं अतः 'क' और 'ग' प्रतियां एक कुल की हैं।

———

1.2.3 'क', 'ख', 'ग' और 'घ' प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन

काण्ड पद पंक्ति	गी 'क'	गी 'ख'	गी 'ग'	गी 'घ'
1.1.10	सवै	सवइ	—	सवै
1.4.1	गावैं	गावहि	गावैं	गावैं
1.5.1	अवध वधावने घर घर	अवध वधावने घर घर	—	अवध वधावनो घर घर
1.11.1	जठेरिन्ह	जठेरिन्ह	—	जरेठिन्ह
1.12.1	अनरसे हैं भोर के	अनरसे हैं भोर के	—	अनरसे भोर के
1.21.1	सिसु करि सब सुमुख सोआइहौं	सिसु करि सब सुमुख सो आइ हौं	—	सब सुअन सुचित सुष स्वाईहौं
1.21.2–3	हँसनि····हलराइहौं तक दोनों पंक्तियां हैं	दोनों पंक्तियां हैं	—	हँसनि ···हलराइहौं तक दोनों पंक्तियाँ नहीं हैं
1.29.1	भूप के बड़े भाग	भूप के बड़े भाग	—	भूपति के बड़े भाग
1.38.3	जै जै जै जैति	जय जय जय जयति	—	जै जै जै जैति
1.44.1	छोटिअै	छोटिअै	—	छोटी सी
1.50.3	अलप दिननि	अलप दिननि	—	अलप दिनन्ह
1.62.4	अटनि आरोहैं	अटनि आरोहैं	—	अटनि अवरोहै
1.65.1	ए कौंन	ए कौंन	—	ए दोउ कौंन

आ—समानताएँ

काण्ड पद पंक्ति	गी. 'क'	गी. 'ख'	गी. 'ग'	गी. 'घ'
1.9.	मैआ, भैआ-आ	मैआ, भैआ-सर्वत्र-आ	—	सर्वत्र-आ
1.31.1	कंदा, चंदा-आ	कंदा, चंदा-आ	—	कंदा, चंदा-आ
1.34.	कनिआँ, तनिआँ-आँ	अंत में सर्वत्र-आँ	—	अंत में सर्वत्र-आँ
1.36.1	भक्तन	भक्तन	—	भक्तन
1.50.3	अैहैं	अैहैं	—	अैहैं
1.81.1	औसर	औसर	—	औसर
1.105.4	इत " हिलोरी तक दोनों पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	—	दोनों पंक्तियां नहीं हैं
2.24.1	अैन	अैन	—	अैन
5.9.1	सुमिरन	सुमिरन	—	सुमिरन
5.29.3	नाहिन""वाज के तक नहीं हैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	—	दोनों पक्तियां नहीं हैं
5.39.6	अैसे	अैसे	अैसे	अैसे
7.11.1	सिहाई	सिहाई	—	सिहाई

हस्तलिखित प्रतियां 'क', 'ख', 'ग', 'घ' में प्राप्त वैविध्यों पर निम्न शीर्षकों में विचार किया जा सकता है।

(1) **स्वर परिवर्तन और स्वर संधि**—उपर्युक्त चारों प्रतियों में यत्र-तत्र स्वरसम्बन्धी परिवर्तन मिले हैं उनमें 'ग' प्रति के उदाहरण बहुत कम हैं क्योंकि इस प्रति में प्रतिलिपिकार द्वारा केवल पचास पद बीच-बीच के लिए गए हैं और जहां जहाँ 'घ' प्रति में असमानताएँ हैं वे पद 'ग' प्रति में नहीं मिले अतः इनकी संख्या अति न्यून है—यथा—सवै≃सवइ≃सबै (1.1.10); गावैं≃गावहि≃गावैं≃गावैं (1.4.1); जै जै जै जैति≃जय जय जय जयति≃जै जै जै जैति (1.38.3); अैन, मैन≃अयन मयन≃अैन मैन (7.3.1); झूलहिं झुलावहिं≃झूलहिं झुलावहिं≃भूलैं भुलावैं (7,18.5); उजिआरे, दिआ≃उजियारे, दिआ≃उजियारे, दिआ (1.68.1-11) सुअन भुअन≃सुवन भुवन≃सुअन भुअन (1.83); जाइकैं, अघाइ कैं≃जाइकै, अघाइकैं≃जाए कैं, अघाए कैं (1.70); आइ≃आइ≃आए (5.31.1); लाय≃लाय≃लाए (6.5.1); करि आई≃करि आई≃करि आए (7.13.9); तुम्हारे≃तुम्हारे≃तुम्हारो (7.38.1); अगनित≃अगनित≃अग्नित (2.15.4); मरम निसिचर≃मरम निसिचर≃मर्म निश्चर (6.3.1-3)

प्राप्त वैविध्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि जहाँ 'क' प्रति में ऐ तथा मध्य में आ; इ-य स्वरों का लेखन है 'ख' प्रति में उन स्थानों पर क्रमशः अइ; मध्य में य; व स्वर हैं और 'घ' प्रति में क्रमशः वहाँ ऐ, मध्य में अ; ए स्वरों का प्रयोग है। पूर्व अध्ययन के आधार पर 'ग' प्रति में भी क्रमशः 'क' प्रति के इ के स्थान पर य; ऐ के स्थान पर अय; औ के स्थान पर अव का लेखन मिलता है।

इन स्वर परिवर्तनों के कारण पदों के भावात्मक गठन और अर्थ व्यवस्था पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है। ये परिवर्तन तो लिपिकार की आदत के अनुसार हो सकते हैं इसके अतिरिक्त लिपिकार की लेखन शैली व उसकी क्षेत्रीय प्रवृत्ति आदि कारण भी इसमें सहायक हो सकते है क्योंकि ब्राह्मी लिपि की भी तो अनेक शाखाएँ हैं और जो प्रतिलिपि जहाँ हुई है वह उनसे प्रभावित हुए बिना बच नहीं सकी है। घ' प्रति में सर्वत्र अल्प, निश्चर, आकर्पति, वर्नत, गुर्विनी, पर्म आदि अनेक इस प्रकार के शब्दों का लेखन अलप, निसिचर, आकरपति, वरनत, गुरुविनी, परम आदि के स्थानों पर मिला है—इस प्रवृत्ति का कारण स्वर भक्ति का लोप हो सकता है जिसे उच्चारण की क्षिप्रता भी कहा जा सकता है और जो क्षेत्रीय प्रवृत्ति प्रतीत होती है।

(2) **एक पदग्राम, वाक्य के स्थान पर भिन्न पद ग्राम, वाक्य अथवा लोप**

हस्तलिखित प्रतियां 'क' 'ख' और 'घ' में निम्नलिखित असमानताएँ मिलती हैं—

अनरसे हैं भोर≃अनरसे हैं भोर≃अनरसे भोर (1.12.1); सिसु करि सब सुमुख सोआइहौं≃सिसु करि सब सुमुख सोआइहौं≃सब सुअन सुचित सुप स्वाई हो (1.21.1); छोटिऐ≃छोटिऐ≃छोटी सी (1.44.1); अटनि आरोहैं≃अटनि आरोहैं≃अटनि अवरोहैं (1.62.4); प्राण पियारे≃प्राण पियारे≃प्रानहुँ तें प्यारे (1.68.12); पेषनो सो पेषन≃पेषनों सो पेषन≃पेपन को पेपन (1.73.1); कै ए≃कै ए≃की ये (1.78.2); मुदित≃मुदित≃प्रमुदित (1.110.1); मुरारी≃मुरारी≃असुरारी (2.4.5); मोको≃मोको≃मोकहुँ (2.12.1); हिय≃हिय≃हृद (2.84.3); तौनौं≃तौलों≃तौलगि (5.14.1); नीच तें नीच≃नीच तें नीच≃मीच तें नीच (5.15.3); सरसावति≃सरवसति≃सरवसति (7.17.5): हँसनि""हलराइ.हौं, दोनों पंक्तियां हैं≃दोनों पक्तियां हैं≃दोनों पंक्तियां नहीं हैं (1.21); रिपिवर""अलिगिनी तक आठ पंक्तियां नहीं हैं≃आठौं पक्तियां नहीं हैं≃आठौं पक्तियां हैं (2.43); कपि""छायो-तक प्रथम दो पक्तियां हैं≃दोनों पंक्तियां हैं≃दोनों पंक्तिया नहीं हैं (5.15.)

पूर्व प्रतियों की तुलना में गी. 'घ' में प्राप्त असमानताओं पर निम्न रूपों में विचार किया जा सकता है—

लिपिजन्य विकृति—'क' एवं 'ख' प्रति के 'पेपनो सो पेषन' के स्थान पर गी० 'घ' मे 'पेपन को पेपन' पाठ मिला है यथा—"पेपन को पेपन चले हैं पुर नर नारि" (1.73.1) अर्थात्, नगर के नर नारी पेपन को पेपन—अलौकिक दृश्य को देखने के लिए चले हैं—पाठ अधिक श्रेष्ठ है अपेक्षाकृत पेपन (तमाशा) सा देखने के—

गी. 'क' व 'ख' के नीच के स्थान पर गी. 'घ' में 'मीच' शब्द का प्रयोग है यथा "मीच तें नीच लगी अमरता" (5.15.3) भावार्थ है कि हनुमानजी को अपनी अमरता मृत्यु से भी बुरी लगी—गीता प्रेस गोरखपुर की कृति में भी भावार्थ यही लिखा है यद्यपि उस में भी 'नीच' शब्द प्रयुक्त है। लिपि भ्रम के कारण सब प्रतियों में 'मीच' के स्थान पर 'नीच हो गया लगता है—अतः 'घ' प्रति का पाठ 'मीच' ही अधिक उपयुक्त है।

पर्याय—'क' व 'ख' प्रति में प्राप्त छोटिऐ; प्राण पियारे; कैये; मुदित; मुरारी; मोको; हिय; तौनौं और आरोहैं के स्थान पर 'घ' प्रति में क्रमशः छोटी सी (छोटी सी धनुहियाँ 1.44.1); प्रानहुँ तें प्यारे (तुलसी के प्रानहुँ ते प्यारे 1.68.12); कीये " कीये (कीये सदा वसहु इन्ह नैनन्हि को ये नैंन जाहु जित ये री 1.78.2); प्रमुदित (प्रमुदित मन आरती करैं माता 1.110,1); असुरारी (फिरि फिर आवन कह्यो असुरारी 2.4.5); मोकहुँ (मोकहुँ विधुवदन बिलोकन दीजै-2.12.1); हृद (मेरोइ हृद कठोर करिवे कहँ विधु कहुँ कुलिश लह्यो (2.84.3);

तौ लगि (तौ लगि मातु आपु नीके रहिबो 5 14 1); अवरोहै (लोग अटनि अवरोह 1 62.4) पाठ मिलते है–कहना न होगा कि ये सभी पर्याय ह अतः दोनो हा पाठ सभव है।

स्थानविपर्यय — गी 'क' मे प्र प्त 'सरसावति' के स्थान पर गी० 'ख' एव 'घ' मे 'सरवसति' पाठ मिलता है यथा–(पीन बसन कटि कसे सरवसति 7 17·5) भावार्थ है— कटि मे कसा हुआ पीत बसन सुशोभित हो रहा है। सरवसति' शब्द का अर्थ यहाँ सगत नही लग रहा है अतः प्रस्तुत पाठ 'क' प्रनि का 'सरसावति' ही उचित है–अनुमान है–स्थानविपर्यय से 'सव' के स्थान मे 'वस' हो गया है जो प्रतिलिपिकार की भूल के कारण सभव है।

लोप — 'घ' प्रनि मे यत्र-तत्र शब्दो व वाक्यो का लोप हो गया है यथा– 1·12·1 मे 'है' का लोप, हँसनि······ हलराइहो तक दो पक्तियो का लाप 1·21 मे कपि ······छायो तक प्रथम दो पक्तियो का 5·15·1 मे लोप मिला है–ऐसे लोप लिपिकार के प्रमाद के कारण सभव है, अथवा उसने जानवूझकर उन स्थलो को छोड़ दिया है, प्रतिलिपि मे स्थान नही दिया–कहना कठिन है।

समानताएँ—हस्तलिखित प्रतियाँ 'क', 'ख', 'ग', 'घ' मे निम्न रूपो मे समानताएँ मिली हे—

(अ) य के स्थान मे अ–यथा मँआ, भैआ–

(आ) ईकारान्त व० व०–याँ के स्थान मे, आँ–पैजनिआँ········

(इ) ऐ के स्थ'न मे अ ँ–यथा–अ ँन, अँहै········

(ई) सभी प्रतियो मे 5·29·3 की दो पक्तियो का लोप ······

निष्कर्ष—यद्यपि सभी प्रतियो मे कुछ-कुछ समानताएँ व असमानताएँ मिली है जिनका कोई विशेष कारण प्रतीत नही होता लेकिन 'घ' प्रति मे 2 43 वें पद मे द्वितीय व तृतीय अंतरा (आठ पक्तियाँ) अधिक मिली हैं जो अन्य पूर्व प्रतियो मे नही है उन प्रतियो मे केवल प्रथम व चतुर्थ अतरा ही मिला है। गीता प्रेस गोरखपुर एकादश सस्करण की प्रति मे भी 'घ' प्रति के समान ही 16 पक्तिया अर्थात् चारौ अतरा मिले है, फिर भी इस अतर को छोडकर ये 'क' प्रति 'ग' प्रति सेसाम्य रखती है। अतः यह कहा जा सकता है कि यह प्रति 'क' से मिलती है यद्यपि इसकी कुछ अपनी विशेषताएँ है अतः ये एक ही आदर्श की प्रतियाँ हो सकती हैं और एक दूसरे की पूर्ण प्रतिलिपि नही हैं।

———

1.2.4. 'क', 'ख', 'ग', 'घ' और 'च' हस्तलिखित प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन

अ–असमानतायें

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'
3.11.2	दोउ	दोउ	–	दोउ	द्वौ
3.11.4	गीध	गीध	–	गीध	गृद्ध
3.12.2	हुतो जो सकल	हुतो जो सकल	–	हुतो जो सकल	हुतो सकल
3.12.3	वेप	वेप	–	वेप	भेप
5.14.2	जीअत	जियतहि	–	जीअत	जिअतहि
5.35.4	रज परमानु है	रज परमानु है	–	रज परमानु है	तर परवान है
6.4.1	इतो	इते	–	एतो	इते
6.17.2	निज	निज	–	निज	निसि
7.38.1	–	तुम्हारे	तुम्हारे	तुम्हारो	तीहारो
7.38.1	–	अज	स्वै	अज	प्रभु
7.38.8	औरो	औरहु	औरो	औरो	औरो

आ—समानताएँ

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'
5.9.1	कहो	कहो	—	कहो	कहो
5.9.3	सुमिरन	सुमिरन	—	सुमिरन	सुमिरन
5.29.3	दो पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है
7.11.1	सिहाई	सिहाई	—	सिहाई	सिहाई
7.18.1	जैश्रे	जैश्रे	—	जैश्रे	जैश्रे

हस्त लिखित प्रतियां 'क', 'ख', 'ग', 'घ' और 'च' में प्राप्त असमानताएं इस प्रकार है—

दोउ≃दोउ≃—≃दोउ≃द्वौ (3.11.2)
गीध≃गीध≃-≃गीध≃गृद्ध (3.11.4)
वेप≃वेप≃—≃वेप≃भेप (3.12.3)
जीअत≃जियतहि≃—≃जीअत≃जिअतहि (5.14.2)
इतो≃इते≃—≃एतो≃इते (6.4.1)
—≃तुम्हारे≃तुम्हारे≃तुम्हारो≃तीहारो (7.38.1 ·
औरो≃ओरेहु≃औरो≃ओरो≃औरो (7.38·8)
रज परमानु≃रजपरमानु≃—≃रजपरमानु≃तरपरवान (7.35.4)
निज≃निज≃—≃निज≃निसि (6.17.2)
—≃अज≃स्वै≃अज≃प्रभु (7.38.1)
हुतो जो सकल≃हुतो जो सकल≃—≃हुतो जो सकल≃हुतो सकल (3.12 2)

ऊपर 'च' प्रति में यत्र-तत्र स्वर संबंधी परिवर्तन मिले हैं लेकिन इस प्रसंग में कोई निश्चित व्यवस्था प्रतीत नहीं होती ऐसे वैविध्य तो क्षेत्रीय प्रवृत्ति अथवा लेखन शैली के कारण संभव हैं।

एक-दो स्थान पर 'च' प्रति में लिपिभ्रम या स्थान विपर्यय के कारण कुछ परिवर्तन हो गए हैं, यथा—

पूर्व प्रतियों के 'रज परमानु' के स्थान पर इस प्रति में 'तर परवान' पाठ है यथा –"जनगुन रज गिरि गनि, सकुचत निज गुन गिरि तर परवान है" (5. 35.4)

यहाँ 'परमानु' और 'परवान', का अर्थ समान है 'रज' के स्थान विपर्यय से (जर और 'ज' में 'त' का भ्रम होने के कारण 'तर' प्रयोग हो गया है—संदर्भ के अनुसार 'रज परमानु' पाठ उचित ही लगता है, 'तर परवान' की अपेक्षा—

पूर्व प्रतियों के 'निज' के स्थान पर इस प्रति में 'निसि' प्रयोग है यथा "निसि वासरनि वरप पुरवेगो विधि, मेरे तहाँ करम कृत क्वैहैं" (6.17.2)

यहाँ 'वासरनि वरष' के साथ 'निज' की अपेक्षा 'निसि' का प्रयोग सार्थक है। संभव है पूर्व प्रतियों की मूल प्रति में लिपिभ्रम से 'निज' प्रयोग हो गया होगा और वही बाद की प्रति में चला आ रहा होगा। इस में प्रतिलिपिकार ने त्रुटि सुधार कर लिया होगा। अतः 'निसि' पाठ हो गया है अतः यही उपयुक्त पाठ है।

गी. 'ख' के 'अज' के स्थान पर 'ग' प्रति में 'स्वै' पाठ व 'घ' प्रति में 'अज' पाठ मिलता है। 'च' प्रति में उसके स्थान पर 'प्रभु' का प्रयोग है। 'क' प्रति में पृष्ठ फटा होने के कारण यह पंक्ति नहीं मिली है। गीताप्रेस गोरखपुर की प्रति में भी 'अज' है यथा—"अति उदार अवतार मनुज वपु धरे"

ब्रह्म अज अविनासी" (7.38 1)

'अज', 'स्वै'; 'प्रभु'—तीनों पर्याय हैं सभी ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त हैं अतः संभव प्रयोग है—

· अन्य प्रतियों के 'हुतो जो सकल जग साखी" के स्थान पर 'च' प्रति में 'हुतो सकल जग साखी' (3.12.2) प्रयोग मिला है। यहाँ 'जो' का कोई अर्थ भी नहीं है, शायद सुधार कर लिया गया होगा।

निष्कर्ष—'च' प्रति खडित है और 211 वें पद अर्थात् गी० गो० वाली प्रति के अरण्य काण्ड के 11 वे पद से प्रारम्भ है। इस प्रति के अन्तिम पद की संख्या 331 है जबकि अन्य प्रतियों में 330 पद हैं और बढ़ा हुआ पद भी अरण्य काण्ड के 11 वें पद के पूर्व ही है अन्य प्रतियों के अनुसार (बा० 110+अयो० 89+अर० 11=210) अरण्य काण्ड के 11 वे पद की संख्या 210 होनी चाहिए, निश्चित है कि बालकाण्ड अथवा अयोध्याकाण्ड में एक पद की वृद्धि हुई है। किसी भी प्रति ('ग' प्रति को छोड़कर) मे अयोध्याकाण्ड के पदों की सख्या असमान नहीं है। 'ख' प्रति में बा० मे 30 वा पद अन्य प्रतियों से अधिक है (यद्यपि इसमें 30 के बाद के दो पदों को 31 नवर ही डालकर बालकाण्ड मे 110 पद ही किए गए हैं) अतः ये संभावना हो सकती है कि 'च' प्रति और 'ख' प्रति एक ही कुल की प्रतिलिपि हों और यहाँ प्रतिलिपिकार ने उसे अलग-अलग नंबर देकर बालकाण्ड में 111 पद कर दिए हों। यदि ऐसा है तो ये प्रति 'ख' प्रति के कुल की मानी जाएगी और इस प्रकार 'ख' और 'च' प्रतियाँ एक कुल की कही जाएंगी।

1.2.5. 'क', 'ख', 'ग', 'घ', 'च' और 'छ' प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन

अ-असमानतायें

काण्डपद-पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'
1.2.10	बढ़हु	बढ़हु	–	बढ़हु	–	बढ़ी
1.2.19	जव	जव	–	जव	–	जौ
1.4.1	गावैं	गावहिं	गावैं	गावैं	–	गावहिं
1.17.1	आगमी एकु	आगमी एक	–	अगमी एक	–	आगम ,येक
1.24.1	झूलत	झूलत	–	झूलत	–	हुलसत
1.25.5	इकटक	इकटक	–	एकटक	–	येकटक
1.44.1	छोटिअै	छोटिअै	–	छोटी सी	–	छोटिय
1.45.1	इकओर	इकओर	यकवोर	यकओर	–	,येक वोर
1.47.2	अवतार	अवतार	अवतार	अवतार	–	ओतार
1.58.2	आचरज	आचरज	–	आचरज	–	आचर्ज
1.73.1	रंगभूमि	रंगभूमि	–	रंगभूमि	–	रंगभुवन
1.79.1	भलोईकियो	भलोईकियो	–	भलोईकियो	–	भलोकीयो
1.80.6	पूरा पद है	पूरा पद है	–	पूरा पद है	–	अन्तिम 2½ पंक्तियाँ नहीं हैं
1.84.3	वीछे वीछे	वीछे वीछे	–	वीछे वीछे	–	वाँछि वाँछि

काण्ड पद पंक्ति		'फ'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'
1.86.5	पन को न मोह	पन को न मोह	—	पन को न मोह	—	प्रन की न मोहि
1.88.5	एकै एक	एकहि एक	—	एकै एक	—	येकहि येक
1.96.1	जैमाल	जयमाल	—	जैमाल	—	जैमाल
1.107.3	तिअनि	वैयनि	तियनि	तिअनि	—	वैयनि
1.108.2	सुसदसि	सुमदसि	सुसदसि	सुसदसि	—	सुद्रिस
2.1.1	कह्यो	कह्यो	—	कह्यो	—	कहेउ
2.15.4	अगनित	अगनित	—	अग्नित	—	अग्नित
2.20.1	थोरी ही वैस	थोरे ही वयस	—	थोरी ही वैस	—	थोरे ही वैस
2.32.2	निफन निराए	नीके न निरए	—	निफन निराए	—	निफल निराए
2.33.2	असन अजीरन को	अमीसन अजीरन को	—	असन अजीरन को	—	आसन अजीरन को
2.41.4	बिगरि बिगरि जहाँ जहाँ जाकी रही है	बिगरि जहाँ ई जहाँ जाकी जैसी रही है	—	बिगरि बिगरि जहाँ जाकी जैसी रही है	—	बिगरि जहाँ जहाँ जाकी रही है
2.43.1	पय	पय	—	पय	—	पै
2.47.13	नचहि	नटहि	—	नचहि	—	नटहिं
2.51.1	ओर	ओर	—	वोर	—	वार
2.52.1	निरपति	निरपति	—	निरपति	—	रापति
2.61.1	तोहू, मोहू	तोहू मोहू	—	तोहू, मोहू	—	तोहि,मोहि

काण्ड पद पक्ति	'क	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'
2.62.2	षल वच विसिपन बांची	पल वचन विसिष तैं बांची	–	पल बच बिसिषन बांची	–	षल बचन बिसिप तैं बांची
2.62 3	जोइ	जोइ	–	जोइ	–	ज्वइ
2.71.3	मेरो जीवन जानिय ग्रैसोइजिग्रैजैसेग्रहि	मेरो पुनि जीवन जानिय जिय जैसे	–	मोरे जीवन जा निग्र ग्रैसोइ जैसे ग्रहि	–	मोरे पुनि जीवन जानिये ग्रैस्वइजियजैसोग्रहि
3.5.1	ग्ररून कंज वरन	ग्ररूण वरण च	–	चरन सोक हरन	–	चरन सोक हरन अरूण
	चरन सोक हरन	रन सोक हरन	–	ग्ररूण कंज वरन	–	कंज वरन
3.5.2	पूरा पद है	पूरा पद है	–	पूरा पद है	–	सुन्दरि····मेखनि-तक पंक्ति का ग्रभाव
3.12.4	दोउ	दोउ	–	दोउ	द्वो	द्वो
5.19.1	ग्रतिहि	अतिहि	–	ग्रतिहि	ग्रतिहि	ग्रतिहिय
5 40.3	कोउ उलटो कोउ	कोउ उलटो कोउ	कोउ उलटो कोउ	कोउ उलटो कोउ	कोउ उलटो कोउ	क्यौं उलटो क्यौं
5 42 2	निरगुनी	निरगुनी	निर्गुनी	पद नहीं है	निरगुनी	निर्गुणी
6.4.1	बुझ'ग्रो	बुझायो	–	बुझायो	बुझायो	समुझायो
6.5.4	सीपर	सीपर	–	सीपर	सीपर	सिर पिर
6.7.3	संघाती	संघाती	–	संघाती	संघाती	सती

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'
6.9.9	दई हाँक हनुमान	पंक्ति नहीं है	—	पुस्तक में नही है	दई हाँक हनुमान	हहा कहा हनुमान
7.3.1	ऐन चैन मैन	अयन चयन मयन	—	ऐन चैन मैन	ऐन चैन मैन	ऐन चैन मैन
7.8.5	कोउ	कोउ	—	कोउ	कोउ	क्यों
7.13.9	करि आई	करि आई	करि आई	करि आए	करि आई	करिअ
7.18.5	वलय	वलय	—	वलय	वलै	वलै
7.20.1	समै	समय	—	समै	समै	समै
7.21.3	किसलयकुसुमित	किसिलय कुसुमित	—	किसलय कुसुमित	किसलथ कुसुमित	कसलै कुस्मित
7.23.2-4	पूरा पद है	पूरा पद है	—	पूरा पद है	पूरा पद है	नगर …विधि वृन्द-रामपुरी द्वन्द तक पंक्तियां नहीं है—
7.28.1	आइ	आइ	—	आए	आइ	आय
7.38.1	पंक्ति नहीं है	अज	स्वै	अज	प्रभु	स्वै

आ-समानताएं

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'
1.50.3	अैहै	अैहै	–	अैहै	–	अैहै
1.81.1	औसर	औसर	–	औसर	–	औसर
1.105.4	दो पंक्तियाँनहींहैं	दो पंक्तियाँ नहीं हैं	–	दोनों पंक्तियाँ नहीं हैं	–	दोनों पंक्तियाँ नहीं है
2.24.1	अैन	अैन	–	अैन	–	अैन
5.9.1	कहो	कहो	–	कहो	कहो	कहो
5.9.3	सुमिरन	सुमिरन	–	सुमिरन	सुमिरन	सुमिरन
5.29.3	दो पंक्तियाँ नहींहैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	–	दोनों पंक्तियां नहींहैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां नहीं हैं
7.11.1	सिहाई	सिहाई	–	सिहाई	सिहाई	सिहाई

हस्तलिखित प्रतियां 'क', 'ख' 'ग' 'घ' 'च' और 'छ' में प्राप्त वैविध्यों पर निम्न शीर्षकों में विचार किया जा सकता है—

(1) **स्वर परिवर्तन और स्वर संधि**—पूर्व प्रतियाँ 'क' 'ख' 'ग' 'घ' और 'च' की तुलना में 'छ' प्रति में प्राप्त स्वर परिवर्तन व स्वर संधि इस प्रकार हैं—

(अ) अै अथवा अय के स्थान पर अै का प्रयोग यथा–जैमाल (1.96.1); वैस (2.20.1); पै (2.43.1); वलै (7.18.5); समै (7.20.1); किसलै (7.21.3);

(आ) औ अथवा अव के स्थान पर 'औ' का प्रयोग यथा–बढ़ौ (1.2.10); औतार (1.47.2); जौ (1.2.19);

(इ) इ अथवा ए के स्थान पर 'य्' का प्रयोग यथा–आय (7.28.1); येकटक (1.25.5); येक (1.88.5)

(ई) ओ अथवा औ के स्थान पर 'वो' अथवा 'वा' का प्रयोग यथा–वोर (1.45.1); वार (2.51.1);

(उ) जोइ अैसोइ तथा दोउ के स्थान पर ज्वइ (2.62.3); अैस्वइ (2.71.3) तथा द्वौ (3.12.4) का प्रयोग

(ऊ) कोउ के स्थान पर क्यौं (5.40.3 तथा 7.8.5) का प्रयोग

(ए) अगनित आचरज, गिरगुनी, कुसुमित आदि के स्थान पर अग्नित (2.15.4); आचर्ज (1.58.2); निर्गुणी (5.42.2): कुस्मित (7.21.3) आदि का प्रयोग।

यद्यपि इस प्रति की पुष्पिका से लिपिकार, लिपिकाल एवं लिपि स्थान में से किसी की भी सूचना नहीं मिलती है फिर भी प्राप्त स्वर परिवर्तनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस प्रति पर पूर्वी हिन्दी की बोलियों की स्पष्ट झलक है जैसे अवधी के ही अन्तर्गत एक सीमित क्षेत्र जहाँ 'बैसवाड़ी बोली' बोली जाती है वहाँ पर 'इ' अथवा 'ए' के स्थान पर 'य' और 'ओ' या 'औ' के स्थान पर 'वो' या 'वा' का उच्चारण मिलता है। 'कोउ' के स्थान पर क्यौं तथा ज्वइ अैस्वइ जैसे प्रयोग भी पूर्वी बोलियों के परिणामस्वरूप हैं।

'अय' के स्थान पर अै के उच्चारण में एकरूपता नहीं हैं जैसे–इसी प्रति में गावैं के स्थान में गावहि (1.4.1); एकै एक के स्थान में 'येकहि येक' (1.85.5) आदि प्रयोग भी विद्यमान हैं।

अग्नित, आचर्ज, निर्गुणी आदि प्रयोग स्वर भक्ति के लोप का परिणाम है।

(2) **एक पदग्राम अथवा वाक्य के स्थान पर भिन्न पदग्राम अथवा वाक्य**—

'झूलत राम पालने सोहैं (1.24 1) में अन्य प्रतियों के 'झूलत' के स्थान पर 'छ' प्रति में 'हुलसत' प्रयोग है। यहां 'झूलत' पाठ उचित लगता है क्योंकि

पालने का संवध 'झूलने' से 'हुलसने' की अपेक्षा अधिक लगता है और सोहैं से और अधिक।

पूर्व प्रतियों के 'सुपदसि' के स्थान में इस प्रति में 'सुद्रिस' प्रयोग है यथा कंजदलनि पर मनहुँ भौम दस वैठे अचल सुद्रिस वनाई (1.108.2) अर्थात् मानों कंज दलों पर दस मगल ग्रह निश्चल होकर अपनी सभा बना कर बैठे हैं सदसि का अर्थ सभा है लेकिन द्रिस का अर्थ 'दिशा' है जो यहां संगत प्रतीत नहीं होता अतः सुसदसि पाठ ही उचित प्रतीत होता है।

'क' व 'घ' प्रति में 'निफन', 'ख' प्रति में 'नीकेन' तथा इस प्रति में 'निफल' प्रयोग मिला है यथा 'जोते विनु वए विनु निफल निराए विनु (2 32.2) अर्थात् ''सुकृत रूप खेत में सुख रूप धान बिना बोए, जोते और अच्छी तरह निराए हीफूल फल गए' यहां 'नीके' और 'निफन' पर्याय हैं जिनका अर्थ है अच्छी तरह से लेकिन 'निफल का अर्थ है 'व्यर्थ' जो यहां संगत नहीं लगता अतः पूर्व प्रतियों में प्राप्त 'निफन' ही अनुकूल अर्थ प्रतीत होता है।

'क' व 'घ' प्रति में असन अजीरन को', 'ख' प्रति में 'अमीसन अजीरन को' तथा 'छ' प्रति में 'आसन अजीरन को' मिला है यथा 'आसन अजीरन को समुझि तिलक तज्यो विपिन गवनु भले भूखे को सुनाजु सो' (2.33.2) अर्थात् 'राम ने अजीर्ण के भोजन के समान तिलक त्याग कर भूखे के लिए नाज के समान वन-गमन स्वीकार किया' यहां दूसरी पंक्ति में 'सुनाजु' आया है अतः पूर्व पंक्ति में प्राप्त 'असन' ही अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है 'अमीसन' अथवा 'आसन' नहीं।

पूर्व प्रतियों के 'निरषति' के स्थान में इस प्रति में 'राषति' प्रयोग मिलता है यथा जननी निरषति बान धनुहियाँ बार-बार उर नैननि लावति प्रभू जी की ललित पनहियाँ' (2.52.1) यहां 'रापति' भी हो सकता है लेकिन अर्थ श्री भावुकता को देखते हुए 'निरषति' अपेक्षाकृत उपयुक्त प्रतीत होता है।

अन्य प्रतियों के 'सीपर के स्थान पर 'छ' प्रति में 'सिर पर' प्रयोग मिलता है यथा 'लागति सांगि विभीषन ही पर सीपर आपु भए हैं' (6.5.4) अर्थात् ,विभीषन के हृदय पर शक्ति लगने ही वाली थी कि उसकी रक्षा हेतु आप ढाल (सीपर) वन गए यहां 'सिर पर'' का कुछ औचित्य प्रतीत नहीं होता– शक्ति (सांग) का संबंध प्रत्यक्ष रूप से सीपर (ढाल) से लगता है अतः 'सीपर' ही उचित प्रतीत होता है।

'गिरि कानन जैहैं साखामृग हौं पुनि अनुज संघाती' (6.7.3) में 'संघाती' के स्थान पर इस प्रति में 'सती' प्रयोग है— अर्थ व छन्द की दृष्टि में 'संघाती' पाठ अधिक उचित प्रतीत होता है 'सती' नहीं।

(3) **पर्याय**—पूर्व प्रतियों के 'आगमी'; रंगभूमि 'वीछे वीछे'; 'पन को न मोह';

'निअ्रनि'; 'नचहि'; 'पल बच विसिषन वांची'; मेरो जीवन जानिय ग्रैसोइ'; 'अरुन कंज वरन चरन सोक हरन'; 'अतिहि'; 'बुझायो'; 'दई हाँक हनुमान' और 'स्वै' के स्थानों पर इस प्रति में 'आगम' (1 17.1); 'रंगभुवन' (1 73.1); 'वाँछि वाँछि' (1.84 3); 'प्रन की न मोहि' (1.86.5); 'वैअ्रनि' (1 107.3'; 'नटहि' (2.47 12); पल बचन विसिष नें वांची' (2.62.2); 'मोरे पुनि जीवन जानिये अैस्वइ जिय जैसो अहि' (2.71.3); 'चरन सोक हरन अरुन कंज वरन' (3.5.1); 'अतिहिय' (5.19.1); समुझायो (6.4.1); 'हहा कहा हनुमान' (6.9.9); तथा 'स्वै' (7.38.1) पाठ मिले हैं।

कहना न होगा कि सभी प्रयोग एक दूसरे के पर्याय है जो लिपिभ्रम अथवा स्थान विपर्यय के कारण हुए लगते हैं अतः एक के स्थान में दूसरे का प्रयोग संभव है।

(4) **लोप**—'प्रति में' अवसि राम राजीव विलोचन "(1 80) के पश्चात् 2½ पंक्तियां नहीं है।

सुन्दर..........मेखनि (3 5.2) तक एक पंक्ति लुप्त है। नगर रचना.... ....विवि बृंद (7.23.2) तथा रामपुरी.............. वृंद (7 23.4) तक दो पंक्तियां लुप्त हैं।

ये लोप लिपिकार के प्रमाद के कारण हुए लगते हैं।

निष्कर्ष—इक प्रति की लिखावट बहुत स्पष्ट व प्रति सुपाठ्य है। अनुमान होता है कि ये प्रति 1900 के बाद की है। अन्य प्रतियों की तुलना में इस प्रति में असमानताओं के होते हुए भी ये अपनी पूर्व प्रतियों से ही मिलती है अतः यह कहा जा सकता है कि इस प्रति का स्रोत 'क' प्रति या उसी के वंश की कोई प्रति रही है जिससे इसकी प्रतिलिपि हुई है अतः यह उसी कुल की प्रति है अन्य किसी की नहीं।

'क' 'ख' 'ग' 'घ' 'च' 'छ' और 'ज' हस्तलिखित प्रतियों का तुलनात्मक अध्ययन

अ—असमानताएं

काण्ड-पद-पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'	'ज'
1.1,7	जिवौ	जिवौ	—	जिवो	—	—	जिवहि
1.1.10	सबै	सबइ	—	सबै	—	—	सबै
1.4.1	गावैं	गावहि	गावैं	गावैं	—	गावहि	गावहि
1.29.1	भूप के बड़े भाग	भूप के बड़े भाग	—	भूपति के बड़े भाग	—	भूप के वड़े भाग	बड़ो भूप को भाग
1.44.1	छोटिऔ	छोटिऔ	—	छोटी सी	—	छोटिय	छोटिय
1.45.1	इक ओर	इक ओर	यक वोर	यक ओर	—	येक वोर	येक ओर
1.90.7	आकरष्यो	आकरष्यो	—	आकर्षेउ	—	आकर्ष्यो	आकर्षिव
2.11.1	धकधकी	धकधकी	—	धकधकी	—	धकधकी	धकधक
2.18.2	मध्य	मध्य	—	मध्य	—	मध्य	मदिध
2.23.3	फेरत	फेरत	—	फेरत	—	फेरत	हेरत
2.39.1	परौं	परौं	—	परौं	—	परौं	परम
2.60.1	अैसो	अैसे	—	अैसो	—	अैसो	अैसे
2.66.1	सारो	सारो	—	सारो	—	सारो	सारे

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'	'ज'
2.83.2	कबहुं तौ देखति	कबहुं तौ देखति	—	कबहुं तौ देखति	—	कबहुं तौ देखति	कबहुं देखति
3.9.	छाल,बिसाल	ग्रंत मे-ग्र	—	ग्रंत में-ग्र	—	ग्रत में-ग्र	ग्रंत में-ग्रा छाला
3.12.4	दोउ	दोउ	—	दोउ	दौ	दौ	दौ
3.16.4	ग्रैसो	ग्रैसो	—	ग्रैसे	ग्रैसे	ग्रैसे	ग्रैसे
3.17.5	सुग्ररथ	सुग्ररथ	सुग्ररथ	सुग्ररथ	सुग्ररथ	सुग्ररथ	ग्ररथ
3.17.8	प्रदच्छिता	प्रदच्छिता	प्रदछिना	प्रदछिना	प्रदछिना	प्रदछिना	पर दछिना
4.1.3	गए है निर्वाट	गए है निर्वाट	—	गए है निर्वाट	गए है निर्वाट	गए, है निर्वाट	गए निर्वाट
5.9.3	देवि	देवि	—	देवि	देवि	देवि	देख्यो
5.13.3	समाज	समाज	—	समाज	समाज	समाज	नाज
5.16.5	लिए	लिए	—	लिए	लिए	लिए	लिए
5.37.2	काढ़ि साढ़ी लई	काढ़ि मिस साढ़ि लई	काढ़ि साढ़ी लई	काढ़ि साढ़ी लई	काढ़ि साढ़ी लई	काढ़ि साढ़ी लई	काढ़ि मिस साढ़ि लई
5.44.2	तुम्हारे	तुम्हारे	तुम्हारे	पद नहीं है	तुम्हारे	तुम्हारे	तव
5.50.1	सुनि	सुनि	—	सुनि	सुनि	सुनि	सो
6.2.1	तामह	तामहं	—	पद नहीं है	तामहं	तामहं	जामहं

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'	'ज'
6.8	अन्त में ऊं	औं-पावौं लावौं	–	सर्वत्र-औं	पावौं, लाऔं	पावौं, लावौं	पाऊँ, लाऊँ सर्वत्र–ऊँ
7.5 7	काम सतकोटि मद	काम सत-कोटि मद	–	काम सत-कोटि मद	काम सत-कोटि मद	काम सत-कोटि मद	सहस कोटिन्ह मदन
7.6.1	ख़न	ख़न	–	–	ख़न	ख़न	रमण
7.22.2	ओलिन्ह	झोलिन्ह	–	ओलिन्ह	झोलिन्ह	झोलिन्ह	ओलिन्ह
7.2.7	अन्त में-इ रघुराइ-आइ	अन्त में-इ	–	-इ	-इ	-इ	सर्वत्र-ई रघुराई-आई
7.38.1	पंक्ति नहीं है	गावहि	गावत	गावहि	गावहि	गावहि	गावत
7.38.1	पंक्ति नहीं है	ब्रह्म अज	ब्रह्म स्वै	ब्रह्म अज	ब्रह्म प्रभु	ब्रह्म स्वै	धारि उड़ी स्वर
7.38.3	पक्ति नहीं है	भंज्यो	भंज्यो	भंज्यो	भंज्यो	भंज्यो	भंजिव

आ–समानताएं

काण्ड पद पंक्ति	'क'	'ख'	'ग'	'घ'	'च'	'छ'	'ज'
1.50.3	अहैं	अहैं	–	अहैं	–	अहैं	अहैं
1.81.1	औसर	औसर	–	औसर	–	औसर	औसर
1.105.4	दोनों पंक्तियां नहीं है	दो पंक्तियां नहीं है	–	दो पंक्तियां नहीं है	–	दो पंक्तियां नहीं है	दो पंक्तियां नहीं है
2.75.2	अहो	अहो	–	अहो	–	अहो	अहो
5.9-3	सुमिरन	सुमिरन	–	सुमिरन	सुमिरन	सुमिरन	सुमिरन
5.29 3	दो पंक्तियां नहीं है	दो पक्तियां नहीं है	दोनों पक्तियां नहीं है	दो पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियां नहीं है	दोनों पंक्तियाँ नहीं है
7.11.1	सिहाई	सिहाई	–	सिहाई	सिहाई	सिहाई	सिहाई

हस्त लिखित प्रतियां 'क'; 'ख'; 'ग'; 'घ'; 'च'; 'छ'; और 'ज' में प्राप्त वैविध्यों पर निम्न रूपों में विचार किया जा सकता है—

(1) स्वर परिवर्तन और स्वर संधि

पूर्व प्रतियां 'क'; 'ख'; 'ग'; 'घ'; 'च' और 'छ' की तुलना में 'ज' प्रति में निम्न स्वर परिवर्तन मिलते हैं

(अ) गावैं, जिवौ के स्थान में गावहि (1.4.1); जिवहि (1.1.7) का प्रयोग

(आ) इक के स्थान में ़येक (1.45.1) का लेखन

(इ) आकर्ष्यो भंज्यो के स्थान में आकर्पिव (1.90.7); भंजिव (7.38.3) का लेखन

(ई) अैसो के स्थान में अैसे (2.60.4): (3.16.4) का लेखन

(उ) पावौं, लावौं आदि के औं के स्थान पर पाऊं, लाऊं (अंत में ऊं) (6.8) का प्रयोग

ऊपर की सभी असमानताएं प्रतिलिपिकार की लेखन शैली अथवा क्षेत्रीय प्रवृत्ति के अनुरूप लगती है ।

(2) एक पदग्राम अथवा वाक्य के स्थान पर भिन्न पदग्राम अथवा वाक्य—

"हेरत हृदय हरत, नहिं फेरत चारू विलोचन कोने" (2.23.3) अन्य प्रतियों के 'फेरत' के स्थान पर 'ज' प्रति मे 'हेरत' का लेखन है–अर्थात् भगवान देखते ही हृदय हर लेते है और मनोहर नेत्र कोने नही फेरते– यहां 'फेरत' अर्थ ही संगत लगता है इस प्रति का 'हेरत' नहीं—

"आली री । पथिक जे एहि पथ परौं सिधाए" (2.39.1) में पूर्व प्रतियों के 'परौं' के स्थान मे इस प्रति मे 'परम' शब्द है—अर्थात् जो पथिक परों (पर्सों) इस मार्ग से गए थे की अपेक्षा 'जो पथिक इस परम (श्रेष्ठ) मार्ग से गए थे' भावार्थ निकलता है जो यहां संभव हो सकता है । हो सकता है इस प्रति की मूल प्रति में 'परम' शब्द रहा होगा—

"सुक सौं गहवर हिये कहै सारो" (2.66.1) में अन्य प्रतियों के 'सारो' के स्थान में इस प्रति में 'सारे' शब्द मिलता है--चूंकि इस पद में शुक और सारो (सारिका) का वार्तालाप है अतः 'सारो' का लेखन उचित हैं—संभव है भूल से 'सारो' के स्थान में 'सारे' हो गया हो ।

"बड़े समाज लाज-भाजन भयो, बड़ो काज बिनु छलतो" (5.13.3) में 'समाज' के स्थान पर इस प्रति ये 'साज' शब्द मिलता है—अर्थात् इस बड़े समाज में में व्यर्थ ही लज्जा का पात्र हुआ—'भावार्थ की दृष्टि से 'समाज' शब्द उचित लगता है—संभव है भूल से लिपिकार ने 'साज' लिख दिया हो—

"लिए ढोल चले संग लोग लागि" (5.16.5) में लिए' के स्थान में इस प्रति में 'दिए' का लेखन है—लोग ढोल लेकर साथ में चल रहे हैं—अतः 'लिए' शब्द उपयुक्त लगता है 'दिए' की अपेक्षा—

'जा दिन बंध्यो सिंधु त्रिजटा सुनि तू संभ्रम आनि मोहि सुनैहैं" (5.50.1) में 'सुनि' के स्थान में इस प्रति में 'सो' पाठ मिलता है। सीताजी कहती है जिस दिन 'समुद बंध गया' यह सुनकर तू जल्दी से आकर मुझे सुनाएगी—इसके स्थान पर 'जिस दिन समुद्र बंधा' (सो) वह तू मुझे सुनाएगी-दोनों ही अर्थ संभव हैं-हो सकता है "सुनि" के स्थान पर "सो" पाठ इस प्रति की मूल प्रति में रहा हो—

"अति उदार अवतार मनुज वपु धरे ब्रह्म अज अविनासी" (7.38.1) हे रघुनाथ आप परम उदार अवतार रूप से मनुष्य देह धारण किए हुए अजन्मा, अविनासी ब्रह्म ही है में अन्य प्रतियों के ब्रह्म अज अविनाशी के स्थान पर इस प्रति में "वार उड़ी स्वर अविनासी" पाठ मिलता है जिसका कुछ औचित्य समझ में नहीं आता। संभव है मूल प्रति में ये अस्पष्ट लिखा हो और सभी प्रतिलिपिकारों ने अपने अपने अनुमान से भिन्न-भिन्न पाठ कर लिए हों क्योंकि अन्य प्रतियों में भी अज के स्थान पर 'स्वै'; 'प्रभु'; और 'अज' तीनो ही पाठ मिलते हैं। अर्थ संगटना की दृष्टि से 'ब्रह्म अज अविनासी' लेखन उचित हैं।

(3) **पर्याय**—पूर्व प्रतियों के 'भूप के वड़ भाग' अथवा 'भूपति के वड़'; भाग धकधकी'; 'सुभ्रख'; 'प्रदक्षिना'; 'काढ़ि साढ़ी लई' तामहुँ; 'काम सतकोटि मद' 'खुन'; झोलिन्ह के स्थान पर इस प्रति में क्रमशः 'वड़ो भूप को भाग' (1.29.1); 'धक धक' (2.11.1); 'अरध' (3.17.5); पर दक्षिना '(3.17.8); 'काढ़ि मिसु साढ़ि लई' (5 37.2); 'जामहुँ (6.2.1); 'सहस कोटिन्ह मदन' (7.5 7) 'रमण' (7.6.1); 'ओलिन्ह' (7.22.2) जैसे प्रयोग मिलते हैं। सभी प्रयोग एक दूसरे के पर्याय हैं अतः एक के स्थान पर दूसरे का प्रयोग संभव है। स्थान विपर्यय अथवा यम के प्रयोग के कारण प्रतिलिपिकार ऐसा कर सकता है।

(4) **लोप**—पूर्व प्रतियों के 'कवहुँ तो देखति" तथा 'गए हैं निघटि' के स्थान पर 'ज' प्रति में 'कवहुँ देखति (2.83.2); 'गए निघटि' (4.1.3) का प्रयोग है। संभव है प्रतिलिपिकार ने जान बूझकर 'तो' और 'है' को छोड़ दिया हो क्योंकि उनसे अर्थ सघटना पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

निष्कर्ष—ये प्रति खंडित है, बीच बीच में कटी हुई है इसके प्रथम व अंतिम पत्र का कुछ भाग तथा 93 से 98; 112 से 115 और 129 से132 तक पत्र गायब हैं। अवस्था भी अति जीर्ण शीर्ण है। लिपिकाल एवं लिपि स्थान भी नहीं लिखा

गया है। केवल इसकी पुष्पिका में लिपिकार का नाम 'सेपुर नस्पापता' लिखा हुआ मिलता है ।

अन्य प्रतियों से जो इसकी असमानताएं हैं उसके आधार पर भी कोई एक निश्चित निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता लेकिन प्रति में किष्किन्धा काण्ड के प्रथम व द्वितीय पद के मध्य और सुन्दर काण्ड के 16 व 17 वे पद के मध्य एक एक अतिरिक्त पद है जो अन्य प्रतियों में नहीं है इससे अनुमान निकलता है कि इस प्रति का स्रोत कोई अन्य प्रति रही होगी जिससे इसकी प्रतिलिपि हुई है तथा 'क'; 'ख' 'ग'; 'घ व 'छ' किसी भी प्रति से या उनकी मूल प्रति से इसकी प्रतिलिपि नहीं हुई ।

———

प्रतियों का वंशवृक्ष और प्रामाणिक पाठ

3.1 प्रतियों का वंशवृक्ष—गीतावली की आठ हस्तलिखित प्रतियों की अन्तरंग परीक्षा करने के पश्चात् ये तथ्य सामने आते हैं।

'क'; 'ग'; 'घ'; और 'छ' प्रतियों का कुल एक है अर्थात् एक ही आदर्श की चार प्रतियां हैं जो अलग-अलग प्रतिलिपिकारों की विशेषताओं के कारण अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है और एक दूसरे की पूर्ण प्रतिलिपि नहीं है।

'ख' और 'च' प्रतियाँ किसी दूसरे आदर्श की दो प्रतियां हैं जिनमें परस्पर पर्याप्त समानताएं है फिर भी एक दूसरे की प्रतिलिपि नहीं है।

'ज' प्रति का आदर्श कोई अन्य तीसरी ही प्रति है जो पूर्व प्रतियों से अलग अपना अस्तित्व रखती है। 'झ' प्रति खंडित व अपूर्ण होने के कारण अध्ययन का विषय नहीं हो सकती—इस प्रकार सब प्रतियों का वंशवृक्ष इस तरह तय किया जा सकता है :—
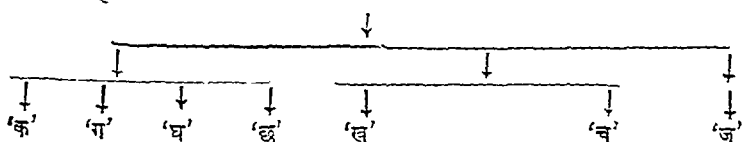
संपादन कार्य में व्यवहृत उपर्युक्त प्रतियों के अतिरिक्त नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्ट में प्राप्त गीतावली की अन्यान्य प्रतियाँ निम्न लिखित हैं—

(1) (अ) खो० रि० 1926-28, पृष्ठ 726-27, संख्या 484 आर महाराजा पुस्तकालय, प्रतापगढ़ (अवध) की संव० 1797 की प्रति—इसकी पुष्पिका विवरण में दी जा चुकी है यह प्रति 'क' प्रति से बहुत मिलती है

(ब) खो० रि० 1926-28, पृष्ठ 726-27, संख्या 484 एस-पं. संकठा प्रसाद अवस्थी, ग्राम-कटरा, जिला-सीतापुर (अवध) सं० 1891 की प्रति-यह प्रति 484 आर की प्रति से बिल्कुल मिलती है।

(2) खो० रि० सन् 1929-31 ई० पृष्ठ 632, संख्या 325 एस 2 ठाकुर सुमेर सिंह मीठना-डाकघर फिरोजाबाद, जिला आगरा, की संवत् 1907 की प्रति

(3) खो० रि० 1904 ग्र. सं. 90 महाराजा बनारस का पुस्तकालय, रामनगर (वाराणसी) की संवत् 1959 की प्रति

(4) खो० रि० 1920-22 ग्र० सं० 198 आई-श्री बैजनाथ हलवाई. पुराना बाजार असनी (फतेहपुर) की संव० 1881 की प्रति—

(5) खो० रि० 1917-19 ग्र. सं. 196 ई० भारती भवन, इलाहाबाद की संव० 1823 की प्रति—

(6) खो० रि० 1923-25 (6 प्रतियां)

(अ) ग्रं० सं० 432 के पं० भगवान दीन मिश्र वैद्य, बहराइच की संव० 1891 की प्रति–

(ब) ग्रं० सं० 432 एल पं० शिवसहाय उलरा डा०–मुसाफिर खाना (सुलतानपुर) की प्रति–

(स) ग्रं० सं० 432 एम–ठा० विश्वनाथ सिंह, रईस, जगनेर डॉ० तिरसुंडी (सुलतानपुर) की प्रति–

(द) ग्रं. सं. 432 एन. ठा० इन्द्रजीत सिंह अटोडर, डा० बौंड़ी (बहराइच) की संव० 1902 की प्रति–

(प) ग्रं. सं. 432 ओ–रामसुन्दर मिश्र-कटपरी डा० अकोना (बहराइच) की प्रति –

(त) ग्रं. सं. 432 पी–भिनगानरेश का पुस्तकालय, भिनगा (बहराइच) की संव० 1840 की प्रति–

(7) खो० रि० 1941 ग्रं. स. 500 ख (अग्र) पं. जयानद मिश्र–बालूजी का फरस रामघाट, वाराणसी की संव० 1860 की प्रति–

लेकिन इनसे भी उक्त निर्णय के परिवर्तन के सशक्त कारण नहीं मिलते हैं, हाँ, वंशवृक्ष की लम्बाई अवश्य बढ़ जाती है।

3.2 प्रामाणिक पाठ –

संपादन कार्य में व्यवहृत उपर्युक्त सभी प्रतियों के सूक्ष्म अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकलता है कि 'क' प्रति का पाठ सर्वाधिक प्रामाणिक है। खो० रि० 1926-28 की 484 आर तथा 484 एस–दोनों प्रतियाँ 'क' प्रति के नजदीक हैं यद्यपि दोनों प्रतियाँ खंडित हैं। खो० रि० 1929-31 की 325 एस 2 प्रति 'च प्रति के पास की प्रति है यद्यपि उसकी पूर्णतया प्रतिलिपि नहीं है। खो० रि० की अन्य प्रतियाँ अध्ययन हेतु चुनी गई ('क' से 'भ' तक की) प्रतियों की समकालीन अथवा बाद की प्रतियाँ हैं और करीब करीब सभी खंडित प्रतियाँ हैं अतः उनको अध्ययन में स्थान नहीं दिया गया है। 'क' प्रति को अध्ययन का आधार मानने का कारण यह है कि एक तो इसका पाठ अन्य प्रतियों की तुलना में सर्वाधिक प्रामाणिक है दूसरे यह प्रति अपने पूर्व की प्रति के नजदीक की प्रति है जो तुलसीदास जी के समय के कुछ दिन बाद की ही प्रति है।

बाद की प्रतियाँ प्रतिलिपिकारों के प्रमाद, क्षेत्रीय प्रवृत्ति एवं लेखनशैली आदि अनेक कारणों से विकृत होती गई हैं अतः सब कारणों को देखते हुए 'क' प्रति को मूल प्रति के नजदीक की मानकर अध्ययन का आधार बनाया गया है।

अन्य प्रतियों में प्राप्त और स्वीकृत पाठ––

अध्ययनोपरांत 'क' प्रति को सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है परन्तु तीन

स्थलों पर 'घ' और 'च' प्रति के पाठों को सर्वाधिक प्रामाणिक मानकर अध्ययन में स्वीकार किया गया है, जो इस प्रकार है—

(1) 'घ' प्रति —'पेपन को पेपन' 1. 73.1
(2) 'घ' प्रति—'मीच तें नीच' 5.15.3
(3) 'च' प्रति—'निसि' 6.17.2

गीतावली के प्रकाशित संस्करणों में गीता प्रेस गोरखपुर की भावार्थ सहित गीतावली अपेक्षाकृत प्रामाणिक मानी जाती है। इसकी तुलना 'क' हस्तलिखित प्रति से करने पर कुछ असमानताएँ मिलती हैं जो इस प्रकार हैं—

हस्तलिखित प्रति 'क' और गी० गो० की प्रकाशित गीतावली का तुलनात्मक अध्ययन

काण्ड पद पंक्ति	'क' प्रति	गी० गो० की प्रति
1.8 9	पंक्ति के अंत में सर्वत्र-आ, यथा मैआ भैआ आदि	पंक्ति के अंत में सर्वत्र-या यथा भैया, मैया आदि
1.31.1	आनंद कंदा, चारु चंदा-आ	आनंद कंद, चारु चंद-अ
1.34.	पंक्ति के अंत में सर्वत्र आँ यथा कन्आँ, पैंजनिआँ आदि	पंक्ति के अंत में सर्वत्र याँ यथा कनियाँ, पैंजनियाँ आदि
1.50.3	अैहैं-अै का सर्वत्र प्रयोग	ऐहैं-सर्वत्र ऐ का प्रयोग
1.83	सुअन, भुअन-मध्य में-अ	सुवन, भुवन मध्य में-व
1.105.4	इत ··· हिलोरी तक दो पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां हैं।
2.26.2	रूप पारावार	रूप के न पारावार
2.43.2-3	रिपिवर····अलिगिनी तक आठ पंक्तियां नहीं हैं	आठौ पंक्तियां हैं
2.60.1	अैसो	ऐसे
2.64.1	औध	अवध
3.5.2	निरवनि	मेरवनि
5.4.4	पठै	पठए
5.9.1.3	कहो, सुमिरन करति	कहु, सुमिरति करति
5.11.2	तुअ	तुव
5.28.3	कुवरे की लात	कूवर की लात
5.29.3	नाहिन ···बाज के तक दो पंक्तियां नहीं हैं	दोनों पंक्तियां हैं

5.48	सुअन, भुअन-सर्वत्र-अ	सुवन, भुवन आदि में सर्वत्र-व
6.8	अंतिम पंक्तियों में-ऊं यथा पाऊं-लाऊं	सर्वत्र-औं यथा पावौं, लावौं
6 11.4	धन्य भरत, धन्य भरत	धनि भरत, धनि भरत
7 8.5	वरनि हारु	वरननि हारु
7.11.1	सिहाई	सिहोई
7.22.1	राजाधिराजा, समाजा-आ	राजाधिराज, समाज-अ
7.22.2	ओलिन्ह	भोलिन्ह
	संपूर्ण पुस्तक में ख के स्थान मे ष का प्रयोग है। पूर्ण पुस्तक में सामासिक चिह्न (–) का अभाव है। अनेक स्थानों में छ के स्थान में क्ष का प्रयोग है।	संपूर्ण पुस्तक में ख का प्रयोग है सामासिक चिह्नों का अत्यधिक प्रयोग है सर्वत्र छ का प्रयोग है।

इस प्रकार हस्तलिखित प्रति 'क' और गी० गो० की मुद्रित गीतावली में उपर्युक्त असमानताएं हैं। गी० गो० में प्राप्त असमानताओं के स्थान पर 'क' प्रति में पाई जाने वाली समानताओं को रख देने से गी० गो० की मुद्रित प्रति 'क' हस्तलिखित प्रति बन जाती है जो हमारे अध्ययन का आधार है। इस प्रकार गीता प्रेस गोरखपुर संव० 2023 एकादश संस्करण की गीतावली में 'क' प्रति में प्राप्त समानताओं को रखकर हमने इस पुस्तक को अपने भाषा वैज्ञानिक अध्ययन का आधार बनाया है।

आवश्यक निर्देश—मूल प्रति में सर्वत्र 'ख' के स्थान पर ष' का लेखन है परन्तु पढ़ने की सुविधा की दृष्टि से प्रस्तुत अध्ययन में 'ख' का ही प्रयोग किया गया है।

2

भाषा शास्त्रीय अध्ययन

ध्वनि विचार

गीतावली मध्यकालीन ब्रजभाषा की रचना है। इस अध्याय में उसके खण्डीय एवं खण्डेतर स्वनिमों पर संक्षिप्त विचार किया गया है। खण्डेतर स्वनिमों के विवरण में किसी प्रकार की यान्त्रिक सहायता नहीं ली जा सकी है क्योंकि इसका इत्थमित्थं रूप अब जन बोलियों में नहीं मिलता है। स्वनात्मक, सस्वनात्मक तथा संयुक्त ध्वनियों के स्तर पर जो वैविध्य मिला है उसका यथास्थान संकेत कर दिया गया है।

1.1 **स्वनिम सूची**—आलोच्य पुस्तक में 10 स्वर, 26 व्यंजन, 2 अर्धस्वर, अनुस्वार, अनुनासिक तथा शब्दसंधिक हैं।

स्वर—। ई, इ, ए, ऐ, अ, आ, ऊ, उ, ओ, औ।

व्यंजन—। प, फ, ब, भ, त, थ, द, ध, ट, ठ, ड, ढ, क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, स, ह, र, ल, म, न।

अर्धस्वर—। य, व।

अनुस्वार—।ं।

अनुनासिक—। ँ।

विभाजक -शब्दान्त। + ।; वाक्यान्त। ।।।

सुरसरणियाँ—ये दो प्रकार की है :

(क) अन्त्य-आरोही। ↑ ।, अवरोही। ↓ ।, तथा सम। → ।

(ख) अन्त्येतर—बलवर्धक। व।

सुरसरणि परिवर्तक—मोड ।म।, प्लुति । प। तथा अतिरिक्त ध्वनि-वर्धक ।घ।

1.2 **लिपि संबंधी विशेष विवरण**—

आलोच्य पुस्तक में ।ऋ। स्वर का प्रयोग आदि स्थान में मिलता है लेकिन कई स्थानों पर ।ऋ। के स्थान में ।रि। ध्वनि का भी प्रयोग मिला है—

यथा—ऋषि 1.52.1	रिषि 7.29.1
ऋतु 2.44.2	रितु 7.19.2

साथ ही ।ऋ। के मात्रा रूप । ृ । का प्रयोग सर्वत्र मिला है यथा—

सुकृत 2.19.3 ; गृह—6.17.3

।क्ष।, ।त्र। और ।ज्ञ।—आलोच्य ग्रन्थ में नागरी वर्णमाला में प्रयुक्त होने वाले ।क्ष।, ।त्र। और ।ज्ञ। तीनों संयुक्त व्यंजनों का प्रयोग मिला है । ।त्र। का प्रयोग अनेक स्थलों पर आदि, मध्य और अन्त (संयुक्त व्यंजन रूप) में मिला है—
यथा—त्रासहारी 1.25.6 सत्रुसूदन 7.34.3 चित्र 1.31.5

।क्ष। और ।ज्ञ। के प्रयोग अत्यल्प हैं यथा—काकपक्ष 1.54.1 यज्ञोपवीत 7.16.5

मुक्तवितरण रूप—

प्रस्तुत ग्रन्थ में कई व्यंजन मुक्त वितरण रूप में मिले हैं जिनका विवरण इस प्रकार है—

(1) न≃ण—

आह्मन 1.17.2	ब्राह्मण 1.2.18
दिनमनि 1.73.5	दिनमणि 7.7.2

(2) ल≃र—

पीले 2.30.1	पीरे 1.42.2

(3) ब≃व—

दिब्य 6.9.4	दिव्य 1.67.3

(4) स≃श—आदि, मध्य, अन्त तीनों स्थितियों में है—

सोभा 1.55.3	शोभा 5.51.6
किसोर 2.15.4	किशोर 1.73.1
केस 7.17 14	केश 1 33.3

(5) ग्य≃ज्ञ—

जग्योपवीत 1.108.6	यज्ञोपवीत 7.16.5

(6) च्छ≃क्ष—

काकपच्छ1 .60.2	काकपक्ष 1.54.1

(7) र≃ᶜ —

परन (कुटी) 3.3.1	पर्न (साल) 3.17.1

(8) र≃,—

बरत 6.12.1	ब्रत 1.67.2

1·3 स्वर ।

स्वर दो प्रकार के है : दीर्घ तथा ह्रस्व । सभी स्वर शब्द की प्राथमिक, माध्यमिक एवं अंतिम स्थिति में मिलते हैं जिनका वितरण इस प्रकार है—

1.3.1 स्वर—		प्राथमिक स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अन्तिम स्थिति
ई	:	ईस 1.2.22	कपीस 5.31.3	भाई 1.55.1
इ	:	इक 1.45.1	हलराइहौं 1.21.3	रजाइ 5.34.3

ए	:	एक 1.45.4	तेज 1.80.5	धाए 1.26.1
ऐ	:	ऐन 5.21.3	सैल 1.84.4	छोटिऐ 1 44.1
अ	:	असीस 1.69.1	बसन 1.55.2	हरुअ 7.21.18
आ	:	आस 5.45.5	सोआइहौं 1.21 1	फगुआ 7.22.7
ऊ	:	ऊपर 3 14.2	कूप 2.3.3	दोऊ 1.99.4
उ	:	उमा 1.5.6	परवाउज 1.2.13	राउ 1.46.3
ओ	:	ओट 1.32.7	कोकिल 3.1.2	अपनो 2.85.1
औ	:	औगुन 2.76.2	कौतुक 7.32.1	छुऔ 1.12·3

1.3.2 दीर्घ स्वर ··

।ई।, ।ए।, ।ऐ।, ।आ।, ।ऊ।, ।ओ।, तथा ।औ। दीर्घ स्वर हैं । इनकी दीर्घता में ध्वन्यात्मक परिस्थितिजन्य (छन्दाग्रह अथवा तुक के कारण) संस्वनात्मक वैविध्य मिलता है जिसे दीर्घ (ͺ), दीर्घतर (˙) और दीर्घतम (:) कहा जा सकता है। इनका स्वनग्रामिक विवरण एवं वैविध्यों का उदाहरण सहित वर्णन इस प्रकार है।

1.3.2.1 दीर्घता पर आधारित संस्वन —

।ई। = उच्चतर उच्च अग्र अवृत्तमुखी स्वर —

= [ईͺ], [ई˙], [ई:]

= [ईͺ]—।है। से पूर्व तथा पदान्त में प्रयुक्त होने पर दीर्घता में स्वल्प ह्रास मिलता है—यथा

[ध् अ र् ईͺ]—धरी है 1 92.1

[ज् अ न् अ न् ईͺ]—जननी 1 39.3

= [ई˙] —दीर्घ स्वर अथवा दीर्घताधारित अक्षर से पूर्व प्रयुक्त होने पर पूर्ण दीर्घता में कुछ कमी हो जाती है लेकिन [ईͺ] के समान नहीं—

[प् अ प् ई˙ ह् आ]—पपीहा 5.7.4

[ग् अ र् ई˙ ब ई]—गरीबी 2.41.4

= [ई:]—यह दीर्घतम संस्वन है। ह्रस्व स्वरों या उनसे रचित अक्षरों से पूर्व इसका प्रयोग मिलता है यथा—

[त् उ ल् अ स् ई: स]—तुलसीस 1.87.4

[र् आ ज् ई: व]—राजीवनैन 2.48.5

।ए। = उच्चतर मध्य अग्र अवृत्तमुखी स्वर –

= [ए˄], [एˑ], [ए:]

= [ए˄] —पदान्त में प्रयुक्त होने पर दीर्घता में कुछ कमी हो जाती है—

यथा—[व् अ ड् ए˄]—बड़े 1.8.1,

[न् अ ए˄] – नए 1 46.5

= [एˑ] —दीर्घ स्वर अथवा दीर्घस्वर युक्त अक्षर से पूर्व आने पर दीर्घता कुछ कम हो जाती है—यथा—

[एˑ क् औ]-एकौ 3.12.1,

[म् एˑ र ओ]–मेरो 3.16.1

= [ए:] —इसकी स्थिति ह्रस्व स्वरों अथवा उनसे निर्मित अक्षरों से पूर्व देखी गई है–यथा–

[त् ए: उ]–तेउ 1.46.5,

[ख् ए: त]–खेत–1.95.3

।ऐ। = निम्नतर मध्य, अग्र अवृत्तमुखी स्वर–

= [ऐ˄], [ऐˑ], [ऐ:]–

=[ऐ˄]–पदान्त में तथा ।है। से पूर्व इसका प्रयोग मिला है–

यथा–[ह्व ऐ˄ ह ऐ]–ह्वै है–6.17.1,

[क् अ स् अ क् ऐ˄]–कसकै–1.44.2

= [ऐˑ]–दीर्घस्वर अथवा उस पर आधारित अक्षर से पूर्व इसका प्रयोग मिला है–

यथा–[अ स् ऐˑ ल् ई]–असैली–5.6.2

[क् ऐˑ ल् आ स[–कैलास–6.3.2

=[ऐ:]–ह्रस्व स्वरों अथवा इनसे रचित अक्षरों से पूर्व इस संस्वन का प्रयोग मिला है।

यथा–[च् ऐ: ल]–चैल–7.6.5,

[प् ऐ: ज् अ न् ई]–पैजनी–1.32.2

।आ।—निम्न मध्य अवृत्तमुखी स्वर—

= [आ˄], [आˑ], [आ:]

= [आ˰]—इसका पदान्त में प्रयोग होने से दीर्घता में कुछ कमी हो जाती है—

यथा—[क् अ थ् आ˰]—कथा—1.86.2,

[द् अ य् आ˰]- दया—5.7.3

= [आˑ]—दीर्घस्वरों अथवा दीर्घाक्षरों से पूर्व इसका प्रयोग मिला है—

यथा—[आˑ ल् ई]—आली—1.101.3,

[आˑ र् आ त् इ]—आराति—5.43.5

= [आː]—यह दीर्घतम स्थिति है। ह्रस्व स्वरों अथवा उनसे रचित अक्षरों से पूर्व इसका प्रयोग है—

यथा—[ग् आː व् अ त्]—गावत—1.54.4

[भ् आː ग]—भाग—5.41.1

।ऊ।—उच्चतर पश्च वृत्तमुखी स्वर—

= [ऊ˰], [ऊˑ], [ऊː]—

= [ऊ˰]—पदान्त में प्रयुक्त होने पर दीर्घता में ह्रास हो जाता है—

यथा—[ब् अ ट् आ उ˰]—बटाऊ 2.36.1,

[क् अ ल् ए ऊ˰]—कलेऊ 2.54.3

= [ऊˑ]—दीर्घस्वरों से पूर्व इसका प्रयोग मिलता है—

यथा—[प् ऊˑ ज् ई]—पूजी—7.13.4;

[ब् ऊˑ झ् ई]—बूझी—2.51.3

= [ऊ]—ह्रस्व स्वरों से रचित अक्षरों से पूर्व इसकी स्थिति देखी गई है—

यथा—[प् ऊː प]—पूप—1.32.6,

[र् ऊː प]—रूप—7.8.1

।ओ।—उच्चतर मध्य, पश्च, वृत्तमुखी स्वर—

= [ओ˰], [ओˑ], [ओː]—

= [ओ˰]—इसका प्रयोग [है] से पूर्व तथा पदान्त में मिलता है

यथा—[क् इ य् ओ˰]-कियो है 1.10.1,
[म् अ य् ओ˰] —भयो 1.98.2

=[ओं]— दीर्घस्वर अथवा दीर्घताधारित अक्षर से पूर्व इसके प्रयोग की स्थिति है यथा—

= [द् ओं ऊ] —दोऊ 1.99.4, [स् ओं ह् आ व् अ न् ओ]— सोहावनो 1.3.1

=[ओ]—ह्रस्व स्वर या उनसे निर्मित अक्षरों से पूर्व इसकी प्रयोग स्थिति है

यथा —[भ् ओः र्] भोर 1.99.2,
[म् ओः द] —मोद 5.40.4

।औ।—निम्नतर मध्य वृत्तमुखी स्वर—

= [औ˰], [औं], [औः]

=[औ˰] —का प्रयोग पदान्त में मिला है—यथा—
[म् आ न् औ˰]— मानौ —2.50.6,
[आ व् औ˰]—आवौ —2.87.1

=[औं]—दीर्घस्वरों से पूर्व इसकी प्रयोग स्थिति है—यथा—
[प् औं ढ़् आ ए]—पौढ़ाए—1.22.2;
[प् अ त् औं आ]— पतौआ—1.67.2

= [औः]—ह्रस्वस्वर या उनसे रचित अक्षरों से पूर्व इसके प्रयोग की स्थिति है—यथा—
[च् औ. क] —चौक— 6 23.2
[औः र]—और—6.1.8

1.3.2.2 नासिक्यीकरण जन्य संस्वन —

निम्नतर मध्य अग्र अवृत्तमुखी ।ऐ। तथा निम्नतर मध्य पश्च वृत्तमुखी ।औ। सानुनासिक । ँ । उच्चारण में अपनी स्थिति से कुछ ऊपर उठे हुए प्रतीत होते हैं

जिन्हें [ऐ́] तथा [औ̂] रूप में लिखा जा सकता है—यथा—
[प् अ ढ़् आ व ऐं^]—पढ़ावैं—3.9.3;
[द् ए ख् औं^]—देखौं—3.9.4

1.3.2.3 संस्वनात्मक नासिक्यीकरण—

दो नासिक्य व्यंजनों के मध्य प्रयुक्त होने पर दीर्घस्वरों के साथ क्षीण रूप में सानुनासिक ध्वनि सुनाई देती है जो स्वर के बाद के उच्चारण पर छाई रहती है—यथा—[म् आ̃ न् ई]—मानी–7.37.2;

[न् आ̃ न् आ]—नाना–2.47.7

पदान्त नासिक्य व्यंजन के पश्चात् आने वाले दीर्घ स्वर में भी संस्वनात्मक नासिक्यीकरण का आभास मिलता है—यथा—

[द् आ न् ई̃]—दानी–1.4.6;

[व् आ न् ई̃]—वानी–1.4.1

यह सानुनासिक ध्वनि नासिक्य दीर्घ स्वरों के पूर्व भी सुनाई देती है–

यथा—[स् व् आ̃ म् ई]—स्वामी—5.23.3

1.3.3 ह्रस्व स्वर—

आलोच्य पुस्तक में ह्रस्व स्वर तीन हैं—।इ।, ।अ।, ।उ।—जिनकी संस्वनात्मक विविधता के दो प्रमुख आधार हैं: दीर्घता तथा घोषत्व। दीर्घता दो प्रकार की है—सामान्य दीर्घता तथा ह्रसित दीर्घता—सामान्य दीर्घता के लिए चिह्न विशेष का प्रयोग नहीं है। ह्रसित दीर्घता को [इ̭], [अ̭], [उ̭]—इस प्रकार लिखा गया है। घोषत्व के आधार पर भी ह्रस्व स्वरों के दो रूप मिले हैं: घोष एवं अघोष–घोष स्वरो के लिए कोई चिह्न नहीं है परन्तु जहाँ किसी परिस्थिति विशेष के कारण उनका अघोषीकृत रूप मिला हैं उसके लिए [.] चिह्न का प्रयोग है।

1.3.3.1 ह्रस्व स्वरों का संस्वनात्मक विवरण—

।इ।—निम्नतर उच्च, अग्र, अवृत्तमुखी स्वर—

=[इ], [इ̭], [इ̣]

=[इ]—अपनी स्वाभाविक दीर्घता से युक्त है—पद के आदि में अथवा पद के आदि अक्षर के आधार के रूप में व्यंजन से पूर्व इसका प्रयोग मिलता है—

[इ क्]–इक—1.105.2:

[ह् इ त]–हित—2.84.5

=[इ॰]—इसका प्रयोग प्रायः पद के मध्य में दीर्घाक्षर से पूर्व तथा सघोष व्यंजन के पश्चात् होता है—

[ब् इ॰ स् आ ल]–बिसाल–3.2.3;

[ग् आ र् इ॰]—गारि–7.22.9

= (इ.)—अघोष व्यंजन-पश्चात् पदान्त में इसके प्रयोग की स्थिति है—

[ग् अ त् इ.]—गति–1.86.3;

[ह् अ त् इ.]—हति–3.8.1

।अ।–मध्य अवृत्तमुखी स्वर–

= [अ], [अ॰], [अ.]–

= [अ]—स्वाभाविक दीर्घता से युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आरम्भ में तथा पद के मध्य में मिला है–

[अ व् अ स् इ]–अवसि–2.77.1

[घ् अ र]–घर–2.73.3

=[अ॰]—इस संस्वन का प्रयोग पद के मध्य में दीर्घाक्षर से पूर्व मिला है–

[व् अ॰ ह् आ व् औ]–वहावौ–6.8.3;

[आ ग् अ॰ म् ई]–1.17.1

=[अ]—अघोष व्यंजन के पश्चात् पदान्त में प्रयुक्त है–

[ल् आ त् अ.]–लात–5.26.1;

[त् आ प् अ.]–ताप–1.47.1

।उ।–निम्नतर उच्च, पश्च वृ–त्तमुखी स्वर–

=[उ], [उ॰], [उ.]

=[उ]–स्वाभाविक दीर्घता युक्त इस संस्वन का प्रयोग पद के आदि में अथवा पद के आदि अक्षर के आधार के रूप में व्यंजन से पूर्व मिला है–यथा–

[उ त्]–उत–2.86.2;

[क् उ ट् ई]–कुटी–2.79.1

=[उ॒]–ह्रसित दीर्घता वाला यह संस्वर उच्चारान्त में सघोष व्यंजन के पश्चात् तथा पद मध्य में दीर्घाक्षर से पूर्व मिला है–

[ज् अ न् उ॒]–जनु–1.66.4;

[फ् आ ग् उ॒]–फागु–2.47.9

=[उ]–अघोष व्यंजन के बाद पदान्त में प्रयुक्त है–

[म् आ त् उ]–मातु–2.62.1;

[प् इ त् उ]–पितु–2.26.1

1.3.4 अर्धस्वर

।य।, ।व। को अर्धस्वर माना गया है । कुछ लोग इन्हें स्वाधीन श्रुति के रूप में मानते हैं, व अक्षर—निर्माण में असमर्थ । विभिन्न स्वरों के मध्य ।य।, ।व। के विभिन्न संयोग आलोच्य ग्रन्थ में मिले हैं जिनमें ।य। के 24 संयोग एवं ।व। के 17 संयोग हैं । ।ऊ। और ।औ। के साथ कोई संयोग नहीं है अनुनासिक स्वरों के साथ भी ।य।, ।व। के क्रमशः 3 और 8 संयोग हैं जिनकी सूची अलग से दी गई है । निरनुनासिक स्वरों के मध्य ।य। और ।व। के संयोगों को तालिका द्वारा भी प्रस्तुत किया गया है—

1.3.4.1 निरनुनासिक स्वरों के साथ ।य। और ।व। के संयोग—

य

अय	अयन	1.63.5	अया	मृगया	1.39.3
अयी	विजयी	6.1.6	अयू	मयूर	6.21.4
अये	लये	6.5.1	अयो	पठ्यो	3.6.2
आय	लायक	2.3.1	आया	देवमाया	2.1.4
आयु	आयु	7.25.2	आये	गाये	6.23.5
आयो	बँधायो	6.21.1	इय	लाइय	2.71.4
इया	पगिया	1.44.1	इयू	पियूप	1.7.2
इये	लिये	1.7.1	इये	नीकिये	1.85.1
इयो	हियो	3.14.1	इयौ	जियौ	7.18.6
ईय	सीय	7.26.4	ईयू	पीयूष	2.44.3
एयी	कैकेयी	2.1.4	एयू	केयूर	7.16.5
ऐया	भैया	2.66.4	ओय	लोयन	1.96.2

व

अव	अवलोकत	3.2.3	अवा	नवावौं	1.89.8
अवि	रवित	7.17.14	अवी	उपवीत	1.73.4
अवै	अन्हवैहै	1.99.2	आव	नाव	5.21.2

आवै	झुलावै	1.23.1	इव	सिव	3.4.3
इवा	दिवायो	1.17.3	इवौ	जिवौ	1.1.7
ईव	जीव	2.40.4	उव	भुवन	5.22.3
उवा	भुवालु	1.42.4	एव	सेवक	6.5.2
एवि	सेवित	2.50.3	एवी	देवी	1.5.4
ओव	जौवति	5.17.3			

1.3.4.2 सानुनासिक स्वरों के साथ ।य।, ।व। के संयोग–

य

आँय	पाँय	1.43.1	आयँ	पायँ	1.17.3
इयाँ	धनुहियाँ	1.44.1			

व

अँव	भँवर	7.13.3	अँवा	गँवाई	6.6.4
अवौं	पठवौं	6.11.3	आँव	पाँवड़े	3.17.5
आवै	पढ़ावै	3.9.3	आवों	आवोंगी	2.6.1
ईवं	सीवं	1.48.1	उव	कुँवर	1.73.2

1.3.5—अनुस्वार–स्वरों से अलग उच्चरित होने वाला नासिक्य तत्व है जिसके लिए प्रस्तुत ग्रन्थ में । ं । चिह्न का प्रयोग है इसके प्रयोग की स्थितियाँ इस प्रकार है—

वर्गान्त के नासिक्य व्यंजनों के लिए अनुस्वार-चिन्ह का प्रयोग—

क वर्ग से पूर्व	कंकन	1.2.13	पंख	1.52.4
च वर्ग से पूर्व	चचर्राक	1.108.8	मंजुल	2.44.1
ट वर्ग से पूर्व	घटा	1.2.13	खंड	3.8.1
त वर्ग से पूर्व	सतोष	2.77.2	सुन्दर	7.6.3
प वर्ग से पूर्व	खंभनि	1.9.3	अंबक	3.17.3

इसके अतिरिक्त ।स।, ।त्र। और ।ह। के पूर्व भी अनुस्वार का प्रयोग मिला है–

राजहंस 5.40.3, मंत्री 2.56.2, सिंहासन 2.80.3

अकारण अनुस्वार-चिन्ह का प्रयोग—

कहीं-कहीं पर बिना किसी आग्रह के अनुस्वार-चिह्न का प्रयोग मिला है–

वर्धावंन	1.2.8	भंई	1.6.14
सुखदांई	1.55.4	गोसांई	2.78.3
छांई	2.51.2		

यद्यपि अनुस्वार और अनुनासिकता दोनों के मध्य व्यतिरेकी स्थितियां मिली है–यथा–हँसि 5.44.4 और हस 7.6.2 में–परन्तु फिर भी सपूर्ण ग्रन्थ में

अनुनासिकता के स्थान पर अनुस्वार चिह्न का प्रयोग तथा अनुस्वार के स्थान में अनुनासिक चिह्न का प्रयोग बड़ी स्वतन्त्रता के साथ मिला है—

अनुनासिकता के स्थान पर अनुस्वार चिन्ह का प्रयोग—

करकैं	5.22.8	नींद	1.5.3
उनींदे	7.2.2	भेंट	6.22.6
सींचिवे	5.49.2		

अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक चिन्ह का प्रयोग –

आनँद	1.1.5	पँडार	1.2.21
गँभीर	1.108.5	विलँवे	2.24.4
सिँगार	2.29.4		

1.3.6 अनुनासिकता—

स्वर ध्वनियों के साथ उच्चरित अनुनासिक तत्व है जिसके लिए पुस्तक में । ँ । चिह्न का प्रयोग है नीचे सानुनासिक स्वरों की प्राथमिक माध्यमिक और अन्तिम स्थितियाँ प्रस्तुत की गई है । केवल प्राथमिक स्थिति में । ।ईँ।, ।इँ।, ।एँ।, ।ऐँ।, ।उँ।, ।ओँ।, और ।औँ। के रूप नहीं मिले हैं–

	ाथमिक स्थिति	माध्यमिक स्थिति	अन्तिम स्थिति
ईँ		सीँव 5.43.1	रूरीँ 1.31.4
इँ		सिँगार 1.105.2	धरइँ 7.22.6
एँ		जेँइय 2.52.3	यातेँ 2.57.3
ऐँ		पैँत 2.32.4	ढेरैँ 5.27.3
अँ	अँकोर 7.3.3	कुअँरोटा 1.62.1	तहँ 5.38.4
आँ	आँक 1.85.1	झाँई 1.108.9	चौतनियाँ 1.34.4
उँ		मुँह 7.37.1	दाउँ 1.84.4
ऊँ	ऊँचे 2.14.1	मूँदरी 5.3.1	तिहूँ 1.91.4
ओँ		कोँन 2.4.1	एकसोँ 6.21.4
औँ		बौँडी 1.72.3	पावौँ 1.89.8

1.3.7 स्वर संयोग–

गीतावली में दो से लेकर तीन स्वरों तक के संयोग एक साथ मिले हैं । दा स्वरों के निरनुनासिक संयोग प्राथमिक स्थिति में 2, माध्यमिक स्थिति में 10 और अन्तिम स्थिति में 27 हैं । दो स्वरों के नासिक्य स्वर संयोग केवल माध्यमिक स्थिति में 3 और अन्तिम स्थिति में 10 है तीन स्वरों के संयोग 5 निरनुनासिक तथा । अनुनासिक हैं । इन स्वर संयोगों के अतिरिक्त 7 दो स्वरों के संयोग (6 निरनुनासिक व एक अनुनासिक) और हैं जो स्वतन्त्र शब्दों की रचना करते हैं । इस

प्रकार सम्पूर्ण पुस्तक में कुल 65 प्रकार के स्वर संयोग मिले हैं। जिनका विवरण तालिका सहित निम्न प्रकार है।

1.3.7.1 दो स्वरों का संयोग—

निरनुनासिक

प्राथमिक स्थिति

आइ	आइहै	5.34.1	आउ	आउज	1.2.13

माध्यमिक स्थिति

अइ	भइया	1.45.4	आइ	गाइहौ	1.21.4
आउ	राउर	2.47.9	इआ	जिआयो	2.56.3
इए	घारिए	5.35.2	उअ	भुअन	7.1.1
उआ	भुआल	7.1.1	उए	मुएहु	2.57.1
एइ	सेइयत	1.5.4	ओइ	रोइवो	2.83.3

अन्तिम स्थिति–

अइ	भइ	1.45.4	अई	भई	2.34.1
अउ	आयउ	2.47.8	अए	गए	2.66.5
आइ	पाइ	5.16.3	आई	ववाई	1.103.1
आउ	गाउ	5.45.5	आऊ	काऊ	2.36.1
आए	चोराए	1.56.5	इए	चलिए	2.64.3
इऔ	हमरिऔ	2.34.4	उअ	गरुअ	7.21.18
उआ	फगुआ	7.22.7	उइ	गरूइ	7.32.5
उई	कनसुई	1.70.5	उऔ	छुऔ	1.12.3
एइ	तेइ	1.45.7	एई	तेसेई	1.42.1
एउ	उकठेउ	2.46.3	एऊ	कलेऊ	2.54.3
ऐए	जैए	7.18.1	ओइ	समोइ	5·5·7
ओई	सोई	1.86.2	ओउ	दोउ	1.104.3
ओऊ	पोऊ	2.16.3	ओए	घोए	2.61.2
औआ	पतौआ	1.67.2			

अनुनासिक

माध्यमिक स्थिति

आउँ	जाउँगी	5.30.1	उअँ	कुअँरोटा	1.62.1
एँइ	जेँइय	2.52.3			

अन्तिम स्थिति

अइँ	धरइँ	7.22.6	अँई	मँई	1.34·6

आइँ	पाइँ	2.27.3	आँई	झाँई	1.19.2
आँउ	पाँउ	5.35.2	आउँ	ठाउँ	5.45.2
आएँ	गवाएँ	2.39.5	इआँ	पहुचियाँ	1.31.3
एउँ	लेउँ	2.54.3	ओउँ	होउँ	2.63.2

1.3.7.2 तीन स्वरों का संयोग–

निरनुनासिक

इआउ	पिआउ	2.57.4	इआए	पिआए	6.22.3
उआई	गरुआई	1.16.3	ओआइ	सोआइहो	1.21·1
ओइए	सोइए	1·20.1			

अनुनासिक

इआंई	वरिआंई	3.6.2

1.3.7.3 स्वतन्त्र स्वर संयोग–

निरनुनासिक

आइ	2.58.1	आई	2.19.4
आउ	2.57.3	आए	1.26.2
एई	1.74.1	एउ	1.68.4

अनुनासिक

आंई	7.13.9

1.3.8–अक्षर-संरचना–

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रयुक्त आक्षरिक संरचना में एक से लेकर पांच अक्षरों का प्रयोग मिलता है। शब्दान्त के ।अ। का लोप समस्त अध्ययन में स्वीकार किया गया है। स्वर के लिए 'स' तथा व्यंजन के लिए 'व' संकेत है–कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

एकाक्षर

		स		:	ए	1.78.2
	व	स		:	ये	2.42.1
		स	व	:	आज	2.49.1
	व	स	व	:	दिन	2.50.1
व	व	स		:	क्यों	2.72.3
व	व	स	व	:	ग्रह	1.12.2

द्विवक्षर

स	स		:	आए	1.102.1
स	स	व	:	आउज	1.2.13
व स	स		;	नए	1.3.5

व स व स	:	जायो	6.2.1
स व स व	:	अपर	1.23.4
स व व स	:	अंक	1.28.4
व व स व	:	ब्याह	1.104.4
व व स स	:	ल्याए	1.102.3
व स व व स	:	चवक	2.47.11
व स व स व	:	पवन	1.55.4
स व व व स	:	इन्द्र	1.25.2
स व व स व	:	अंचल	7.18.4
व व स व स	:	ग्यानी	1.6.10
व स व व स व	:	कंदुक	6.3.2
व व स व स व	:	व्यलीक	1.36.1
व व स व व व स	:	प्रसंग	1.55.7
त्र्यक्षर			
स व स स	:	ओढ़ाए	1.26.6
व स व स स	:	पठाई	2.40.4
व स व स व स	:	पिनाकु	1.92.3
स व स व व स व	:	आसिरवाद	1.11.4
स व व स व स स	:	अँगनाई	1.30.4
स व स स व व स	:	अघाउँगो	5.30.3
व स व स व व स	:	कुसुँभि	7.19.4
व स व स व स व	:	पारावत	7.19.2
व स व व स व स व	:	चित्रकूट	2.50.1
चतुराक्षर			
व स व स व स स	:	विचारिए	1.86.3
व स व स स व स	:	बसाइहैं	5.51.4
स व स व स व व स	:	आवहिंगे	5.10.1
व स व स व स स व स	:	पछिताइहै	5.51.2
व व स व स व स व स व	:	कृपानिधान	1.38.1
पंचाक्षर			
व स व स व स व स व स व व स	:	दिखरावहिंगे	5.10.1

1.4 व्यंजन–

1.4.1 व्यंजन खण्डीय स्वनिम–(वितरण)

आलोच्य पुस्तक में प्रयुक्त व्यंजनों की प्राथमिक, माध्यमिक और अन्तिम

स्थितियों का वितरण नीचे दिया गया है। इस अध्ययन में अन्तिम ।अ। का लोप स्वीकार करके शब्दों को व्यंजनांत माना गया है और साथ ही संयुक्त या दीर्घ व्यजनों में ।अ। की उपस्थिति मानकर स्वरांत। व्यंजनांत शब्दों में हलन्त का चिह्न नहीं लगाया गया है। ।ण।, ।ड़। और ।ढ़। प्राथमिक स्थिति में नहीं मिले हैं और ।ढ। अंतिम स्थिति में नहीं मिला है।

1.4.1.1–

व्यंजन	प्राथमिक		माध्यमिक		अंतिम	
।क।	कनक	3.5.2	कोकिल	2.48.3	कटक	5.46.4
।ख।	खग	3.5.4	आखत	5.16.6	पाख	1.4.2
।ग।	गीत	1.2.15	पगार	5.32.3	पग	2.31.2
।घ।	घाट	1.42.3	वघनहा	1.31.3	अघ	6.12.2
।च।	चाप	1.68.8	आचरज	1.58.2	मारीच	6.1.2
।छ।	छोर	1.73 4	उछाह	1 4.14	रीछ	7.38.6
।ज।	जप	7.21.23	अजिन	2.79.2	समाज	5..5.3
।झ।	झप	7.4.5	निरझर	2.49.3	झांझ	7.21·17
।ट।	टेक	5.49.4	हाटक	7.21.11	तट	5.22.11
।ठ।	ठाट	1.77.3	कोठरी	3.17.7	सोरठ	7.19.4
।ड।	डार	2.47.15	उड्डगन	7·6.2	घमण्ड	1.46·4
।ढ।	ढारति	5.19.2	सुढर	1.76.3	–	
।ड़।	–		तड़ित	7·7·4	जड़	1.88.3
।ढ़।	–		वढ़ायो	1.93.2	गढ़	5.22.11
।ण।	–		प्रणाम	5.36.1	कल्याण	7.18.6
।त।	तीर	2.41.2	पितर	1.4.5	तात	3.7.2
।थ।	थार	1.2.9	पथिक	2.24.1	हाथ	1.72.3
।द।	दमक	7.18.3	उदर	7.21.11	मोद	1.70.2
।ध।	धार	6.12.1	वधिक	2.86.4	साध	5.31.2
।न।	नय	7.24.1	जनक	1.80.2	मसान	2.84.2
।प।	पिक	2.45.4	दीपक	1.88.4	पाप	5.16.7
।फ।	फनिक	2.68.4	निफन	2.32.2	डफ	1.2.13
।व।	वात	2.11.2	कुवेर	5.28.4	जव	1.2.19
।भ।	भरत	1.42.1	सुभट	5.13.2	नभ	2.45.4
।म।	मीत	1.22.12	कमठ	5.22.8	सोम	1.68.10
।य।	यूथ	2.48.2	मयूर	6.21.4	भय	5.15.4
।व।	व्यलीक	1.36.1	सुवन	1.9.1	दूव	1.3.4

।र।	राम	1.24.1	विराट	2.50 5	हर	1.11.4
।ल।	लाज	1.92 2	तिलक	1.10.1	कोल	3.17 7
।प।	पर्डंघ्रि	1.25 5	तुषार	7.16.2	पीयूष	2.44.3
।स।	सेज	1.7.1	संसार	1.25.6	पारस	1.67.3
।ह।	हित	1 5.4	बहोर	5.29.2	समूह	6.16.3

1.4.1.2 संस्वनात्मक वैविध्य के मुख्य आधार–

1. तनाव व ऊष्मीकरण–आलोच्य पुस्तक में तनाव की तीन श्रेणियाँ मिलती हैं। प्रथम श्रेणी सबसे अधिक तनाव युक्त व्यंजनों की है जिनमें पद के प्रारम्भ में प्रयुक्त व्यंजन, द्वित्व व्यंजन, संयुक्त व्यंजनों के प्रथमांश व्यंजन तथा पदान्त में प्रयुक्त व्यंजनों को रखा जा सकता है। दूसरी श्रेणी में संयुक्त व्यजनों के द्वितीयांश व्यंजन आते हैं जो पहले से कम तनाव युक्त हैं। तीसरी श्रेणी में स्वर मध्यवर्ती स्पर्श व्यंजन, सघोष स्पर्श व सघोष स्पर्श संघर्षी ।ज। आते हैं जो अन्य प्रयोग-स्थितियों की अपेक्षा बहुत शिथिल होते हैं। ।ब।, ।भ। तथा ।फ। के स्वर मध्यवर्ती उच्चारण में शैथिल्य के साथ ऊष्मीकरण तथा घर्षण का तत्व मिल जाता है। दो दीर्घस्वरों के बीच में प्रयुक्त स्पर्श अधिक तनाव युक्त होते हैं इसमें भी निम्न स्वरों की अपेक्षा उच्च स्वरों के बीच में व्यंजन का उच्चारण अधिक तनाव युक्त होना है तथा दीर्घस्वर मध्यवर्ती व्यंजन की अपेक्षा ह्रस्व और दीर्घ व्यंजन के बीच तनाव कम होता है। इस प्रकार तनाव शैथिल्य उच्चारण-गति की तीव्रता, मंदता, इधर-उधर के स्वरों की प्रकृति तथा पद में व्यंजन की स्थिति पर निर्भर करते हैं। दो ह्रस्व स्वरों के बीच प्रयुक्त होने पर स्पर्शो का तनाव स्वाभाविक दीर्घता वाले, ह्रस्व स्वरों के बीच प्रयुक्त स्वरों की अपेक्षा अधिक होता है। अन्त्य ह्रस्व स्वरों से पूर्व प्रयुक्त स्पर्श तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजन अन्यत्र स्वर-मध्यवर्ती व्यंजन की अपेक्षा अधिक तनाव युक्त होते हैं अघोष स्पर्श तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजनों का उन्मोचन तीव्रता के साथ अन्त्य स्वर में मिल जाता है। उच्चारण जितनी तीव्रता से किया जाता है ऊष्मीकरण तथा घर्षण की मात्रा उतनी ही बढ़ जाती है।

2. महाप्राण व्यंजन–

प्रस्तुत अध्ययन में महाप्राण व्यंजनों को एक अलग वर्ग में रखा गया है। अलग-अलग महाप्राण व्यंजनों का वितरण अलग-अलग प्रकार का है–

1.4.1-3 व्यंजन स्वनिम तथा उनके संस्वन

स्पर्श–

।प।–द्वयोष्ठ्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श–

= [प]; [प >]

= [प]–स्वाभाविक उन्मोचन एवं स्फोट से युक्त यह स्वनग्राम पद के आरम्भ में मिला है

[प् अ र् अ न् अ क् उ ट् ई]–परनकुटी- 2.79.1;
[प् अ त् इ]–पति 5.3.3
=[प् >]–अन्त्य स्थिति में प्रयुक्त होने पर उच्चारण में उन्मोचन का आभास नहीं होता–यथा–
[ज् अ प >]–जप–7.21.23;
[च् आ प् >]–चाप–7.38.3

।फ।–द्वयोष्ठ्य अघोष महाप्राण स्पर्श–
=[फ्]; [फ़]
=[फ्]–पद के आरम्भ में इसका प्रयोग है।
[फ् आ ग् उ]–फागु–2.48.1,
[फ् अ ल]–फल–2.49.5
=[फ़]–स्वर मध्यवर्ती होने पर इसमें महाप्राण की मात्रा कुछ कम हो जाती है। ओष्ठ पूर्णतया बंद नहीं होते परिणाम स्वरूप कुछ घर्षण सुनाई देता है–
[न् इ फ़ अ न]–निफन–2.32.2

।ब।–द्वयोष्ठ्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श–
=[ब्], [ब़]
=[ब्]–इसका प्रयोग पुस्तक में पद के आरम्भ में तथा संयुक्त व्यंजन रूप में ।म। के पश्चात् मिला है–जहाँ ये अपने स्वाभाविक रूप में रहता है और ओष्ठ दृढ़ता से स्पर्श करते हैं–
[ब् इ म् आ न]–बिमान–7.19.5,
[ब् इ म् ब् अ]–प्रतिबिम्ब–1.27.5
=[ब़]–स्वर मध्यवर्ती होने पर इसमें कुछ ऊष्मीकरण तथा घर्षण की मात्रा आ जाती है–
[क् अ ब़ अ ह् ऊँ]–कबहुँ–2.52.4,
[ब् अ र् अ ब़ अ स]–बरबस–5.21.2

।भ।–द्वयोष्ठ्य सघोष महाप्राण स्पर्श–
=[भ्], [भ़]
=[भ्]–पद के आरम्भ में इसका प्रयोग है जहाँ इसका महाप्राणत्व सघोष और दृढ़ होता है–
[भ् अ भ् अ र् इ]–भभरि–5.16.6,
[भ् ऊ ख]–भूख–5.6.6
=[भ़]–अन्य स्थितियों में इसका महाप्राणत्व शिथिल रहता हुआ अघोषवत् सा हो जाता है तथा स्पर्श भी पूर्ण न होने के कारण

ऊष्मीकरण व घर्षण सुनाई देता है–
[ल् आ भ़]–लाभ–1.50.1,
[स् ओ भ़ आ] सोभा 1.55.3

।त्।–जिह्वानोकीय, दन्त्य, अघोष अल्पप्राण स्पर्श–उन्मोचन महाप्राण रंजित है—

=[त्]; [त्]; [त्]

=[त्]–स्वाभाविक रूप में बोलने पर इसका प्रयोग मिलता है। इसके उच्चारण में जिह्वा की नोक ऊपर के दाँतों की नोक का स्पर्श करती है—
[त् ई र]–तीर–1.52.6,
[त् ऊ न]–तून–2.25.2

=[त्]–यह ।त। का अग्रदन्तीय संस्वन है। इसके उच्चारण में जिह्वा ऊपर के दाँतों की नोक का इस प्रकार स्पर्श करती है कि कुछ भाग उससे आगे भी निकल जाता है तथा जिह्वा दाँतों के पृष्ठ भाग को पूर्णतः आवृत्त नही करती। स्वर-मध्यवर्ती ।त। द्वित्व में इसका प्रयोग मिलता है–यथा–
[म् अ त् त् अ]–मत्त–1.63.3

=[त्]–यह ।त। का पश्चदंत्य संस्वन है। इसके उच्चारण में जीभ की नोक दाँतो के पृष्ठ भाग को पूर्णतः आवृत्त कर लेती है इसकी प्रयोग स्थितियाँ ये हैं–
[प् आँ त् इ]–पाँति–7.3.5,
(क् आ न् त् इ)–काँति–6.15.2

।थ्।–जिह्वानोकीय दन्त्य अघोष महाप्राण स्पर्श–

=[थ्]–इसका एक ही संस्वन मिला है–

=[थ्]–स्वाभाविक रूप से बोलने पर इसका प्रयोग मिला है
[थ् ओ र]–थोर–1.73.6,
[प् अ थ् इ क]–पथिक–2.16.1

।द्।–जिह्वानोकीय दन्त्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श–।त। के समान ही इसका भी सस्वनात्मक वर्णन व वैविध्य है–

=[द्], [द्], [द्]

=[द्]–स्वाभाविक स्थिति मे इसका प्रयोग मिला है–
[द् ओ न् आ]–दोना–3.17.5,
[द इ न]–दिन–3.15.1

=[द्]–अग्रदन्तीय संस्वन है। ।घ। के संयुक्त होने पर इसका प्रयोग हुआ है–

[स् इ द् घ् अ]–सिद्घ–2.49.6

=[द्]–यह पश्चदन्त्य संस्वन है। पुस्तक में इसका प्रयोग इस रूप में मिला है–

[क् अ न् द् उ क]–कंदुक–6.3.2

।ध।–सघोष जिह्वानोकीय दन्त्य महाप्राण स्पर्श–

=[ध्]–इसका एक ही संस्वन है–

=[ध्]–स्वाभाविक स्थिति में इसका प्रयोग मिला है–

[ध् अ न् उ]–धनु–1.53.2,

[अ ध् अ र]–अधर–1.34.3

।ट्।–जिह्वानोकीय पश्चवर्त्स्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श–इसका उन्मोचन महाप्राण रंजित है।

=[ट्], [ट्]–

=[ट्]–सामान्य सस्वन हैं। पद के आदि में इसका प्रयोग मिला है—यथा—

[ट् ए क]–टेक–5.49.4,

[ट् ऊ ट् य् ओ]–टूट्यो–1.93.2

= [ट्]–यह पश्चीभूत संस्वन है। इसके उच्चारण में जीभ की नोक ऊपर की ओर मुड़ती है और मूर्धा के अग्र भाग का स्पर्श करती है इसका प्रयोग अनुनासिक स्वरों और ण। के बाद मिला है–

~

[व् आ ट् इ]–वांटि–1.44.1,

[क् अ न् ट् अ क]–कंटक–2.5.2

।ठ्।–जिह्वानोकीय पश्चवर्त्स्य अघोष महाप्राण स्पर्श–

[ठ्] [ठ्]

=[ठ्]–सामान्य संस्वन है। पद के आदि, मध्य, अन्त में इसका प्रयोग है–यथा–

[ठ् औ र]–ठौर–6.4.3,

[क् अ ठ् इ न]–कठिन–2.57.3,

[स् ओ र् अ ठ]–सोरठ–7.19.4

= [ठ̃]–नासिक्य स्वरों के साथ इसका प्रयोग मिला है । ये पश्चीभूत संस्वन है–यथा–

[ग् आ ठ̃ इ]–गांठि–1.88.3

।ड।–जिह्वानोकीय सघोष अल्पप्राण स्पर्श–

= [ड्], [ड़्]

=[ड्]–पद के आदि में, मध्य में द्वित्व रूप में; तथा अन्त में संयुक्त रूप में ।ण। के बाद इसका प्रयोग है–

[ड् आ र]–डार–2.47.15,

[उ ड् ड् अ ग् अ न]–उड्डगन–7.6.2

[घ् अ म् अ न् ड् अ]–घमंड–1.46.4

= [ड़्]–यह उत्क्षिप्त स्पर्श है । ।ड। के साथ पूरक वितरण में आता है। पद के आदि में इसका प्रयोग नही है—

[त् अ ड़् इ त]–तड़ित–7.7.4

[ज् अ ड़्]–जड़–1.88.3

।ढ्।—जिह्वानोकीय सघोष महाप्राण स्पर्श–

= [ढ्]; [ढ़्]

=[ढ्]—यह सामान्य संस्वन है इसका प्रयोग पद के प्रारम्भ और मध्य में मिला है—

[ढ् आ र् अ त् इ]–ढारति–5.19.2,

[स् उ ढ् अ र]–सुढर–1.76.3

=[ढ़्]—यह ।ढ। का उत्क्षिप्त संस्वन है ।ढ। के साथ पूरक वितरण में आया है—पद के मध्य और अन्त में इसका प्रयोग मिला है—

[ग् अ ढ़्]–गढ़–5.22.11,

[ब् अ ढ़् आ य् ओ]-बढ़ायो–6.4.3

।क्।=जिह्वापश्च कण्ठ्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श—स्फोट कुछ महाप्राण रंजित है ।

=[क्], [कʻ]

= [क्]—यह सामान्य संस्वन है—पद के आरम्भ में प्रयुक्त होता है–यथा—

[क् आ र् ओ]–कारो–2.67.2,

[क् अ ट अ क]–कटक–5.46.4

=[क]–पदान्त में अघोष स्वरों के पूर्व इसका प्रयोग होता है जहां महाप्राणत्व की मात्रा कुछ बढ़ जाती है—

≃

[आ क]–आंक=1.85.1,

[ह् आ ट् अ क]–हाटक–1.25.2

।ख्।–जिह्वापश्च कंठ्य अघोष महाप्राण स्पर्श–

=[ख्]-इसका एक ही संस्वन है। पद के आदि, मध्य और अन्त में इसका प्रयोग मिला है—

[ख् अ र् ओ]–खरो–5.33.3,

[र् अ ख् अ व् आ र् ए]–रखवारे–3.3.3,

[प् आ ख्]–पाख–1.4.2

।ग्।–जिह्वापश्च कंठ्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श–

=[ग]–इसका एक ही संस्वन है जिसका प्रयोग पद के आदि, मध्य और अन्त में मिला है–

[ग् अ न् ई]–गनी–5.5.42,

[अ ग् आ ध् उ]–अगाधु–6.1.5,

[भ् आ ग]–भाग–5.41.1

।घ्।–जिह्वापश्च कंठ्य सघोष महाप्राण स्पर्श–

=[घ्]–एक ही संस्वन है जिसका प्रयोग पद के आदि, मध्य और अन्त में मिला है।

[घ् आ ट]–घाट–1.42.3,

[व् अ घ् अ न् अ ह् आ]–बघनहा–1.31.3

[अ घ]–अघ–6.12.2

स्पर्श संघर्षी–

।च्।–जिह्वाग्र तालव्य अघोष अल्पप्राण, स्पर्श संघर्षी–

=[च्], [च̄]

=[च्]–यह ।च। का सामान्य संस्वन है–पद के आदि, अन्त में इसका प्रयोग मिला है–

[च् आ प]–चाप–1.68.8,

[म् आ र् ई च]–मारीच–6.1.2

=[च̄]–इसका प्रयोग ।छ। के पूर्व संयुक्त रूप में मिला है जहाँ पर यह स्पर्श-ध्वनि के रूप में उच्चरित हुआ है–

[र् अ च् छ् अ क]–रच्छक–1.22.6

।छ्।–जिह्वाग्र तालव्य अघोष महाप्राण स्पर्श संघर्षी–

=[छ्]–इसका एक ही संस्वन है जिसका प्रयोग पद के आदि, मध्य और अन्त में मिला है–

[छ् ओ र]–छोर–1.73.4,

[उ छ् आ ह]–उछाह–1.4.14,

[र् ई छ]–रीछ–7.38·6

।ज्।–जिह्वाग्र तालव्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श संघर्षी–

=[ज्], [ज]

=[ज्]–सामान्य रूप में इसका प्रयोग मिला है–

[ज अ प]–जप–7.21.23,

[अ ज् इ न]–अजिन–2.79.2

[स् अ म् आ ज]–समाज–5.5.3

=[ज]–दीर्घ होने पर इसका प्रयोग मिला है जहाँ प्रथमांश स्पर्श-ध्वनि रूप में उच्चरित हुआ है–

[स् अ ल् अ ज् ज् अ]–सलज्ज–1.89.5

।झ्।–जिह्वाग्र तालव्य सघोष महाप्राण स्पर्श संघर्षी–

=[झ्]–इसका एक ही संस्वन है जिसका सामान्य रुपेण प्रयोग हुआ है–।

[झ् अ ष]झष–7.4 5,

[न् इ र् अ झ् अ र]–निरझर–2.49.3,

[झ् आ झ]–झाँझ–7.21·17

ऊष्म व्यंजन

।स्।–जिह्वाग्रीय पश्च-दन्त्य ऊष्म–इसका प्रयोग पद के आदि, मध्य अन्त सर्वत्र मिला है–

[स् ए ज]—सेज-1.7.1,

[स् अ न् स् आ र]—संसार–1.25·6,

[प् आ र् अ स]—पारस–1.67·3,

।ह।—कंठद्वारीय संघर्षी ध्वनि है इसके दो संस्वन मिले हैं—

= [ह्], [ह]

= [ह्]–यह अघोष स्वनग्राम है जो पद के अन्त में मिला है–
[उ छ् आ ह]—उछाह–1.2.24,
[स् अ म् ऊ ह]—समूह–6·16.3
= [ह]—यह सघोष स्वनग्राम है जो पद के आदि में या स्वर मध्यवर्ती होने पर होता है—
[ह इ त]– हित–1.5.4,
[व् अ ह ओ र]—वहोर–5.29.2

नासिक्य व्यंजन –

।म्। – द्वयोष्ठ्य नासिक्य–पद के आदि, मध्य, अन्त में प्रयुक्त होता है—
[म् ई त] – मीत–1.22·12,
[क् अ म् अ ठ]—कमठ–5.22.8,
[स् ओ म]—सोन–1·68·10

।न्।—दंत्य नासिक्य–इसके चार संस्वनात्मक वैविध्य हैं–
=[न्], [ण], [ञ], [ङ]
= [न्]—इसका प्रयोग पद के आरम्भ में, स्वर मध्यवर्ती होने पर, स्वर के पश्चात् व दीर्घ होने पर पाया गया है–
[न् अ य]–नय–7.24.1,
[म् अ न् उ]—मनु–1.66.1,
[म् अ स् आ न]—मसान–2.84·2,
[प् र् अ स् अ न् न् अ]—प्रसन्न–1·4·2
= [ण्]—इसका प्रयोग मूर्धन्य व्यंजनों के पूर्व मिला है–
[घ् अँ ण ट् आ]–घंटा–1·2·13,
[म् अँ ण ड् अ न]–मंडन–1.22·1
= [ञ्]—तालव्य स्पर्श संघर्षियों के पूर्व इसका प्रयोग मिला है–
[च् अँ ञ् च् अ र् ई क]–चंचरीक–1·108·8,
[क् अँ ञ् ज् अ]—कंज–1.25.4
==[ङ्]—कंठ्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व इसका प्रयोग है–
[अ ङ् क् उ स]—अंकुस–1.25·3,
[ज् अ ङ् घ् आ]—जंघा–1.73.3

पार्श्विक—

।ल्।—दन्त्य सघोष अल्पप्राण पार्श्विक–

=[ल्], [ल़्]-

=[ल्]– सामान्य रूप से इसका प्रयोग है–
[ल् आ ज]—लाज–1.92.2,
[ग् अ ल् ई]—गली–1.2.5

=[ल़्]—इसके उच्चारण में जिह्वा अग्रीभूत होती है साथ ही घोषत्व की मात्रा कुछ कम हो जाती है। पद के अन्त में और दीर्घ रूप में इसका प्रयोग है–
[क् ओ ल़्]–कोल–3.17.7,
[प् अ ल् ल़् अ व]—पल्लव–3.10.2

लुण्ठित—

।र्।—जिह्वानोकीय पश्चदन्त्य सघोष अल्पप्राण लुण्ठित–पद के आदि मध्य और अन्त सर्वत्र प्रयुक्त है।
[र् अ थ]—रथ–3.8.1,
[म् अ र् अ क् अ ट]—मरकट–5.22.4,
[क् अ र]—कर–3.9.1

1.4.1.4 व्यंजन संयोग–

आलोच्य पुस्तक में दो से लेकर तीन व्यंजनों के संयोग मिले हैं दो व्यंजनों के संयोग प्राथमिक स्थिति में 28 व माध्यमिक स्थिति में 63 हैं। (शब्दान्त संयुक्त व्यंजनों में ।अ। मिश्रित है—इस आधार पर) अन्तिम स्थिति में कोई व्यंजन संयोग नहीं है। ।फ। और ।ढ। का संयोग किसी स्थिति में नहीं हैं। तीन व्यंजन-संयोगों की संख्या कुल 8 है। इस प्रकार कुल व्यंजन संयोग 99 हैं जिनका वर्णन तालिका सहित निम्न प्रकार से किया गया है।

दो व्यंजनों का संयोग

प्राथमिक स्थिति– इस स्थिति में व्यंजन संयोग का क्रम व्यंजन+।य।, ।र और ।व। है–

1. व्यंजन+ ।य।—प्राथमिक स्थिति में ।य। के साथ निम्न संयोग मिले हैं–

क्+य	क्यों	1.108.7	ख्+य	ख्याल	1.55.6
ग्+य	ग्यानी	1.6.10	ज्+य	ज्यों	5.46.2
त्+य	त्यों	1.4.3	द्+य	द्युति	2.23.1
ध्+य	ध्यान	2.16.3	न्+य	न्यारी	1.25.4
प्+य	प्यारे	1.36.2	ब्+य	ब्याह	1.105.2
ल्+य	ल्याइ	1.90.10	व्+य	व्यवहार	7.34.5
श्≃स्+य	श्याम≃स्याम	1.23.2,	1.26.1		

2. व्यंजन + ।र।–

क्+र	क्रोध	1.25.6	ग्+र	ग्राम	2.15.3
त्+र	त्रासहारी	1.25.6	द्+र	द्रोही	2.18.3
प्+र	प्रेम	1.8.5	ब्+र	ब्रत	1.67.2
भ्+र	भ्राजत	1.25.3	श≃स+र	श्रवन≃स्रवन	1.25.4, 1.38.3

3. व्यंजन + ।व।–

क्+व	क्वैहै	6.17.2	च्+व	च्वैहैं	6.17.2
ज्+व	ज्वर	1.68.4	द्+व	द्विज	1.25.4
ध्+व	ध्वैहौ	2.62.1	स्+व	स्वयंवर	1.75.1
ह्+व	ह्वैहै	1.95.1			

माध्यमिक स्थिति

इस स्थिति में व्यंजन संयोग का क्रम इस प्रकार है–

1. व्यंजन + ।य।–

क्+य	तक्यो	2.68.3	ख+य	राख्यो	7.31.5
ग्+य	जग्योपवीत	1.108.6	घ्+य	लांघ्यो	5.16.2
च्+य	बच्यो	7.31.2	ज्+य	सृज्यो	7.31.5
झ्+य	सूझ्यो	5.12.5	ट्+य	टूट्यो	1.98.1
ठ्+य	उठ्यो	2.50.4	ण्+य	कारुण्य	2.62.3
ड्+य	उड्यो	2.11.4	त्+य	नृत्य	1.2.14
थ्+य	मथ्यो	6.11.5	द्+य	जद्यपि	1.16.2
ध+य	मध्य	1.2.2	न्+य	पुन्य	1.9.4
प्+य	सौंप्यो	1.109.5	ब्+य	दिब्य	1.84.3
भ्+य	अलभ्य	2.32.2	म्+य	जनम्यो	6.14.2
र्+य	हर्यो	7.38.3	ल्+य	कल्यान	7.32.1
ष्+य	भाष्यौ	5.46.4	स्+य	बस्यो	7.10.2
ह्+य	कह्यो	4.2.1			

2. व्यंजन + ।र।–

क+र	पराक्रम	5.5.3	ग्+र	अग्र	6.1.9
ज्+र	बज्र	1.108.7	त्+र	सत्रुसूदन	7.34.3
द्+र	चन्द्रमहि	2.14.3	घ्+र	षडघ्रि	1.25.5
प्+र	विप्र	1 4.5	भ्+र	सुभ्रवारी	1.25.4
स्+र	आस्रम	7.33.1			

3. व्यंजन + ।व।

द्+व	भरद्वाज	2.68.3	ध्+व	मारध्वज	7.6.3

स्‌+व	बिस्व	1.86.4			

4. व्यंजन + ।ह।–

न्‌+ह	चिह्‌न	1.25.3	म्‌+ह	तुम्हहिं	2.2.4
ल्‌+ह	मल्हाइ	20.2			

5. ह् + ।म।–

ह्‌+म	ब्रह्‌म	7.38.1

6. व्यंजन + ।त।, ।न।, ।ट।, ।ठ।, ।व।, ।प।, ।स।–

क्‌+त	मुक्तामाल	1.108.6	प्‌+त	तृप्ति	5.49.3
स्‌+त	अस्तुति	7.38.9	र्‌+न	पर्नसाल	3 17.1
ष्‌+ट	दृष्टि	1.12.2	ष्‌+ठ	वसिष्ठ	1.6.10
र्‌+व	गर्व	7.21.18	त्‌+प	उत्पति	2.71.4
त्‌+स	श्रीवत्स	1.26 3			

7. सवर्गीय (अल्पप्राण + महाप्राण)–

च्‌+छ	रच्छक	1 22 6	त+न	रत्न	1.25.2
द्‌+ध	सिद्ध	2.49.6	न्‌+ध	बन्धु	2.33.1
ण्‌+ड	कुण्डल	7.9.5	म्‌+ब	अवलम्ब	5.11.4

8. दीर्घ व्यंजन–

क्‌+क	चिक्कन	1.25.5	ग्‌+ग	दिग्गज	5.22.8
ज्‌+ज	सलज्ज	1.89.5	ड्‌+ड	उड्डगन	7.6.2
त्‌+त	मत्त	1.63.3	न्‌+न	प्रसन्न	1.4.6
ल्‌+ल	पल्लव	3.10.2			

1.4.1.4.2 तीन व्यंजनों का संयोग–

आलोच्य ग्रन्थ मे तीन व्यंजनो के सयोग अत्यल्प है। ये सयोग अधिकांशतः माध्यमिक स्थिति मे नासिक्य चिह्‌न (अनुस्वार) + सवर्गीय व्यजन + अन्य व्यंजन के साथ है। केवल दो स्थानों पर निरनुनासिक सयोग मिले हैं–

यथा—

जंत्र	1.4.13	मंज्यौ	1.90.7
मुनीन्द्र	1.25.6	विंध्य	2.41.1
संभ्रम	2.55.3	संग्राम	7 31.4

निरनुनासिक संयोग—

निर्व्यलीक	7.3.6	पुलस्त्य	6.1.8

1.4.4 खण्डेतर स्वनिम

विना खण्डेतर स्वनिमों के खण्डीय स्वनिमों (पद-वाक्यादि) का विचार पूर्ण नहीं हो सकता अतः इनका सामान्य वर्णन नीचे दिया जा रहा है–

1.4.2.1 विभाजक–ये दो प्रकार के मिले हैं–

1.4.2.1.1 शब्दान्त विभाजक–शब्दान्त विभाजक के कुछ उदाहरण पुस्तक में प्राप्य है जो इस प्रकार हैं–

।कोही।	1.71.2	(क्रोधी)	।को + ही।	2.19.4	(कौन थी)
।देखिहौ।	1.48.2	(देखूंगा)	।देखि + हौं।	2.19.1	(देखकर मैं)
।ताके।	1.64.4	(ताका है)	।मनोहरता + के।	2.24.1	(मनोहरता के)

शब्दान्त विभाजक में जो स्वर संस्वन केवल पद के अन्त में मिलते हैं, वे उच्चारण के मध्य में मिलते हैं तथा मध्य में व्यंजन कुछ अधिक तनावयुक्त होते हैं जो केवल एक पद के उच्चारण मे उन्ही स्वर स्थितियों मे इस प्रकार उच्चरित नहीं होते। ये व्यंजन संस्वन (उच्चारण-मध्य मे प्राप्त) पद के आदि में मिलने वाले संस्वनों के समान हो जाते हैं–

आलोच्य पुस्तक मे इसी प्रकार के कई उदाहरण मिले हैं–

1.4.2.1.2 वाक्यान्त विभाजक–

नीचे दिए गए स्वल्पान्तर युग्म से वाक्यान्त विभाजक को समझा जा सकता है–

।मागध ↓ सूत ↓ द्वार वंदीजन ↓। ····1.1.6 (अपूर्ण गणना)

।मागध ↓ सूत ↓ भाट ↓ नट ↓ जाचक ↓।। ······ 1.2.21 (पूर्ण गणना)

1.4.2.2 सुरसरणियाँ–ये दो प्रकार की हैं–

1.4.2.2.1 अन्त्य सुरसरणियाँ–इनके तीन भाग हैं–

(1) आरोही । ↑ ।, (2) अवरोही । ↓ ।, (3) सम ।→।–

इनके स्वल्पांतर युग्म इस प्रकार है–

।ये अवधेस के सुत दोऊ ↓ ।। ।	1.63.1 (सामान्य कथन)
।ढोटा दोउ काके हैं ↑ ।। ।	1.64.1 (प्रश्न)
।रहहु भवन→।। ।	2.5.1 (आज्ञा)
।हौं रहौं भवन ↑ ।। ।	2.7.3 (आज्ञा को सुनकर आश्चर्य युक्त प्रश्न)

1.4.2.2.2 अन्त्येतर सुरसरणि–

यह केवल एक है–बलवर्धक ।ब। जो शब्द के पूर्व स्थित है। जिस शब्द पर बल दिया जाता है, उसका सुर आरोही होकर परवर्ती शब्द पर धीर होता है। बलवर्धक ।ब। तथा अनुपस्थिति का स्वल्पान्तर युग्म इस प्रकार है–

।सब भाँति विभीषन की बनी ↓ ॥ । 5.39.1 (सामान्य कथन)
।कहो ।ब। क्यों न विभीषन की बनै ↓ ॥ । 5.40.1 (क्यों पर बल)
बलवर्धक ।ब। के स्थान भेद का स्वल्पान्तर युग्म—
।रिपु रन जीति ।ब। राम राउ आए ↓ ॥ । 6.22.1 (राम पर बल)
। ।ब। रिपु रन जीति राम आए ↓ ॥ । 6.23.1 (रिपु पर बल)

1.4.2.3 सुरसरणि परिवर्तक—

ये तीन है—मोड ।म।, प्लुति ।प।, अतिरिक्त ध्वनिवर्धक ।घ।

1.4.2.3.1—मोड ।म।—इसका प्रयोग सभी अन्त्य सुरसरणियों के साथ हो सकत है । । ↑ म। का उच्चारण आरोहण की समाप्ति पर क्षणिक अवरोहण-युक्त होता है । ।↘। ; । ↓ म। का उच्चारण अवरोहण की समाप्ति पर क्षणिक आरोहण के साथ होता है । ↗। ; ।→म। का उच्चारण समसुर की समाप्ति पर क्षणिक आरोहण के साथ होता है । मोड और उसकी अनुपस्थिति के स्वल्पांतर युग्म इस प्रकार हैं—

।काहे को खोरि कैकयिहि लावौं ↑ ॥ । 2.63.1 (सामान्य प्रश्न)
।आली री अब राम लपन कित ह्वै हैं ↑ म ॥ । 6.18.1 (विवादयुक्त प्रश्न)
।रंगभूमि आए दसरथ के किसोर हैं ↓ ॥ । 1.73.1 (सामान्य कथन)
।ऐई राम, लषन जे मुनि संग आए हैं ↓ म ॥ । 1.74.1 (निश्चयात्मक कथन)
।नेकु, सुमुखि, चित लाइ चितौरी→ ॥ । 1.77.1 (सामान्य आज्ञा)

1.4.2.3.2 प्लुति ।प।—प्लुति और उसकी अनुपस्थिति के स्वल्पान्तर युग्म इसा प्रकार हैं—

।कब देखौगी नयन वह मधुर मूरति ↑ ॥ । 5.47.1 (सामान्य प्रश्न)
।कहु, कबहुँ देखिहौं आली ! आरज सुवन ↑ प॥ । 5.48.1 (निराश प्रश्न)
।मेरे जान इन्हें बोलिबे कारन चतुर जनक ठयो ठाट इतौरी ↓ ॥ । 1.77.3 (सामान्य संदेह)
।मेरे जान जानकी काहू खल छल करि हरि लीन्ही ↓ प॥ । 3.6.3 (मात्रा में अधिक संदेह)

1.4.2.3.3 अतिरिक्त ध्वनिवर्धक—।घ।—अतिरिक्त ध्वनिवर्धक तथा उसकी अनुपस्थिति का स्वल्पान्तर युग्म इस प्रकार है—

।प्रिय निठुर बचन कहे कारन कवन ↑ ॥ । 2.8.1 (सामान्य प्रश्न)
।क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल ताड़का मारी ↑ घ॥ । 1.109.2 (साश्चर्य प्रश्न)

पद विचार

2.1–नामिक–

2.1.1–प्रातिपदिक–

आलोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त नामिक प्रातिपदिकों को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है–(1) वे प्रातिपदिक जो रचना की दृष्टि से केवल एक भाषिक इकाई हैं, (2) वे प्रातिपदिक जो दो रुपिम या शब्दों मे मिलकर रूप में एक हो गए है। दोनों प्रकार के प्रातिपदिक अलग-अलग विश्लेषित किए गए हैं।

2.1.1.1–एक भाषिक इकाई वाले प्रातिपदिक–

गीतावली में प्रयुक्त एक भाषिक इकाई वाले नामिक प्रातिपदिकों को स्वरान्त और व्यंजनान्त दो वर्गो में विश्लेष्य समझा गया है। अन्त्य संयुक्त व्यंजन स्वरान्त समझे गए हैं और व्यंजनान्त से अलग कोटि में रखे गए हैं। इस प्रकार प्रयुक्त व्यंजनान्त और स्वरान्त प्रातिपदिकों में प्रत्येक की कुल संख्या इस प्रकार है।

व्यंजनान्त प्रातिपदिक	888
संयुक्त व्यंजन (अकारान्त)	104
आकारान्त प्रातिपदिक	145
इकारान्त प्रातिपदिक	207
ईकारान्त प्रातिपदिक	134
उकारान्त प्रातिपदिक	67
ऊकारान्त प्रातिपदिक	9
ओकारान्त प्रातिपदिक	4
कुल नामिक प्रातिपदिक	1558

उदाहरण —

2.1.1.1.1–व्यंजनान्त–प्रत्येक अन्त्य की कुल संख्या कोष्ठक में दी गई है तथा कुछ उदाहरण–आवृत्तियों के साथ दिए गए हैं।–

–क (70 प्राति0)

आँक	1.94.2		उलूक	1.73.5	
कोक	1.37.2		तिलक	1.32.4	(27 वार)
पिनाक	1.80.2	(9 वार)	हाटक	7.21.11	(4 वार)

–ख (12 प्राति0)

अनख	1.84.7		दुख	1.47.1	(29 वार)
नख	7 14.2	(16 वार)	मख	1.102.4	(15 वार)
सुख	5.28.6	(88 वार)			

–ग (36 प्राति)

उमग 1.4.14 (3 बार) कागा 1.29.3 (3 बार)
जाग 7.21.23 (5 बार) डग 2.27.4
नग 2.27.2 पग 2.31.2
सोग 2.88.4

–घ (2 प्राति0)

अघ 6.12.2 (5 बार) अरघ 1.61.2

–च (15 प्राति)

आँच 4.1.2 कच 7.12.4 (8 बार)
नाच 1.94.2 पेच 1.86.1
मारीच 6.1.2 सोच 2.34.3 (23 बार)

–छ (1 प्राति0)

रीछ 7.38.6

–ज (18 प्राति0)

अज 7.38.1 काज 2.41.4 (18 बार)
तेज 2.79.4 रूज 1.53.2
समाज 5.5.3

–झ (2 प्राति0)

झाँझ 7.21.17 साँझ 7.20.1

–ट (25 प्राति0)

कपट 6.11.1 (7 बार) तट 5.22.11
पट 7.22.4 (14 बार) ललाट 1.22.7 (2 बार)
सुभट 5.13.2 (3 बार)

–ठ (7 प्राति0)

कमठ 5.22.8 पाठ 6.15.2
सोरठ 7.19.4 माठ 4.1.2

–ड (अभाव है)

–ढ़ (अभाव है)

–ड़ (4 प्राति0)

जड़ 1.88.3 (6 आ0) नीड़ 1.26.2
गोड़ 2.69.3 मूड़ 1.71.3

–ढ़ (2 प्राति0)

गढ़ 5.22.11 राढ़ 1.95.1

–ण (2 प्राति0)

कल्याण	7.18.6		ब्राह्मण	1.2.18	

–त (14 प्राति०)

आखत	5.16.6		कपोत	2.47.11	
चरित	1.10.4	(19बार)	भरत	1.42.1	(55 बार)
लात	5.26.1	(3 बार)	सुत	1.1.4	(32 बार)
हित	1.5.4				

–थ (11 प्राति०)

अरथ	6.15.2		गाथ	7.19.5	
तीरथ	7.15.1		यूथ	2.48.2	
हाथ	1.72.3	(14 बार)			

–द (25 प्राति०)

गोद	1.10.2	(11 बार)	नद	1.68.7	
पद	1.58.1	(27 बार)	रद	7.10.2	
सरद	7.17.11	(11 बार)			

–ध (13 बार)

क्रोध	6.2.5	(4 ब र)	दूध	5.37.2	
गीध	5.43.1	(10 बार)	बिराध	7.38.4	
साध	5.31.2				

–न (154 प्राति०)

आनन	1.34.4		चौगान	1.22.13	
तन	2.29.6	(17 बार)	पन	1.89.1	(17 बार)
रन	1.50.3	(11 बार)			

–प (24 प्राति0)

अनिप	2.49.4		चाप	1.68.8	(23 बार)
पाप	5.16.7	(9 बार)	रूप	1.79.3	(46 बार)
साप	1.66.2				

–फ (2 प्राति0)

गुलुफ	7.17.4		डफ	1.2.13	(5 बार)

–व (8 प्राति0)

करतव	7.31.5		दूव	1.2.5	
जीव	2.28.3	(5 बार)	राजीव	7.16.6	(15 बार)

–भ (5 प्राति0)

नभ	2.45.4	(25 बार)	लोभ	1.25.6	

सलभ	5.8.2		लाभ	1.70.1	
सरभ	5.22.3				

—म (42 प्राति0)

करम	6.17.2	(7 बार)	चरम	7.36.3	
तम	5.11.2	(8 बार)	रोम	1 68.10	(6 बार)
राम	1.9.6		सोम	1.68.10	
हिम	2.5.2	(4 बार)			

—य (43 प्राति0)

काय	2.28.3		जटाय	7.31.4	
तनय	1.1.7		पिय	7.36.4	(6 बार)
हृदय	5.7.4	(30 बार)			

—र (135 प्राति0)

अंकुर	3.17.5	(3 बार)	चर	2.45.4	
द्वार	7.13.4	(8 बार)	ठाकुर	5.30.2	
पर	3.8.2		ससुर	7.32.2	

—ल (74 प्राति0)

काल	1.96.6		चंगुल	3.8.1	
तेल	5.16.4		पाटल	2.47.4	
सेल	1.95.1				

—व (21 प्राति0)

कुरुव	2.48.2		देव	1.10.2	(13 बार)
लव	7.36.1		जव	1.2.19	
सिव	1.8.5	(14 बार)			

—ष (21 प्राति0)

चष	7.4.5		तोष	1.38.2	
पीयूष	2.44.3	(4 बार)	सेष	7.13.8	(4 बार)
हरष	7.1.5	(10 बार)			

—स (45 प्राति0)

अंकुस	1.25.3	(6 बार)	केस	7.17.14	(3 बार)
देस	1.103.2		रस	2.48.4	(6 बार)
हरस	6.22.4				

—श (1 प्राति0)

केश	1.33.3

–ह (25 प्राति0)

उछाह	1.4.14	(9 बार)	करह	1.29.2	
दाह	5.14.4		सनेह	7.30.3	(53 बार)

2.1.1.1.2–स्वरान्त प्रातिपदिक :

अकारान्त संयुक्त व्यंजनों के उदाहरण व्यंजन संयोग के अन्तर्गत दिए गए हैं शेष अन्त्यों के उदाहरण अकारादि क्रम से निम्नलिखित हैं–

स्वरों से	(10)	अरगजा	1.1.8	उमा	1.5.6
क वर्ग से	(17)	कठुला	1.34.3	घंटा	1.2.13
च वर्ग से	(22)	चना	7.13.7	झरना	2.47.10
ट वर्ग से	(1)	ढोटा	1.56.1		
त वर्ग से	(16)	ताड़का	1.55.6	दोना	1.71.1
प वर्ग से	(44)	बिदा	7.34 3	बेटा	1.67.1
रकार से	(7)	राजा	5.39.5	रेखा	1.108.5
लकार से	(8)	लरिका	2.73.3	लालसा	2.35.4
सकार से	(19)	सपना	3.17.4	सुमित्रा	3.17.6
हकार से	(1)	हिंडोलना	7.18.1		

— इ

स्वरों से	(16)	अतिथि	5.38.3	आगि	5.16.5
क वर्ग से	(41)	कपि	5.10.1	खरि	5.40.4
च वर्ग से	(17)	चांचरि	7.22.5	जोगि	1.55.8
ट वर्ग से	(4)	डोरि	1.43.3	डिठि	1.21.2
त वर्ग से	(32)	तरनि	1.38.2	निमि	1.108.9
प वर्ग से	(58)	फनि	7.3.3	मुनि	5.37.3
रकार से	(12)	रवि	1.65.3	रीति	2.31.1
लकार से	(4)	लोइ	5.5.6	लवनि	1.106 4
सकार से	(21)	ससि	7.33.4	सिखि	7.18.1
हकार से	(2)	हरि	4.2.3	हानि	7.32.4

— ई

स्वरों से	(11)	अंगुली	7.17.4	अवनी	1.58.2
क वर्ग से	(20)	कछौटी	1.44.1	घरी	7.34.1
च वर्ग से	(21)	जती	1.55.8	जननी	1.25.5
ट वर्ग से	(4)	टई	5.37.4	डांड़ी	7.19.3
त वर्ग से	(12)	दामिनी	7.5.1	धरनी	2.50.4

प वर्ग से	(46)	पटुली	7.19.3	बंदी	2.51.1
रकार से	(6)	राजधानी	7.38.9	खनी	1.58.1
सकार से	(9)	साढ़ी	5 37.2	सहेली	1.2.1
हकार से	(5)	हेली	2.26.3	ही	2.30.3

आवश्यक निर्देश :

आलोच्य ग्रन्थ में कहीं कहीं एक ही शब्द इकारान्त व ईकारान्त दोनो ही रूपों में प्रयुक्त हुआ है यथा तुलसि–तुलसी, आलि-आली–ऐसे शब्दों को एक ही स्थान पर गिना गया है–ऐसे शब्दों की संख्या 18 है।

–उ गीतावली में उकारान्त प्रातिपादिक दो प्रकार के हैं : एक तो वे जो वास्तव में हैं तो अकारान्त (व्यंजनांत) लेकिन कहीं कहीं (छन्दाग्रह, तुक, बोलीगत वैशिष्ट्य विभक्ति अथवा अन्य किसी कारण से) उकारान्त रूप में आए हैं यथा : दापु, पापु, द्वेषु, नाजु, आदि ऐसे शब्दों की संख्या 59 है। इन्हें उकारान्त प्रातिपदिकों में सम्मिलित नहीं किया गया है–दूसरे ही वास्तविक प्रातिपदिक हैं जो मूलतः उकारान्त है , यथा–

स्वरों से	(7)	आयसु	2.74.1	आयु	1.11.3
क वर्ग से	(8)	गेरू	2.47.15	गहरु	6.11.3
च वर्ग से	(2)	जानु	7.17.7	जन्तु	7.17.10
ट वर्ग से	(1)	ठट्टु	1.80.3		
त वर्ग से	(7)	धातु	2.50.3	धेनु	1.1.9
प वर्ग से	(22)	बंधु	6.7.1	बाहु	6.7.1
रकार से	(5)	रितु	7.21.22	रेनु	7.22.3
लकार से	(1)	लाहु	7.32.4		
सकार से	(13)	सेतु	5.14.2	सिसु	1.26.1
हकार से	(1)	हेतु	5.44.5		

–ऊ

क वर्ग से	(1)	कलेऊ	1.99.2		
च वर्ग से	(1)	चमू	5.22.9		
प वर्ग से	(4)	वधू	1.15.1	भ्रू	1.23.2
लकार से	(3)	लटू	1.8.5	लाडू	1.64.2

–ओ

क वर्ग से	(2)	कोदो	5.40.4	गो	5.30.2
स वर्ग से	(2)	सारो	2.66.1	सुहो	7.18.5

इसके अतिरिक्त 18 ओकारान्त व 6 औकारान्त नामिक और मिले हैं जो वास्तव में अकारान्त (व्यंजनान्त) व आकारान्त हैं लेकिन पुस्तक में ओकारान्त व

औकारान्त रूप में आए हैं यथा–हियो, पालनो, तारो, पानह्यो, पितौ आदि इनको भी प्रातिपदिक में स्थान नहीं दिया गया हैं–

2.1.2 मुक्त वैविध्य–

2.1.2.1 प्रातिपदिक के दीर्घ रूप–

आलोच्य ग्रन्थ में प्रातिपदिक के दीर्घ रूपों की संख्या काफी है । ये रूप इस प्रकार है–

–इया–इ, ई में अन्त होने वाले, व्यंजनान्त तथा आकारान्त नामिकों के साथ–

भाई	भइया	1.9.1	अंगना	अगनैया	1.9.3
पाग	पगिया	1.44.1	बधाई	बधैया	1.9.4
मा	मैया	1.9.1	बलाइ	बलैया	1.9.2

–इयाँ : ई में अन्त होने वाले व्यंजनान्त रूपों के साथ–

नथुनी	नथुनियां	1.34.3	अगुरी	अगुरियां	1.33.1
चौतनी	चौतनियाँ	1.34.4	पनही	पनहियाँ	1.44.1
पहुंची	पहुचियाँ	1.33.2	दांत	दंतुरियां	1.33.4
चितवन	चितवनियाँ	1 34.5			

–उआ :

फाग	फगुआ	7.22.7

–औटा :

कुअंर	कुअंरौटा	1.62.1

2.1.2.2 अकारान्त के स्थान पर आकारान्त रूप–

आंगन	अगंना	1.30.1	वृन्द	बुन्दा	1.31.4
कोकिल	कोकिला	1.54.4	अंब	अंबा	1.72.3

2.1.2.3 आकारान्त के स्थान पर अकारान्त–

कोना	कोन	5.20.2	गगा	गंग	3.4.3
भौंरा	भौंर	7.19.3	सेना	सेन	5.16.13

2.1.3–स्वरीभूत रूप–

कुछ नामिकों में ।य। और ।व। के स्थान पर ।उ। का प्रयोग मिलता है ऐसे प्रयोगों की भी संख्या पर्याप्त मात्रा में है कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

अन्याय	>	अन्याउ	2.10.1
न्याय	>	न्याउ	7.24.2
घाव	>	घाउ	6.15.1
चाव	>	चाउ	2.57.2

2.1.4 अवधारण के लिए प्रयुक्त कुछ संयोगात्मक रूप–

आलोच्य पुस्तक में कुछ संयोगात्मक रूपों का प्रयोग अवधारण के लिए हुआ है–कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं–ऐ, ओ, औ–

(अ) लरिकै	1.72.2	(लड़की ही)
जलो	5.42.2	(जल भी)
धीरो	6.15.3	(धीर भी)
(आ) हु≃उ–उमहु	2.30.2	(उमा से भी)
जननिउ	2.3.1	(जननी भी)
मांगहु	1.4.10	(मांग भी)
(इ) हु≃ऊ–नायकहू	1.94.2	(अधिपति भी)
वेदऊ	5.25.1	(वेद भी)
(ई। हि, हिं–भोरहि	2.68.3	(प्रात ही)
मनहिं	1.62.3	(मन ही)
बालकहि	5.23.2	(वालक ही)

2.1.5 एकाधिक रूप–आलोच्य ग्रन्थ में कई नामिकों का प्रयोग एक से अधिक रूपों में हुआ है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

आंक	1.94.2≃आंकु	1.89.3	
वचन	5.25.4≃वयन	1.51.1≃बैन	1.35.3
भैया	2.66 4≃भैआ	1.9.1≃भिया	1.68.11
दंतियाँ	1.32.3≃दंतुरिया	1.33.4	
भवन	1.17.2≃भुवन	1.4.1≃भुअन	7.1.1
लपन	1.14.1≃लखन	1.21.1≃लछिमन	7.38.8

2.1.5–लिंग-विधान–

गीतावली मे नामिकों को पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दो विभागों में बांटा गया है। लिंग-निर्णय अधिकांशत: वाक्यगत प्रयोग पर आधारित है। नीचे लिंग-विधान से संवधित दोनो विधाओं को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया गया है–

2.1.6.1–शब्द-रूप–

2.1.6.1.1–व्यंजनान्त नामिकों में लिंग–

व्यंजनान्त नामिक दोनों लिंगों में प्राप्त हैं परन्तु स्त्रीलिंग की अपेक्षा पुल्लिंग नामिकों की संख्या अधिक है–

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
विपिन	2.13.1	सांझ	7.20.1
हरिन	3.9.1	पीठ	2.80.3

विटप	1.92.4	कमान	7.17.8
गौतम	1.74.3	कसम	5.39.6
धनुष	2.45.3	खाल	2.27.2
गेह	2.29.5	सास	5.50.5

2.1.6.1.2 आकारान्त नामिकों में लिंग–

सभी आकारान्त नामिक प्रायः दोनों लिंगों में समान रूप से विभक्त हैं–

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
कठुला	1.34.3	सिखा	1.53.2
घंटा	1.2.13	रेखा	1.108.4
चना	7.13.7	छपा	1.19.3
जोटा	1-62.1	उमा	1.5.6
पिता	2.72.2	अपसरा	7.21.20
राजा	5.39.5	गिरा	1.87.2
सुधा	1 62.4	दसा	5.20.4

2.1.6.1.3–इकारान्त में दोनों कोटियों से समान रूप मिले हैं–

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
केकि	7.12.5	डिठि	1.21 2
पति	7.32.2	पुत्रि	3.7 4
अतिथि	5.38.3	गति	2.17.2
मुनि	5.37.3	अगिनि	5.10.3
निमि	1.108.9	करिनि	2.47.14
बालि	5.23.2	रति	7.18.2
वरहि	2.48.3	सखि	2 18.1

2 1.6.1.4–ईकारान्त नामिक पुल्लिंग की अपेक्षा स्त्रीलिंग में अधिक है–

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
अथरवणी	1.6.18	अंगुली	7.17.4
कदली	7.16.3	आली	1.13.2
पंछी	2.67.3	कली	1.62.2
वंदी	2.51.1	घरी	7.34.1
वाली	6.2.2	चूनरी	1.105.3
भाई	2.79.4	वानी	5.23.3
मंत्री	2.56.2	मुंदरी	5.2.4

2.1.6.1.5–उकारान्त नामिक–

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
आंसु	2.63.3	मीचु	5.24.2
इदु	1.54.2	मातु	5.35.3
कंब्रु	1.108.7	आयु	1.11.3
गेरु	2.47.15	रितु	7.21.22
सुबाहु	1.60.3	सासु	2.5.1
शत्रु	7.17.10	वेनु	7.21.18

2.1.6.1.6–ऊकारान्त नामिक–

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
कलेऊ	1.99.2	चमू	5.22.9
लाडू	1.99.2	वधू	1.15.1
लजारू	1.84.9	भू	7.5.4

2.1.6.1.7–ओंकारान्त नामिक–

पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
कोदो	5.40.4	गो	5.30.2
सुहो	7.18.5	सारो	2.66.1

2.1.7.–वचन विधान–

आलोच्य ग्रन्थ में दो प्रकार के नामिक मिले हैं—एकत्व का बोध कराने वाले नामिक तथा अनेकत्व का बोध कराने वाले नामिक–इन्हें क्रमशः एकवचन और बहुवचन कहा जाता है। नामिक पदों में पाए जाने वाले वचन के विभक्ति प्रत्ययों को कारक सबंधों के द्योतक विभक्ति प्रत्ययों से अलग करके नहीं देखा जा सकता है अतः इन विभक्ति प्रत्ययों को सामूहिक रूप से पद रचनात्मक कोटियों के अन्तर्गत ही स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है–

वचन-विधान की इस संयोगात्मक विधा के अतिरिक्त एक विशिष्ट विधा भी है। बोली में कुछ ऐसे नामिक पद मिलते हैं जिनके साथ कहीं अनिवार्य कहीं वैकल्पिक रूप से स्वतन्त्र शब्दों को रखकर अनेकत्व का बोध कराया गया है इन्हें बहुवचन ज्ञापक शब्दावली[1] कहा जा सकता है। गीतावली में ऐसे प्रयोगों की संख्या पर्याप्त मात्रा में है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

	उदाहरण		अर्थ
अवलि∼अवली	व्यालावलि	6.९.2	सर्प समूह
	अलकावली	1.22.7	अलकावली
आदि	अनिमादि	1.5.6	अणिमा आदि

1. कबीर काव्य का भाषाशास्त्रीय अध्ययन ; डा. भगवत प्रसाद दुबे

	मागधादि	1.38.3	मागध आदि
ओघ	अघौघ	7.19.5	पाप समूह
कदंब	दुख कदंब	1.38.5	दुख समूह
गन	मनिगन	7.4.5	रत्न राशि
	रिपुगन	1.22.13	शत्रुदल
ग्राम	गुन-ग्रामँ	1.22.13	शत्रुदल
जन	बंदीजन	1.1.6	बंदीजन
	जोगिजन	1.55.8	योगिजन
जाल≃जालु	तिमिर जालु	1.42.2	अंधकार समूह
जूथ	हरि जूथ	4.2.3	बानर समूह
दल	खल दल	1.55.9	दुष्ट समूह
	पुत्रदल	7.38.7	पुत्र समूह
निकर	तम निकर	1.37.2	अंधकार समूह
	खग निकर	1.38.3	पक्षीगण
पांति	द्विज पांति	7.17.12	दन्तावली
पुंज	चंचरीक पुंज	7.7.2	भ्रमर समूर
	सुखमा पुंज	1.40.4	सुषमा समूह
वरुथ	ललना वरुथ	2.48.2	स्त्री समुदाय
वृन्द	बालबृन्द	7.36.2	बालक समूह
	मुनीन्द्र वृन्द	7.3.2	मुनीन्द्र मंडली
मण्डली	षडंघ्रि मंडली	1.25.5	भ्रमर मंडली
	ब्रह्म मंडली	7.3.2	ब्राह्मण समाज
लोग	लोग	1.70.1	सब लोग
	सब लोग	1.76.1	सब आदमी
समुदाई	मातु समुदाई	1.30.1	सब माताएं
	कोबिद समुदाई	7.3.1	विद्वत्समुदाय
समूह	सहस समूह	1.60.3	सहस्त्रों
	तरु समूह	6.16.3	तरु समूह

2.1.8 —**कारकीय संरचना**—

गीतावली में कारकीय संरचना दो प्रकार की है : एक तो विभक्ति मूलक संरचना और दूसरी चिह्नक मूलक संरचना। विभक्ति मूलक संरचना पुनः दो भागों में विभक्त है : वियोगात्मक और संयोगात्मक। संयोगात्मक स्थिति में विभक्तियाँ स्वतन्त्र पदग्राम से संयुक्त होकर प्रयुक्त हुई हैं और इस प्रकार मूलपदग्राम और

विभक्ति मिलकर एक मिश्रित पदग्राम का निर्माण करते हैं उसके विपरीत वियोगात्मक स्थिति में विभक्ति और मूल-पदग्राम के मिलने पर भी दोनों की अक्षरात्मक स्थिति अलग-अलग बनी रहती है।

वियोगात्मक स्थिति में नामिकों में केवल दो कारक रूप प्रयुक्त हैं—मूलरूप और तिर्यक रूप—एक तीसरा कारक संबोधन भी मिला है जिसका निर्देश संयोगात्मक रूपों के साथ ही कर दिया गया है।

2.1.8.1–विभक्तिमूलक संरचना–

2.1.8.1.1–वियोगात्मक–

आलोच्य ग्रन्थ में नामिकों के मूल और तिर्यक रूपों की रचना विभिन्न प्रातिपदिक अन्त्यों और दोनों लिंगों की दृष्टि से दोनों वचनों में इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

2.1.8.1.1.1–मूलरूप एक वचन–

मू. रू. ए. व. में पुल्लिग और स्त्रीलिंग के व्यंजनान्त व स्वरान्त किसी भी रूप में कोई प्रत्यय नहीं जुड़ता अथवा शून्य प्रत्यय {0} जुड़ता है—

पूत	+	0	=	पूत	1.4.1
भूपति	+	0	=	भूपति	1.3.3
सेतु	+	0	=	सेतु	5.14.2
रमा	+	0	=	रमा	2.46.4
अवनि	+	0	=	अवनि	2.12.2
वध	+	0	=	वध	2.31.2

2.1.8.1.1.2–मूलरूप बहुवचन—

मू. रू. ब. व. के सभी पुल्लिग नामिकों को दो वर्गों में रखा जा सकता है–एक वर्ग में वे पु. नामिक हैं जिनमें {0} प्रत्यय लगता है। इस वर्ग में व्यंजनान्त व कुछ स्वरान्त नामिक आते हैं। इनके बहुवचनत्व का बोध वाक्य स्तर पर क्रिया, क्रियाविशेषण तथा संबंध कारकीय परसर्गों के आधार पर होता है–यथा–

भौम	+	0	=	भौम (दस) 1.108.2
खेलौना	+	0	=	खेलौना (विविध) 1.22.1
कपि	+	0	=	कपि (कूदहिं डारहिं डार)
पंछी	+	0	=	पंछी (परवस परे पींजरनि) 2.67.3
भानु	+	0	=	भानु (कोटि) 2.17.1
लाडू	+	0	=	(लाडू खाये) 1.64.2

पु० नामिकों के द्वितीय वर्ग में आकारान्त नामिक आते हैं जिनमें–ए,–एँ

प्रत्ययों को संयुक्त करके बहुवचन के रूप मिले हैं इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं अन, अनि, इन, और-इन्ह प्रत्यय सयुक्त करके भी ब० व० रूप प्राप्त हुए हैं।

नारा +ए =नारे (चले नदी नद नारे) 1.68.7
घोरा +ए =धोरे (राम लखन के धोरे) 2.86.4
चौक +एँ =चौकैं (चारु चौकैं विधि घनी) 1.5.1
साह +ऐ =साहैं (बिसाल सुहाई साहैं) 7.13.4
सुजन +अन=सुजनन (सुजनन सादर जनम लाहु लियो है) 1.10.4
कुंडल+अनि=कुण्डलनि (कुण्डलनि परम आभा लही) 7.6.3
भाई +इन=भाइन (दुहु भाइन सों.........) 6.11.2
बंदी +इन्ह=बंदिन्ह (बंदिन्ह बाँकुरे विरद वये) 1.3.4

मू० रू० ब० व० के स्त्री० नामिकों के भी दो वर्ग बनाए जा सकते हैं। प्रथम वर्ग में { 0 } प्रत्यय लगकर ब० व० की रचना हुई है यथा—

बांह +0=बाँह (बाँह पगार) 5.39.4
बनिता +0=बनिता (बनिता चलीं) 1.1.7
नारि +0=नारि (ग्राम नारि परसपर कहैं) 2.16.3
पहुँची +0=पहुँची (पहुँची करनि) 1.32.2
धेनु +0=धेनु (अमित धेनु) 1.1.9

स्त्रीलिंग नामिकों के द्वितीय वर्ग में—ऐं, इयाँ, अनि, इन और इन्ह प्रत्यय जुड़कर मू० रू० ब० व० के रूप प्राप्त हुए हैं-यथा—

भौंह +ऐं =भौंहें (रुचिर बंक भौंहें) 7.4.3
बात +ऐ =बातैं (मैं सुनी बातैं असैली) 5.6.2
भ्रकुटी +इयां=भ्रकुटियां (भ्रकुटियां टेढ़ी) 1.32.5
माला +अनि =मालनि (मालनि मानो देहनितैं दुतिपाई) 1.30.2
रानी +इन =रानिन (रानिन दिए बसन ..) 1.2.21
जुवती +इन्ह =जुवतिन्ह (जुवतिन्ह मंगल गायो) 1.93.3

2.1.8.1.1.3-तिर्यक रूप एक वचन—

ति० रू० ए० व० की रचना पुल्लिग अथवा स्त्रीलिंग रूपों में शून्य प्रत्यय अथवा कहीं-कहीं-ए प्रत्यय लगकर हुई है-यथा—

सखा +0=सखा (सखा तें) 2.68.1
ससि +0=ससि (ससि सों सङ्कु पाए) 1.23.3
मेरु +0=मेरु (मेरु तें) 1.103.3
सोभा +0=सोभा (सोभा ते सोहै) 1.83.1
प्रीति +0=प्रीति (प्रीति के न पातकी) 1.66.2

हिय +ए=हिये (हिये की बूझै) 2.62.3

सोहिला+ए=सोहिले (भयो सोहिलो सोहिले मो) 1.4.7

2.1.8.1.1.4–तिर्यक रूप बहुवचन—

गीतावली में निम्नलिखित प्रत्यय जोड़कर पु० ति० ब० ब० के रूप प्राप्त हुए है। ये प्रत्यय सभी प्रकार के स्वरान्त व व्यंजनान्तों के साथ संलग्न हैं जिनमें पु० प्रातिपदिक मे–अन≃अनि≃अन्हि प्रत्यय, अकारान्त में-अनि प्रत्यय, इकारान्त में–अनि≃इन≃इन्ह प्रत्यय, ईकारान्त में–इन≃इन्ह प्रत्यय, उकारान्त में उन≃उन्ह प्रत्यय संयुक्त हुए हैं। ये प्रत्यय परसर्ग रहित और परसर्ग सहित दोनों ही रूपों में प्राप्त हैं। सभी प्रकार के प्रत्ययों की संख्या पर्याप्त है। नीचे सभी का उदाहरण सहित वर्णन है। कुल सख्या साथ ही कोष्ठक में दी गई है—

पुंल्लिग—व्यंजनान्त–अन≃अनि≃अन्हि प्रत्यय—

परसर्ग रहित–अन (7)—

कर +अन =करन (सप 3) 5.48.2

विसिष+अन =विसिषन (सप 5) 2.62.2

–अनि (15) रघुबर+अनि =रघुबरनि (संप 2) 1.28.1

सिर +अनि =सिरनि (संप 7) 1.56.5

कर +अनि =करनि (संप 3) 7.5.3

–अन्हि (4) नयन +अन्हि=नयनन्हि(संप 3) 5.50.4

लोग +अन्हि=लोगन्हि (संप 4) 2.24.3

परसर्ग सहित–अन (7)

सत +अन=संतन (संप 6) 1.20.3

सिखर+अन=सिखरन (संप 7) 7.20.2

–अनि (27)भगत +अनि=भगतनि (संप 6) 7.17.2

सदन +अनि=सदननि (संप 5) 2.51.2

–अन्हि (3)बचन +अन्हि=बचनन्हि (संप 3) 1.22.9

नयन +अन्हि=नयनन्हि (संप 6) 7.7.6

आकारान्त–अनि प्रत्यय —

परसर्ग रहित (7)—

झरोखा+अनि=झरोखनि (संप 5) 1.34.6

खंभा +अनि=खंभनि (संप 7) 1.9.3

परसर्ग सहित (2)—

देवता+अनि=देवतनि (संप 6) 6.23.1

राजा+अनि = राजनि (संप 6) 1.85.1

इकारान्त–अनि≃इन≃इन्ह प्रत्यय—

परसर्ग रहित-अनि (1)—

रिपि + अनि = रिपियनि (य श्रुति के आगम के कारण है।)
(संप 3) 7.13.4

परसर्ग सहित-इन (2)—

रिपि + इन = रिपिन (संप 6) 2.45.4

–इन्ह (1) अरि + इन्ह = अरिन्ह (संप 6) 5 35.3

ईकारान्त-इन ≃ इन्ह प्रत्यय –

परसर्ग रहित-इन (1)

भाई + इन = भाइन (संप 6) 7.22.7

–इन्ह (2) पुरवासी + इन्ह = पुरवासिन्ह (संप 3) 1.98.3

परसर्ग सहित-इन (3) –

बैरी + इन = बैरिन (संप 6) 1.22.12

–इन्ह (2) पुरवासी + इन्ह = पुरवासिन्ह (संप 6) 2.83.2

उकारान्त-उन्ह ≃ उन प्रत्यय

परसर्ग रहित-उन्ह (2) सिसु + उन्ह = सिसुन्ह (संप 4) 2.21.2

परसर्ग सहित-उन (1) सिसु + उन = सिसुन (संप 6) 1.101.5

स्त्रीलिंग-स्त्रीलिंग नामियों में निम्न प्रत्यय जुड़कर ति० ब० व० के रूप बने हैं—

व्यंजनान्त-अनि प्रत्यय—

परसर्ग रहित-अनि (3) लपेट + अनि = लपेटनि (संप 3) 6.4.3
डाढ़ + अनि = डाढ़नि (संप 6) 5.6.2

परसर्ग सहित-अनि (2) तिय + अनि = तियनि (संप 6) 1.107.3
देह + अनि = देहनि (संप 5) 1.30.2

आकारान्त—

परसर्ग रहित-अनि (10)—

पताका + अनि = पताकनि (संप 3) 1.1.6
सिला + अनि = सिलनि (संप 7) 1.54.4
अंबा + अनि = अंबनि (संप 4) 5.31.6

परसर्ग सहित-अनि (4)—

बनिता + अनि = बनितनि (संप 6) 2.15.3
भुजा + अनि = भुजनि (संप 1) 1.109.1

इकारान्त ≃ ईकारान्त इन्ह ≃ इन्हि प्रत्यय

परसर्ग रहित-इन्ह (17)—

सखि + इन्ह = सखिन्ह (संप 3) 7.33.4
बीथी + इन्ह = बीथिन्ह (संप 7) 1.5.1

इन्हि (1)–सुग्रासिनी + इन्हि=सुग्रासिनिन्हि (संप 3) 1.96.2
परसर्ग सहित–इन्ह (2) –
भ्रकुटी + इन्ह=भ्रकुटिन्ह (संप 6) 3.९.3
उकारान्त≃ऊकारान्त **उन≃उन्ह प्रत्यय**
परसर्ग रहित–उन्ह (1) –
रितु + उन्ह=रितुन्ह (संप 7) 7.21.2
परसर्ग सहित–उन (2) –
वधू + उन=वधुन (संप 6) 2.40.5
उन्ह (2)वधू + उन्ह=वधुन्ह (संप 6) 2.24 4
2.1.8.1.2–संयोगात्मक–
गीतावली में सयोगात्मक रूपों की सख्या बहुत कम है–ए,–इ,–उ आदि के सभी विभक्तियों में बहुत कम उदाहरण प्राप्त हुए हैं केवल–हि या हिं रूप अधिक मात्रा में मिले हैं।
2.1.8.1.2.1—संप 1—आलोच्य ग्रन्थ मे कर्ता-कारक के अर्थ को प्रगट करने के लिए० प्रत्यय और–ए प्रत्यय जुड़ा है—
अंबा + 0=अंबा 1.72.3 (सांचो कही अंबा)
वाला + 0=बाला 3.3.2 (कहति हँसि बाला)
पिनाक + 0=पिनाक 1.93 2 (जेहि पिनाक बिनु नाक किए नृप)
सुतहार + 0 = सुतहार 1.22.1 (रच्यो मनहुं मार सुतहार)
तुलसिदास + 0 = तुलसिदास 2.48.5 (कह तुलसिदास)
सोना + ए = सोने 2.23.1 (लही है दुयुति सोन सरोरुह सोने)
2.1.8.1.2 2 संप (2) + संप (4)—
कर्म सम्प्रदान के लिये–इ, उ, ए, ऐ, ऐं, और–हिं प्रत्यय संयुक्त हुए हैं —
आग + इ = आगि 5.16.5 (बरजोर दई चहुँ ओर आगि)
वेलि + इ = वेलि 2 34.2 (बिपत्ति वेलि वई है)
खान + इ = खानि 1.18.2 (किलकनि खानि खुलाऊं)
बान + इ=बानि 1.19.4 (तेरी बानि जानि में पाई)
द्वेष + उ = द्वेषु 7.9.4 (आए तम तजि द्वेषु)
क्रोध + उ=क्रोधु 6 1.1 (मानु अजहू सिप परिहरि क्रोधु)
दाप + उ = दापु 6.1.3 (हर्यो परसुधर दापु)
रखवारा + ए = रखवारे 3.3.3 (मुनिमख रखवारे चीन्है)
आहेर + ए = अहेरे 1. 22.14 (राम अहेरे चलहिंगे)
खय + ए=खये 1.45.2 (ठोंकि ठोंकि खये) (व० व०)
रघुवीर + ऐ = रघुवीरै 6.15.1 (हृदय घाव मेरे पीररघुवीरै)

वेरा + ऐ = वेरै 5.27.3 (तात, वांधै जिनि वेरै)
जन + ऐ = जनै 5 40.1 (फल चारि चार्यो जनै)
नाम + ऐं = नामैं 5 25.2 (जपै जाके नामैं)
धाम + ऐं = धामैं 5.25.4 (चल्यो तजि घोर धामैं)

हि≃हिं (93)—
बन + हि = बनहि 2.87.1 (बनहि सिधावौ)
चंद्रमा + हि = चंद्रमहि 6 8 1 (चंद्रमहि निचोर)
रिपु + हि = रिपुहि 5.34.2 (रावण रिपुहि राखि)
गिरीस + हिं = गिरीसहिं 1.2.24 (गिरीसहिं अगम)

{0} प्रत्यय से संयुक्त रूप भी संप (2) + (4) का द्योतन कराते हैं—
कैलास + 0 = कैलास 6.3 2 (कैलास उठायो)
कुंवर + 0 = कुंवार 6.10.1 (कौतुक ही कुवर लियो है)
सजीवन + 0 = सजीवन 6.15.1 (पाइ सजीवन)

2.1.8.1.2.3—संप (3) + संप (5) करण-अपादान का द्योतन कराने के लिए इ, ए, ऐ और हि प्रत्यय संयुक्त हुए हैं—
चितवन + इ = चितवनि 1.3.6 (राम कृपा चितवनि चितए)
पयादा + ए = पयादे 2.28.1 (पथिक पयादे जात हैं)
कोना + ए = कोने 1.107.1 (परस्पर लखत सुलोचन कोने)
खीर + ऐ = खीरै 6.15.3 (उपमा... क्यों दीजै खीरै—नीरै)
तन + ऐ = तनै 5.40.3 (भए राजहंस वायस तनै)

हिं—हिं (11)—
सैन + हि = सैनहि 5.21.4 (सैनहि कह्यो चलहु सजि सैन)
कौसिक + हि = कौसिकहि 1.73.6 (कौसिकहि सकुचात)
संस्कृत की तृतीया विभक्ति के दो प्रयोग मिले हैं—
वाचा 5.41.2
मनसा 1.96.3

2.1.8.1.2.4—संप (6)—सम्बन्ध कारक का द्योतन कराने के लिए उ, ऐ, हि और 0 प्रत्यय संयुक्त हुए हैं—
माता + उ = मातु 2.62.1 (जौ पै हौं मातु मते महँ ह्वै हौं)
हीरा + ऐ = हीरै 6.15.2 (केवल कांति मोल हीरै)
राम + ऐ = रामै 5.25.1 (दूसरो न देखतु साहिब सम रामै)

—हि (4)—
सीता + हि = सीतहि 1.82.1 (मिलो वह सुन्दरि सीतहि लायकु)
छवि + हि = छविहि 1.82.2 ((...छविहि निन्दै वदन)

प्रभु +0=प्रभु 1.2.25 (तुलसिदास प्रभु सोहिलो गावत)
जानकी +0=जानकी 7.2.1 (भोर जानकी जीवन जागे)
पिनाक +0=पिनाक 1.102.5 (करि पिनाक पन)
2.1.8.1.2.5—संप (7)—अधिकरण कारक के लिए निम्न प्रत्यय संयुक्त हुए हैं—
लेखा +ए=लेखे 2.53.3 (अरुझि परी यहि लेखे)
पालना +ए=पालने 1.24.1 (झूलत राम पालने सोहे)
द्वार +ए=द्वारे 2.52.2 अनुज-सखा सब द्वारे)
हिय +ए=हिये 5.25.4 (हुमकि हिये हन्यो लात)
इसके प्रयोग काफी हैं—
सुमेर +ऐ=सुमेरै 5.27.2 (समाचार पाइ पोच सोचत सुमेरै)
-हि≃हिं (12)—
मन +हि=मनहि 1.2.10 (असही दुसही मरहु मनहि मन)
मन +हिं=मनहिं 2.83.3 (बैठि मनहिं मन मौन)
जग +0=जग 5.40.2 (प्रनाम जासु जग मूल अमंगल के खने)
रंगभूमि+0= रंगभूमि 1.68.6 (रंगभूमि पगु धारे)
उर +0= उर 1.104.4 (जेहि उर बसति मनोहर जोरी)
2.1.8.1.3—संबोधन—

संबोधन ए०व० के रूप तिर्यक रूप ए०व० के रूपों के समान होते हैं—यथा—
राघव+0=राघव 3.5.1 (राघव, भावति मोहि विपिन की वीथिन्ह धावनि)
सखि +0=सखि 7.9.1 (सखि! रघुबीर मुख छवि देखि)
छेमकरी+0=छेमकरी 6.20.1 (छेमकरी! बलि बोलि सुबानी)
इस प्रकार के रूपों की संख्या 70 से अधिक है—
बारा +ए=बारे 2.4.2 (इहि आंगन विहरत मेरे बारे)
राघव+औ=राघौ 2.87.1 (राघौ! एक बार फिरि आवौ)

2.1.8.2—चिह्नक मूलक संरचना—

अर्थ संरचना के सम्बन्ध तत्वों में कारकीय परसर्ग भी है—इन्हें संज्ञा पद-बन्धों के चिह्नक कह सकते हैं। गीतावली में प्रयुक्त चिह्नक मूलक संरचना को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

	कारक	परसर्ग	आवृत्तियां	उदाहरण	विशेष
1.	संप 1	–	–	–	–
2.	संप2 + संप4				
	संप2	+को	6	2.45.3	संबंध
		+ही को	1	1.86.4	कारक
		+जू को	1	2.41.3	के लिए
	संप4	+को	11	1.71.1	भी प्रयुक्त
		+हू को	1	2.34.2	
		+जू को	1	2.33.2	
	संप2	+कहं	5	5.45.5	
	संप4	+कहं	8	7.21.14	
3.	संप3 + संप5				
	संप3	+तें	9	7.21.23	
		+हितें	1	1.49.3	
		+तैं	1	1.79.2	
	संप5	+ते	4	1.66.2	
		+तें	34	1.65.1	
		+हुतें	5	2.26.3	
		+हूतें	3	1.87.3	
		+तैं	1	5.32.3	
	संप3	+सों	43	5.33.1	
	संप5	+सों	7	1.72.4	
		+से	1	2.32.3	
	संप3	+सन	1	7.5.3	
4.	संप6	+की	160	1.6.13	संप6 में ये
		+जू की	3	2.81.1	विशेषण की
		+ही की	1	5.6.6	प्रकृति के हो
		+हू की	3	1.92.2	जाते हैं–
		+हु की	3	2.10.3	
		+के	234	7.6.3	
		+हू के	4	2.38.3	

		+जू के	1	1.42.4
		+को≃कौ	109	1.84.7
		+हू को	3	1.82.1
		+कहं	1	1.105.3
5.	संप7	+पर	40	7.5.2
		+हु पर	1	5.7.3
		+पै	4	1.7.3
		+महं	18	5.50.4
		+मांहि	1	7.26.1
		+मांही	2	2.1.2
		+में	12	1.16.5
		+मैं	7	5.23.1
		+मो	1	2.59.1
		+मो	1	1.4.7
		+सि	10	5.47.2

2.1.8.2.6 — संबोधन कारक

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य रिक्त शब्द हैं जो संज्ञा पदबंधों की संरचना में प्रयुक्त हो रहे हैं—

रि	(1)	7.18.1
री	(66)	1.77.1
रे	(4)	1.2.1
श्री	(5)	1.79.2
जू	(7)	1.71.3

2.1.9–परसर्गवत् प्रयुक्त अन्य परसर्गीय पदावली–

कारकीय परसर्गो के अतिरिक्त अन्य परसर्ग भी आलोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त हुए हैं जो इस प्रकार है–

आगे	नैननि आगे	2.53.2	(दो बार)
अंतर	हेम जाल अंतर परि	7.3.5	
ऊपर	अंग अंग ऊपर	1.25.1	(2 बार)
कहँ	कुलगुर कहँ पहुंचाई	2.89.2	
कारन	जा कारन	4.2.2	
जान	मेरे जान तात	3.15.1	(दो बार)
ज्यों	कंदुक ज्यों	6.3.2	(29 बार समान के अर्थ में)

जैसे	आपने भाय जैसे	1.64.4	(समान के अर्थ में)
जोगु	कहिबे को जोगु	1.71.4	
ढिग	काके ढिग	7.4.6	
तर	बितान तर	1.105.2	(8 बार)
तल	अवनि-तल	1.76.2	(3 बार)
दूरि	तीरथ तें दूरि	7.21.23	
निकट	भरत निकट ते	6.19.4	
नांई	खर-स्वान-फेरु की नांई	2.74.4	
पहँ	भरत पहँ	2.89.1	
पाहीं	गुरु पाहीं	2.1.1	
पाछे	हेम-हरिन के पाछे	3.3.4	
वंत	हरपवंत चर अचर	1.1.2	
बिच	नखतगन बिच	7.8.3	(4 बार)
अधबिच	तरु तमाल अधबिच	7.3.5	
बिनु	बिनु प्रयास	2.38.3	
बिनहि	राजति बिनहि सिंगार	2.29.4	(2 बार)
बिहीन	कियो मीच बिहीन	7.24.2	
वस	क्रूर कालबस	1.95.2	(20 बार)
भीतर	कंज-कोस भीतर	7.7.4	(3 बार)
भरी	मोद, भरी गोद	1.10.2	
माँझ	मिलेहि मांझ रावन रजनीचर	1.4.4	
मय	बिनोद मोदमय	1.21.3	(17 बार)
मये	बिनोद मये	1.45.4	
मई	परमारथ मई	1.5.3	(8 बार)
मिस	बचन मिस	2.9.2	(बहाने से)
रहित	रहित छल छाया	7.14.3	
लगि ~ लागि	झूठे जीवन लगि	3.13.4	(लिए अर्थ है) (12बार)
लेखे	तिन्हके लेखे	3.5.4	(लिए अर्थ है)
सहित	तोहि सहित	5.13 1	(5 बार)
समेत	बिधु बदनि समेत सिधाए	2.35.1	(4 बार)
समीप	पितु-समीप	1.102.1	
संग	दोउ संग	1.51.3	(62 बार)
साथ	मूरति सी साथ	2.26.2	(10 बार)

सारिखेहू	कुठारपानि सारिखेहू	5.25.3	
सनमुख	तेहि सनमुख विनु	2.82.3	(5 वार)
सनमुख	सनमुख सवहि	1.73.6	(अनुकूल के अर्थ में)
सी	हम-सी भूरिभागिनि	2.22.2	(8 वार)
से	जीवन से	2.26.4	(6 वार)
सो	अजामिल सो खलो	5.42.3	(8 वार)
सम	कलपसम टारति	5.19.1	(3 वार)
हित	प्रभुहित	2.47.16	(6 वार)
हेतु	मातु हेतु	2.86.1	(6 वार)

2.1.1.2-दो रूपिम या शब्दों के योग से निर्मित प्रातिपदिक–

आलोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त दो रूपिमों के योग से निर्मित प्रातिपदिकों को संरचना की दृष्टि से तीन कोटियों में विभक्त किया गया है।

1. वद्ध पदग्राम + मुक्तपदग्राम
2. मुक्त पदग्राम + वद्धपदग्राम
3. मुक्त पदग्राम + मुक्त पदग्राम

इन सवका क्रम से वर्णन किया गया है–

2.1.1.2.1–वद्ध पदग्राम + मुक्त पदग्राम–

वद्ध पदग्रामों के योग से निर्मित पदग्रामों की संख्या पर्याप्त मात्रा में हैं। ये वद्धपदग्राम हीनार्थक, श्लाघाथक, निषेधार्थक आदि कई प्रकार के हैं जिनका वर्णन यथास्थान किया गया है। विस्तार के भय से कुछ उदाहरण ही दिए गए है कुल संख्या साथ के कोष्ठक में दे दी गई है–

1. अ–(23)–हीनता अथवा निषेध के अर्थ में प्रयुक्त है–

कलंक	अकलंक	(निष्कलंक)	2.43.4
गति	अगति	(गति रहित)	2.82.3
नीति	अनीति	(वुरीनीति)	2.49.2
सुर	असुर	(राक्षस)	6.3.3

2. अन–(4)–अभाव अथवा निषेध के अर्थ में प्रयुक्त है–

अंग	अनंग	(अंग रहित)	2.17.1
हित	अनहित	(वुराई)	1.84.5
उचित	अनुचित	(उचित न हो)	1.85.2
अवसर	अनवसर	(वुरा अवसर)	5.38.3

3. अनु–(5)–अर्थ में विशिष्टता लाता है–

ग्रह	अनुग्रह	(कृपा)	7.35.3

मान	अनुमान	(अंदाज)	5.23.2
राग	अनुराग	(प्रेम)	2.47.5
सासन	अनुशासन	(आज्ञा)	1.91.3

4. अप-(3)-विपरीतार्थक प्रत्यय है-

मान	अपमान	(अपमान)	5.26.2
लोक	अपलोक	(अपकीर्ति)	6.5.3
राधु	अपराधु	(अपराध)	6.1.5

5. अभि-(5)-यह प्रत्यय 'ओर' अथवा 'में' के अर्थ में आया है-

अंतर	अभिअंतर	(अंतः करण)	2.74.3
मत	अभिमत	(अभीष्ट)	5.28.7
मान	अभिमान	(घमंड)	6.2.3
षेक	अभिषेक	(अभिषेक)	6.22.5

6. आ-(2)-'सहित' अर्थ में प्रयुक्त है-

गमन	आगमन	(आना)	6.19.4
श्रम	आश्रम	(आराम का स्थान)	7.27.4

7. औ-(1)-हीनता के अर्थ में आया है-

गुन	औगुन	(अवगुण)	6.12.2

8, उप-(9)-अर्थ में विशिष्टता लाता है-

चार	उपचार	(चिकित्सा)	6.9.6
देस	उपदेस	(शिक्षा)	5 27.2
बन	उपवन	(उपवन)	7.18.3
हार	उपहार	(उपहार)	6.23.3

9. कु-(13)-कुत्सा या बुराई के अर्थ में प्रयुक्त है-

रूप	कुरूप	(बुरा रूप)	7.38.5
पथ	कुपथ	(बुरा पथ)	7.1.2
चाल	कुचाल	(बुरी चाल)	7.1.2
बेलि	कुबेली	(बुरी बेल)	2.10.2

10. दु-(1)-हीनता के अर्थ में प्रयुक्त है-

काल	दुकाल	(बुरा समय)	7.1.2

11. नि-(1)-अर्थ में विशिष्टता लाता है-

वास	निवास	(रहने का स्थान)	2.47.1

12. निर-(1)-अभाव के अर्थ में आया है-

गुन	निरगुन	(गुण रहित)	7.6.6

13. प्र-(18)-व्याप्ति के अर्थ में प्रयुक्त है-

ताप	प्रताप	(प्रताप)	5.16.10
दच्छिना	प्रदच्छिना	(परिक्रमा)	3.17.8
नाम	प्रनाम	(प्रणाम)	5.39.5
बंध	प्रबंध	(प्रबंध)	1.2.15

14. पर-(2)-परायेपन का भाव प्रकट है-

आक्रम	पराक्रम	(पराक्रम)	5.5.3
देश	परदेस	(दूसरा देस)	2.13.2

15. परि-(8)-चारों ओर अथवा समेत के अर्थ में आया है-

जन	परिजन	(कुटुम्बीजन)	1.21.4
तोष	परितोष	(संतोष)	1.5.6
वार	परिवार	(परिवार)	5.51.3
नाम	परिनाम	(परिणाम)	5.16.6

16. प्रति-(2)-अर्थ में विशिष्टता लाता है-

छाँह्	प्रतिछाँह्	(परछाईं)	7.18.1
बिंब	प्रतिबिंब	(प्रतिबिम्ब)	1.25.5

17. वि-ये प्रत्यय दो अर्थों में प्रयुक्त है-

17.1 विशिष्टता के अर्थ में-(11)

निंदक	विनिंदक	(निंदा करने वाला)	7.12.7
भाग	विभाग	(विभाग)	6.22.10
भूषन	विभूषन	(आभूषण)	1.23.2

17.2 विपरीतार्थक (3)

योग	वियोग	(वियोग)	5.10.3
रति	विरति	(विरक्ति)	1.32.7
षम	विषम	(विपरीत)	5.31.2

18. -(5)-श्लाघार्थक प्रत्यय है-

गुन	सगुन	(सगुन)	7.7.6
जीवन	सजीवन	(संजीवनी)	6.15.1
भाग	सभाग	(सौभाग्य)	2.47.5
रूप	सरूप	(स्वरूप)	1.57.4
पूत	सपूत	(सपूत)	1.2.1

19. सम्-(5)-अर्थ में विशिष्टता लाने वाला है-

जोग	संजोग	(संयोग)	1.71:3
ताप	संताप	(दुख)	7.14.3

तोप	संतोप	(संतोप)	2.77.2
आचार	समाचार	(समाचार)	3.10.3

20. सत्-(1)-विशिष्टता के अर्थ में प्रयुक्त है-

मान	सनमान	(सम्मान)	5.35.1

21. सु-(83)-श्लाघार्थक प्रत्यय है-इसकी संख्या पर्याप्त है-

अंग	सुअंग	(सुन्दर अंग)	6.20.4
आसिष	सुआसिष	(सुन्दर आशीष)	7.30 3
कृत	सुकृत	(सुन्दर कार्य)	2.11.4
सिख	सुसिख	(सुशिक्षा)	2 19.4

22. दु-(1)-संख्यावाची प्रत्यय है-

कूल	दूकूल	(वस्त्र)	1.73.4

संयुक्त परसर्ग-

1. अ+वि (1)—विपरीतार्थक है-

चल	अविचल	(निश्चल)	7.18.6

2. वि+अ-विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त है-

अलीक	व्यलीक	(कपट)	6.2.3

2.1.1.2.2-मुक्तपदग्राम+बद्धपदग्राम-

ऐसे पदग्राम जिनमें बद्धपदग्राम अन्त में संयुक्त हैं, आलोच्य ग्रन्थ में पर्याप्त हैं, उन सबका सोदाहरण वर्णन इस प्रकार है-

1.-आ (14)-छन्द के आग्रह से अथवा तुक के कारण प्रयुक्त है-

गात	गाता	1.110.1	बूंद	बुंदा	2.31.4
मुंह	मुंहां	1.84.8	स्वास	स्वासा	5.9.2

2.-अनी≃आनी (3)-

गेह	गेहनी	7.26.3	ब्रहमा	ब्रहमानी	1.4 10
भव	भवानी	1.4.6			

3.-अरी≃आरी (3)-

नींद	नींदरी	1.19.4	भीख	भिखारी	1.6.24
महत	महतारी	1.99.3			

4.-आई (25)-

अंगना	अंगनाई	1.30.4	प्रभु+ता	प्रभुताई	1.16.1
भल	भलाई	5.7.3	लरिका	लरिकाई	1.55.5

5.-इक≃इका-(12)-

वेद	वैदिक	1 5 4	मनि	मानिक	2.39.5
मूल	मूलिका	1.6.3	चन्द्र	चन्द्रिका	6.17.9

6.–इनि ≃ इनी (9)–

चंद	चंदिनी	2.43.4	बंदी	बंदिनी	2.43.1
वियोगी	वियोगिनि	5.21.3	विरही	विरहिनी	5 2.3

7.–इया ≃ इयाँ (16)–

पाग	पगिया	1.44.1	चौतनी	चौतनियां	1.34.4
पहुंची	पहुचियां	1.33.2	पैंजनी	पैंजनियां	1.34.2

8.–ई (57)–

गरीब	गरीबी	2.41.4	दुलहा	दुलही	1.106.1
चकोर	चकोरी	1.62.3	झँगुला	झँगुली	1.33.2

9.–ईन (1)–

पथ	पथीन	1.88.3

10.–ऐया (8)–

छांह	छैया	1.20.2	भाई	भैया	1.20.1
मां	मैया	1.20.1	रघुराइ	रघुरैया	1.20.2

11.–ऊटी (4)–

बधू	बधूटी	2.21.1

12.–ऊरी (1)–

लट	लटूरी	1.31.4

13.–ओटा (1)–

कुअंर	कुअंरोटा	1.62.1

14.–क (11)–

अंब	अंबक	6.13.3	चंपा	चंपक	1 55.1
सोध	सोधक	1.88.3	रच्छा	रच्छक	1.22.9

15–ग (3)–

अनु	अनुग	1.89.9	उर	उरग	7.12.5
भुज	भुजंग	1.23.3			

16–ज ≃ जा (18)–

जल	जलज	7.5.4	पवन	पवनज	6.13.5
गिरि	गिरिजा	7.13.4	कलिंद	कलिंदजा	7.7.5

17.–ता (13)–

प्रसन्न	प्रसन्नता	5.21.2	वाम	बामता	5.28.4
सुन्दर	सुन्दरता	1.77.2	दीन	दीनता	5.43.4

18.–द (11)–

अंबु	अंबुद	1.7.3	जल	जलद	1.26.1

वारि	वारिद	2.19.2	नार	नारद	7.9.6

19.–आद–(1)–

मनुज	मनुजाद	5.22.5

20.–ञात (3)–

जलज	जलजात	7.19.1	कुसल	कुसलात	5.4.5
पंकज	पंकजात	3.17.5			

21.–धि (7)–

उद	उदधि	5.14.2	पाथ	पाथोधि	5.51.2
वारि	वारिधि	5 6.4	जल	जलधि	5.22.7

22.–प (7)–

अवनि	अवनिप	1.39.1	गन	गनप	1.6.4
मही	महीप	1.84.7	लोक	लोकप	1.2.23

23.–उआ ≃ औआ (2) –

फाग	फगुआ	7.22.7	पात	पतौआ	1.67.2

2.1.1.2.3–मुक्तपदग्राम + मुक्तपदग्राम–

मुक्तपदग्राम + मुक्तपदग्राम के उदाहरण आलोच्य ग्रन्थ में संख्या में अत्यधिक है। संरचना की दृष्टि से इनको कई प्रकार से विश्लेष्य समझा जा सकता है जो निम्नलिखित हैं। इन सबकी कुल संख्या साथ के कोष्ठक में दी गई है तथा कुछ उदाहरण भी दिए गए है—

1. नामिक + नामिक = नामिक (876)–

इंदिरानिवास	1.25.2	कपटमृग	7.38.5
खग निकर	1.38.3	बलिदान	1 5.4
भूसूर	1.15.2	तुलसीस	5.5.7
जानकीकंत	7.21.2	पवनपूत	5.51.1
मुनिमख	1.100.4	रंगभूमि	1.84.1
लोकपाल	5.10.4	सरजुतीर	7.4.1
सुरपुर	2.7.1	हरीस	5.15.2

2. विशेषण + नामिक = नामिक (126)

कलकीरति	7.22.11	गौरतनु	2.18.2
चारु चंदा	1.31.1	छीन छवि	1.37.2
तिलोक	5.24.4	नीलकंठ	1.80.1
मृदुवचन	5.43.4	सत्य वचन	2.2.1
सहसानन	5.22.8		

3. नामिक + विशेषण = नामिक (53)–

घनश्याम	2.66.1	पटपीत	7.3.5
पिकबैनी	1.81.1	भूसुन्दर	1.26.4

4. नामिक + क्रिया = (48) नामिक–

जलचर	7.13.3	बनगवन	2.4.3
आरति हरन	5.29.4	रजनीचर	1.52.6
बिस्वदवन	5.50.2		

---

2 2 **विशेषण :**

विशेषण पदों का अध्ययन तीन दृष्टियों से किया गया है–

(1) संरचनात्मक; (2) अर्थगत; (3) प्रकार्यगत ।

2.2 1 **संरचनात्मक**–रूप रचना की दृष्टि से विशेषण पदों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

अरुपान्तरित; रूपान्तरित ।

2.2.1.1 **अरुपान्तरित**–वे विशेषण जिनमें विशेष्य के लिंग, वचन कारक के अनुसार कोई विभक्ति न लगती हो अथवा जिनका रूप अपरिवर्तित रहता है वे अरुपान्तरित विशेषण के अन्तर्गत आते हैं। आलोच्य पुस्तक के अरूपान्तरित विशेषणों का अध्ययन निम्न प्रकार से किया गया है–

2 2.1 1.1 **प्रातिपदिक**–

प्राति०	संख्या	आ०	उदाहरण	
2.2.1.1.1.1–				
व्यंजनान्त व संयुक्त व्यंजनान्त–	(116)	(4)	विकट (भ्रकुटी)	7 12.2
		(1)	बरत (वारि)	5.19.2
		(1)	चंचल (साखामृग)	5.11.3
		(10)	कठोर (करतव)	7.31.5
		(7)	पीन (अंस)	7.17.10
		(34)	मनोहर (साखा)	7.14.2
		(2)	मत्त (गज)	1.63.3

2 2.1.1.1.2–

स्वरान्त-आकारान्त	(1)	(7)	महा महा (वलधीर)	1.89.4
इकारान्त	(9)	(2)	आदि (वराह)	2.50.4
		(16)	भूरि (भाग)	1.24.1
			सति (भाउ)	3.17.4
ईकारांत	(15)	(1)	कोही (कौसिक)	1.71.2
		(1)	धनी (राम)	5.39.2
		(5)	बली (बाहु)	5.38.4
		(2)	संकोची (बानि)	1.92.2
उकारान्त	(8)	(23)	मजु (मसिबुंदा)	1.31.4
		(3)	कटु (वचन)	3.7.2
		(50)	चारु(चारयो भाई)	1.16.2
ओकारान्त		(1)	बापुरो (पिनाक)	1.89.8

(बापुरो–वास्तव में आकारान्त है लेकिन यहां ओकारान्त रूप में प्रयुक्त है)

उपर्युक्त विशेपणों में विशेष्य के लिंग, वचन व कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं हुआ है यथा–

2.2.1.1 2–लिंग-विधान–

पुल्लिंग			स्त्रीलिंग		
(रूप)	अनूप	1.90.4	(छवि)	अनूप	1.25.4
	गंभीर (वचन)	7.17.11	(गिरा)	गंभीर	2.44.1
(मारीच)	नीच	6.1.2		नीच (अमरता)	5 15.3
	सुभ (दिन)	7.34.1		सुभ (घरी)	7.34.1

2.2.1.1.3–वचन–विधान–

एक वचन			बहुवचन	
(लटकन)	चारु	1.32.5	चारु (चामर)	7.6.2
(दशा)	कुटिल	2 34.2	कुटिल (अलकैं)	1.23.2
	गंभीर (गिरा)	2.44.1	गंभीर (वचन)	7.17.14
	कोमल (धुनि)	1.38.4	कोमल (कलेवरनि)	2.30.1

2.2.1.1.4—कारकीय–विधान–

मू०रु०ए०व०	:	चतुर	(चातक दास)	1.40.2
		कृस	(तनु)	1.47.1
मू०रु०ब०व०	:	सकल	(नर-नारि विकल अति)	2.88.4
		चंचल	(द्रुमपसु साखामृग)	5.11.3

ति०रू०ए०व०	कठोर	(उर... तें)	2 61.1
	दारुन	(जरनि जरी)	1.57.2
ति०रु०ब०व०	सीतल सुभग	(सिलनि पर)	2.46.5
	ललित	(कपोलनि पर)	7.12.4

2.2.1.2–रूपान्तरित :

रूप रचना की दृष्टि से रूपान्तरित विशेषण अपने विशेष्य के लिंग, वचन, कारक के अनुसार विभक्ति प्रत्ययों को ग्रहण करते हैं। आलोच्य पुस्तक के रूपान्तरित विशेषणों को दो वर्गों में रखा जा सकता है–

(1) मूल पदग्रामीय, (2) यौगिक पदग्रामीय।

2.2.1.2.1–मूलपद ग्रामीय रूपान्तरित विशेषण–

आलोच्य पुस्तक के मूल पदग्रामीय रूपान्तरित विशेषणों की संख्या 138 है जो अपने विशेष्य के अनुसार विभक्ति प्रत्ययों को अपनाते हैं। इनकी लिंग, वचन व कारकीय स्थिति इस प्रकार है–

2.2.1.2 1.1–लिंग–विधान–

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
(कोलाहल) भारो	2.66.3	(गति) भारी	1.100.3
छोटे (छैया)	1.20 2	छोटी (पनहिया)	1.44.1
सुन्दर (बर)	7.21.1	सुन्दरी (नारि)	2.18.2
नीको (नखत)	7.34.1	नीकी (निकाई)	1 86.5

2.2.1.2.1 2–**वचन–विधान** रूपान्तरित विशेषणों के वचन-विधान में दो स्थितियां मिलती हैं–

2.2.1.2.1.2.1–समान वचन में प्रयुक्त विशेषण और विशेष्य–

एक वचन		बहु वचन	
(गरीबी) गाढ़ी	2.41.4	सुहाए (नैन)	1.35.1
अन्ध (दसकंध)	5.24.2	बहुतेरे (जन)	2.76.2
रूखी (रसना)	5.15 4	इन्ह (बचनन्हि)	1.22.9
(मति) पैनी	1.83.3	लोने (लोयननि)	1.83.1

2.2.1.2.1.2.2—**असमान वचन में प्रयुक्त विशेषण और विशेष्य**—इसमें दो स्थितियां मिली है–

2.2.1.2.1.2.2.1–**विशेषण एक वचन और विशेष्य बहुवचन–**

(बातें)	असैली	5.6.2
(अगुरियां)	छबीली	1.33.1
(भौहैं)	टेढ़ी	1.63.3

2.2.1.2.1.2.2.2–**विशेषण बहुवचन तथा विशेष्य एकवचन–**

(पट)	पियरे		1.43.1
	नीके	(हाथ)	1.86.5
	नए	(मंगल)	1.46.5
	आछे	(छोर)	1.73.4

2.2.1.2.1.3–कारकीय–विधान–

मूलपदग्रामीय रूपान्तरित विशेषणों में नामिकों के समान ही कारकीय स्थितियां मिली हैं। आकारान्त विशेषणों में रूप परिवर्तन आकारान्त नामिकों के समान होता है, जैसे—पुल्लिंग नामिकों के साथ विशेषणों का मूलरूप, तिर्यक नामिकों के साथ आकारान्त विशेषणों का तिर्यक रूप और स्त्रीलिंग विशेष्य के साथ स्त्रीलिंग विशेषण ही आया है। आलोच्य पुस्तक में पुल्लिंग आकारान्त विशेषणों में {–आ} ; {–ए} प्रत्यय और स्त्रीलिंग विशेषणों में {–इ} ; {–ई} प्रत्यय मिले है।

2.2.1.2.1.3.1–**मू०रू०ए०व०–**

लिंग	प्रत्यय	उदाहरण		
(पु०)	{–ओ}	सूनो	(भवन)	2.54.1
		कारो	(बदन)	2.67.2
(स्त्री०)	{–इ} ; {–ई}	नइ	(गति)	5.7.1
		रुखी	(रसना)	5.15.4

2.2.1.2.1.3.2–**मू०रू०ब०व०–**

(पु०)	{–ए}	छोटे	(छैया)	1.20.2
		नगुन	(सोहावने)	1.5.1
(स्त्री०,	{–ई}	छोटी	(पनहिया)	1.44.1
		टेढ़ी	(भौहे)	1.63.3

2.2.1.2.1.3.3–**ति०रू०ए०व०–**

(पु०)	{–ए}	खारे	(कूप)	1.68 9
		बड़े	(भाग)	1.81.2
(स्त्री०)	{–इ} ; {–ई}	सुन्दरि	(सीतहि)	1.82.1
		दाहिनी	(ओरतें)	5.38.2

2.2.1.2.1.3.4–**ति०रू०ब०व०–**

(पु०)	{–ए}	आछे आछे	(भाय भाये हैं)	1.74.1
		पियारे	(चरित)	1.46.5

2.2.1.2.2–**यौगिक पदग्रामीय रूपान्तरित विशेषण–**

इसके अन्तर्गत उन पदग्रामों का अध्ययन किया है जिनकी सरचना एक से

अधिक पदग्रामों के योग से होती है। सुविधा की दृष्टि से इनके तीन विभाग किए गए हैं।

1, बद्ध पदग्राम + मुक्त पदग्राम
2. मुक्त पदग्राम + बद्ध पदग्राम
3. मुक्तपदग्राम + मुक्त पदग्राम

2.2.1.2.2.1-बद्धपदग्राम + मुक्त पदग्राम-

इसके अन्तर्गत उन पदग्रामों का अध्ययन किया जायेगा जिनकी संरचना बद्धपदग्रामों या उपसर्गों के योग से हुई है। ये बद्धपदग्राम निम्नलिखित हैं। सभी बद्धपदग्रामों की कुल संख्या साथ के कोष्ठक में दी गई है तथा कुछ उदाहरण दिए गये है।

2.2.1.2.2.1.1 अ-(23)

अखिल	7.38.7	अगम	2.82.1	(13)
अजर	1.11.4	अधम	2.74.2	
अभय	5.28.8	अलभ्य	2.32.2	

2.2.1.2.2.1.2-अन-(10)

अनघ	7.25.2	अनन्य	2.71.2
अनबन	2.47.3	अनभाए	2.88.4
अनुगम ≃ अनूगम	1.108.8 ; 6.16.4		

2.2.1.2.2.1.3-अनु-(4)

अनुकूल	1.73.4	अनुरागी	2.4.3
अनुरुप	1.56.2 (3)	अनुहारि	1.2.9

2.2.1.2.2.1.4-अभि-(2)

अभिरामिनी	1.5.3	अभिमत	7.32.4

2.2.1.2.2 1.5-उत-(1)

उन्नत 7.17.4

2.2.1.2.2.1.6-कु-(1)

कुलीन 5.21.3

2.2.1.2.2.1.7-दु ≃ दुर्-(2)

दुसह	1.109.4 (16)	दुरलभ	7.19.1	(2)

2.2.1.2.2.1.8—नि ≃ निर्-(11)

निठुर	2 8.1	(6)	निरस	7.33 2
निलज	2.47.13		निरमल	7.21.6
निरूपम	7.17.11	(3)	निरगुनी	5.42.2

2.2.1.2.2.1.9—प्र≃पर≃प्रति≃परि–(11)

प्रबल	1.109.2	(3)	प्रवीन	7 24.2	(3)
प्रमुख	1.26.2		परदस	2 67.3	(2)
प्रतिकूल	7.12.5		परिपूरन	7.13.2	(4)

2.2.1 2.2.1.10– वि–(12)

विनीत	2.70 4	(6)	विवस	2.49.5	(14)
विमल	2.7.2	(19)	विलोल	1.24.4	(2)
विशेष	1.86 5		व्याकुल	5 15.2	

2·2·'·2·2·1·11—स; सम; सु–(46)

सबल	5.13·5	सरूप	7·30·1
संपन्न	2·50·2	सुगढ़	7.17.10
सुपीन	7.21.9	सुकृती	1.6 14
सुरम	7 21.22		

2.2 1.2·2.1.1.2 – अवि–(1)

अविनामी	7.38·1

2.2.1.2·2·2 – मुक्तपद ग्राम + बद्धपदग्राम–

नीचे उन विशेषणों को लिया गया है जिनकी संरचना बद्धपदग्राम या परप्रत्यय के योग से हुई है।

मुक्तपद ग्राम + बद्धपदग्राम

1.	,,	+	अनीय	:	कमनीय	1.76.2
2.	,,	+	अई	:	अधिकई	1 96.5
3.	,,	+	ईन	:	कारुनीक	6·2.3
4.	,,	+	ईन	:	धुरीन	5·5.1
5.	,,	+	आनी	:	सोहानी	1.87.1
6.	,,	+	आल	:	रसाल	7 11.1
7.	,,	+	आरी	:	सुखारी	1.102.4
8.	,,	+	इनी	:	बलिनी	2.43.1
9.	,,	+	इक	:	वैदिक	1.5.4
10.	,,	+	ऐन	:	विरुदैत	1.68.2
11.	,,	+	त	:	दुष्ट	1.12 2
12.	,,	+	द	:	सुभद	1.20.3
13.	,,	+	वारी	:	सुखवारी	1.25 4
14.	,,	+	तर	:	चारुतर	7.3.4

15.	,,	+	ल~लु	:	मृदुल, कृपालु 1.27.3; 1.25.1
16	,,	+	ग	:	सुभग 1.20.3
17.	,,	+	तम~तमा	:	प्रीतम, प्रियतमा 5.7.2; 7.26.2

2.2.1.2.2.3 —मुक्तपदग्राम + मुक्तपदग्राम–

यहां उन पदग्रामों को लिया गया है जो दो मुक्त पदग्रामों के योग से निर्मित हैं। संरचना की दृष्टि से ये कई प्रकार के हैं–

2 2.1.2.2.3.1— नामिक + नामिक = विशेषण (10)–

कृतकृत्य	1.48.3	कृतारथ	3.15.2
बलऐन	6.9.2	राजराजमौलि	7.7.1
सत्यसंध	2.41.3	धुरंधर	7.21.1
सिरोमनि	5.25.3		

2.2 1.2.2.3.2–नामिक + क्रिया = विशेषण (13)–

आनंद मगन	1 105.6	मनभावतो	1.35.5
मोदमढ़ी	1.5.3	मोहजनित	5.10.5
मंगलदाइ	7.33.1	सुखप्रद	7.19.2
सुखदायक	7.7 1	हितकारी	7.14.1

2.2.1.2.2.3.3–नामिक + विशेषण = विशेषण (13)–

मनमोहनी	1.34 5	रामविरोधी	2.61.1
बरजोर	1.73.3	भजनहीन	2.74,4
सोकजनित	2.54.5		

2.2.1.2.2.3.4–विशेषण + विशेषण = विशेषण–(5)–

परमसुन्दर	2.18 1	परमारथी	1.64.2
नवनील	6.17.14	भूरिभागी	1.104.3
बड़भागी	3.8.3		

2.2.1.2.2.3.5–विशेषण + नामिक = विशेषण (7)–

अतिबलो	5.42.1	अमित बल	7.21.9
महाबल	1.109.2	हीनबल	5.42.1
एकरस	1.94.1	महामति	5.24.1
सरबविद	7.28.2		

2.2.2–अर्थगत–

अर्थ के आधार पर विशेषण दो प्रकार के हैं—

(1) सार्वनामिक विशेषण, (2) संख्यावाचक विशेषण ।

2.2.2.1–सार्वनामिक विशेषण —

सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के हैं–(1) पहले वे सर्वनाम जो नामिकों के पूर्व आने के कारण विशेषण हो जाते हैं । इनमें निश्चयवाचक, अनिश्चय वाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक आदि सार्वनामिक विशेषण आते हैं–इनका अध्ययन सर्वनाम पदों के साथ किया जायेगा, (2) दूसरे प्रकार के सार्वनामिक विशेषण वे हैं जो मूल सर्वनामों में अन्य प्रत्यय लगकर बनते हैं । इस प्रकार के सार्वनामिक विशेषण तीन प्रकार के हैं–

(1) रीतिवाचक (2) परिमाणवाचक (3) संख्यावाचक ।

2.2.2.1.1–रीतिवाचक सार्वनामिक विशेषण–

ऐसी	(आ०–4)	1.82.3; 2.21.1; 2.33.3; 3.4.3
ऐसे	(आ०–9)	2.88.1; 2.26.1; 5.45.5; 6.7.2
ऐसो	(आ०–2)	1.79.3; 3.16.4; 1.7.3; 1.88.1
ऐसेउ	(आ०–1)	1.87.4
ऐसेहु	(आ०–1)	2.86.4
ऐसेहू	(आ०–2)	7.30.2; 7.32.2
कैसे	(आ०–1)	2.30.3
जैसे	(आ०–1)	1.11.2
जैसिए	(आ०–1)	1.71.4
तैसी	(आ०–1)	1.43.1
तैसे	(आ०–1)	1.11.2
तैसो	(आ०–1)	1.71.4

2.2.2.1.2–परिमाणवाचक सार्वनामिक विशेषण–

और	(आ०–1)	5.14.1
इतौ	(आ०–1)	1.77.3
एतौ	(आ०–2)	5.13.5; 6.4.1
कितौ	(आ०–1)	1.77.1
केतिक	(आ०–1)	2.13.1
जितौ	(आ०–1)	1.77.2

2.2.2.1.3–संख्यावाचक सार्वनामिक विशेषण–

जिते	(आ०–1)	7.38.8

2.2.2.2–संख्यावाचक विशेषण–

संख्यावाचक विशेषण तीन प्रकार के हैं

(1) निश्चित संख्यावाचक, (2) अनिश्चित संख्यावाचक; (3) परिमाणवाचक

2.2.2.2.1—निश्चित संख्यावाचक—

निश्चित संख्यावाचक के भी कई भेद हैं। आलोच्य पुस्तक में प्रयुक्त निश्चित संख्यावाचक के विभेदों का वर्णन इस प्रकार है—

2.2.2.2.1.1—पूर्ण—

एक	(आ०—24)	1.26.6, 5.17.2, 1.67.2, 7.38.4
इक	(आ०—2)	2.29.4, 1.105.2
एकु	(आ०—1)	1.17.1
एकहि	(आ०—1)	5.9.2
एको	(आ०—1)	5.31.2
द्वै, दवै-द्वै	(आ०—4)	1.32.3, 1.33.4, 1.31.4; 7.9.3
त्रय	(आ०—2)	7.6.4; 2.46.2
त्रि (विध)	(आ०—3)	2.46.2; 2.44.2; 2.46.5
तीनि	(आ०—2)	1.58.3; 1.2.7
चारि≃चारी	(आ०—25)	1.2.10; 1.6.8; 1.6.25
सप्त	(आ०—1)	1.89.6
नव	(आ०—1)	1.89.6
दस	(आ०—8)	5.22.5; 5.28.2; 1.108.2; 7.19.2
दसचारि	(आ०—3)	6.22.4; 2.41.3; 1.10.4
चारिदस	(आ०—1)	1.6.17
सोरह	(आ०—1)	1.22.16
नवसात≃नवसत	(आ०—2)	2.15.3; 7.18.4
चौदह	(आ०—1)	7.1.1
बीस	(आ०—2)	5.12.5; 6.3.4
सत	(आ०—1)	6.16.1
सहस	(आ०—5)	5.35.3; 7.28.3; 3.17.3; 1.4.5
कोटि	(आ०—4)	5.35.3; 1.98.4; 1.110.2; 2.36.3
सतकोटि	(आ०—3)	5.35.3; 1.68.10; 7.5.7
कोटि कोटिसत	(आ०—1)	2.29.2
सत-साता	(आ०—1)	1.110.2
सहस द्वादसपंचसत	(आ०—1)	7.25.1
जुग	(आ०—2)	7.3.3; 7.3.4
उभय	(आ०—2)	1.52.4
जुगल≃जुगुन	(आ०—11)	1.25.4- 7.6.3; 7.11.2

2.2.2.2.1.2–अपूर्ण–

आध	(आ०–1)	5.14.2

2.2.2.2.1.3–क्रम–

प्रथम	(आ०–3)	5.7.1;2.49.2;2.76.4
दुसरे≃दूसरे≃दूसरो	(आ०–5)	6.13.3;1.4.7;1.45.5; 5.25.1;5.38.5
पर	(पर–हाथ)	3.7.3
पहिलो	(आ०–1)	1.82.3
तीसरेहु	(आ०–1)	3.17.2
आगिलो	(आ०–1)	1.84.8

2.2.2.2.1.4–आवृत्ति–

दूनो	(आ०–1)	2.54.1
चौगुनो	(आ०–2)	1.104.1;2.57.2
सौगुनी	(आ०–1)	2.87.3
कोटि-गुनित	(आ०–1)	2,6.1

2.2.2.2.1.5–समुदाय–

दोउ≃दोऊ	(आ०–46)	1.104.3;1.55.1;1.83.1;2.55.2; 1.64.1
दुहु≃दुहु≃दूहू≃दुहूँ	(आ०–6)	7.7.3;3.17.2;1.28.4;6.11.2; 1.71.2
तीनिहू	(आ०–1)	5.48.1
तिहु≃तिहुँ≃तिहू≃तिहूँ	(आ० 10)	1.5.6;1.3.6;2.21.2;1.93.3; 2.72.3
चहु≃चहुँ≃चहूँ	(आ०–15)	5.22.9;2.47.11;7.17.2; 7.5.6; 2.14.3
चारिहु≃चारिहू	(आ०–2)	2.49.5;3.17.5
चारौ≃चार्यो	(आ०–9)	1.9.1;1.16.2
उभय	(आ०–7)	2.19.2;2.81.3;2.25.3;1.61.4
सातहू के	(आ०–1)	1.86.2
दसहुँ	(आ०–2)	4.2.4;1.2.3
बीसहू कै	(आ०–1)	2.33.1
कोटिक	(आ०–1)	2.39.2

2.2.2.2.2–अनिश्चित संख्यावाचक–

अगनित	(आ०–4)	2.5.2;2.15.4;7.4.1;2.47.3

अति अलप	(आ०–1)	1.50.3
अनगनी	(आ०–1)	1.5.1
अनेक	(आ०–6)	1.41.1;1.5.4;5.9.1;1.87.2;7.33.2; 1.108.5
अनंत	(आ०–1)	5.9.4
अमित	(आ०–4)	1.33.3;1.1.9;7.21.9;3.4.3
अलप	(आ०–1)	3.16.2
घनी	(आ०–1)	1.5.1
घने ≃ घने घने	(आ०–3)	5.13.2;7.19.2
नाना	(आ०–2)	7.21.3;2.47.7
थोरे	(आ०–2)	2.11.4;3.2.5
बहु	(आ०–17)	5.17.3;7.19.4;1.26.3;7.9.5
बहुत	(आ०–1)	2.38.1
सकल	(आ०–86)	1.80.7;6.7.4;1.82.2;5.16.9;1.15.1
सब	(आ०-105)	7.38.8;7.17.15;1.36;4;7.21.16; 7.21.5
सबै	(आ०–4)	1.6.26;2.37.3;1.1.10
सबहि	(आ०–2)	7.21.1
बहुतेरे	(आ०–1)	2.76.2

2.2.2.2.3–परिमाणवाचक–

अगाध ≃ अगाधु	(आ०-2)	1.87.4;6.1.5
अति	(आ०–74)	7;21.1;7.38.1;2.5.1;6.3.2;5.41.1
अधिक	(आ०–18)	7.19.4;7.5.6;2.7.2;2.46.1
अधिकौई	(आ०–1)	7.4.4
अपार ≃ अपारु	(आ०–3)	2.29.2;7.19.5;7.10.3
अमित	(आ०–6)	1.54.2;2.29.2;7.13.2;6.21.6;3.2.4; 7.7.7
गरुअ ≃ गरुइ	(आ०–3)	2.81.2;7.21.18;7.32.5
घनी	(आ०–3)	1.20.3;7.5.2;5.39.1
घनेरो	(आ०–1)	2.54.5
थोरी	(आ०–3)	1.62.3;2.20.1
बहु	(आ०–1)	1.59.3
बहुत	(आ०–3)	2.78.1;1.109.4;5.11.4
सकल	(आ०–5)	1.2.6;5.45.4;1.64.3;1.85.4;1.60.2

सब	(आ०–6)	5.13.5;5.34.3;1.48.3;2.16.2;7.35.3; 1.2.1
सो (सब)	(आ०–1)	5.26.1

2.2.3–प्रकार्यगत–

इसके अन्तर्गत विशेषणों के निम्नलिखित प्रयोग मिले हैं–

2.2.3.1–विधेयक के रूप में प्रयुक्त विशेषण–

आलोच्य ग्रन्थ में विशेषण अनेक स्थानों पर विधेयक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

सूनो	2.54.1	(भवन बिलोकति सूनो)
थोर	3.1.2	(दंडकवन कौतुक न थोर)
चोखे	1.95.1	(चमकत चोखे हैं)
निरास	1.90.1	(सब नृपति निरास भऐ)
थोरे	2.11.4	(·· सुकृत नहिं थोरे)
नई	2.78.1	(कही कुजुगुति नई है)

2.2.3.2–नामिक के समान प्रयुक्त विशेषण–

विशेषणों का प्रयोग नामिक के रूप में भी अत्यधिक स्थलों पर हुआ है–कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

मूकनि ·· अंधनि	1.60.5	(मूकनि वचन लाहु ···मानो अंधनि लहे हैं विलोचन तारे)
खोटो खरो	5.33.3	(खोटो खरो सभीत पालिए)
बहुतन्ह	1.17.1	(बहुतन्ह परिचौ पायो)
सबनि	1.15.6	(सबनि सुबनु दुइ ई)
अपराधिनि	2.74.2	(अपराधिन को जायो)

2.2.3.3–विशेषण के समान प्रयुक्त नामिक–

राम सिसु	1.26.1	(रामसिसु जननि निरख मुख निकट बोलाए)
बाल बिभूपन	1.23.2	(बाल बिभूपन रचित बनाए)
तुलसी जनको	5.8.3	(तुलसी जन को जननी प्रबोध कियो)
दास तुलसी	5.2.4	(दास तुलसी दसा सो केहि भांति कहै-बखानि)

2.2.3.4–विशेषण के पूर्व प्रयुक्त विशेषण–

वड़विषम	2.10.3	(बिधि वड़ बिषम बली)
अति अधम	2.74.2	(जद्यपि हौं अति अधम)
अतिहि अधिक	5.19.1	(अतिहि अधिक दरसन को आरति)
अति अलप	1.50.3	(अति अलप दिननि घर ऐहैं)
चतुर अति	7.19.1	(पुर-नर-नारि चतुर अति)

2.2.4–प्रातिपदिकों के दीर्घ एवं लघुरूप–

2.2.4.1–दीर्घरूप–

पुनीत	पुनीता	3.3.1	बिलास	विलासा	7.15.3
मधुर	मधुरे	7.7.4	सात	साता	1.110.2
मनोहर	मनोहरा	7.19.3			

2.2.4.2–लघुरूप–

गोरी	1.105.1	गोरे	2.25.1	गौर	1.63.2
बड़ो	1.110.3	बड़े	1.78.3	बड़	2.10.3
सांवरो	1.97.1	सांवरे	2.22.1	सांवर	1.77.2
सुन्दरी	2.18.2	सुंदरि	1.82.1		
हितकारी	7.14.1	हितकारि	7.29.2		

2.2.5–अवधारण के लिए प्रयुक्त रूप–

(अ) हि, उ, ऊ, हु, हुँ, हू, हूँ

एकहि 5.9.2; दोउ 1.104.3; दोऊ 2.55.2; तिहु 1.5.6; चहुँ 7.17.2; तिहू 1.93.3; चहूँ 2.14.3

(आ) इऐ–छोटिये 1.44.1

2.2.6–तुलना–

आलोच्य ग्रन्थ में विशेषणों की तुलना के तीन आधार मिले हैं–

2,2.6.1–तुलना सूचक रूपों की सहायता द्वारा–

तर	रुचिरतर 1.33.2 अरुनतर 7;12.6 सुंदरतर 7.7.3
तम ≃ तमा	प्रीतम 5.7.2 प्रियतमा 7.26.2
सय	अतिसय 7.3.6
तें	ताते न तरनिनें न सीरे सुधाकर हूं ते 1.87.3
	सरद-सरोजहुं तें सुंदर चरन हैं 2.26.3
तैं	प्रभुतैं प्रभु-चरित पियारे 1.46.5
परम	परम सिंगारु 1.82.1

2.2.6.2–केवल एक विशेषण पद द्वारा–

अधिक	चित्रकूट पर राउर जानि अधिक अनुरागु	2.47.9

थोर	दंडकबन कौतुक न थोर	3.1.2
चोखे	असि चमकत चोखे हैं–	1.95.1
बड़ोइ	सुवन समीर को वीर धुरीन वीर-बड़ोइ	5.5.1

2.2.6.3–**समानता की अभिव्यक्ति द्वारा–**

सम	जुग सम निमिष जाहिं रघुनंदन	2.4.4
सरिस	तुलसी तिन्ह सरिस तेऊ	2 37.3
सी	सुखमा की मूरति सी	2.26.2
से	प्रानहू के प्रान से	2.26.4
सो	रावन सो रसराज	5.13.2

विशेषण
संरचनागत
अर्थगत
प्रकार्यगत
अरूपान्तरित
रूपान्तरित
सार्वनामिक
संख्यावाचक
विधेयकवत् प्रयोग
नामिकवत् प्रयोग
विशेषण के समान प्रयुक्त नामिक
विशेषण के पूर्व प्रयुक्त विशेषण
मूलपदग्रामीय
योगिकपद ग्रामीय
रीतिवाचक
परिमाण वाचक
संख्या वाचक
निश्चित
अनिश्चित
परिमाण
बद्ध+मुक्त
मुक्त+बद्ध
मुक्त+मुक्त
पूर्ण
अपूर्ण
क्रम
आवृत्ति
समुदाय
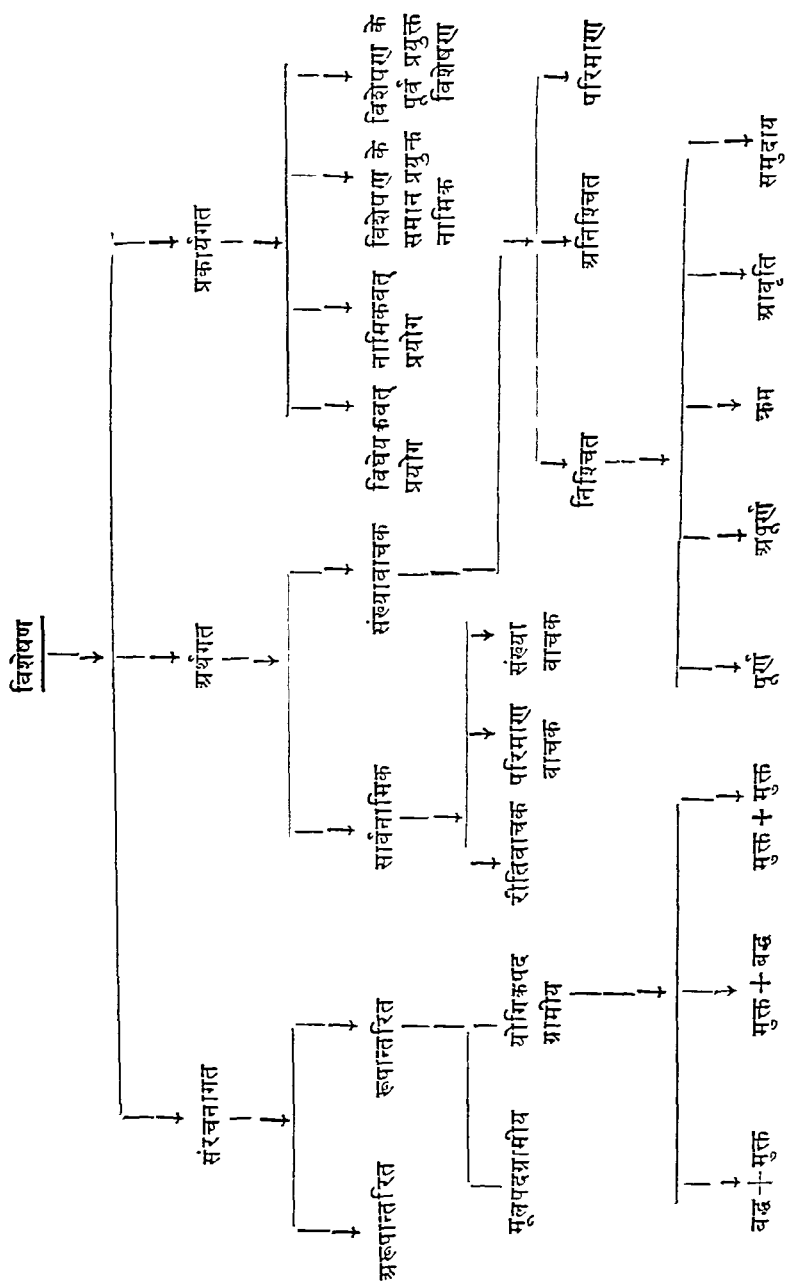
2.3— सर्वनाम

सर्वनाम नामिकों का स्थानापन्न वर्ग है । सर्वनाम प्रतिपादिक और विभक्ति प्रत्यय (दोनों) का निर्धारण करना कठिन है अतः इनका रूपात्मक अध्ययन किया गया है। सर्वनाम को प्रभावित करने वाले अक्ष वचन और कारक हैं । लिंग भेद का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । लिंग का निर्णय तो वाक्य-स्तर पर क्रिया के आधार पर होता है ।

नीचे गीतावली में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के सर्वनामों की सूची उनके वचन (एकवचन / वहुवचन) व कारक (मू०रू०/ति०रू०) के अनुसार प्रस्तुत की गई है । प्रत्येक सर्वनामपद की आवृत्तियों का यथास्थान उल्लेख किया गया है. अधिक आवृत्ति प्राप्त होने पर केवल उनकी संख्या बताई गई है ।

2.3.1–पुरुषवाचक सर्वनाम–

इसमें उत्तम और मध्यम पुरुष सर्वनामों का विवेचन किया गया है

2.3.1.1–उत्तमपुरुष–

गीतावली में हम का प्रयोग अत्यल्प है । नीचे उत्तम पुरुष सर्वनाम की वचन और कारकीय स्थिति स्पष्ट की गई है ।

2.3.1.1.1–वियोगात्मक रूप – 2.3.1.1.1.1. – मूलरूप–

एकवचन	वहुवचन
मैं (27 आ०) 2.35.1; 2.78.1; 5 28 4, 7.30.4, 6.1.8	हम (4 आ0) 2.22.2, 1.75.2 5.11 3 , 2 66.4
हौं (66 आ०) 2.77.1, 6.8·1, 5.6·1 6.14.2, 5.8 1	

2 3.1.1.1.2 - तिर्यक रूप–

मो (24 आ०) सभी परसर्ग सहित 6.6.1, 2·85·1 5·7·3, 2·76.2, 5·24.2	हम (1 आ०) परसर्गसहित 2·34 4

2·3·1.1·1·3– संबंध कारकीय रूप (विशेषणवत्)

मेरे (41 आ०) 1·61·4, 6·15·1, 2·74.3, 7·12·1, 6·17.2	हमारे (1 आ०) 2·5·1
मेरो (20 आ०) 1·85·2, 6.3·1, 2·57·1, 5·45·1, 1·12·1	हमारे (2 आ०) 1·60.4, 1.68·12
मो (2· आ०) 3.'4·3, 1·4·8	हमारो (2 आ०) 2·66.4, 2.67·3
मोरे (3 आ०) 3·2·1, 2·47·18, 2·11.3	

मोरि (3 आ०) 3.17.7, 2.70.2, 2.47.18
मोरी (1 आ०) 1.105.2
मेरी (1 आ०) 7.30.2

2.3 1.1.2– संयोगात्मक रूप–

कर्म–सम्प्रदान मो (हि) 36 आ०) 2.53.1, 2.74.1, 1.8.3, 5.50.1, 6.15.2 — हम (हि) (2 आ०)
मो (ही) (1 आ०) 2.20.2
मो (हुसे) (1 आ०) 5 29.4
मो (हू) (1 आ०) 2.61.1

2.3.1.1.3– अवधारण बोधक प्रयोग–

मेरोइ (1 आ०) 2.84.3, — हमरिऔ (1 आ०) 2.34.4

2.3.1.2–मध्यम पुरुष–

प्रस्तुत ग्रन्थ में मध्यम पुरुष व० व० के सभी रूप आदरार्थ एकवचन के अर्थ में प्रयुक्त हैं केवल एक स्थान (5.45.1) पर बहुवचन के अर्थ में प्रयोग है।

2.3.1.2.1–वियोगात्मक :

2.3.1.2.1.1–मूलरूप–

एकवचन	बहुवचन
तू (7 आ०) 6.2.1, 2.16.1, 7.32.2, 5.50.1, 3.16.4	तुम (9 आ०) 1.19.2, 6.1.6, 2.4.2, 5.51.6
तैं (3 आ०) 2.60.1, 6.3.1, 5.49.3	तुम्ह (4 आ०) 1.13.3, 5.20.4, 6.14.1, 2.72.1

2.3 1 2.1 2–तिर्यक रूप–

तो (को) (1 आ०) 1.28.1	तुम (2 आ०) परसर्ग सहित–2.9.1, 2.76 2
तो (सो~र्मों) (2 आ०) 5 24.4, 5.49.1	तुम्ह (3 आ०) परसर्ग सहित 2,76.2, 1.69 2 तथा 5.45.1 (व० व०)

2.3.1.2.1,3–संबंधकारकीय रूप (विशेषणवत्)

तेरे (4 आ०) 5.32 3, 1.18.3, 5.8.2, 7.12.1	तुम्हरे (2 आ०) 7.38.1, 1.40.2
तेरो (1 आ०) 2.60.1	तुम्हारे (5 आ०) 2.5.1, 6.8.4, 5.17.3. 5.44.2, 5.20.1
तेरी (2 आ०) 5.26.2, 1.19.4	तिहारे (9 आ) 2.2.1, 1.37.1, 5.18.1, 1.38.4, 2.4.3

तोरी (1 आ०) 2.61.3
तव (3 आ०) 2.60.3, 7.32.1
6.2.4

तुम्हारी (1 आ०) 2.3.2
तुम्हरी (1 आ०) 2.1.1

तिहारी (1 आ०) 5.51.1
तुव (2 आ०) 5.11.4, 5.11.2
दो स्थानों पर 'तुम्ह' संबंध कारकीय स्थिति में हैं
तुम्ह (2 आ०) 2.7.1, 6.5.3

2.3.1.2.2–संयोगात्मक रूप–
कर्म–सम्प्रदान

तो (हि) (4 आ०) 6.4.1, 5.13.1, 6.1.9, 2.3.3
तो (ही) (2 आ०) 2.19.3, 2.20.3
तो (हुसो) (1 आ०) 5.7.1
तो (हु) (1 आ०) 2.61.1

तुम (हि) (3 आ०) 5.51.5, 3.13.4, 5.51.6
तुम्ह (हि) (2 आ०) 3.6.2, 2.2.4

2.3.1.2.3–अवधारण बोधक प्रयोग–

तु (ही) (1 आ०) 5.8.1

तुम्ह (हि) (1 आ०) 2.76.2
तिहारो (ई) (1 आ०) 5.15.3
तिहारे (हि) (1 आ०) 6.8.4
तुम्हरि (हि) (1 आ०) 6.8.4

2.3.2 –निश्चय वाचक
2.3.2.1–निकटवर्ती
2.3.2.1.1- मूलरूप
2.3.2.1.1.1–सर्वनाम रूप

ए० व०

यह (2 आ०) 5.45.2, 2.71.2
इहै (1 आ०) 2.76.2
ए (ये) हु (1 आ०) 2.30.4

ब० व०

ए (7 आ०) 1.65.1, 1.68.1, 1.78.2 1.78.2, 2.71.2, 1.78.4, 1.78.2, 1.78.3
ए (ये) (2 आ०) 1.63.1, 1.68.11
ए (ये ई) (1 आ०) 1.11.3
ए (उ) (1 आ०) 1.68.4

2.3.2.1.1.2–विशेषण रूप–

यह (29 आ०) 1.47.2, 2.3.3, 2.55.1, 6.11.3, 1.104.4

ए (5 आ०) 1.68.1, 2.75.2, 1.78.2 1.87.1, 1.78.3

यहै≃यहै (2 आ०) 2.56.3, 2.12.1
इहै (2 आ०) 1.70.2, 2 11.4
यहि (1 आ०) 7.17.2

ए (ये) (2 आ०) 1.45.6, 2.42.1
ए (ई) (2 आ०) 1.74.1, 1.69.1

2.3.2.1.2–तिर्यकरूप–

2.3.2.1.2.1–सर्वनाम रूप–

या (के) (1 आ०) 1.16.4
या (ते≃तें) (2 आ०) 1.96.5, 2.57.3
यहि (1 आ०) 1.98.2
एहि (तें) (1 आ०) 5.30.3
इहि (तें) (1 आ०) 2.7.2

इन (को) (2 आ०) 1.95.2, 2.28.5
इन (हिं) (1 आ०) 1.63.4
इन्ह (के) (2 आ०) 2.28.2, 1.74.4
इन्ह (को) (1 आ०) 2.87.4
इन्ह (की) (1 आ) 3.1.3
इन्ह (ते) (1 आ०) 1.56.2
इन्हैं (1 आ०) 1.77.3
इन्हहिं≃(हि) (3 आ०) 1.78.4, 2 86.1, 2.42.2
इन्ह ही ; (2 आ०) 1.83.2, 1.74 3
इन्ह (ही को) (1 आ०) 1.86.4
ए (1 आ०) ति० ब० व० के समान प्रयुक्त) 1.68.9

2.3.2.1.2.2–विशेषण रूप–

या (5 आ०) 2.62.1, 1.16.1, 2.53.2, 2.72 2, 6.6.3
यहि (12 आ०) 1.88.1. 2.41.1, 5.13.1, 5.50.4, 6.4.5
इहि (1 आ०) 2.4.2
एहि (5 आ०) 2.37.1, 7.21.15, 2.39.1, 1.45.7, 1.98.3
एही (2 आ०) 2.30.6, 2.34.3
ए (2 आ०) (ति० ए० व० की भाँति प्रयुक्त) 1.75.2, 1.75.2

इन (1 आ०) 5.50.4
इन्ह (2 आ०) 1.22.9, 1.78.2
एहि (1 आ०) 6.14.5

2.3.2.2–दूरवर्ती

2.3.2.2.1–मूलरूप

2.3.2.2.1.1–सर्वनाम रूप

सो (21 आ०) 3.17.8, 1.104.1 2.41.1, 1.86.5, 1.100.4
सो (इ) (10 आ०) 5.30.1,2.71.4 1.93.2, 5.49.2, 2.35.4
सो (ई) (7 आ०) 5.24.4, 5.25.3, 1.86.5, 2.41.2, 5.25.3
सो (उ) (3 आ०) 2.2.3, 7.25.2, 6.4.2
सो (ऊ) (2 आ०) 2.16.2, 5.24.3

ते (13 आ०) 2.28.6, 1.5.4, 5.35.6 7.36.2, 6.22.11
ते (इ) (2 आ०) 1.45.7, 7.13.6
ते (हि) (1 आ०) 1.6.24
ते (उ) (2 आ०) 1.46.5, 6.22.11
ते (ऊ) (3 आ०) 3.9.3, 2.37.3, 1.80.7
ते (1 आ०) (ए० व० के समान प्रयुक्त) 1.69.3

2.3.2.2.1.2–विशेषण रूप–

वह (3 आ०) 5.47.1. 2.52.4, 5.11.3
सो (25 आ०) 2.13.1, 2.40.5, 2.12.2, 5.12.5, 5.40.4
सोइ (10 आ०) 1.57.3, 1.25.6 5.38.3, 5.39.3
सो (ई) (1 आ०) 1.86.2
सो (ऊ) (1 आ०) 1.99.4
ते (1 आ०) (ए० व० की भांति प्रयुक्त) 1.5.6

वै (1 आ०) 6.17.1
ते (3 आ०) 2.26.1, 2.14.3, 1.37.7

2.3.2.2.2–तिर्यक् रूप–

2.3.2.2.2.1–सर्वनाम रूप–

ता (1 आ०) 6.6.2
ता (के) (2 आ०) 1.29.5, 5.26.2
ता (को) (4 आ०) 4.2.2, 6.2.2 5.32.2, 6.3.3
ता (की) (1 आ०) 5.40 2
ता (सु) (1 आ०) 1.103.2
ता (हि) (2 आ०) (आदरार्थ ए०व०

उन (की) (1 आ०) 2.31.3
तिन (की) (3 आ०) 2.31.3, 2.17.3, 2.49.6
तिन्ह (3 आ०) 2.37.3, 7.5.5, 1.46.5
तिन्ह (की) (4 आ०) 2.85.2, 1.5.3, 1.1.12, 6.18.3
तिन्ह (के) (2 आ०) 1.11.4, 3.5.5
तिन्ह (तें) (1 आ०) 1.68.8

के लिए) 1.12.4, 7.31.4

ते (1 आ०) ति० ए० व० के समान प्रयुक्त 5.49.2 तिन्ह (पर) (1 आ०) 1.4.11

तेहि (9 आ०) 2.37.3, 2.48.5 5.36.5, 6.11.3, 6.10.2 तिन्ह (हिं) (1 आ०) 5.45.3

ते (इ) (1 आ०) 1.18.2

2.3.2.2.2.2 — विशेषण रूप —

ता (2 आ०) 2.68.1, 5.13.4 तिन्ह (1 आ०) 2.4.3

ते (हि) (31 आ.) 2.18.4, 7.21.25, 5.20.3, 2.89.2, 4.1.3

ते (ही) (1 आ०) 6.21.7

ति (हि) (2 आ०) 7.29.2, 1.107.2

2.3.3 — अनिश्चयवाचक —

2.3.3.1—प्राणिवाचक (एक वचन, वहुवचन में समान रूप हैं)

2.3.3.1,1—मूल रूप

2.3.3.1.1.1—सर्वनाम रूप

कोउ (18 आ०) 2.53.1, 1.82.3, 2.64.3, 7.13.1, 5.22.7

कोऊ (2 आ०) 1 86.4, 2.55 2

एक (11 आ०) (एक का प्रयोग प्राणिवाचक मूलरूप में अनिश्चय के लिए हुआ है) 1.88.5, 1.45 4, 1.70.7, 2.41.2, 2.67.4

2.3.3.1.1.2 — विशेषण रूप —

कोइ (आ० 1) 1.2.8

कोउ (आ० 3) 2.42.1, 2.29.1, 7.8.5

कौऊ (3 आ०) 2.16.1, 2.18.1, 2.19.1

2.3.3.1.2 — तिर्यक् रूप —

2 3.3.1.2.1 — सर्वनाम रूप —

कोउ (1 आ०) 6.22.11

का (हु) (2 आ०) 2.9.3, 5.3.4

का (हू) (8 आ०) 2.39.5, 2.88.1, 5.51.6, 2.37.1, 1.7.3

का (हू) की (1 आ०) 2.62.3

का (हू) सों (2 आ०) .37.1, 2.88.1

(इसके विशेषण रूप नहीं मिले)

2.3.3.2–अप्राणिवाचक–

2.3.3.2.1–मूल रूप–

2.3.3.2.1.1–सर्वनाम रूप–

और≃औरे (3 आ०) 5.39.2

कछु (8 आ०) 7.5.5, 1.73.5. 2.74.3, 2.84.3, 1.49.2

कछू (आ० 2) 5.36.5, 5.30.3

कछुक (1 आ०) 1.73.5

काउ (1 आ०) 7.25.4

एकौ (1 आ०) 3.12.1

2.3.3.2.1.2–विशेषण रूप–

कछु (7 आ०) 2 38.1, 3.3.1, 5.9.2, 4.2 2, 1.34.6

कछू (4 आ०) 3.15.1, 6.3.1, 1.16.4, 5.37.5

कछुक (3 आ०) 1.108.2, 7.17.4, 7.28.3

कोऊ (1 आ०) 2.24.2

(इसके तिर्यक रूप नहीं मिले)

2.3.4–प्रश्नवाचक–

2.3.4.1–प्राणिवाचक (एकवचन और बहुवचन में समान रूप हैं)

2.3.4.1.1–मूलरूप–

2.3.4.1.1.1–सर्वनाम रूप–

को (40 आ०) 1.88.2, 1.16.1, 2.37.1, 5.23.2, 5.28.8

कौंन (7 आ०) 2.19.4, 1.65.1, 2.62.2, 2.62.3, 2.60.3

कत (कौंन के अर्थ में 1 आ०) 1.68.9

2.3.4.1.1.2–विशेषण रूप–

को (5 आ०) 2.67.2, 6.11.5, 1.88.2 1.22.4, 2.47.21

कौंन (1 आ०) 5.46.3

कवनी (1 आ०) 1.58.3

2.3.4.1.2–तिर्यक रूप–

2.3.4.1 2.1–सर्वनाम रूप–

को (किसने व किसको के अर्थ में 2 आ०) 5.44 5, 2.66.2

कौंन (की) (2 आ०) 2.19.4, 7.4.6

कौंन (सो) (1 आ०) 2.4.1

कौने (1 आ०) 5.46.2

केहि (3 आ०) 5 46 3, 2.60.2, 6.1,5

काहि (3 आ०) 6.1.1, 2.54.3, 5.43.5
काको (2 आ०) 5.38.5, 6.7.1
काके (2 आ० ब० व०) 7.4.6, 1.64.1
को (2 आ० तिरस्कार वाचक के अर्थ में) 5.22.5, 7.7.1

2.3.4.1.2.2–विशेषण रूप–

कौंन (3 आ०) 5.46.2, 2.62.2, 1.64.1
केहि (1 आ०) 1.57.4

2.3.4.2–अप्राणिवाचक (एकवचन और बहुवचन में समान रूप हैं)

2.3.4.2.1–मूलरूप–

2.3.4.2.1.1–सर्वनाम–

का (3 आ०) 2.44.4, 1.89.8 (तुच्छता के अर्थ में) 2.20.3
कहा (13 आ०) 1.59.2, 6.3.4, 6.14.1, 2.84.1, 5.26.1
कवनि (1 आ०) (तुच्छता के अर्थ में) 3.5.5
का (ऊ) (1 आ०) (क्या के अर्थ में) 2.36.1
कौंन (1 आ०) 2.57.3

2.3.4.2.1.2–विशेषण रूप–

का (1 आ०) 5 3.3
कौन (5 आ०) 5.45.1, 2.67.3, 2.83.1, 2.7.1, 7.4.6

2.3.4.2.2–तिर्यक रूप–

2.3.4.2.2.1–सर्वनाम रूप नहीं हैं–

2.3.4.2.2.2–विशेषण रूप–

केहि (9 आ०) 5.2.5, 1.59.2, 2.74.1, 7.17.16, 5.3.3, 7.25.3
कौन (5 आ०) (किस अर्थ मे) 7.4.6, 7.10.5, 2.4.1, 1.1.11, 2.60.4
कवन (1 आ०) 2.8.1
कौने (1 आ०) 2.19.3

2.3.5–सम्बन्ध वाचक–

2.3.5.1–मूलरूप–

2.3.5.1.1–सर्वनाम रूप–

एकवचन	बहुवचन
जो (23 आ०) 2.21.1, 7.19.2, 1.85.1, 6.1.5, 2.52.3, 1.100.4	जो (1 आ०) 5.42.2
जोई (1 आ०) 1.86.5	जे (22 आ०) 2.28.6, 7.13.4 5.35.6, 2.49.6, 1.32,7

जोइ (4 आ०) 1.6.23, 2.62.3, 1.1.9, 2.71.4

जे (ऊ) (1 आ०) 2.37.3

जे (3 आ०) (एकवचनीय) 1.29.3, 1.5.6, 7.13.5

2.3.5.1.2–विशेषण रूप–

जो (9 आ०) 7.21.23, 2.80.2, 1.87.1, 2.56.2, 1.4.1

जो (2 आ०) 2.38.1, 7.19.2

जो (ई) (1 आ०) 5.24.4

जौन (1 आ०) 5.20.1

2.3.5.2–तिर्यक रूप–

2.3.5.2.1–सर्वनाम रूप–

जा (1 आ०) 2.82.3

जिन (4 आ०) 1.104.3, 2.26.1, 2.41.4, 2.39.6

जा (सु) (7 आ०) 1.12.4, 7.6.6, 2.71.3, 5.12.5, 6.1.6

जिन (हिं) (1 आ०) 1.4.11

जा (को, के, की) (आ० 21) 5.27.3, 1.85.3, 1.64.4, 1.86.5, 1.71.4

जिन (के) (1 आ०) 2.85.2

जा (मैं) (1 आ०) 5.25.2

जिन्ह (3 आ०) 7.13.6, 7.13.5, 6.22.11

जा (कहँ) (1 आ०) 1.25.6

जिन्ह (के, की) (परसर्ग सहित) (9आ०) 1.78.4, 7.23.3, 5.45.3, 1.5.3, 1.83.1

जाहि (3 आ०) 1.6.23, 1.1.9, 2.62.3

जिन्ह (हि) (1 आ०) 6.18.3

जेहि (26 आ०) 1.86.5, 1.89.2, 6.1.2, 2.64.2, 2.67.2

जिन्ह (हुँ के) (1 आ०) 2.28.6

जिहि (2 आ०) 2.61.2, 7.26.2

जेहि (1 आ०) (ति०व०व० की भाँति प्रयुक्त) 2 36 2

2.3.5.2.2–विशेषण रूप

जा (4 आ०) 1.81.2, 4.2.2, 1.8.5, 5.50.1

जिन्ह (2 आ०) 2.4.3, 1.68.8

जेहि (4 आ०) 1.93.2, 1.79.3, 6 11.2, 5.20.3

जे (3 आ०) (ति०व०व० की भाँति प्रयुक्त) 1 6.21, 1.5.4, 7.13.8

जो (1 आ०) (ति०व०व० की भाँति प्रयुक्त) 1.58.3

2.3.6–निजवाचक–

गीतावली में निजवाचक सर्वनाम के निम्न रूप मिले हैं—सभी रूप केवल एकवचन में हैं।

2.3 6.–1 मूलरूप–

आप (1 आ०) (स्वयं के लिए) 2.34.2

आपु (6 आ०) (स्वयं के लिए) 2.18.4, 1 96.1, 2.80.4, 5.12 2; 7.24.2, 1.6.10

2.3.6.2–तिर्यक रूप–

आपु (1 आ०) (ति०वत् प्रयुक्त) 6.1.2

आपुतें (1 आ०) 2.38.2

2.3.6.3–सम्बन्ध कारकीय रूप (विशेषणीय)–

अपनी (3 आ०) 5.7.3, 1.89.4, 7.20.3

अपने (4 आ०) 6.5.3, 1.102.3, 3.17.8, 3.16.4

अपनो (6 आ०) 7.26.3, 2.85.1, 5.1.3 5.30.3, 2.78.2, 1.70.4

आपनी (4 आ०) 2.41.3, 2.19.4, 7 5.7, 1.6.8

आपने (4 आ०) 6.6.4, 1.65.3, 2.87.1, 5.12 2

आपनो (2 आ०) 5.50.2, 2.33.1

आपनेहुतें (1 आ०) 2.38.2

अपने (की) (1 आ०) 5.29.4

अपनियाँ (1 आ०) 1.34.6

अपनपौ (1 आ०) 5.36.2

अपान (1 आ०) 5.22.7

अपान की (1 आ०) 5.11.4

निज (47 आ०) 6 3.2, 2.43.4, 1.5.1, 5.35.4, 7.7.6

2.3.7–आदरवाचक–

गीतावली के आदरवाचक सर्वनाम के रूप मध्यम पुरुष सर्वनाम रूपों से घुले मिले हैं–

2.3.7.1–मूलरूप (एकवचन)

आपु (4 आ०) 6.5.4, 1.88.1, 5.14.1, 3.15.1

आपु (ही) (2 आ०) 7.29.1, 1.86.3

2.3.7.2–सम्बन्ध कारकीय रूप (विशे० वत्)–

रावरो (4 आ०) 1.50.1, 1.86.4, 5.30.4, 5.36.4

रावरे (5 आ०) 1.37.3, 1.87.4, 5.18.3, 1.49.1, 3.16.2

रावरी (1 आ०) 1.13.3

रावरेहि (आ० 1) 1.65.3
रावरेहु (आ० 1) 1.67.3
राउर (आ०-1)- 2.47.9

2.3.8-समुदाय वाचक-

2.3.8.1-मूलरूप

सब (आ०-34)-1.103.2, 2.88.2, 7.19.4, 6.15.3, 2.64.2
सब (ही) (आ०-1)-1.68.7
सबै (अवधारण बोधक) (आ०-3)-1.4.11,1 76.3, 2.1.1

2.3.8,2-तिर्यक रूप-

2.3.8.2.1-प्रथम बहुवचन रूप-

सब (की, के, को, कौ) (4+11+3+1=19 आ०)—5.37.4, 2.67.4,7.19.1, 6.21.6, 5.25.2, 5.42.1,
सब (हि) (आ०-7)- 1.73.6, 2.89.2, 1.90.6, 1.80.2, 5.36.3
सब (हि को) (आ०-1)-6.8.3
सब (ही) (आ०-1)-1.67.4
सबही (के, को, की 6+1+1=आ०-8)- 2.30.3, 7.19.1, 1.12.1 5.7.3, 1.92.5

2.3.8.2.2—द्वितीय बहुवचन रूप-

परसर्ग रहित-सब (नि) (आ०-9)- 1.2.12, 1.15.1, 6.22.9, 2.48.4, 5.1.3
परसर्ग सहित....सब (नि) (के, की, को, 1+1+1 = आ०-3) 2.75.3, 2.78.4, 5.42.4
सब (निसों) (आ०-1)-1.5.4
सब (हिन तें) (आ०-1)-2.87.4

2.3.9-नित्य संबंधी-

रुप रचना की दृष्टि से नित्य सम्बन्धी सर्वनाम में दो संबंध सूचक सर्वनामों के मध्य क्रिया-विशेषणीय विन्यासिम रहता है। गीतावली में प्रयुक्त इसके दोनों रूपों में से {जो, जे} आदि सर्वनाम रूपों का अध्ययन संबंधवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत तथा {सो, सोई} आदि सर्वनाम रूपों का अध्ययन निश्चयवाचक सर्वनाम के अन्तर्गत किया जा चुका है। इसलिए इनका अलग से अध्ययन नहीं किया गया है। नीचे नित्य सम्बन्धी के कुछ उदाहरण दिए गए हैं-

मूल रूप-

एक वचन बहुवचन
जो·········सो 2.80.2

जे............ते 1.29.3

तिर्यक रुप–

एकवचन	बहुवचन	
जेहि	तेहि	6.21.6
तेहि	जेहि	2.48.5

2.3.10–संयुक्त सर्वनाम–

आलोच्य ग्रन्थ में निम्नलिखित सर्वनाम संयुक्त रुप में आए है–

अस केहि	(आ०–1)	1.57.4
अपनी अपनी	(आ०–1)	7.19.5
अपने अपने	(आ०–3)	1.2.14
आपनी आपनी	(आ०–3)	5.24.1, 2.31.1, 1.84.1
आपने आपने	(आ०–4)	1.84.1, 1.64.4, 2 30.4, 1.84.1
अपान को	(आ०–1)	1.88.3
आन को	(आ०–1)	1.88.1
और को	(आ०–1)	1.70.8
एक एक सो	(आ०–2)	1.75.2, 6.21.4
एक एकनि	(आ०–2)	1.76.6, 1.60.5
एकै एक	(आ०–1)	1.88.5
कछु और	(आ०–1)	5.38.2
केहि केहि	(आ०–1)	1.59 2
कोउ इक	(आ०–1)	6.21.1
जेहि जेहि	(आ०–1)	2.32.1
निज निज	(आ०–8)	1.5.1, 2.51.2. 1.6.13, 7.21.19
बहुत कहा	(आ०–1)	2.72.1
सब काहु ~ काहू	(आ०–2)	2.97.2, 5.24.1
सब कोइ	(आ०–1)	5 5.3
सब कोऊ	(आ०–1)	1.63.1

2.4–क्रिया-

2.4.1 धातु– रचना की दृष्टि से धातुओं के दो वर्ग किए जा सकते हैं : मूल और यौगिक।

2.4.1.1–मूल धातु–आलोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त मूल धातुओं की संख्या 283 है जो दो भागों में विभक्त हैं–स्वरान्त व व्यंजनान्त।

2.4.1.1.1–स्वरान्त–प्रालोच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त कुल स्वरान्त धातुएँ 31 हैं। लगभग सभी एकाक्षरी हैं केवल एक दो धातुएं द्व्यक्षरी हैं।

√श्रा : श्रा √श्राव 7.38.3
√ई : पी √पिव 1.54.3, √प्या 1.48.2
√ऊ : छू √छुश्र 1.68.11
√ए : दे √दिग 7.16.7
√श्रो : सो √सोव 6.9.2

2.4.1.1.2–व्यंजनान्त–व्यंजनान्त धातुएं एकाक्षरी व द्वयक्षरी दोनों प्रकार की हैं। कुल व्यंजनांत धातुश्रों की संख्या 252 है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

क वर्गीय—	√चोक्	2.85.3	√रुक्	3.13.3
	√दिख्	1.85.2	√लग्	2.82.1
	√नाघ्	3.7.2		
च वर्गीय—	√नच्	2.47.13	√पूछ्	6.19.3
	√पूछ्	5.18.3	√कूज्	2.46.4
	√बूझ्	5.33.3		
ट वर्गीय—	√घट्	2.79.4	√मिट्	2.53.2
	√पैठ्	1.62.1	√उड्	7.19.4
	√क्रीड्	2.48.5		
त वर्गीय—	√हत्	6.1.4	√मथ्	7.21.20
	√कूद्	5.22.4	√साध्	5.16.2
	√खन्	2.79.1		
प वर्गीय—	√जप्	5.38.5	√थप्	6.22.3
	√लुभ्	1.55.2	√जम्	5.38.5
	√नम्	5.5.4		
र वर्गीय—	√झर्	3.9.3	√जर्	6.2.5
	√पर्	7.31.1	√हर्	6.17.2
ल वर्गीय—	√गल्	5.13.5	√तुल्	1.12.2
	√मिल्	6.18.2	√पाल्	7.26.2
स वर्गीय—	√धंस्	7.4.4	√नस्	1.21.2
	√रोप्	1.89.7		
ह वर्गीय—	√दुह्	1.20.3	√वह्	5.14.3
	√रह्	1.12.1	√सह्	5.14.1

समस्त मूल धातुओं की आक्षरिक संरचना इस प्रकार है—

ढाँचा	एकाक्षरी स्वरांत	एकाक्षरी व्यंजनांत	द्वयक्षरी स्वरांत	द्वयक्षरी व्यंजनांत
स	√आ 7.38.9			
	√ऐ 5.51.1			
व स	√रो 1.12.1			
	√दा 1.22.15			
	√सो 1.19.1			
	√ठा 2.11.1			
स व		√ओढ़ 1.26.6		
		√आन् 6.9.2		
		√आंज् 7.22.7		
		√उड् 7.19.4		
व व स	√न्हा 1 10.1			
व स व		√पोष् 5.12.2		
		√बूम् 1.102.6		
		√हन् 1.96.3		
		√तन् 1.80.6		
		√वर् 2.31.2		
व स व स/			√सिधा 2.87.1	
व स व-			√मल्हा 1.22.10	
व स				
व व स व		√स्रव 2.3.4		
		√सृज् 6.12.3		
		√भ्राज् 1.24.5		
व स व-				√सिधर 2.63.2
स व				√हटक् 1.85.3
				√परस् 1.93.2
				√परवार3.17.5
व स व-				√मज्ज 2.46.2
व स				√वंद 1.90.1
				√निंद 1.82.2

2.4.1.2–यौगिक धातु–

इस वर्ग की धातुओं को तीन वर्गों में रखा जा सकता है। सोपसर्गिक धातु, नाम धातु और अनुकरणमूलक धातु।

2.4.1.2.1–सोपसर्गिक धातु–ऐसी धातुयें जिनमें पूर्व प्रत्यय या पूर्वसर्ग संयुक्त है। ये कुल संख्या में 123 हैं। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

√आरुह् 1.62.4 √अनुसर् 2.80.3
√निकस् 1.84.2 √परिहर् 2.11.1
√प्रचार् 6.1.6 √विलोक् 1.87.4
√संहार् 1.67.2 √अनरस् 1.19.2
√अकन् 5.2.3

2.4.1.2.2–नामधातु–गीतावली में नामिक व विशेषण पदों का प्रयोग धातु रूप में हुआ है–इनकी संख्या 62 है। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं–

√चमक 1.95.1 (चमकत चोखे हैं)
√झलक 2.50.5 (झलकत नभ)
√भाव् 3.5.1 (भावति मोहि)
√असीस 1.2.22 (असीसत ईस-रमेस मनाइ)
√अपना 5.51.4 (अपनाय विभिषन)
√साप् 1.47 2 (सापे पाप)
√भरम 2,39.4 (राय बाम बिधि भरमाए)
√साख 1.68.3 (जग्य राखि जग साखि)
√विनय् 6.20.2 (जोरि पानि बिनवहि सब रानी)
√अधिक 1 4.8 (सुख सौं अवध अधिकानी)
√निंदा 1.82.2 (निंदै वदन)
√सरस् 7.17.5 (पीत बसन कटि कसे सरसावति)
√अनुराग 1.6.12 (लखि सुनि अनुरागी)
√दमक 1.31.4 (दमकति द्वै द्वै दतुँरियाँ रूरी)

2.4.1.2.3–अनुकरण मूलक धातु–

इनमें वे धातुयें आती हैं जो एक ही धातु को दोहराकर प्रयुक्त हुई हैं। ऐसी धातुओं की कुल संख्या 11 है।

√चचुकार 1.46.1 (उतरि उतरि चुचुकारि तुरंगनि)
√कसमस् 5 22.9 (किलकिलात कसमसत कोलाहल होत)
√कटकट् 5-22.4 (कटकटात भट भालु)
√किलकिल् 5.22.9 (किलकिलात कसमसत)

—जगमग्	7.17.4	(नख-ज्योति जगमगत)
√लरखर्	1.30.3	(लरखरनि सुहाई)
√लहलह्	2.96.2	(लहलहे लोचन सनेह सरसई हैं)
√डगमग्	5.22.1	(डगमगत महीधर)
√हिनहिन्	2.86.2	(वार वार हिनहिनात)
√झलमल	1.10.3	(झलकि झलमलत)
√भभर्	5.16.6	(भभरि भागे विमान)

2.4.13–वाच्य–

आलोच्य ग्रन्थ में कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य दोनों के प्रयोग उपलब्ध हैं–

3.4.1.3.1–कर्तृवाच्य–

इसके वहुत उदाहरण प्राप्त हैं–यथा–

कह तुलसीदास	2.48.5	परमधीर नहिं डोल्यो	3.13.3
हौ आयो	3.7.4	मुदित वदत तुलसीदास	2.43.4

2.4.1.3.2–कर्मवाच्य–

2.4.1.3.2.1–वियोगात्मक–

गहि न जाति	2.62.3	वरनि न जाति	1.62.3
कहि आवति नहिं	2.81.1	कह्यो न परत	6.11.2

2.4.1.3.2.2–संयोगात्मक–(प्रत्ययों को जोड़कर)

दिख ∞ देखि + इयत = देखियत	1.3.6	(पुनि भरेइ देखियत)
जानि + इयत = जानियत	1.11.3	(जानियत....येई निरमये है)
कहि + आव + अत = कहावत	1 64.2	(परमारथी कहावत है)
सुनि + इयत = सुनियत	6.21.1	(सुनियत सागर सेतु वघायो)

आलोच्य ग्रन्थ में कर्तृवाच्य कर्मणि प्रयोग के उदाहरण भी पर्याप्त मात्रा में मिले हैं, यथा–

(हनुमत)–(ने)–	कानन दलि होरी रचि वनाई	5.16.4
(गुरु कृपाल)–(ने)–	सादर सवहि सुनाई	2.89.2
(मैं)–(ने)–	देखी जव जाइ जानकी	5.18.1
(जिन्ह सुभटनि)–	कौतुक कुधर उखारे	1.68.8
(अदिति)–(ने)–	जन्यो जग भानु	1.22.11
साँची कही (अंवा)–(ने)–सिय		1.72.3

2.4.1.4–प्रेरणार्थक–

अकर्तत्ववाची धातुओं + प्रेरणार्थक प्रत्ययों से निर्मित सकर्मक धातुएँ–

आलोच्य ग्रन्थ में इस प्रकार की धातुएँ पर्याप्त मात्रा में हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

चढाइकै	1.70.7	स.	चढावत	1.92.5	स.
जगावति	2.52.2	स.	बिलखावति	7.17.5	स.
मल्हावती	1.33.4	स.	सरसावति	7.17.5	स.
दिखरावहिंगे	5.10.1	स.	बिसरावहिंगे	5.10.5	स.
समुझावहिंगे	5.10.3	स.	करावौंगी	2.6.2	प्रे.
डोलावौंगी	2.6.2	प्रे.	देखावौंगी	2.6.3	प्रे.
पठावौंगी	2.6.3	प्रे.	पठाए	2.83.1	प्रे.
बोलाए	2.26.1	प्रे.	पठवति	7.29.2	प्रे.
लिखाए	1.6.3	प्रे.	भुलावहिं	7.18.5	प्रे.

2.4.2-सहायक क्रिया-

गीतावली में प्रयुक्त सहायक क्रियाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है। एक तो वे सहायक क्रियाएँ जो मुख्य क्रियापदों के साथ प्रयुक्त हुई हैं और दूसरी वे जो मुख्य क्रिया के समान प्रयुक्त हैं। दोनों प्रकार की सहायक क्रियाओं के रूप समान हैं, केवल प्रयोग अलग हैं। नीचे भिन्न-भिन्न कालों में प्रयुक्त (दोनों प्रकार की) सहायक क्रियाओं का आवृत्ति सहित अध्ययन किया गया है।

2.4.2.1-वर्तमान-

2.4.2.1.1-वर्तमान (निश्चयार्थ)

2.4.2.1.1.1-उत्तम पुरुष-

	आवृत्ति	संदर्भ
एकवचन-		
हौं	4	2.4.3, 3.7.3, 3.7.3, 6.6.3

2.4.2.1.1.2-मध्यम पुरुष-

एकवचन-		
हौ	7	6.4.2, 2.71.1, 2.75.1, 1.19.4, 2.75.1, 1.50.2, 2.8.1

2.4.2.1.1.3-अन्य पुरुष-

एकवचन-		
है	165	1.58.1, 5.34.2, 1.86.5, 1.55.2 1.85.2, 2.78.3
सकै	1	2.49.6
होइ	3	1.2.8, 7.21.15, 2.83.3
बहुवचन-		
हैं	161	6.13.2, 6.17.1, 1.80.4, 1.2.15, 1.74.3, 2.25.4

मुख्य क्रिया के समान प्रयुक्त रूप—

उत्तम पुरुष—

हौं	1	7.18.1

मध्यम पुरुष—

हौ	1	5.20.4

अन्य पुरुष (एकवचन)—

है	21	2.64.1, 5.26.2, 1.96.5, 1.71.2, 1.6.15
रहै	2	5.18.2

वहुवचन—

हैं	53	2.28.6, 2.30 3, 2.30.3, 1.64.1, 7.4.6
अहैं	1	2.31.1
रहैं	1	1.43.3

कृदंतीय रूप—

होत	18	2.54.2, 2.58.2, 2.47.1.
रहत	9	7.2.3, 5.9.2, 5.49.2,
होति	5	2.54.1, 5.20 4, 1.22.3,

2.4.2.1.2—वर्तमान (संभावनार्थ) (सभी मुख्य क्रियावत प्रयुक्त)—

2.4.2.1.2.1—उत्तम पुरुष—

ह्वैहौं	1	2.62.1
होउँ	2	2.63.2, 2.72.2
रहौं	1	2.7.3

2.4.2.1.2.2—मध्यम पुरुष का कोई रूप नही मिला—

2.4.2.1.2.3—अन्य पुरुष—

होय	3	2.3.4, 3.17.8, 5.39.6,
होइ	6	2.1.3, 5.5.4, 7.25.3, 5.33.2, 6.2.4, 1.89.3
होहिं	2	2.1.2, 3.15.4
होउ	1	1.68.12

2.4.2.2—वर्तमान आज्ञार्थ (सभी मुख्य क्रियावत् प्रयुक्त)—

मध्यम पुरुष—

होउ	2	1.110.2, 1.4.6

होहु	3	1.11.4, 2.29.5, 1.90.4
होइ≃होहिं	2	5.23.3, 6.1.8
होही	1	2.19.3

2.4.2.3 भूतकाल–

2.4.2.3.1–भूतकाल (निश्चयार्थ)

(एकवचन पुल्लिग)–

हुतो	2	1.93.2, 5.40.4
भयो भो, भौ,	3	6.11.1, 5.39.3, 1.84.7,

(बहुवचन पुल्लिग)–

भे	2	1.71.1, 1.95.3
हुते	1	5.49.4
भए, भये	8	1.11.1, 2.45.5; 2.49.1, 6.5.4, 3.1.3, 3.5.5, 1.80.4, 7.13.5,

(एकवचन स्त्रीलिंग)

भइ, भई	8	5.34.3, 1.96.4, 2.78.4, 1.85.1, 5.47.2, 5.24.3, 2.34.4, 1.86.2
हुई	2	2.78.4, 1.86.3

(बहुवचन स्त्रीलिंग)

भईं	1	1.62.3

मुख्य क्रिया के समान प्रयुक्त–

हो	1	1.104.1
हुतो	1	3.12.2
हे	1	3.10.1
हुते	1	1.74.1
ही	1	2.19.4
भो, भौ	22	1.66.1, 1.66.2, 2.33.3, 1.86.1 6.14.3
भयो, भयौ	45	1.38.1, 5.5.2, 1.47.4, 1.88.4, 1.90.8, 1.28.5,
भे	1	1.64.2
भए, भये	50	7.19.5, 6.22.4, 5.41.1, 5.32.1, 5.28.2, 3.9.1
भइ; भई	31	1.2.16, 1.105.3, 1.52.4, 1.3.4, 1.5.3, 5.37.1

भईं	4	1.34.6, 2.55.5, 1.61.3, 1.4.7
रहि	1	6.14.3
रह्यी	9	1.108.4
रह्यो	3	2.84.1, 2.60.1
रहे	9	7.21.21, 2 41.1

2.4.2.3.2–भूत (संभावनार्थ)–

(एकवचन पुल्लिग)–

होतो	1	6.12.1

(बहुवचन पुल्लिग)–

होते	1	2.61.3

2.4.2.4–भविष्यत् निश्चयार्थ–

2.4.2.4.1–उत्तम पुरुष में कोई रूप नहीं मिला–

2.4.2.4.2–मध्यम पुरुष–

ह्वै हौ	2	1.8.1, 2.11.3

2.4.2.4 3–अन्य पुरुष–

(एकवचन)–

ह्वै है	8	6.17.1, 6.4.3, 5.15.3, 2.85.3, 1.99.4, 6.7.3. 1.95.1, 3.16.1

(बहुवचन)–

ह्वै हैं	6	5.23.3, 6.18.1, 6.17.3, 6.18.3, 2.60.4
होंहि	1	7.12.1,
होइहैं	1	1.6.27

(पुल्लिग बहुवचन)–

होहिंगे	1	2.79.4

(स्त्रीलिंग एकवचन)–

होइगी	1	2.41.2

2.4.3–कृदन्त–

आलोच्य पुस्तक में निम्नलिखित कृदन्तों का प्रयोग हुआ है–

2.4.3.1 वर्तमान कालिक कृदन्त

2.4.3.2 तात्कालिक कृदन्त

2.4.3.3 अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त

2.4.3.4 भूतकालिक कृदन्त

2.4.3.5 क्रियार्थक संज्ञा

2.4.3.6 पूर्वकालिक कृदन्त
2.4.3.7 कर्त्तवाचक संज्ञा

2.4.3.1--वर्तमानकालिक कृदन्त-

इस कृदन्त के मुख्य प्रत्यय ये हैं—

धातु + अत (46)

√तान् + अत = तानत 1.92.5
√गाव् + अत = गावत 2.47.19, 1.2.9, 1 3.4
√जा + अत = जात 2.46.4, 2.75.2, 2.15.1, 5.51.3
√दे + अत = देत 1.6.24
√पैठ् + अत = पैठत 1.62.1

धातु + अत + हु≃हू (4)

√मर् + अत + हु = मरतहु 3.6.1
√जान् + अत + हू = जानतहू 6.4.1
√झूल् + आव + अत + हू = झुलावतहू 1.12.1
√तोर् + अत + हू = तोरतहू 1.92.5

धातु + अत + इ≃ई (स्त्रीलिंग) (6)

√उठ् + अत + इ = उठति 2.37.2
√गाव् + अत + इ = गावति 1.7.2, 1.33.4
√गाव् + अत + ई = गावती 1.72.4
√बज् + आव + अत + ई = बजावती 1.33.4

2.4.3.2–तात्कालिक कृदन्त–

गीतावली में तात्कालिक कृदन्त की रचना वर्तमान कालिक कृदन्त के समान अत–लगाकर ही हुई है। एक-दो स्थान पर अवधारण बोधक प्रत्यय भी संयुक्त हुए है–कुल प्रयोग निम्न हैं। (तात्कालिकता का निर्णय अर्थ के आधार पर होता है)

(16) चलत 5.15.1, चितवत् 7.33.5, 2.47.6, 7.7.7,
छुअत 1.67.3, 1.68.11, परसत 1.93.2
सुनत 1.38.5, 7.29.4

+ हि≃ही (2)

निरखतहि 7.8.5. निरखतही 7.17.11,

2.4.3.3–अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त–

इसके बहुत कम प्रयोग मिले हैं —

जियत 3.8.3, 2.1.2 जीवत 2.40.4, 5.14.2
ढूंढ़त 2.68.4, पैरत 2.78.3, 3.11.1

2.4.3.4—भूतकालिक कृदन्त—

धातु + इ≃ई (13)

√पहिचान् + इ=पहिचानि	1.80.4	(बिनु पहिचानि)
√बैठ् + ई = बैठी	6.19.1	(बैठी सगुन मनावति माता)
√भा + ई=भाई	5.26.3	(कहत मन भाई है)—
√सीख् + ई = सिखी	2.52.4	(लागति प्रीति सिखी सी)

धातु + ए (38)

√ऊतर् + ए = ऊतरे	5.30.4	(पट ऊतरे ओढ़िहौं)
√थक् + ए= थाके	2.6.2	(थाके चरन कमल चापौंगी)
√मार् + ए = मारे	2.87.3	(मनहुं कमल हिम मारे)
√ओढ् + ए = ओढ़े	1.42.2	(ओढ़े चले चारु चालु)
√दी + ए= दिए	1.7.3	(देखत अंबुद ओट दिये)

धातु + आ + ए =(11)

√निर + आ + ए = निराए	2 32.2	(निफन निराए बिनु)
√पा + ए = पाए	1.86.2	(जाको अंत पाए बिनु)
√मिट् + आ + ए = मिटाए	1 94.2	(मनो मिटाए आंक के)
√सुन् + आ + ए = सुनाए	3.12.3	(बिनु सिय सुधि प्रभुहि सुनाए)
√ला + ए = लाए	1.32.1	(सिखवति चलन अंगुरिया लाये)

धातु + ए ≃ओ + इ≃हि (3)

√भर् + ए + इ=भरेइ	1.3 6	(पुनि भरेइ देखियत)
√बैठ् + ए + हि = बैठेहि	2.68.2	(बैठेहि रैन बिहानी)
√घेर् + ओ + इ (हि) घेरोइपै	5.51.2	(घेरोइपै देखिबो)

धातु + ओ (4)

√खर + ओ = खरो	3.10.3	(तौलौं है सोचु खरो सो)
√कर् ∝कि + य + ओ = कियो	5.50.2	(कियो आपनो पैहै)
√बंध् + य + ओ = बंध्यो	5.50.1	(जा दिन बंध्यो सिंधु त्रिजटा सुनि)
√भर् + ओ = भरो	5 15.4	(लाज भय भरो कियो गौन)

धातु + आ + य + ओ (5)

√भा + य + ओ = भायो	1.17.6	(भयो सबको मन भायो)
√जा + य + ओ = जायो	2.74.2	(अपराधिन को जायो)
√चल् + आ + य + ओ = चलायो	6.2.4	(राज चलिहै न चलायो)
√समुझ् + आ + य + ओ = समुझ यो	6 2.3	(दे जानकिहि सुनहि समुझायो)

धातु + ∅

√छर + ∅ = छर . 2.32.1 (नरनारि बिनु छर छरिगे)

संस्कृत–क्त प्रत्ययान्त की तरह के प्रयोग गीतावली में अधिक हैं—

जटित 1.34.2, प्रमुदित 1.2.11, भूषित 1.31.2,
सेवित 5.43.3. नमित 1.89.5, विकसित 1.36.3
मंडित 7.7.3 विदलित 6.4.4

2.4.3.5–क्रियार्थक संज्ञा–

गीतावली में क्रियार्थक संज्ञा की रचना विभिन्न प्रत्ययों के योग से हुई है जो निम्न हैं, साथ ही अनेक स्थानों पर एक प्रत्यय लगने के उपरान्त भी अन्य-प्रत्यय संयुक्त हुए हैं।

धातु + अन (38)

√खेल् + अन = खेलन 1.22.13
√चल् + अन = चलन 3.12.3, 1.32.1
√जा + अन = जान 2.59.2
√बँट् + आव + अन = बँटावन 2.85.2
√सीख् + अन = सिखन (परसर्गसहित) 7.23.2
√चू + अन = चुवन 5 48 2

धातु + अन + इ इयाँ, उ, ए (41 + 1 + 2 + 1)=45

√अनरस + अन + इ = नरसनि 1.21.2
√कह् + अन + इ = कहानि 1.88.3, 2.31.3, 2.81.1
√चल् + अन + इ = चलनि 1 28.2, 1.9.3, 1.55.5
√धोव् + अन + इ = धोवनि 1.21.2
√सोह् + आव + अन + इ = सोहावनि 2.46.2
√किलक् + अन + इयाँ = किलकनियाँ 1.34.5
√चल् + अन + उ = चलनु 5.49.3
√गव् + अन + उ = गवनु 1.66 2
√दे + अन + ए = देने 2.33.1

धातु + (अ) व + ए (45)

√गुह् + (अ) व + ए = गुहवे 1.18.2 (परसर्ग सहित)
√कर ∞ की + (अ) व + ए = कीवे 5.28.7
√जिय् + (अ) व + ए = जियवे 2.1.2 (परसर्ग सहित)
√बीन + (अ) व + ए = बीनवे 1.71.1 (परसर्ग सहित)

धातु + इ + (अ) व + ए, ओ (42)

√गा + इ + (अ) व + ए = गाइवे 2.33.3 (परसर्ग सहित)
√तोर + इ + (अ) व + ए = तोरिवे 6.4.4

हो–सहायक क्रिया का ह्वै पूर्वकालिक रूप 17 बार मिला है।

ह्वै 2.70.1 (17)

शून्य प्रत्ययान्त पूर्वकालिक रूप के निम्न प्रयोग मिले हैं।

√निरख + ∅ = निरख 1.26.1, 2.72.3
√साज् + ∅ = साज 7.27.4
√मुद् + ∅ = मुद 2.48.1

√परस् + ∅ परस 1.52.7, 2.50.4

2.4.3.7 कर्तृवाचक संज्ञा–

गीतावली में कर्तृवाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय निम्नलिखित हैं–

धातु + अन (9)

√बँट + आव + अन = बँटावन 6.7.1
√विमोच् + अन = विमोचन 5.43.2
√रंज् + अन = रंजन 1.22.4
√हर् + अन = हरन 7.4.1 2.26.3 (5 बार)
√भंज् + अन = भंजन 7.4.1, 1.39.2, 1.22.12

धातु + अनी; इनी; अनियां (स्त्री०) (7)

√विमोच् + अनी = विमोचनी 7.32.5
√हो + अनी = होनी 2.21.1, 2.22.1
√निकंद + इनी = निकंदिनी 2.43.1
√सुख + दा + अनियां = सुखदनियां 1.34.1

धातु + अनो; अने (2)

√सोह् + आव + अनो = सोहावनो 1.22.7
√हो + अने = ह्वने 2.23.2, 1.107.3

इसके अतिरिक्त निम्न प्रत्यय लगकर भी कर्तृवाचक संज्ञा के रूप बने हैं–

(1) हर विपतिहर 6.16.4
(7) हार + उ निरखनिहारु 7.8.5
पूरनिहारु 7.8.2
भजनिहारु 7.8.3
मोहनिहारु 7.8.4
(1) हार + ए (बहुव०) बिलोकनिहारे 1.68.8
(2) वार + ए रखवारे 1.68.2, 3.3.3 (ति० ए० व०)
(1) धार + ई धनुधारी 1.63.2

(3) हार+ई		त्रासहारी	1.25.6
	(मुनि)	मनहारी	2.54.2
		तमहारी	5.48.3
(6) ऐया		उखरैया	1.85.3
		बसैया	1.9.6
		सुनैया	1.9.5
		लुटैया	1.9.5
(2) वैया		अन्हवैया	I.9.6
		देखवैया	2.37.2
(2) धर		काकपच्छ धर	1.60.2, 1.54.1 1.99.4
		धनुधर	3.11.2

धातु+ई

(2) √जय् +ई = जई 1.85.3

√बिहार +ई = बिहारी 2.54.2

2.4.4–काल रचना–

गीतावली में प्रयुक्त कालसंरचना को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

2.4.4.1 कृदन्त 2.4.4.2 मूल काल

2.4.4.3 संयुक्त काल

2.4.4.1–कृदन्त काल–कृदन्त काल से तात्पर्य यह है कि जो प्रत्यय धातु में संयुक्त होकर कृदन्त रूप बनाते हैं उन्हीं रूपों से काल की भी संरचना होती हो। इसके अन्तर्गत दो काल आते हैं।

2.4.4.1.1 वर्तमान

2.4.4.1.2 भूत

2.4.4.1.1–वर्तमान–गीतावली में वर्तमान कालिक कृदन्त का प्रयोग वर्तमान काल के अर्थ में भी हुआ है। इन प्रयोगों में कृदन्त रूप ज्यों के त्यों वर्तमान काल का अर्थ देते हैं। वर्तमान कालिक कृदन्तों के निम्नलिखित प्रयोग वर्तमान काल का अर्थ देते हैं–

2.4.4.1.1.1 वर्तमान पुल्लिग धातु+अत ≃ अतु

2.4.4.1.1.1.1 उत्तम पुरुष– (8)

√कह् +अत = कहत 5.45.4, 5.8.1 (एकवचन)

√जान् +अत = जानत 6.6.3, 3.14.1 "

√जीव् + अत = जीवत 2.58.1, 2.59.4 ,,
√डरप् + अत = डरपत 2.78.2 ,,
√दे + अत = देत 2.61.1 ,,
√बिछुर् + अत = बिछुरत 2.2.1 ,,
√तरस् + अत = तरसत 2.66.4 (बहुवचन)
√देख् + अतु = देखतु 5.25.1 (एकवचन)

2.4.4.1.1.1.2–मध्यपुरुष (8) धातु + आत ≃ अत

√अलस् + आत = अलसात 1.19.4 (आदर०) (एकवचन)
√जँभ् + आत = जभाँत 1.19.4 ,,
√चाह् + अत = चाहत 3.16.4, 6.4.1 ,,
√जान् + अत = जानत 2.71.1, 6.4.2, 2.8.1 ,,
√डरप् + अत = डरपत 1.50.2
√मान् + अत = मानत 2.75.1
√हो + अत = होत 2.3.3
√बूझ् + अत = बूझत 6.15.2 (बहुवचन)

2.4.4.1.1.1.3–अन्य पुरुष (193) धातु + अत ≃ अतु

√कर् + अत = करत 5.36.1 (39) (आ०)
√किलक् + अत = किलकत 1.24.4
√गल् ≃ गर् + अत = गरत 5.42.3
√दे + अत = देत 7.22.9 (बहुवचन) (21 आ०)
√छिरक् + अत = छिरकत 2.47.16
√हरष् + अत = हरषत 1.92.4
√सोच् + अतु = सोचतु 2.66.2

2.44.1.1.2–वर्तमान (स्त्रीलिंग) धातु + अति

2.4.4.1.1.2.1–उत्तम पुरुष (5)

√कह् + अति = कहति 2.19.3 (एकवचन)
√जीव् + अति = जीवति 2.86.4 ,,
√देख् + अति = देखति 2.83.2 ,,
√सकुच् + अति = सकुचति 2.85.3 ,,
√सुन् + अति = सुनति 2.4.3 ,,

2.4.4.1.1.2.2–मध्यम पुरुष (4)

√कर् + अति = करति 1.79.2 (एकवचन)
√जान + अति = जानति 5.8.1 ,,

√सकुच् + अति = सकुचति		1.81.1		एक वचन
√समुभ् + आव + अति		समुभावति	2.85.2	"

2.4.4.1.1.2.3—अन्य पुरुष—

धातु + अति ≃ अती = (96)

√उतर	+ आ + अति		=	उतारति	1.109.5
√बिलप्	+	अति	=	बिलपति	3.7.1
√लह्	+	अति	=	लहति	1.105.2
√पूछ	+	अति	=	पूछति	6.19.3
√सराह्	+	अति	=	सराहति	5.34.3
√हो	+	अति	=	होति	2.54.1
√नाच्	+	अति	=	नाचति	7.17.14
√नच् + अव	+	अती	=	नचावती	1.33.4

2 4 4.12 — भूतकाल — इसके दो विभाग हैं।

2.4.4.1.2.1 — भूतनिश्चयार्थ —

गीतावली मे भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में भी हुआ है। इसमें कर्ता के लिंग, वचन के अनुसार ही क्रिया के लिंग, वचन में परिवर्तन मिलते हैं नीचे भूतकालिक प्रत्ययों के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार प्रयोग दिखाये गये है।

2.4.4.1.2.1.1 — पुल्लिग—

2.4 4.1.2.1.1.1—उत्तम पुरुष एकवचन—

धातु + य + ओ = (2)

√चल् + य + ओ = चल्यो	7.31 4
√आ + य + ओ = आयो	3.7.4

2.4.4.1.2.1.1.2 — मध्यम पुरुष —

एक वचन — धातु + य + ओ = (2)

√जा + (य) + ओ	=	जायो	6.2.1
√आ + (य) + ओ	=	आयो	6.3.1

2.4.4.1.2.1.1.3 — अन्यपुरुष —

एकवचन — धातु + ∅ = (5)

√जान् + ∅	=	जान	7.25.5
√दे ∾ दि + य + ∅	=	दिय	7.16.7
√ला + य + ∅	=	लाय	1.14.2
√लाग + ∅	=	लाग	2.48.5

धातु + (य) + ओ, औ (152)

√आ + य + ओ = आयो 1.6.19
√राख् + य + ओ = राख्यो 1.63.4
√जाग् + य + ओ = जग्यो 2.12.3
√चढ़ा + य + ओ = चढ़ायो 1.93.1
√निबह् + य + ओ = निबह्यो 5.42.2
√लह् + य + ओ = लह्यो 1.104.3
√भाष् + य + औ = भाष्यौ 2.46.3
√लख् + य + औ = लख्यौ 1.92.5
√जि + आ + य + औ = जिआयौ 2.56.3
√बिसर् + आ + य + ओ = बिसरायो 2.56.4

धातु + ओ, औ = (14 + 2) = 16

√थाक् ≃ थक् + ओ = थाको 6.7.1
√बिचार् + ओ = बिचारो 2.66.2
√उजार् + ओ = उजारो 2.66.2
√छु + औ = छुऔ 1.12.3

अनियमित भूतकालिकरूप = (3)

√की + ईन्ह + ओं = कीन्हौं 5.22.1 (3 बार)
√दी + ईन्ह + ओं = दीन्हौं 3.13.1
√ली + ईन्ह + ओं = लीन्हों 3.13.1 (2बार)

दो स्थानों पर धातु में ईन्ह प्रत्यय संयुक्त होने के उपरान्त अन्य प्रत्यय नहीं लगा –

√दी + ईन्ह = दीन्ह 2.47.17
√की + ईन्ह = कीन्ह 2.47.17

धातु + एउ; ओइ (2 + 1) 3

√कह् + एउ = कहेउ 7.21.4
√पोष् + एउ = पोषेउ 5.16.10
√बढ़ + ओइ = बढ़ोइ 5.5.2

धातु + ए ये, (222) – बहुवचन –

√ओढ़ + आ + ए = ओढाए 1.20.6
√कर ∞ कि + ए = किए 5.16.6 (22आ0)
√गा + ए = गाए ≃ गाये 1.65.5 (6बार)
√पहिर् + आ + ए = पहिराए 6.22.7, 1.26.3
√पा + ए = पाए ≃ पाये 2.88.1 (10आ0)
√बढ + आ + ए = बढ़ाए 6.22.9, 2.88.3

√रख ≃ राख + ए = राखे 1.6.20 (7आ0)
√हंकार् + ए = हंकारे 1 68.9
√चीन्ह + ए = चीन्है 3.3.3

अनियमित – भूतकालिक रूप —

√की + ईन्ह + ए = कीन्हे 1.102.6 (3आ0)
√दी + ईन्ह + ए = दीन्हे 2 75.3 (23आ0)
√ली + ईन्ह + ए = लीन्हें 3.3.3 (4आ0)

धातु + आन + ए

यहां धातु में एक प्रत्यय जड़ने के पश्चात् पुनः दूसरा प्रत्यय जुड़ा है –

√अघ् + आन + ए = अघाने 5.40.3
√उड् + आन + ए = उड़ाने 1 36.3
√बिलख् + आन + ए = बिलखाने 1.36.3
√हरष् + आन + ए = हरषाने 1.80.6

एक स्थान पर केवल 'आन' प्रत्यय भूतकाल (एकवचन) का अर्थ देता है

यथा–आकुल + आन=अकुलान 2.59.4

2.4.4.1.2.1.2 – स्त्रीलिंग –

2.4.4.1.2.1.2.1 – उत्तम पुरूष – केवल दो रूप एक वचन में मिले है –

धातु + ई (2)

√पर् + ई = परी 3.7.3
√मोह् + ई = मोही 2.18.1, 2.19.1

2.4.4.1.2.1.2.2 – मध्यम पुरूष में कोई रुप नही है–

2.4.4.1.2.1.2.3 –अन्य पुरूष––

धातु + ई, इ – (163)

√उपज् + ई = उपजी 2.63 3
√उठ् + ई = उठी 3.10.2
√मार् + ई = मारी 1.83.2 (4बार)
√कह् + ई = कही 1.72.3
√पढ् + आ + ई = पढ़ाई 1.52.6
√गा + ई = गाई 2.40.5 (4आ0)
√दिख् + आ + ई = दिखाई 1.1.12
√पहिर् + आ + ई = पहिराई 1.93.3
√जा ∝ (गम) + इ = गइ 5.39.1
√पा + इ = पाइ 5.16.3

अनियमित भूतकालिक रूप (2)

√दी + ईन्ह + ई = दीन्ही 5 15.3, 7.38.5

—की + ईन्ह + ई = कीन्ही 7.38 5

धातु + आन + ई (10)

√अध् + आन + ई = अधानी 1.4.8

√बिलख् + आन + ई = बिलखानी 2.1.4

√हुलस् + आन + ई = हुलसानी 1.4.2

√शीतल् + आन + ई = शीतलानी 6.20.4

धातु + ई = (1)

√बिथक + ई = बिथकी 2.17.3 (बहुवचन)

2.4.4.1.2.2–भूत संभावनार्थ —

गीतावली में भूत संभावनार्थ के रूप दो प्रकार के हैं। एक तो वे रूप जिनकी रूपरचना वर्तमान कालिक कृदन्तों के समान है लेकिन अर्थ के दृष्टि से ये भूत संभावनार्थ के रूप प्रतीत होते है, दूसरे प्रकार के रूप वे हैं जो मनु जनु आदि संभावनार्थक अर्थों को बताते हैं और जिनकी संरचना भूतकालिक रूपों के ही समान है। नीचे सभी रूपों का आवृत्ति सहित वर्णन किया गया है।

2.4.4.1.2.2.1–वर्तमान कृदन्त पर आधारित रूप —

धातु + अत (4) (अन्य पुरुष एकवचन)

√कर् + अत = करत 6.12.3

√फर् + अत = फरत 6.12.3

√धर् + अत = धरत 6.12.2

√निदर् + अत = निदरत 6.12.2

धातु + अत + ओ {उत्तम पुरुष एकवचन = 7, अन्य पुरुष एकवचन = 1} = (8)

√छल् + अत + ओ = छलतो (उत्तम पुरुष एकवचन) 5.13.3

√मर् + अत + ओ = मरतो (उत्तम पुरुष एकवचन) 5.28.8

√चल् + अत + ओ = चलतो (उत्तम पुरुष एकवचन) 5.13.1

√फल् + अत + ओ = फलतो (अन्य पुरुष एकवचन) 5.13.3

धातु + अत + ए (1)

√कह् + अत + ए = कहते 5.28.4 (अन्य पुरुष बहुवचन)

2.4.4.1.2.2.2 मनु जनु वाले रूप —

पुल्लिंग अन्य पुरुष

धातु + य + उ (1)

√आ + य + उ = आयउ 2.47.8, 2.47.9

धातु + य + ओ (10)

√पढ़्+आ+य+ओ = पढ़ायो 1.93.2
√तोर्+य+ओ = तोर्यो 1.109.1
√जा+य+ओ = जायो 5.2.2, 7.10.4
धातु+ए (14)
√आ+ए = आए 7.4.2
√छप्+आ+ए = छपाए 1.26.6
√बस्+आ+ए = बसाए 2.49.2
√बिरच्+ए = बिरचे 7.9.2
अनियमित भूतकालिक रूप–
धातु+ईन्ह+ए (1)
√दी+ईन्ह+ए = दीन्हे 7.7.3
स्त्रीलिंग रूप–
धातु+ई (9)
√लूट+ ई = लूटी 2.21.2
√आ+ ई = आई 7.3.3
√ओढ़्+ ई = ओढ़ी 1.33.2
√रख≃राख्+ ई = राखी 7.17.1

चार स्थानों पर संभावना यदि के रूप में प्रगट हो रही है–

गए – 2.83.3
रहै – 2.4.4
साध्यौ – 2.3.4
रोपे – 5.12.1

2.4.4.2–मूलकाल–

इस काल के रूप न तों कृदन्तों से बने हैं न सहायक क्रिया के योग से–इसी कारण इन्हें मूलकाल कहा जाता है। इसके अन्तर्गत वर्तमान, आज्ञार्थ और भविष्यत् काल आते हैं। सभी का क्रमानुसार वर्णन किया जायेगा–

1.4.4.2.1 वर्तमान–

इस काल के रूपों में पुरुष और वचन का अन्तर तो मिलता है परन्तु लिंग का नहीं, दोनों लिंगों के रूप समान हैं—नीचे गीतावली में वर्तमान काल में प्रयुक्त प्रत्यय आवृत्ति सहित दिये गये है।

2.4.4.2.1.1–उत्तम पुरुष–

(एकवचन) धातु+उं≃अहुं (2)
√जा+उं = जाउं 2.63.1, 5.33.2
√कर्+अहुं = करहुं 5.5.7

धातु + औं (33)

√देख् + औं	=	देखौं	3.9.4
√सुन् + औं	=	सुनौ	2.51.1
फूल + आव + औ	=	फुलावौ	1.18.3
√कर् + औ	=	करौ	5.45.3, 6.7.1 (5 बार)

2.4.4.1.2.–मध्यम पुरुष–

आलोच्य ग्रंथ में ,वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के रूपों की संख्या अत्यल्प है–

धातु + ऐ

√ला ∞ ली + ज + ऐ	=	लीजै	2.74.1
√दा ∞ दी + ज + ऐं	=	दीजै	2.74.1

2.4.4.2.1.3–अन्य पुरुष–

2.4.4.2.1.3.1 एकवचन–

धातु + ∅ (13)

√राख् +	∅	=	राख	2.48.5
√कह् +	∅	=	कह	2.48.5
√वह् +	∅	=	वह्	2.48.4
√नाच् +	∅	=	नाच	7.18.1

धातु + ऐ (40)

√कसक्	+ ऐ =	कसकै	1.44.2
√भ्राज्	+ ऐ =	भ्राजै	7.15.1
√भीज्	+ ऐ =	भीजै	3.15.3
√जान्	+ ऐ =	जानै	2.19.3
√बूझ + आव् + ऐ =		बुझावै	1.82.3
√समुझ् + आव + ऐ=		समुझावै	2.53.1

धातु + इ, ई (8)

√जा	+ ई =	जाइ≃जाई	7.34.6, 1.90.11. 1.19.1
√सोह + आ	+ इ =	सोहाइ	7.22.6
√लोभ् + आ	+ इ =	लोभाइ	7.21.15
√स + मा	+ इ =	समाइ	5.2.1, 1.90.11
√लाज् + आ	+ ई =	लजाई	2.46.7
√सराह्	+ इ =	सराहि	1.70.7, 1.5.2
√जान्	+ ई =	जानी	1.6,10

धातु + आन + इ, ई (5)

√वस् + आन + इ = वसानि 5.7.4

√सोह् + आन + ई = सोहानी 1.4.11

√सिह् = आन + ई = सिहानी 1.4.9

धातु + उ (5)

√आन् + उ = आनु 7.16.3

√छाड् + उ = छाडु 2.48.5

√चाल् + उ = चालु 5.3.3

2.4.4.2.1.3.2—बहुवचन—

बहुवचन में निम्नलिखित प्रत्यय मिले हैं—

धातु + ऐं (52)

√राख् + ऐं = राखैं 1.71.2

√नाच् + ऐं = नाचैं 1.94.2

√रह् + ऐं = रहैं 1.43.3

√सोह् + ऐं = सोहैं 1.24.1 (15 बार)

√कह् + ऐं = कहैं 1.95.3 (27 बार)

√कर् + ऐं = करैं 1.71.2

धातु + अहि (52)

√छिरक् + अहि = छिरकहि 1.3.5, 1.2.16

√पच् + अहि = पचहि 5.16.7

√भर् + अहि = भरहि 1.2.16, 13.5

√वज् + आव + अहि = बजावहि 1.2.3

√झूघ् + आव + अहि = झुनावहि 7.18.5

धातु + अइं (1)

√घर् + अइं = घरइं 7.22.6

धातु—अहीं (16)

√किलक् + अहीं = किलकहीं 1.21.8

√मोह् + अहीं = मोहहीं 7.19.2

√विराज् + अहीं = विराजहीं 7.19.2

√वार् + अहीं = वारहीं 1.22.10

√मल्हा + व + अहीं = मल्हावहीं 1.22.10

धातु + ∅ (3)

√वस् + ∅ = बस 7.21.2

√राख् + ∅ = राख 2.48.5

√बाज् + ∅ = बाज 1.1.5

2.4.4.2.2–वर्तमान संभावनार्थ–

वर्तमान संभावनार्थ के केवल दो उदाहरण मिले हैं–

√मिल् + अहिं = बोल 2.86.2 (जो राम मिलही बने)
√बोल + ऐ = बोलै 2.86.2 (जो बोलै को उदारे)

2.4 4.2.2.–आज्ञार्थ–

गीतावली मे आज्ञार्थ क्रियापद के रूपों में लिंग संबंधी विकार नहीं है। अधिकांशत: आज्ञार्थ के रूप मध्यम पुरुष के लिए ही प्रयुक्त हैं और ये मध्यम पुरुष सामान्य और आदरार्थ दोनों ही प्रकारों के मिले है। अत: सर्व प्रथम मध्यम पुरुष के रूपों पर विचार किया जा रहा है।

2.4.4.2.2.1–मध्यम पुरुष–

धातु + ∅ (2)

√सुन् + ∅ = सुन 5.49.1
√बूझ + ∅ = बूझ 6.17.1

धातु + इ (11)

√कर् + इ = करि 2.19.3
√देख् + इ = देखि 2.27.1
√समुझ् + इ = समुझि 5.8.3, 5.12.4, 6.1.7
√जान् + इ = जानि 5.6.1, 5.25.3
√सुन् + इ = सुनि 2.57.4, 2.61.3
√निरख् + इ = निरखि 2.19.1

धातु + अहि (5)

√दे + अहि = देहि 6.20.2
√मेट् + अहि = मेटहि 5.3.1
√डर् + अहि = डरहि 3.7.4
√सुन् + अहि = सुनहि 6.2.3, 2.19.3, 2.67.1
√जा + अहि = जाहि 5.27.2

धातु + अहु (28)

√अवलोक् + अहु = अवलोकहु 2.29.5
√उठ् + अहु = उठहु 1.89.11, 2.52.2
√खेल् + अहु = खेलहु 7.21.4
√कर् ∞ कीज् + अहु = कीजहु 2.11.4
√चल् + अहु = चलहु 5.21.4
√सुन + अहु = सुनहु 1.37.3 (18 बार)

धातु + इय (8)

√कह्	+ इय	=	कहिय	1.49.2	
√जाग्	+ इय	=	जागिय	1.5.3	
√देख्	+ इय	=	देखिय	3.15.1, 2.47.8	
√बूझ्	+ इय	=	बूझिय	1.50.2	
√ला	+ इय	=	लाइय	2.71.4	

धातु + इए, इये (25)

√मांग्	+ इए	=	मांगिए	2.11.2	
√राख्	+ इए	=	राखिए	5.43.3	
√विचार्	+ इए	=	विचारिए	1.86.3	
√तौल	+ इए	=	तौलिये	1.12.2	
√जाग्	+ इये	=	जागिये	1.38.1	

धातु + इयो (2)

√कह्	+ इयो	=	कहियो	2.87.4	
√सुन्	+ इयो	=	सुनियो	3.16.1	

धातु + उ (21)

√कह्	+ उ	=	कहु	5.48.1	(7 बार)
√जान्	+ उ	=	जानु	3.17.6	
√देख्	+ उ	=	देखु	2.30.1	(5 बार)
√निहार्	+ उ	=	निहारु	7.8.1.	7.10.2
√मिल्	+ उ	=	मिलु	6.1.9	
√जि + आ	+ उ	=	जिआउ	2.57.4	
√पी + आ	+ उ	=	पिआउ	2.57.4	

धातु + ऊ (3)

√जोह्	+ ऊ	=	जोऊ	2.16.2	
√पोह्	+ ऊ	=	पोऊ	2.16.3	
√गोह्	+ ऊ	=	गोऊ	2.16.3	

धातु + ऐ (8)

√कर् ∞ कीज	+ ऐ	=	कीजै	1.84.7	(9 बार)
√जी + ज	+ ऐ	=	जीजै	3.15.1	
√दा ∞ दी + ज	+ ऐ	=	दीजै	6.8.4	(8 बार)
√बांध्	+ ऐ	=	बाँधै	5.27.3	
√चित्	+ ऐ	=	चितै	1.97.3, 7.12.1	

धातु + ओ, औ, ओं (19)

√कह्	+ ओ	=	कहो	5.40.1	(5 बार)
√देख्	+ ओ	=	देखो	5.16.1	(5 बार)
√सुन	+ ओ	=	सुनो	1.89.1	
√बूझ्	+ औ	=	बूझौ	2 37 1	
√लेख्	+ औ	=	लेखौ	7.7.6	
√उठ्	+ औ	=	उठौ	1.37.1	
√कह्	+ ओं	=	कहों	1.103.3	
√सिखा + व + औ		=	सिखावौ	2.87.1	
√आव्	+ औ	=	आवौ	2.87.1	

धातु + इबौ≃अबौ (3)

√कर∞की	+ इबौ	=	कीबौ	2.78.1, 7.29.1
√पाल्	+ अबौ	=	पालबौ	7.29.3
√सुन् + आ + यबौ≃अबौ		=	सुनायबौ	6.14.1

धातु + इबे (1)

√जान्	+ इबे	=	जानिबे	1.9.6

धातु + इबो (4)

√सह्	+ इबो	=	सहिबो	5.14.1
√रह्	+ इबो	=	रहिबो	5.14.1
√कर्≃की	+ इबौ	=	कीबो	5.33.3
√कह्	+ इबो	=	कहिबो	6.14.4

धातु + एहु (2)

√कह्	+ एहु	=	एहु	3.16.1
√मान्	+ एहु	=	मानेहु	2.47.18

2.4.4.2.2.2—उत्तम पुरुष एकवचन—

धातु + औं (24)

√धाव्	+ औ	=	धावौ	1.89.9
√दल्	+ औ	=	दलौ	6.8.2
√वह् + आ + + वऔं		=	वहावौं	6.8.4
√पठ् + अव + औ		=	पठवौं	6.11.3
√कर्	+ औ	=	करौ	2.13.2

2.4.4.2.2.3—अन्य पुरुष—

2.4.4.2.2.4.1—एकवचन—

धातु + ऐ (18)

√जी	+ ऐ	=	जियै	6.9.3
√पर्	+ ऐ	=	परै	2.76.1
√गाव्	+ ए	=	गावै	1.39.3
√लग्	+ ऐ	=	लागै	2.71.4
√मिल्	+ ऐ	=	मिलै	6.9.3

धातु + अहु ≃ अउ (6)

√मर्	+ अहु	=	मरहु	1.2.10
√बढ्	+ अहु	=	बढ़हु	1.2.10
√बस्	+ अहु	=	बसहु	1.78.2
√जा	+ अहु	=	जाहु	1.78.2
√पति	+ आउ	=	पतिआउ	5.45.4
√चिरजीव	+ अहु	=	चिरजीवहु	1.2.10, 1.110.4

धातु + औ (1)

√जी ≃ जिव् + औ	=	जिवौ ≃ जियौ	1.1.7, 7.18.6

धातु + ∅ (1)

√चिरजिव + ∅	=	चिरजिव	7.19.5

2.4.4.2 2.3.2–बहुवचन–एक प्रयोग मिला है–

धातु + ऐं = (1)

कह	+ ऐं	=	कहैं	2.55.4

2.4.4.2.3–**भविष्यत्**–

आलोच्य ग्रन्थ में भविष्यत् काल के लिए तीन प्रकार के रूप मिले हैं। 'ह' वाले रूप, 'ब' वाले रूप और 'ग' वाले रूप। 'ह' और 'ब' वाले रूपों में लिंग सम्बन्धी अन्तर नहीं पाया जाता, केवल 'ग' वाले रूपों मे लिंग का अन्तर मिलता है। नीचे भविष्यत् काल के रूपों पर विचार किया जा रहा है।

2.4.4.2.3.1–**उत्तम पुरुष**–

2.4.4.2.3.1.1–एकवचन–

धातु + इहौं (21)

√आ	+ इहौं	=	आइहौं/ऐहौं	1.21.1, 2.75.2, 2.5.3
√ओढ	+ इहौं	=	ओढ़िहौं	5.30.4
√सुन् + आ	+ इहौं	=	सुनाइहौं	1.48.3
√सोव् + आ	+ इहौं	=	सोआइहौं	1.21.1
√गा	+ इहौं	=	गाइहौं	1.21.4

धातु + औं - गो (पु०) (6)

√कह	+ औं - गो	=	कहौंगो	2.77.1

√रह् + औं – गो = रहौंगो 2.77.1
√निबह् + औं – गो = निबहौंगो 2.77.3
√सह् + औं – गो = सहौंगो 2.77.2
√लह् + औं – गो = लहौंगो 2.77.2
√गह् + औं – गो = गहौंगो 2.77.3

धातु + उं – गो (पु०) (7)

√अघा + उं – गो = अघाउंगो 5.30.3
√बिक् + आ + उं – गो = बिकाउंगो 5.30.4
√सकुच् + आ + उं – गो = सकुचाउंगो 5.30.2
√खा + उं – गो = खाउंगो 5.30.1
√जा + उं – गो = जाउंगो 5.30.1

धातु + औं – गी (स्त्री०) (11)

√आव् + औं – गी = आवौंगी 2.6.1
√देख् + औं – गी = देखौंगी 5.47.1
√कर् + औं – गी = करौंगी 2.8.2
√धाव् + औं – गी = धावौंगी 2.55.3
√पा + व + औं – गी = पावौंगी 2.6.1
√ला + व + औं – गी = लावौंगी 2.55.3

2.4.4.2.3.1.2–बहुवचन = धातु + इबे (1)

√बिलोक् + इवे = बिलोकिवे 2.36.1, 2.38.3

2.4.4.2.3.2–मध्यमपुरुष–

2.4.4.2.3.2.1–एकवचन–

धातु + इहै (2)

√भर् + इहै = भरिहै 2.60.4
√सुन् + आ + इहै = सुनैहै 5.50.1

2.4.4.2.3.2.2 (बहुवचन व एकवचन आदरार्थ प्रयुक्त)

धातु + इहौ (10)

√सह् + इहौ = सहिहौ 2.5.2
√बुल् + आ + इहौ = बुलैहौ 1.8.3
√चल् + इहौ = चलिहौ 1.9.1, 2.5.2
√खेल् + इहौ = खेलिहौ 1.8.3
√पा + इहौ = पैहौ 2.67.4
√आ + इहौ = ऐहौ 2.76.4

धातु + इवो (2)

√देख् + इवो = देखिवो 5.14.3, 5.51.2

√लह् + इवो = लहिवो 5.14.3
धातु + अहु - गे (1)
√पा + व + अहु - गे = पावहुगे 6.4.3
धातु + औ - गी (2) (स्त्री०)
√कह् + औ - गी = कहौगी 1.72.3
√रह् + औ - गी = रहौगी 1.72.3

2.4.4.2.3.3–अन्य पुरुष–

2.4.4.2.3.3.1–एकवचन–धातु + इहि (3)
√पड़ ≃ पर + इहि = परिहि 2.3.3
√मर् + इहि = मरिहि 2.3.3
√रह् + इहि = रहिहि 1.58.2, 1.16.3
धातु + इहै (25)
√आ + इहै = ऐहै 5.50.1, 5.34.2
√मान् + इहै = मानिहै 2.62.2
√कह् + इहै = कहिहै 1.100.4
√भा + इहै = भाइहै 5.34.3
√सुन् + आ + इहै = सुनैहै 5.50.1
√धा + इहै = धैहै 5.50.2
धातु + इबो (1)
√गह् + इबो = गहिबो 5.14.2
धातु + ऐ - गो ≃ अहि - गो (8)
√कर् + ऐ - गो = करैगो 2.60.3
√कह् + ऐ - गो = कहैगो 2.55.2
√चल् + ऐ - गो = चलैगो 2.54.3
√सोव + अहि - गो = सोवहिगो 6.4.4
√मिट् + ऐ - गो = मिटैगो 2.57.1
धातु + ऐ - गी (स्त्री०) (1)
√पड़ ≃ पर + ऐ - गी = परैगी 1.22.13

2.4.4.2.3.3.2–बहुबचन (2)
धातु + अँहि ≃ अहि
√जीव् + अँहि = जीवँहि 2.87.2
√हर् + अहि = हरहि 1.16.3
धातु + इहैं (57)
√कर् + इहैं = करिहैं 7.13.9, 7.35.3, 2.58.1

√चल् + इहैं = चलिहैं 1.70.9, 1.58.2
√बूझ् + इहैं = बूझिहैं 1.48.3
√लूट + इहैं = लूटिहैं 1.70.1
√वज्+आ+ इहैं = वजैहैं 5.51.4
√सुन्+आ+ इहैं = सुनैहैं 1.80.7
√पछिता + इहैं = पछितैहैं 5.51.2
धातु+इवे (1)
√जान् + इवे = जानिवे 2.75.2
धातु+अहिं - गे (15)
√कह् +अहिं - गे = कहहिंगे 1.99.1
√चल्+अहिं - गे = चलहिंगे 1.22.14
√मिल्+अहिं - गे = मिलहिंगे 5.6.4
√पा+व+अहिं - गे = पावहिंगे 5.10.5
√छा+व+अहिं - गे = छावहिंगे 5.10.2
√देख+अर+आव+अहिं - गे=दिखरावहिंगे 5.10.1
√समुझ+आव+अहिं - गे = समुझावहिंगे 5.10.3
धातु+एँ - गे (2)
√कर +एँ - गे = करेंगे 6.1.9
√निवह+एँ - गे = निवहैंगे 2.34.3

दो स्थानों पर अन्य पुरुष बहुवचन में भविष्यत् काल के रूप इस प्रकार से मिले हैं।

स्वैहैं 6.17.3, 6.18.2
च्वैहैं 6.18.3

2.4.4.3–संयुक्त काल–

सयुक्त काल की रचना मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के योग से होती है। मुख्य क्रिया कृदन्त या अन्य रूप में रहती है और सहायक क्रिया द्वारा विभिन्न कालों का द्योतन होता है गीतावली में प्रयुक्त संयुक्त काल को इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते है।

2.4.4.3.1–कृदन्त रूप+सहायक क्रिया–

कृदन्तो के आधार इसके निम्न भेद किये जा सकते हैं।

2.4.4.3.1.1–वर्तमान का लिक कृदन्त+सहायक क्रिया–

सहायक क्रिया के आधार पर इसके दो वर्ग हैं।

2.4.4.3.1.1.1–वर्तमान (33)

इसमें वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ क्रिया भी वर्तमान काल की मिलती है।

सुनति हौं	2.4.3	(उत्तम पुरुष)
जानत हौं	6.6.3	(उत्तम पुरुष)
जानत हौ	6.4.2, 2.71.1, 2.8.1	(मध्यम पुरुष)
मानत हौ	2.75.1	(मध्यम पुरुष)
चमकत है	1.95.1	(अन्य पुरुष)
चहत है	4.2.4	(अन्य पुरुष)
करती हैं	7.13.9	(अन्य पुरुष)

2.4.4.3.1.1.2–भूत– (2)

इसके प्रयोग अत्यल्प हैं इसमें क्रिया भूतकाल में रहती है–

खात हुतो 5.40.4

हुते जात वहे री 5.49.4

2.4.4.3.1.2–**भूतकालिक कृदन्त + सहायक क्रिया** -

सहायक क्रिया के आधार पर इसके दो वर्ग हैं–

2.4.4.3.1.2.1–**वर्तमान** (145)

गीतावली में इसके प्रयोग अधिक हैं इसमें क्रिया वर्तमान काल में रहती है– उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के प्रयोग कम हैं परन्तु अन्य पुरुष के प्रयोग अत्यधिक हैं–

परी हौं	3.7.3	(उत्तम पुरुष)
हरी हौं	3.7.3	,,
दिये हौं	2.75.1	(मध्यम पुरुष)
जये हैं	6.5.3	,,
उठ्यो है	2.50.4	(अन्य पुरुष)
किये है	1.71.2	,,

दो स्थानों पर 'है' सकर्मक क्रिया इस प्रकार संयुक्त है–

क्वैहै 6.17.2

स्वैहै 6.17.2

2.4.4.3.1.2.2.–**भूत** (1)

इसमें क्रिया भूत काल में रहती है इसका केवल एक प्रयोग मिला है–

हुतो पुरारि पढ़ायो 1.93.2

2.4.4.3.2–**अन्य रूप + सहायक क्रिया**– (1)

हरै है 1.10.1

2.4.4.4–**संयुक्त क्रिया + सहायक क्रिया :**

आलोच्य ग्रन्थ में संयुक्त क्रिया के संयोग से भी संयुक्त काल की रचना हुई है–इसमें संयुक्त क्रिया कई प्रकार की हो सकती है यथा–पूर्वकालिक रूप + भूतकालिक

भूतकालिक + भूतकालिक, नामिक + क्रिया आदि-आदि-कुल प्रयोग निम्नलिखित हैं-

छीनिलई है	1.85.1	जात सियो है	6.10.4
जात हरे है	2.25.3	जाति गही है	1.87.2
नापे जोखे है	1.95.2	प्रगट कियो है	2.61.1
परि गई है	1.86.1	बनि गई है	1.96.4, 2.34 4
बिगरि गई है	2.78.3	बाँधी रही है	1.87.4
भई है प्रगट	1.58.1	मानि लई है	1.85.4
लखि परै है	2.25.3	लाय लए हैं	6.5.1
लाय लयो है	6.11.2	लियो है पोही	2.20.4
लिए है चोराई	2.40.3	सुनि गई है	1.85.2
सुखाइ गए हैं	6.5.5		

2.4.5-संयुक्त क्रिया-

एकाधिक क्रियाओं के योग से निर्मित क्रिया जो एक ही अर्थ का द्योतन कराती हो, संयुक्त क्रिया कहलाती है। संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग आलोच्य ग्रन्थ में बहुत है। समस्त संयुक्त क्रियाओं को दो वर्गों में रखा जा सकता है।

(1) शब्द द्वैत द्वारा

(2) भिन्न क्रियाओं के सयोग से-

2.4.5 1-शब्द द्वैत द्वारा-इसके दो वर्ग किए जा सकते हैं-

(1) दो क्रियाओं का संयुक्त रूप में प्रयोग

(2) एक क्रिया का द्विरुक्त प्रयोग या पुनरावृत्ति

2.4.5.1.1-दो क्रियाओं का संयुक्त रूप में प्रयोग-

कहत सुनत	1.67.4	गाइ सुनि	1.10.4
गावत नाचत	1.4.8	घोरि घोरी	7 7.5
छिरकत फिरत	2.48.4	जारि जीति	2.49.2
जोहि जानि जपि जोरिकै	1.6.20	तोषि पोषि	1.72.3
देखि सुनि	1.6.15	देखे सुने	1.87.2
देत लेत	1.4.8, 5.36.4	पहिरत पहिरावत	1.4.8
फुलत फलत	7.33.2	फूले फले	3.10.1 5.41.3
फूलि फरिगे	2.32.2	फैलि फूलि	1.72.3
ब्याहि बजाइकै	1.70.9	मिलि गाइ	1.18.3
मल्हाइ मल्हाई	1.19.5	लखि सुनि	1.6.12

लखी ओलखाई	5.25.3	लेत फिरत	1.70.5
सराहि सिहाहि	1.5.6	सहें समुझें (सहने समझने में)	5.25.2
समुझि सुनि	7.37.3	सुनि समुझि	3.17.6 4.1.4
समुझि सुधारि	7.29.1	सुनि जानिकै	1.5.4
हिलिमिलि	1.6.13		

2.4.5.1.2–पुनरावृत्ति–

2.4 5.1.2-1–पूर्वकालिक रूप की पुनरावृत्ति–

अकनि अकनि	6.20.3	उतरि उतरि	1.46.1
उड़ि उड़ि	5.2.2 5.51.3	उमगि उमगि ≃ उमँगि उमँगि	1.2.25, 1.109.5, 1.22.10
करि करि	1.9 2	कसि कसि	1.45.2
कहि कहि	2.72.1		
किलकि किलकि	1.33.4 1.32.5	गनि गनि	1.45.1
गरि गरि	5.39.5	गाइ गाइ	1.19.4
चढ़ि चढ़ि	1.45.2	जाइ जाइकै	1.84.1
जोहारि जोहारि	2.47.29	झरि झरि	2.50.6
तकि तकि	5.19.2 7.4.2	तजि तजि	5.20.3
दै दै	1.42.3	(5 बार)	
धरि धरि	5.21.4	धाइ धाइकै	1.84.2
निरखि निरखि	5.38.2	(4 बार)	
ठुमकु ठुमकु	1.30.3	ठोकि ठोकि	1.30.3
परि परि	7.31.1	पसारि पसारि	7.18.4
पूजि पूजि	1.84.8	पेखि पेखि	1.10.2
पैरि पैरि	1.64.3	बदि बदि	4.2.4
बिगरि बिगरि	2.41.2	भरि भरि	1.6.7 (8 बार)
माँगि माँगि	3.17.6	लै लै	1.2.11 (6 बार)
सजि सजि	1.3.2		

सँवारि सँवारि	7.18.4	सुनि सुनि	1.22.15	(4बार)
हरषि हरषि	2.32.3(3बार)	हँसि हँसि	7.19.4	
हुलसि हुलसि	1.74.4	हेरि हेरि	1.6.23	

2.4.5.1.2.2 – आज्ञार्थक पुनरावृत्ति–

देखि देखि	2.16.1, 1.83.1		
धरु धरु	5.22.5	हेरि हेरि हेरि	2.26.3

2.4.5.2 – भिन्न क्रियाओं के संयोग से प्राप्त रूप –

2.4.5 2.1 – दो क्रियाओं के संयोग से प्राप्त क्रिया रूप–

आलोच्य ग्रन्थ में दो क्रियाओं के संयोग से संयुक्त क्रियाओं की रचना हुई हैं। जिनमें पूर्वकालिक क्रिया, कृदन्तीरुप और क्रियार्थक संज्ञा के साथ अन्य क्रिया का संयोग हुआ है।

संयुक्त क्रिया के इन रुपों में अन्य क्रिया के रुप में आना, उठना, करना, चलना, देना आदि क्रियाएं विभिन्न रुपों में संयुक्त हुई हैं। कुल प्रयोग इस प्रकार हैं–

पूर्वकालिक क्रियारुप + अन्य क्रिया
कृदन्तीय रुप + अन्य क्रिया
क्रियार्थक संज्ञा रुप + अन्य क्रिया

अन्य क्रिया के रुप में निम्न क्रियाएं हैं जो अलग-अलग अर्थों का द्योतन कराती हैं सभी रूप आवृत्ति सहित इस प्रकार दिए गए हैं।

आना (24)

भूतकालिक रुप	(आइ ≃ आइ, आए, आयो 19)
कृदन्तीय रुप	(आवति 2)
आज्ञार्थक रुप	(आइयहु 1)
भविष्य कालिक रुप	(आइहौं, आवोंगी 2)

पूर्वकालिक क्रियारुप + आवति, आइहौं, आइयहु, आइ√आई, आए, आयो आवोंगी (16)

कहि आवति नहि	2.81.1	(कही नहीं जाती)
लै आइहौं	1 48.3	(ले आऊंगा)
आइयहु पहुंचाइ	7.27.4	(पहुंचा आओ)
करिर आई	7.13.9	(कर आई है)
बनि आई	1.52.2	(बन आई है)
पूरि आए	2.13.3	(भर आए)
करि आए	2.73.2	(कर आए हैं)
गहवरि आयो	5.15.1	(भर आया)

है आवोगी	2 6.1	(हो आऊंगी)
कृदन्तीयरूप + आए (1)		
सुधारि आए	2.78 3	(सुधारते आए हैं)
क्रियार्थक संज्ञारूप + आए, आयो (7)		
पेखन आए	1.68.4	(देखने आए हैं)
आए लैन	1.35.2	(लेने के लिए आए हैं)
डाटन आयो	6.3.1	(डाटने आया है)
उठना (5)		
भूतकालिकरूप (उठी≃उठीं, उठे 4)		
वर्तमान कालिक रूप (उठै 1)		
पूर्वकालिकरूप + उठी≃उठीं, उठे, उठै (5)		
रोइ उठी	2.53.4	(रो उठी)
उठी गाइ	7.34.1	(गाने लगी)
सोइ उठी	3.17.1	(सोकर उठी)
अंचइ उठे	3.17.7	(आचमन करके उठे)
उठै गायइकै	1.70.2	(गाने लगते हैं)
करना (65)		
भूतकालिक रूप (कियो, कीन्हौं 2)		
वर्तमानकालिक रूप (करत 1)		
पूर्वकालिक रूप (करि, कै 62)		
पूर्वकालिकरूप + करि, कै, कियो, कीन्हौं, करत (65)		
हँसि करि	5.44.4	(हंस कर)
पहिचानि करि	7.5.5	(पहचान कर)
अन्हवाइ कै	1.22.2	(स्नान कराके)
डरि कै	1.72.4	(डरकर)
धरि कै	1.72.3	(रखकर)
कियो जाई	7.3.4	(जाकर किया)
बिचारि कीन्हौं	2.57.1	(विचार किया)
धरहरि करत	7.5.3	(समझते हों)
चलना (25)		
भूतकालिक रूप	(चलो≃चलीं, चले, चल्यौ, चलेउ 21)	
भूत संभावनार्थ	(चलतो 1)	
आज्ञार्थ	(चलिए 1)	
क्रियार्थक संज्ञा	(चलनि 1)	

भविष्यत कालिक (चलैंगो 1)

पूर्वकालिक क्रिया रूप + चलौ ≃ चलीं, चले, चल्यौ, चलेउ, चलतो, चलिए, चलैंगो, चलनि (19)

लै चली	1.6.12	(लै चली)
उमगि चली	3.2.4	(उमड़कर चली)
कहि चले	2.65.3	(कहकर चले)
उमगि चल्यौ	1.90.9	(उमड़ चला)
चलेउ बजाइ	2.47.18	(बजाकर चला)
लै चलतो	5.13.1	(ले चलता)
रहि चलिए	2.3.1	(रह जाइये)
उठि चलनि	1.28.2	(उठकर चलना)
रुठि चलैंगो	2.54.3	(रुठकर चलेगा)

कृदन्तीय रूप + चल्यौ (1)

गरजत चल्यौ	6.4.5	(गरजता हुआ चला)

क्रियार्थक संज्ञा + चली, चलीं, चले (5)

चाहन चली	3.17 1	(देखने चली)
झूलन चलीं	7.19.4	(झूलने चली)
देखन चले	2.25.4	(देखने के लिए चले)
चले लेन	5.35.1	(लेने चले)

जाना (70 + 8) = 78

वर्तमानकालिक रुप	(जाइ, जाई, जात, जाता, जाति 36)
आज्ञार्थक रुप	(जाउ, जाउँ 2)
भूतकालिक रुप	(गइ, गई, गए, गयो 28)
भविष्य कालिक रुप	(जैहैं जैए 4)

पूर्वकालिक रूप + जाइ, जाई, जात, जाति, जाउ, जाउँ, जैहैं गइ, गई, गए, गयो (60)

जाइ न बरनि	2.47.6	(वर्णन नहीं हो सकता)
कही जाई	1.55.1	(कही जाती है)
(न) जाति गहि	2.62.3	(पकड़ी नहीं जाती)
(न) जाति कहि	1.40.5	(कहा नहीं जाता है)
बहि जाउ	5.45.4	(बह जाये)
लै जैहैं	5.50.3	(ले जायेंगे)
गइ लाज भाजि	7.22.8	(लाज भाग गई है)
गई प्रीति लजाइ	7.30.2	(लजा गई)

सूखि गए	1.67.2	(सूख गए)
तरि गयो	5.42.3	(पार हो गया)

कृदन्तीय रूप + जात (4)

करत जात	1.47.4	(करते हुए जाते हैं)
चले जात	2.17.3	(चले जाते हैं)
चितए नहिं जात	1.68.11	(देखे नहीं जाते हैं)

क्रियार्थक संज्ञारूप + जाइ, जात, जाता, जैंए (6)

कह्यो न जाइ	7.30.1	(कहा नहीं जाता)
जात बह्यो	2.84.1	(बहा जाता था)
भूलन जैंए	7.18.1	(भूलने जायेंगे)

इसके अतिरिक्त 8 स्थानों पर संयुक्त क्रिया के रूप इस प्रकार के मिले हैं –

(यह गे – गए का रूप है)

करिगे	2.32.2	(कर गए)
छरिगे	2.32.1	(छर गए)
भरिगे	2.32.1	(भर गए)
तरिगे	2.32.4	(पार कर गए)
निसरिगे	2.32.3	(निकल गए)
परिगे	2.32.4	(पड़ गए)
बिसरिगे	2.32.3	(भूल गए).
चढ़िगो	5.48.2	(चढ़ गया)
		(यह गया का रूप है)

डालना (3)

वर्तमानकालिक रूप	(डारौं 1)
भूतकालिक रूप	(डार्यो 1)
आज्ञार्थक रूप	(डारिबी 1)

पूर्वकालिक रूप+डारौं, डार्यो, डारिबी (3)

करि डार्यो	3.8.1	(कर डाला)
डारौं वारि	2.29.2	(न्यौछावर करती हूँ)
डारिबी न बिसारि	7.29.3	(भूल मत जाना)

देना (5)

भूतकालिक रूप	(दई, दिये, दियो 3)
संभावनार्थक रूप	(देतो, दिये 2)

पूर्वकालिक क्रिया रूप + दई, दिये, दियो, देतो (5)

दई मुंदरी डारि	5.2.4	(मुद्रिका डाल दी)
पठइ दिये	7.20.3	(भेज दिये हों)
लै दिये	3.17.5	(लेकर दिये)
दियो रोइ	5.5.1	(रो दिये)
देतो पै देखाइ	1.85.2	(दिखा देता)

परना (पड़ना) (14)

वर्तमान कालिक रूप	(परत, परै 11)
भूतकालिक रूप	(परि, परी 2)
भविष्यत कालिक रूप	(परिहै 1)

पूर्वकालिक क्रिया रूप + परत, परै, परि, परी, परिहै (11)

बूझि परत	5.33.1	(जान पडता है)
लखि परै	2.20.2	(दिखाई पड़ता है)
परि पहिचानि	6.9.4	(पहचान पड़ी)
अरुझि परी	2.53.3	(उलझन पड़ी है)
धायो परिहै	6.2.4	(दौड़कर गिरेगा)

क्रियार्थक संज्ञा + परत (3)

परत कह्यो	2.84.3	(कहा जा सकता है)
कह्यो न परत	1.77.2	(कहा नहीं जाता)

पाना (8)

भूतकालिक रूप	(पाए,पायो,पाई पारे 6)
भविष्यत कालिक रूप	(पैहौं, पाइहौं 2)

पूर्वकालिक क्रिया + पाई पाइहौं (3)

जानि मैं पाई	1.19 4	(जान गई हूँ)
बिलोकि हौं पाइहौ	1.48.1	(देख पाऊंगा)

कृदन्तीय रूप + पैहौं, पारे (2)

जीवत न पैहौं	2.76.4	(जीवित न पाओगे)
चलत न पारे	2 2.5	(चल न सके)

क्रियार्थक संज्ञा + पाए, पायो (3)

(न) बिलोकन पाए	2.35.1	(देखने न पाई)
(न) देखन पायो	2.54.4	(न देख पाया)

रहना/रखना (43)

भूत कालिक रूप	(रही, रहे, रह्यो, राखी राखे, राख्यो 38)
वर्तमान कालिक रूप	(रहत, राखत 2)

भविष्यकालिक रूप (रहिहि, रहौंगो 2)
संभावनाकालिक रूप (रहिये 1)

पूर्व कालिक रूप + रही, रहे, रह्यो, राखी, राखे, राख्यां, राखत, रहत, रहति, रहिहि, रहौंगो–(41)

रही छाइ	7.6.5	(छा रही)
जगमगि रही	7.19.3	(जगमगा रही)
रहे रोकि	1.40.6	(रोक रहे)
रह्यो पूरि	7.21.23	(भरा हुआ है)
राखी आनिकै	1.5.4	(लाकर रखी)
राखे गोइ	5.5.3	(छुपाकर रखे)
जानि राख्यो	7.31.5	(जानकर रखा है)
सिखाइ राखत	1.5.4	(सिखाकर रखते हैं)
लगेइ रहत	2.53.2	(लगे ही रहते हैं)
रहिहि छाई	1.16.3	(छाई रहेगी)
पाइ रहौंगो	2.77.1	(पाकर रहूँगा)

कृदन्तीय रूप + रहिए रहति (2)

देखत ही रहिए	1.78.2	(देखते ही रहें)
करति रहति	5.9.3	(करती रहती है)

लगना (18)

भूतकालिक रूप–लगे≃लागे, लगी≃लागी, लग्यो (18)

पूर्वलालिक क्रिया रूप + लागे (1)

ललकि लागे	1.64.3	(ललक कर लग गये)

क्रियार्थक संज्ञा रूप + लगे≃लागे, लगी≃लागी, लग्यो (17)

होन लगी	1.84.8	(होने लगी)
लागी लेखन	1.75.2	(खीचने लगी)
लगे सजन	5.16.13	(सजने लगे)
लागे चुवन	5.48.2	(चूने लगे)
बूड़न लग्यो	5.24.2	(डूबने लगा)
असीसन लागी	7.18.4	(असीसने लगी)

लेना (52)

भूत कालिक रूप (लई, लए≃लिए, लियो, ल्यायो, लीन्हीं, लीन्हि लायो, लीन्हों, लीन्हें, आने 31)
आज्ञार्थक रूप (लीजै, लीबी लेंउ, लेहु, आनौं 10)
वर्तमान कालिक रूप (लेत, लेहि 11)

पूर्व कालिक क्रिया रूप + लई, लए ≃ लिए, लियो, ल्यायो, लीन्हीं, लायो, लीन्हों, लीन्हें, लेंउ, लेहु, आनों, लीजै, लेत (45)

माँगि लई	5.38.2	(माँग ली)
बाँटि लये	1.45.1	(बांट लिए)
बोलि लिये	1.15.2	(बुला लिए)
माँगि लियो	7.38.11	(माँग लिया)
करि ल्यायो	6.3.2	(कर लाया था)
हरि लीन्हीं	3.6.3	(हर ली)
हरि लायो	6.2.3	(हर लाया)
(गोद) करि लीन्हौं	3.13.1	(उठा लिया)
भरि लीन्हे	1.102.6	(भर लिया)
लेंउ उर लाई	2.54.3	(हृदय से लगाऊं)
लेहु चढ़ाइ	7.27.4	(चढ़ा लो)
आनों धरि	6.8.3	(ले आऊं)
मँगि लीजै	3.15.2	(माँग लीजिए)
हरि लेत	2.37.2	(हर लेते हैं)
माँगि आने	1.68.2	(मांग लाया था)

कृदन्तीय रूप + लेंहि, लेत (4)

चोरे लेंहि	3.2.3	(चुराए लेती हैं)
छोरे लेत	3.2.3	(छीन लेता है)
बोंहें लेत	7.4.5	(डुबोए लेता है)
लेत चोराए	1.32.3	(चुराये लेता है)

क्रियार्थक संज्ञा रूप + लीन्हि, लीजे, लीबी (3)

छीन लीन्हि	3.8.2	(छीन ली)
छिनि लीजै	3.7.2	(छीन लीजिए)
जानि लीबी	1.96.5	(जान लो)

सकना (25)

वर्तमान कालिक	(सकत, सकति, सकौ, सकै 16)
भूत कालिक	(सके, सकेउ, सकी, सकौं, सक्यो 9)

पूर्वकालिक क्रिया रूप + सकत, सकति, सके, सकै, सकेउ, सकी, सकौं, सक्यो (25)

ह्वै न सकत	2.70.1	(हो नहीं सकते)
कहि न सकति	5.9.4	(कह नहीं सकती)

लाँघि न सके	6.1.6	(लांघ न सके)
कहि सकै	1.12.4	(कह सकता है)
सकौं कहि हौंन	5.20.1	(कह नहीं सकता)
देखि न सकेउ	2.51.3	(देख नहीं सकता)
सहि न सकी	2.5.3	(सह न सकी)
सहि न सक्यौ	3.13.2	(सह न सका)
सक्यौ न प्रान पठाई	6.6.2	(प्राण न भेज सका)

धावना (7)

भूतकालिक	(धाए, धायो 6)
भविष्य कालिक	(धावौंगी 1)

पुर्वकालिक क्रिया रूप + धाए, धायो, धावौंगी (6)

उठि धाए	1.102.1	(उठ कर दौड़े)
उठि धायो	2.56.1	(उठकर दौड़ा)
उठि धावौंगी	2.55.3	(उठकर दौड़ूंगी)

क्रियार्थक संज्ञा + धाए (1)

देखन धाए	7.38.8, 6.23.1	(देखने के लिए दौड़े)

फिरना (4)

भूत कालिक रूप	(फिरे, फिरी 2)
वर्तमान, कालिक रूप	(फिरत 2)

पूर्वकालिक क्रिया रूप + फिरे, फिरी

पहुंचाइ फिरे	2.66.5	(पहुंचा कर लौटे)
पहुंचाइ फिरी	2.84.3	(पहुंचा कर लौट आई)

कृदन्ती रूप + फिरत (2)

गुनत फिरत	1.38.4	(गुनते फिरते हैं)
खेलत फिरत	3.2.1	(खेलते फिरते हैं)

भागना (4)

भूत कालिक रूप (भगी, भागे, भाग्यो 4)

पूर्व कालिक क्रिया रूप + भगी, भागे, भाग्यो (4)

भभरि भगी	2.57.3	(घबरा कर भगी)
भभरि भागे	5.16.6	(भड़भड़ा कर भाग गए)
निकसि भागे	2.65.3	(निकल कर भागे)
ले भाग्यो	2.12.3	(लेकर भाग गया)

बनना (6)

भूतकालिक रूप	(बनाए, बनाई 2)

वर्तमानकालिक रूप		(बनै, बानति 3)
भविष्यकालिक रूप		(बनैहौं 1)

पूर्वकालिक क्रिया रूप+बनाए, बनाई, बनैहौं (3)

बिरचि बनाए	1.23.2	(रचकर बनाए हैं)
बिरची बनाई	7.11.3	(रचकर बनाई)
बिरचि बनैहौं	1.8.2	(रचकर बनाऊंगी)

क्रियार्थक संज्ञा रूप+बनैं (2)

बनै न बरनै	5.22.9	(वर्णन नहीं बनता)
फिरिबो न बनै	2.73.3	(लौटना न बनै)

कृदन्तीय रूप+बानति (1)

कहत न बानति	7.17.11	(कहते नहीं बनती)

कहना (17)

भूतकालिक रूप		(कह्यो, कही 2)
वर्तमान कालिक रूप		(कहैं, कहौं, कहति, कहत 10)
भविष्य कालिक रूप		(कहिहैं, कहैगो, कहौंगो 4)
पूर्वकालिक रूप		(कहि 1)

पूर्व कालिक क्रिया रूप+कही, कहैं, कहौं, कहति, कहिहै, कहत, कहैगो, कहौंगो(14)

भूलि कही	7.37.1	(भूलकर कही)
कहैं किमि गाइ	7.33.5	(गाकर कैसे कह सकता है)
कहौं बरनि	1.27.1	(वर्णन करके कहता हूँ)
कहति हँसि	3.3.2	(हँस कर कहती हैं)
आइ कहिहै	7.29.2	(आकर कहेगा)
पुलके कहत	2.45.5	(पुलकित होकर कहते है)
आइ कहैगो	2.55.2	(आकर कहेगा)
चपरि कहौंगो	2.77.1	(बढकर कहूंगा)

क्रियार्थक संज्ञा रूप+कहि, कहिहैं, कह्यो (3)

देनकहि	2.59.2	(देने के लिए कहकर)
फिरन कहिहै	2.70.2	(लौटने के लिए कहेंगे)
कह्यो जान	2.59.2	(जाने के लिए कहा)

चाहना (15)

भूत कालिक रूप		(चह्यो 1)
वर्तमान कालिक रूप		(चहत≃चाहत, चहे, चाहौं, 14)

क्रियार्थक संज्ञा + चह्यो, चहत ≃ चाहत, चहै. चाहौं, चहे (15)

चहत जीत्यो	5.23.1	(जीतना चाहते हैं)
चाहत कवि दैन	1.35.1	(कवि देना चाहता है)
कहन चह्यो	5.15.2	(कहना चाहा)
चलनु चहे	5.49.3	(चलना चाहते हैं)
कही चाहौं	1.72.2	(कहना चाहती हूँ)
कह्यौ चहै	6.11.4	(कहना चाहते है)

सुनना (3)

भूत कालिक रूप	(सुनायो, सुनाए 2)
भविष्य कालिक रूप	(सुनैहैं 1)

पूर्व कालिक रूप + सुनायो, सुनाए, सुनैहैं (3)

कहि न सुनायो	5.44.3	(कहकर नहीं सुनाया)
कहि सुनाए	1.69.3	(कह कर सुनाए)
आनि सुनैहैं	5.50.1	(आकर सुनायेगी)

इन सबके अतिरिक्त 33 संयुक्त क्रियाएँ (पूर्वकालिक क्रिया रूप + अन्य भिन्न-भिन्न क्रिया रूप) और मिली हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

लिखि काढ़ी	2.55.5	(लिखि काढ़ी हो)
लै बढत	1.45.4	(लेकर बढ़ते हैं)
भेंट्यो उठाइ	5.16.12	(उठाकर भेंटा)
करि गही	7.6.6	(करके पकड़ा है)
ललकि लाले	3.9.3	(लाड़ से पाला था)
पठए बोलि	1.68.6	(बुला भेजा)
लै सौंपी	7.28.1	(लेकर सौंप दिया)
आनि बसाई	2.46.7	(लाकर बसा दिया है)

2.4.5.2.2 नामिक + क्रिया

आलोच्य ग्रन्थ में नामिक के साथ क्रिया संयुक्त हुई है, ऐसे प्रयोगों की संख्या काफी है। कुल प्रयोग 200 से अधिक हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

आस्या देंहु	2.71.3	गँस ल गही	7.37.2
नेवते दिए	1.5.5	टहल करें	1 71.2
तृप्ति लहे री	5.49.3	प्रमान करि	2.5.3
पार नहिं पावत	7.17.16	पाले परी	3 17.7
कियो मज्जन	7.21.24	रही न संभार	2.29 6
सुधि करि	5.12.4	हरष हिए	6,23,2

जरनि जाइ	2.61.2	दई हौंक	6.9.9
असोस दीन्हीं	5.15.3	उपजी प्रीति	2.63.3
मीत कियो	5.46.2	बिनती मानि	6.25.3
दृष्टि परे री	1.76.1	सोच नसाए	6.22.2
सुख दीजै	3.15.1	भोर भया	1.36.1
लहिहौ सुख	2.60.3	पासे परिगे	2.32.4
मरजाद मिटाई	1.108.9	बिद्या पढ़ाई	1.52.6
सावन लाग	7.18.3	गारि देत	7.22.9

2.4.5.2.3 **विशेषण + क्रिया**

गीतावली में विशेषण के साथ भी क्रिया संयुक्त है इस प्रकार के कुल प्रयोग 55 हैं। कुछ उदहरण निम्नलिखित हैं–

छीन भयो	5.8.2	थिर होहु	1.90.4
परिपूरन किये	1.5.5	बलि जाउँ	2.3.2
गए सूखि	6.22.7	सूने परे	1.94.2
नीको लागत	2.50.1	सांची कही	1.72.3
लघु लागहिं	2.47.5	मंगल गायो	1.93.3
पुलक जनाई	1.1.2	कुसल न देखौ	3 9.4
भए विकल	1.85.4	सफल लेखि	2.22.2

दो क्रियाओं के साथ संयोग

गिर गिर परनि	1.28.2	फैलि फूलि फरिकै	1.72.3
फैलि फूलि फलतो	5.13.3	वारि फेरि डारि	2.17.1
वारि फेरि डारी	1.109.1	वारि फेरि डारे	1.68.10
समुझि सुनि राखी	7.37.3	सींचत देत निराइकै	5.28.6

2·5 क्रिया विशेषण तथा अव्यय

2.5.1 – **क्रियाविशेषण** — गीतावली में प्रयुक्त क्रियाविशेषणों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है — (1) अर्थ के आधार पर, (2) संरचना के आधार पर।

2.5.1.1 – **अर्थ के आधार पर** – अर्थ के आधार पर प्रयुक्त क्रिया विशेषण निम्नप्रकार के हैं–

2.5.1.1.1 – **एक पद वाले क्रिया विशेषण** – इनको कई वर्गों में विभक्त किया जा सकता है–

2.5.1.1.1.1 – काल वाचक क्रियाविशेषण–

अब . 2.67.4, 6.4.4, 5.31.2, (30 वार)

अबहिं	1.62.3, 2.13.3
अजहुँ	5.39.6, (अजहू/अजहूँ) 6.1.1, 2.59.4
आज	2.49.1 (10 बार) आजु 5.24.4 (34 बार)
कब	5.9.1 5.47 1, 2.55.1, (9 बार)
कबहुँ	3.10.1 (7 बार), (कबहू/कबहूँ) 7.13 5, 5.10.1
कबहिं	1.8.1, कबहुक 2.38.3
काल्हि/कालिही	2.65.1 7.32.1
जब	5.2.1, 2.66.3, 1.23.3 (14 आ0)
तब	1.66.2 5.50.3, 6.4.3 (11 आ0)
तुरत	1.6.5, 6.8.2, 6.21.7, 1.57.1 (4 आ०)
तुरतहि	7.27.4
नित	7.35.4, 1.45.6, 2.44.3, (23 आ०)
निरंतर	5.2.3, 2.11.4, (2 आ०)
प्रथम	7.38.2
पहिलेही	1.80.2
पुनि	2.66.5, 1.50.2, 5.46.2 (7 आ०)
बहुरि	2.38.3, 7.29.2, 1.6.24 (7 आ०)
बहुरो/बहुरौ	2.73.1, 5.50.5, 2.87.1 (आ० 3)
फिरि	2.77.3, 4.2.4, 2.63.3 (आ० 4)
परौं	2.39.1
सद्य	7.15.4, 5.19.2, 5.42.4 (आ० 3)
सपदि	6.9.5
सदा	2.78.3, 5.17.4, 1.6.21 (आ० 9)
सबारे	(सवेरे होना चाहिए) 2.52.2
पल	7.26.1
पैं	(पहले के अर्थ में) 5.27.1
बासर	7.35.4
भोर/भोरहि/भोरही	7.2.1, 7.34.3, 7.27.3, 1.99.2, 6.9.9
रैनि	2.68.2

निम्नलिखित कालवाचक क्रियाविशेषण दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ते हैं। कहीं-कहीं उनमें से एक क्रियाविशेषण लुप्त भी रहता है। नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं तथा कोष्ठक में आवृतियां दी गई हैं—

अजहुँ............ —....सो 2.12.2

(अजहुँ अवनि बिदरत " ....सो अवसर सुधि कीन्हें)

... . - कब.................2.55.4

(जनकसुता कब सासु कहें मोहि........राम लषन कहैं मैया)

तथा 5.10.4

कब.................कब .. 5. 0.5

(राज विभीषन कब पावहिंगे... भेद बुद्धि कब विसरावहिंगे)

कबहुँ............... कबहुँ 2.52.3

(कबहुँ कहति यों....... कबहुँ समुझि बन गवन)

कबहुं .... कबहू 1.7;2

(कबहुं पौढ़ि पय पान करावति कबहुँ राखति लाइहिये)

.... जबहिं 2.10.1

(जबहि रघुपति संग सीय चली.... ... अति अन्याउ अली)

छन .... छन 3.17.3

(छन भवन छन बाहर बिलोकति)

जब जब .... तब तब 2.54.1

(जब जब भवन बिलोकति सूनो तब तब बिकल होति)

जब .... तबतें 1.14.1

(मुनिवर जब जोए तबतें राम .... सुख सोए)

जब .... तब 1.90.1

(जबहिं सब नृपति निरास भए तब.... रघुपति .... गए)

जबतें .... तबतें 7.33.1

(जबतें जानकी रही .... तबतें........ सकल मंगल दाइ)

तथा 5.48.1, 2.46.1, 2.41.1, 2.40.1. 1.101.1

(आ०–6)

.... जौलौं 6.9.2

(आन्यो सदन सहित सोवत ही जौलौं पलक परै न)

जौलौं .... तौलौं 7.37.1

(कैकेई जौलौं जियति रही .... तौलौं .... कही)

तब .... अबहुं 7.31.3

(हेतु हौ सिय हरन को तब अबहुं भयो सहाय)

तब........ जब 1.35.1

(कमल सकुचत तब जब उपमा चाहत कवि दैन)

2.77.3 1.26.6

तबके .... तबके.... अबके 1.95.4

तवके देखैया ·· तवके ··· अवके ········)

तवके ········	अजहुँ	1.9.6
(तवके से अजहुँ देखिबे)		
तवकी ···· ···	अवकी	5.8.1
(तवकी तुम्ही जानति अवकी हौं हीं कहत)		
तवको ········	अजहुँ	1.30.6
अनुभवत तवको सो अजहूँ अघाई)		
तवतें ········	जवतें	1.98.2
(तवतें दिन दिन उदय जनक को जवतें जानकी जाई)		
तदपि कवहु कवहुँक ऐसेहि अरत जव ··· तीके		1.12.2
सो ················	जा	5.50.1
(सो दिन सोने को कब ऐहें जा दिन बंध्यो सिंधु)		
सो ················	अजहुँ	7.1 5
(सुमिरि सो तुलसी अजहुँ हरप होत विसाल)		

2.5.1.1.1.2 – स्थानवाचक क्रियाविशेषण– ये दो प्रकार के हैं –

2.5.1.1.1.2.1 – स्थिति वाचक

अगमनो	5.51.3
अनत	2.88.1, 2.40.2, 7.21.15 (आ० 3)
इहाँ	5.25.3
उपर≃ऊपर	1.108.4, 3.14.2, 7.11.2 (आ० 3)
ऊंचे	2.14.1
अगु	6.1.9
अगहुंड़	2.69.3
आगे	2.68.3, 1.84.3. 2.51.2, 2.29.2, 1.26.5 (आ०5)
ओर	(अंत तक) 6.6.17
कहं≃कहां	2.68.4, 1.62.4. 2.62.1, 5.28.8, 3.13.4 2.51.3 (आ० 6)
कहुँ	2.84.3, 6.1.8, 1.89.7, 2 9.3, 2.24.2, 1.105.2 2.41.1 (आ० 7)
कतहुँ	5.45.2
जहँ/जहाँ	2.46.9, 2.43.1, 2.47.21, 7.12.2, 2.12.1 7.19.1 (आ० 6)
तहँ/तहाँ	7.34.3, 1.21.4. 5.20.3, 5.21.2. 6.17.2(आ०5)

तहँई	5 27.2
तल	7.17.5. 7.16.2
दूरि	3.6.1, 3.7.1, 2.13.1
निकट	5.444., 6.20.3, 5.36.3, 1.26.1, 5.2.3, 2.69.2 (आ० 6)
नियरे	1.43.3
पाछे	2.22.1, 2.29.3
बाहर	2.23.1
बाहिरो	6.8.2
बिच	3.4.3, 2.15.2, 7.12.2, 7.3.3
भीतर	1.17.2
ठौरही	6.9 7
प्रथम (आगे)	1.49.1
सनमुख	2 65.2
सामुहे/सामुहँ	2.70.1, 2.73.2

दो वाक्यो अथवा वाक्यांशो को जोडने वाले स्थान वाचक क्रियाविशेषण–

सो ······ जहा 2.13.1

(सो विपिन है धों केतिक दूर जहा गवन कियो)

जहँ जहँ ········ तहँ तहँ 3.1.2

(जहँ जहँ प्रभु विचरत तहँ तहँ सुख)

जहँ जहँ ········ तहँ 5.38 4

(थाहन जहँ जहँ तहँ थई)

········ जहा जहा ······ 2.37.2

(लोचननि लाहु देत जहा जहा जैहैं)

तहँ ·· ········ जहँ 2.44.3

(विरचित तहँ परनसाल निवसत जहँ)

2.5.1.1.1.2.2 दिशावाचक क्रियाविशेषण–

इत	1 78.3
उत	2 86.2, 7.22.4
जित	6.18.1
जित	1.78.2
ओही	2.18.4
रुख (ओर)	1.68.7

दो वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ने वाले दिशावाचक क्रियाविशेषण–

इतहि ………… उत 6.10.4

(आयसु इतहि स्वामि संकट उत)

इत ………… उत 5.36.2

(भयो विदेह विभीषण इत, उत प्रभु अपनपो बिसारिके)

उत ………… इतको 2.34.4

(उत कीन्हीं पीठि इतको सुडीठि भई है)

(उतहि ………… इतहि 7.30.3

(इतहि सीय संकट उतहि राम रजाइ)

इक ओर ………… इक ओर 1.45.1

(राम लषन इक ओर भरत रिपुदन लाल इक ओर भये)

2.5.1.1.1.3 **रीतिवाचक क्रियाविशेषण–**

इनके कई प्रकार हैं—

2.5.1.1.1.3.1 **समान्य रीतिवाचक–**

अछत	5.5.3, 5.7.1
अनायास	2.32.4, 2.34.4, 5.28.5, 1.88.3, 1.9.5 (5 आ०)
अवसि	2.77.1, 1.80.6
आछे	3.3.4. 1.74.1
ऐसे/ऐसेहि/ऐसेही	5.8.2, 1.12.2, 5.39.6
ऐसी	1.82.3
उचित	2.83.3, 7.35.3
किमि	2.17.3, 7 33.5
क्यों (कैसे के अर्थ में)	1.109.3, 6.21.6. 2.72.1, 2.60.1, 2.62.2 (आ० 25)
कैसे/कैसेके	1.99.1, 2.86.1, 2,60.1, 2.72.2, 6.10.2 (आ० 11)
चोखे	1.95.1
ज्यों	1.100.4, 1.19.2, (आ० 29)
जैसे	2.86.1, 1.64.4, 5.17.1, 1.94.2, 6.15.2 (6 बार)
तैसिए	2.20.2
तिरछौंहै	1.62.4

तोतरि	1.32.6
न्यारो/न्यारे	2.66.5, 2.67.1, 1.38.4, 1.39.1(आ० 4)
निफन	2.32.2
नीके	1.6.26,2.45.4,5.18.3,1.31.3(आ० 17)
परसपर	2.42.3, 5.35.1, 1.70.3, 4.1.4(आ० 19)
वरबस	3.12.2, 5.21.2, 6.8.3,1 .32.2 (आ० 4)
वरिआई	3.6.2
वृथा	2.74.4
वादि (व्यर्थ)	3.12.1
विकल	1.87.4, 1.85.4, 1.92.3, 2.58.2(आ० 4)
भलि	7.17.15
भली/भलो/भलोई	3.6.3, 1.49.3,5.28.3,1.79.1,(आ० 11)
भूरि	3.7.1
भूलि	7.37.1
भोरे (भूल से)	5.2.2 (भोरेहु) 5.20.3
मीठी	2.82.1
यों	6.15.1 (आ० 14)
सही	5.24.4, 1.87.4
संभ्रम	2.55.3
साँचेहु/साँचहूँ/साँचेहू	2.56.3, 1.110.3, 6.7.2
हठि	3.6.2, 7.31.3, 1.6.24, 6.4.3 (आ०11)
हरुए (धीरे)	3.6.1

दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने वाले रीतिवाचक क्रियाविशेषण–

ऐसोइ ………… जैसो 2.71.3

(मेरो जीवन जानिय ऐसोइ जियै जैसो अहि)

कैसे ………… कैसे 2.26.1

(कैसे पितु-मातु कैसे ते प्रिय परिजन हैं)

जैसे ………… तैसे 1.42.1

(जैसे राम ललित तैसे लोने लपन लाल)

तथा 1.67.1

जैसे ………… तैसेई 1.73.2

(जैसे सुने तैसेई कुँवर सिरमौर हैं)

जैसे ………… तैसिए 1.102.1

(जैसे ललित लखन लाल तैसिए ललित उरमिला)
जैसे ·· ········ भाँति 2.38 3
(जैसे भावते है भाँति जाति न कही)
ज्यौं ··········· त्यौं 1.4.3
(ज्यौं हुलास रनिवास नरेसहि त्यौ जन पद रजधानी)
ज्यौ ज्यौं · ···· ··· त्यौ त्यौ 2.79.4
(तुलसी ज्यौं ज्यौं घटत तेज तनु त्यौ त्यौं प्रीति अधिकाई)
तथा 5.8.2
तैसे ·········· जैसे 1.11.2
तैसे फल पावत जैसे सुबीज बए है)
तैसेई··········· तैसिए 3 5.3
(तैसेई स्रम सीकर······ तैसिए भ्रकुटिन्ह की नवनि)
तैसेई ······· · तैसेई 1.42.1
(तैसेई भरत······ तैसेई सुभग संग सत्रुसाल)
तैसो तैसो ······ जैसिए 1.71.4
(तैसो तैसो मन भयो ज.की जैसिए सगाई है)

2.5.1.1.1.3.2 **निषेधवाचक–**

जनि	3.16.1, 1.22.14, 2.29.5, 2.76.1, 2.47.18 (9 बा)
जिनि	5.27.3
न	(263 बा०) 2.51.3 नहि (30 बा०) 7.8.5
न हिं	(2 बार) 7.26.3, नहीं (1 बार) 6.1.8, नाहीं (2 ब र) 1.101.2, नाहिन (2 बार) 5.45.3

दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने वाले रूप–

न ·· ········ 2.22.2
(हम सी भूरि भागिनि नभ न छोनी)
तथा 1.11.1, 5.15.3
············नहिं ······· 2.82.2
(राम प्रेम-पथ तें कबहु डोलति नहि डगति)
न···········न 3.9.2
(अलि न गुजंत, कल कूजै न मराल)
3.9-3, 3.10.1, 3.10.2 2.30.6, 2.79.4, 1 87.3, 2.53.3, तथा 1.86.5 (10 बार)
न···········न···········न 1.92.5
(लख्यो न चढ़ावत न तानत न तोरत हू)

तथा 2.32.3, 2.21.1 (3 बार)

निम्न स्थानों पर 'न' अवश्य का अर्थ दे रहा है–

केहि केहि गति न दई ?	1.59.2
कहो क्यों न विभीषन की बनै ?	5.40.1
किए प्रेम कनौडे कै न ?	2.24.4
को न परम पद पायो ?	5.44.5
को न बसाइ उजारो ?	2.66.2

विशिष्ट प्रयोग–

"कानन कहां अवहिं सुनु संदरि" (2.13.3) में "कहाँ अवहिं" नहीं के अर्थ में आया है–

कहँ...... कहँ 2.29.5

(पुनि कहँ यह शोभा कहँ लोचन देह गेह संसार)–

में 'कहँ' दोनों स्थानों पर निषेध सूचक प्रयोग है।

2.5.1.1.1.3.3–**कारणवाचक–**

कत	1.81.1, 1.79.2, 6.1.8, 2.9.1 (4 बार)
क्यों	3.15.4, 5.28.4, 2.39.4, 5.6.2, (5 बार) 5.40.1
(क्यों नहीं) किन	2.74.1, 1.78.3

2.5.1.1.1.3.4–**परिमाणवाचक–**

अधिक	7.5.6
इतनी	5.7.4
इतनोइ	1.106.2
कछु	1.68.12, 5.22.9, 7.17.11, 1.51.1, (15 आ०)
कछुक	7.25.1
कछू	2.64.3, 6.10.4, 5.5.7, 2.41.1, 6.6.1, 2.40.1 (6 बार)
कितौ	2.35.5
थोरी	1.104.2
नेकु	1.77.1, 7.16.1, 1.28.1, 5.26.3, 1.68.4, 6.8.4 (6 बार)
वहुत	6.4.1. 2.72.1, 5.51.3
निपट	5.26.3, 7.22.8, 5.36.3, (7 बार)
निपटहि	7.29.3
लघु	1.55.3, 2.26.2, 2.47.5

2.5.1.1.2–क्रियाविशेषण के समान प्रयुक्त संयुक्त रूप–

गीतावली में प्रयुक्त दो पदों के मेल से बने क्रियाविशेषण निम्नलिखित हैं–

2.5.1.1.2.1–कालवाचक–

अनुदिन	1.4.14	अवलगि	4.2.1
अवलौं	5.49.1	अपनी अपनी बार	7.19.5
अवधिलौं	2.77.3	आजु को भोर	2.51.1
आजु कालिहु परहु	1.5.5	आयुभरि	1.11.3
आगेकी	2.77.3	एक बार	2.87.1
एकहि वार	2.73.2	ए दिन ए खन	1.75.2
एक छन	5.17.2	कालिकी	5.12.4
कबहुं कबहुंक	1 12.2	छन में	1.47.3, 5.23.2
छिन छिन	1.20.2, 6.13.2	जनम जनम	6.23.5
(छिनहि छिन)	6.13.2	जबतें	1.78.1, 2.79.1
जुग जुग	5.37.5		1.22.21
तबतें	1.6.26	तेहि निसा	7.34.3
तेहि समय	6.13.5	तेहि अवसर	7.21.25
दिन दिन प्रति	2.54.1	दिन अरु रैन	5.9.2
दिन राति	2.83.3	दिन दिन	1.98.2, 2.46.1
नींद वेरिया	1.20.1		7.32.4, 7.23.1
पल में	5.12.3, 6 22.4	पल आध में	5.14.2
वार कोटि	5.38.3	वड़ीवार	2.52.3 (बहुत देर)
वार वार	(17 आ०) 1.38.1, 1.92.4, 2.74.1, 5.16.8	पुनि पुनि	(10 आ०) 2.74.4, 1.52.5, 6.9.8, 1.23.4
बारहि वार	(8 आ०) 5.22.8, 7.31.1, 2.79.3, 1.98.3	फिरि फिरि	(4 आ०) 7.19.5, 3.3.3, 2.14.1, 2.4.5
		बारक बहुरि	(एक वार फिर) 2.36.1
बासर निसि	5.49.1	भरि जनम.	1.5.6, 1.4.5
विद्यमान की	5.11.3	सदा सो	5.17.4
रैन दिन	5.10.5		
सब दिन	7.24.2, 5.29.4		

2.5.1.1.2.2–स्थान वाचक–

ये दो प्रकार के हैं–

2.5.1.1.2.2.1–स्थिति वाचक–

अंग अंग	7.4.1, 1.11.2,	आगे-पीछे	1.74.1

	1.26.7, 5.10.2	इहांते	5.26.3
उपरा-उपरी	5.22.4,	औरोक्हुं	6.18.3
इक ठोरी	1.105.2,	कहांते	1.65.1, 2.35.3,
(एक ठौरी)	1.104.3		2.19.4, 6.17.1,
घर घर	7.20.4 1.70.2,		7.4.6, 1.37.1
	1.6.4, 6.23.2	घर घरनि	7.27.1
जहँ तहँ	1.1.6, 1.95.3,	जहाँ तहाँ/	3 9.2, 2.41.4,
(16 आ०)	2.70.3, 6.9.4,	जहाँ जहाँ	3.5.4
	2.47.14	जहंलों/जहांलों	1.49.1, 5.24.1
जानु लगि	7.17.7	दीप दीप के	6.23.3
दूरितें	2.69.1, 5.35.2	नख सिख	2.26.2, 5.38.2
पुर बाहर	1.70.2	मनमें	5.23.1
मनहि मन	5.28.1	सदन सदन	1.3.1

2.5.1.1.2.2.2–दिशावाचक–

इत उत	6.4.6, 3.5.2	चहुं ओर	1.30.4, 5.22.9
चहुं पास	7.5.6	दाहिनी ओर तें	5.38.2
दुहुं ओर	1.84.4		

2.5.1.1.2.3–रीतिवाचक–

ये कई प्रकार के हैं–

2.5.1.1.2.3.1–सामान्य रीतिवाचक–

अति भांति	7.5.5	अनवन भांति	2.47.3
इकटक/एकटक/	1.78.1, 2.42.3,	एक भांति	1.69.2
इकटकतें	1.57.3	एक संग	2.46.9
और भांति	1.85.2, 2.9.1	केहि भांति	7.25.3, 5.2.5,
कौन विधि	2.60.4	क्यों करि	1.108.10
चारिहु प्रकार	2.49.5	छँगन मँगन	1.30.1
जिय जिय	1.64.4	जेहि भाँति	2.77.3, 6.11.2,
जेहि तेहि (जहाँ जहाँ)	2.68.4	ज्यों त्यों	3.7.3
		ज्योंही त्योंही	5.7.4
झुंझुन झुंझुन	1.33.1	तेहि विधि	6.21.6
नीके कै	2.19.1; 2.35.1,	ठुमुकु ठुमुकु	1.33.1, 1.30.3,
	1.73.3, 1.81.1.		1.8.3
	2.22.2 13.14.1	प्रथम ज्यों	2.52,2

बहु भांति	7.19.4, 2.11.3, 2.48.3	बहु विधि	6.16.8, 1.1.5, 3.13.3
विविध विधि	7.21.22	विविध भांति	7.21.24, 6.23.3
भली भांति	5.5.5, 2.32.4, 1.70.9, 2.80.1, 5.36.2	भली विधि	6.6.1
		मनसहु	1.81.1 (मनसे) 2.32.3
रुनझुन	1.32.2	सब भांति	5.39.1 2.71.3 (सबहि भांति)
यहि भांति	1.88.1, 5.50.4, 6.4.5		
सब विधि	5.7.3, 1.6.27	सहस विधि	7.28.3
सब प्रकार	5.46.4	सादर	1.52.5, 1.84.3
सानंद	1.84.3, 2.77.2		

2.5.1.1.2.3.2–कारणवाचक–

काहे को	2.75.1, 5.8.1, 2.63.1

2.5.1.1.2.3-3–परिमाण वाचक–

उहां लौ	6.5.4	थोर थोर	1.73.9
भरिपूरि	7.18.6, 5.49.5		

2.5.1.2–संरचना के आधार पर–

संरचना के आधार पर क्रियाविशेषणों को दो वर्गों में रखा जा सकता है–
(1) मूल, (2) संयुक्त।

2.5.1.2.1–मूल–

इसमें वे क्रियाविशेषण आते हैं जो रचना की दृष्टि से केवल एक भाषिक इकाई हों–इसके पर्याप्त उदाहरण आलोच्य ग्रन्थ में है–यथा–

आजु	1.1.1	तुरत	6.8.2
नित	1.45.6	न	3.6.3
वेगि	1.6.11		

2.5.1.2.2-संयुक्त–

इसमें वे क्रियाविशेषण आते हैं जो एक से अधिक भाषिक इकाइयों से बने हैं–ये निम्न प्रकार के हैं–

2.5.1.2 2.1–नामिकों पर आधारित–ये कई प्रकार के हैं–

(1) नामिक + शून्य

पल	7.26.1	(पल कृपालहि जाहिं)
बासर	7.35.4	(जात बासर बीति)

भोर	7.2.1	(भोर जानकी जीवन जागे)
रैनि	2.68.2	(बैठेहि रैनि बिहानी)

(2) नामिक + परप्रत्यय, परसर्ग

नेह बस	1.80.4	(भए बिलोकि बिदेह नेह बस)
बिधि बस	7.34.3	(सत्रुसूदन रहे बिधि बस आइ)
अनलमहँ	6.2.4	(.. राम प्रताप· अनलमहँ ह्वै पतंग परिहै)
बितानतर	1.105.2	(ब्याह समय सोहति बितानतर ...)
जानु लगि	7.17.7	(जानुलगि पहुचति)
पल में	6.22.4	(....दुख पल में बिसराए)
कालिकी	5.12.4	(कालिकी बात बालिकी सुधि करि ..)
आयुभरि	1.11.3	(जानियत आयु भरि येई निरमए है)
अवधिलौं	2.77.3	....अवधिलौं वचन पालि निबहौंगो)

(3) प्रत्यय + नामिक

भरि जनम	1.5.6

(4) नामिक + पूर्व प्रत्यय

अनुदिन	1.4.14	
सादर	2.6.2	(. सादर पान करावौंगो)
सनाथ	1.50.1	(मुनि सनाथ सब कीजे)
सानन्द	2.77 2	(मुनि सानन्द सहौंगो)

(5) नामिक + नामिक

छिन छिन	2.7.2	(प्रभुपद कमल बिलोकिहैं छिन छिन)
जनम जनम	6.23.5	(जनम जनम जानकी नाथ के....गाए)
जिय जिय	1.64.4	(जिय जिय जोरत सगाई....)
दिन दिन	2.46.1	(दिन दिन अधिक अधिक अधिकाई)
निसि वासर	5.2.3	(रटति निसि वासर निरतर)
प्रातकाल	7.12.1	(प्रातकाल रघुवीर बदन छवि चितै

(तीन का संयोग) आजु कालिहु परहु 1.5.5

2.5.1.2.2.2-सार्वनामिक अंगों के आधार पर रचित क्रिया विशेषण-

	य,अ,इ (यह)		व,उ (वह)	ज (जो)		क (कौन)		त (तिस)	
स्थान-	ह्या	5.34.2	–	जहा	2.12.1	कहां	3.13.4	तहाँ	5.21.2
	इहा	5.25.3	–	जहँ	2.46.9	कहँ	2.68.4	तहँ	2.20.3
	–		–	–		कहुँ	6.1.8	–	
काल-	अब	6.4.4	–	जब	1.23.3	कब	5.9.1	तब	1.66.2

रीति–ऐसे 5.8.2 – जैसे 2.86.1 कैसे 2.86.1 तैसे 1.42.1
यों 6.15.1 – ज्यों 1.100.4 क्यों 6.21.6 त्यों 1.4.3
दिशा–इत 1.78.3 उत 7.22.4 जित 1.78.1 कित 6.18.1–
परिमाण–इतनी 5.7.4– कितो 2.35.4–

2.5.1.2.2.3–विशेषण के आधार पर बने क्रिया विशेषण–

विशेषण + ए, ओ

आछे	3.3.4	नीके	1.6.26
पहले (ही)	1.80.2	भलो	5 28.3

विशेषण + शून्य

भलि	7.17.15	(भाल भलि आजनि)
मीठी	2.82.1	(सुनत मीठी लागति)
विकल	1.85.4	(जनक भए बिकल)
भूरि	3.7.1	(विलपति भूरि बिसूरि)
उचित	7.35.3	(उचित अचल प्रतीति)
बहुत	2.42.2	(इन्हहिं बहुत आदरत)

विशेषण + विशेषण

छगन मगन 1.30.1

2.5.1.2.2.4–क्रिया पर आधारित क्रियाविशेषण–

गीतावली में प्रयुक्त क्रिया पर आधारित क्रिया विशेषण निम्न हैं–

पूर्वकालिक कृदन्त–

अघाइके	1.70.1	(लोग लूटिहैं लोचन लाभ अघाइकैं)
बिसूरि	3.7.1	(विलपति भूरि बिसूरि)
रिसाइकै	1.84.9	(भाषे मृदु परुष सुभायन रिसाइकै)
ललाइकै	5.28.8	(मरतो कहां जाइ .. लटि लालची ललाइकै)
हरषिकै	1.6.23	(लगे देन हिय हरषिकै)

वर्तमान कालिक कृदन्त–

गनत	1.68.6	(नृपहि गनत गए तारे)
गावत-नाचत	1.4.8	(गावत-नाचत मो मन भावत)
चढ़ावत	1.92.5	(लख्यो न चढ़ावत न तानत न तोरत हू)

भूतकालिक कृदन्त–

बैठी	6.19.1	(बैठी सगुन मनावति माता)
बैठेहि	2.68.2	(बैठेहि रैनि विहानी)

2.5.1.2.2.5–क्रियाविशेषणों से रचित क्रियाविशेषण–

क्रियाविशेषण + निपात, परसर्ग, परप्रत्यय

अजहूँ	6.1.1	अब लगि	4.2.1

अब लौ	5.49.1	आगे की	2.77.3
जब तें	1.78.1		

द्विरूक्ति

कबहुं कबहुंक	1.12.1	ठुमुकु ठुमुकु	1.33.1
फिरि फिरि	7.19.5	बार बार	1.38.1

क्रियाविशेषण + क्रियाविशेषण —

आगे पाछे	1.74.1	इत उत	7.4.6
जहँ तहँ	1.1.6		

5.1.2.3–इनके अतिरिक्त क्रियाविशेषणों की संरचना के निम्न आधार भी हैं–

(1) नामिक + विशेषण = क्रियाविशेषण

पल आध (में) 5.14.2 बार कोटि 5.38.4 (करोड़ोंबार)

(2) सर्वनाम + सर्वनाम + नामिक = क्रियाविशेषण

अपनी अपनी बार 7.19.5 (अपने अपने ओसरों पर)

(3) सर्वनाम + नामिक = क्रिवि०

तेहि अवसर 7.21.25 तेहि समय 6.13.5

(4) विशे0 + नामिक = क्रिवि0

बड़ी बार 2.52.3 (बहुतदेर)

सब दिन 7.24.1

(5) समुच्चय बोधक + क्रिवि0 = क्रिवि०

औरो कहुँ 6.18.3

2.5.2 – अव्यय –

2.5.2.1 – सामान्य अव्यय –

2.5.2.1.1 – समुच्चय बोधक अव्यय –

समुच्चय बोधक अव्यय दो वाक्यों, वाक्यांशों अथवा शब्द समूहों को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं। गीतावली में प्रयुक्त समुच्चय बोधक अव्यय अर्थ की दृष्टि से संयोजक, विभाजक, विरोधवाचक, परिमाणवाचक, उद्देश्यवाचक, संकेतवाचक और स्वरूप वाचक हैं। नीचे सभी का उदाहरण सहित वर्णन है –

2.5.2.1.1.1 – संयोजक

अरु (20 आ०) 7.21.12, 1.22 11, 5.9.2, 6.16.3

औ (3 आ०) 5 25.3, 1.79.3, 1.88.1

कै 5.12.2 (और के अर्थ के) तपबल भुजबल कै सनेहबल

कहाँ .... कित 1.78.3

(कुलिस कठोर कहां संकर धनु, मृदु मूरति किसोर कित ए री)

कहँ .... कहँ 5.11.2

(कहँ रघुपति सायक रवि, तम अनीक कहँ जातुधानकी)

कहँ .... कहँ 5.11.3

(कह हम पसु साखामृग चचल....कहँ हरि सिव अज पूज्य ..)

2.5.2.1.1.2 **विभाजक** –

कि 7.25.4

किधौं 2.23 3, 7.4.5, 6.17.1, 2.70.2, 6.4.2, 7,10.1, 2 28.3, 2.53.1. 1.89,7, 2 30.2 (10 आ०)

कैधौं 3.17 4, 1.95.2

कै 6.8 2, 2.64.5, 5.28.6, 2.65.2, 3 17 4 (5 आ०)

नतु 5.11.2 (नही तो)

नतरू (नही तो) 1 85 2, 1 68 9, 5.23.3, (3 बार)

नाहित (नही तो) 6.2.4, 5 28.4

दो वाक्यों अथवा वाक्यांशों को जोड़ने वाले रूप –

कि .... नतरू 2.57.4

(कि आन सु दर-जिआउ... नतरू मोको मरन अमिय पिआउ)

किधौ .... किधौ 2.24 3

(किधौ सिगार ...मिलि चले.... अद्भुत त्रयी किधो पठई है) 1.65 2

किधौ .. .... किधौं ...... किधौ 1.65.3

(किधौ रवि .... किधौ हरि . ... किधौं .)

कैधौ .... कैधौं 6 11.1

(कैधौ मोहि भ्रम कैधौ काहू कपट ठयो हैं) तथा 2 41.1

कै .... . कैधौ .... कैधौ . . .... कैधौ 1 86.4

(कै है कोऊ कियो छल, कैधौं कुल को प्रभाव, कैधौं लरिकई है ...कैधौ– करतार इन्हही को निरमई है)

कै.... ... कैधौ 1 82 2

(तनु धरे कै अनंग नैननि को फल कैधौ)

कै ... . कै 1.78.2

(कै ए सदा वसहु इन्ह नयनन्हि कै ए नयन जाहु जित एरी)

2.5.2.1.1.3 **विरोधमूलक** –

पै (पर के अर्थ मे) 1.8.5, 2.41.2, 2.28 2, 1.85.2, 5,20.1

तापर 2.64.2 (तापर मोको प्रभु कर चाहत)

2.5.2.1.14 –**परिमाणवाचक**–

ताते/ताते 2 61.1 (ताते हौ देन न दूषन तोही) तथा 2.74.4 5.44.3. 7.3.5

ताहितें 2.19.3 (ताहितें बारहि बार कहति तोही)

ताहीतें 5.15.4 (तुलसी रसना रुखी, ताहीतें परत गायो)

सो 3.7.2 (कहे कटु वचन रेख नांधी मै तात छमा सो कीजै)

तथा 3.2.2, 1.12.1, 2.63.2 (8 बार)

2.5.2.1.1.5–उद्देश्य वाचक–

जातें/जाते 2.2 1 (वारौं सत्य वचन श्रुत सम्मत जाते हौं बिछुरत चरन तिहारे) 2.25.3, 6.2.4

ज्यौं 5.30.1 (करिहौ सोइ, ज्यौं साहिबहि सुहाउँगो)

2.5.2.1.1.5–संकेतवाचक–

तौ ·· ······· जौ 1.26.7

(···· ·· रघुनाथ रूप गुन तौ कहौ जो बिधि होहि वनाए)

जौ ·· ······· तो 2.6 3

(जौ हठि नाथ राखिहौं मो कह तौ सग प्रान पठावौंगी)

तथा 2.9.2, 6.12.1, 2.61.3, 6 8.1, 5.13.1, 2.59.3, 2.73.3, 2.76.4, 2.74.3

जोपै··········तौ 2.62.1

(जौपै मातु मते मह ह्वैहौं तो जननी ·· ····)

जद्यपि··· ···· · तउ 5.19.3

(जद्यपि निसि वासर ·· ·· मिटति न ·······तउ···· ···)

जद्यपि ··········तथापि 6.2.5

(जद्यपि ·······कह्यो तथापि न कछु ······)

जद्यपि ··· ······ तदपि 1.16.2

(जद्यपि बुधिवल ···· तदपि लोक लोचन) तथा 2.2.4

तौ ··· ··· तौ 2.54.4

(जीवौं तो विपति सहौं ······ मरो तो मन पछितायो) तथा 2.3.4

······· जदपि · ···· 1.80.5

(प्रताप बढ़त कुँवरन को जदपि संकोची बानि है)

········जद्यपि ······· 6.13.3

(रघुनंदन बिनु बंधु कुअवसर जद्यपि धनु दुसरे हैं)

तथा 2.65.2, 2.74.2

······· जा ···· ··· 1 58.2

(जो चलिहै रघुनाथ पयादेहि सिला न रहिहि अवनी)

तथा 1.50.1, 1.89.8, 2.3.1, 2.86.2, 2.87.4

······· जो ···· 5.6.3

(निदरि अरि रघुवीर वल लै जाऊं जौ हठि आज) 2.83.3, 2.72.2
.........जोपैं 2.7.1
(... ....सरपुर समान मोको जो पै पिय परिहर्यो राजु)
.........तदपि......... 2.71.1
(तदपि कृपालु करौं बिनती ....)
2.87.3, 5.49.3, 2 53.2
.........तौ......... 1.89.9
(... ...भंजौं मृनाल ज्यौं तौ प्रभु अनुग कहावौं)
3.15.4, 2.1.3, 6.8.3, 5.13.4, 2.11.3
.........जूपै 5.12.1
(.... ...जूपै राम रन रोपे)

2.5.2.1.1.7–स्वरूप वाचक–

जो– 2.59.2 (राज देन कहि वोलि नारि वस मैं जो कह्यो वन जान) तथा 2.53.2, 6.4.4

मनहु≃मनहुं≃मनु≃मनो≃मानौं≃मानहु≃मानहुँ–
(19+55+6+15+34+3+6+9) = (147)
भू सुंदर करुनारस पूरन मनहुं जुगल जल जाए– 1.26.4
रहे घेरि राजीव उभय मनो चंचरीक कछु हृदय डेराई– 1.108.8

जिमि	1.31.2	(तन दुति मोरचंद जिमि झलकै)
जनु–	7.15.2	जनु रवि सुता सारदा सुरसरि मिलि चली ललित त्रिवेनी)
वरु–	1.29.4	(ह्वै वरु विहंग विलोकिय वालक)
	5.9.4	(तुलसिदास यह त्रास जानि जिय वरु दुख दुसह सहौं)

2.5.2.1.2–विस्मय सूचक अव्यय–

हा–	2.56.4	(हा रघुपति कहि पर्यो अवनि)
	5.20.2	('हा' धुनि खगी लाज पिंजरी नहं)
हहा–	2.64.3	(चित्रकूट चलिए सब मिलि वलि छमिए मोहि हहा है)
हाय! हाय!	2.39.4	(हाय! हाय! राय बाम विधि भरमाए)- तथा 2.28.5

2.5.2.2–विस्मय सूचक के समान प्रयोग–

कहा– 2.61.3 (तौ तोरी करतूति मातु! सुनि प्रीति प्रतीति कहा हौ .. ....) (आ० 17)

धन्य– 6.11.4 (धन्य भरत ! धन्य भरत ! करत भयो)
धिग– 2.56.3 (सांचेहु सुत वियोग सुनिवे कह धिग विधि मोहि जिआयो)
जननी ! तू जननी ! 2.60.2 (जननी ! तू जननी ! तौ कहा कहौं ·······)
'साधु, साधु' 1.86.6 (कहि' साधु, साधु' गाधिसुवन सराहे राउ)
स्वीकार बोधक प्रयोग–'भलेहि नाथ' 7.27.5; 'भले तात' 5.25.4

2.5.2.3–परसर्गों के रूप में प्रयुक्त अव्यय पदावली–

भरि 1.5.6 (नरिजनन) 3.14.2, 5.16.9, 1.9.3, 1.11.3 (6 बार)

लौं 2.59.3, 2.77.3, (2 बार) (अवधिलौं)

लगि 4.2.2, 4.2.1, 1.110.2, 7.17.7

2.5.2.4–पादपूरक पदावली–

धौं–इसका प्रयोग सर्वत्र संदेह की स्थिति में प्रश्न वाचक वाक्यों के साथ हुआ है–यथा–
(कहौ सो विपिन है धौं केतिक दूर) 2.13.1,
(कैकयी करी धौं चतुराई कौन)– 2.83.1 (19 आ०)
सही–(भुवन अभिराम वहुकाम सोभा सही) 7.6.1
(तुलसी भरत समुझि सुनि राखी राम-सनेह सही) 7.37.3

2.5.2.5–अवधारण बोधक प्रयोग–

हू 2.30.1 (तापस हू वेष किये कोटि काम फीके हैं)
हूं 1.6.25 (भरत लषन रिपुदवन हूं धरे नाम विचारो)
ऊ 1.61.3 (विनय वड़ाई ऋषि राजऊ परसपर ·······)
ही 7.31.1 (गौने मौन ही बारहि बार परि परि पांय)
हु 2.32.2 (मुनिहु मनोरथ को अगम अलभ्य लाभ)
तो 2.83.2 (पुरवासिन्ह के नयन नीर विनु कवहुं तो देखतिहौंन)
तौ 3.9.4 (समुझि सहमे सुठि, प्रिया तौ न आई उठि)
न 2.37.1 (आली ! काहू तौ बूझो न पथिक कहाँ धौं सिधैहैं)

———

3

3.1 वाक्य विचार

आलोच्य पुस्तक में प्राप्त वाक्यों को संरचना की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया गया है।

(1) वाक्य, (2) उपवाक्य, (3) वाक्यांश,

3.1.1 वाक्य — किसी एक विचार या भाव (अर्थात् अर्थ) को व्यक्त करने वाली भाषिक इकाई वाक्य हैं।

3.1.1.1 विश्लेष्य पुस्तक के वाक्य—

गीतावली में संरचना की दृष्टि से दो प्रकार के वाक्य मिले हैं.—

1. एक उपवाक्यीय वाक्य,

2. बहु उपवाक्यीय वाक्य।

3.1.1.1 1 एक उपवाक्यीय वाक्य— एक उपवाक्यीय वाक्यों का विश्लेषण उपवाक्य संरचना के साथ किया जाएगा। यहां केवल बहु-उपवाक्यीय वाक्यों का ही विश्लेशण किया जा रहा है।

3 1.1.1 2 बहु उपवाक्यीय वाक्य—

इस प्रकार के वाक्यों में एक से अधिक उपवाक्यीय वाक्य मिले है—
गीतावली में प्राप्त बहु उपवाक्यीय वाक्यों को सुविधा की दृष्टि से तीन वर्गों में रखा गया है—

1. द्विव उपवाक्यीय वाक्य

2. त्रि उपवाक्यीय वाक्य

3. अधिक उपवाक्यीय वाक्य

3.1.1.1.2.1 द्विव उपवाक्यीय वाक्य—

इस कोटि के उपवाक्यों में एक अनिवार्यतः प्रधान उपवाक्य होता है जो वाक्य का आधार होता है। दूसरा उपवाक्य उसका समानाधिकरण अथवा आश्रित उपवाक्य होता है—
इनके मुख्यतया दो प्रकार हैं:—

1. संयुक्त द्विव उपवाक्यीय वाक्य

2. मिश्र द्विव उपवाक्यीयवाक्य

3.1.1.1.2.1.1 संयुक्त द्विउपवाक्यीय वाक्य–

इस प्रकार के वाक्यो मे (एक तो प्रधान होता ही है) दूसरा उपवाक्य प्रधान उपवाक्य का समानाधिकरण होता है। गीतावली मे प्राप्त इन वाक्यों मे से बहुत कम उपवाक्यो मे सयोजक अरू, कै, मनहुँ, जैहे, तैसेई मिले हैं। अन्य उपवाक्य ऐसे हैं जिनमे सयोजक के लिए कोई अन्य तत्व नहीं जुड़ा अथवा शून्य संयोजक है। प्राप्त सभी प्रकार के वाक्यो की संख्या साथ ही दी गई है, तथा कुछ वाक्य उदाहरण स्वरुप दिए गए है – यथा

प्रधान उपवाक्य	सयोजक	प्रधान उपवाक्य	सं० 450
मोती जायो सीप में	अरू	अदिति जन्यो जग भानु	1.22.11
कै ए सदा वसहु इन नयननि्ह	कै	ए नयन जाहु जिन ए री	1.78.22
मैं देखी जब जाइ जानकी	मनहुँ	विरह मूरति मन मारे	5.18.1
तैसे कल पावत	जैसे	मुनीज बए हैं	1.11.2
जैसे सुने	तैसेई	कुवर सिरमौर हैं	1.73.2
बोले राज देने को	–	रजायसु भो कानन को	2.33.1
तब की तुही जानति	–	अबकी हौ ही कहत	5.8.1

3.1 1 1.2 1 2 मिश्र द्वि उपवाक्यीय वाक्य–

इन उपवाक्यो मे एक तो प्रधान उपवाक्य होता और दूसरा उपवाक्य प्रधान का आश्रित होता है, इन्हे मिश्र द्वि उपवाक्यीय वाक्य कहा गया है। ये मिश्र द्वि उपवाक्यीय वाक्य तीन प्रकार के हैं–

1. नामिक उपवाक्य युक्त
2. विशेषण उपवाक्य युक्त
3. क्रियाविशेषण उपवाक्य युक्त

3.1.1.1.2.1.2.1 नामिक उपवाक्य युक्त मिश्र वाक्य–

ऐसे वाक्य जिनमे एक प्रधान उपवाक्य हो और दूसरा आश्रित उपवाक्य नामिक हो प्रस्तुत पुस्तक मे दो प्रकार के हैं–

3.1.1.1.2.1.2.1.1 प्रधान उपवाक्य	नामिक उपवाक्य	संख्या 39
प्रेम विवस मागत महेस सो	देखत ही रहिए नित एरी	1.78.2
सुख नींद कहति	आली आइहौ	1.21.1
वन देवनि सिय कहन कहति यो	छल करि नीच हरी हौं	3.7.3
कोउ समझाइ कहे किन भूपहि	बड़े भाग आए इत एरी	1.78.3

3.1.1.1.2.1.2.1.2 नामिक उपवाक्य	प्रधान उपवाक्य	संख्या 12
कब ऐहौं मेरे बाल कुसल घर	कहहु काग फुरि बाता	6.19.1
निरखि मनोहरताई सुखपाई	कहै एक एक सों	1.75.2

ह्वैहैं कहा विभीषन की गति	रही सोच भरि छाती	6.7.3
इन्हहिं बहुत आदरत महामुनि	समाचार मेरे नाह कहे री	2.42.2

3.1.1.1.2.1.2.2 **विशेषण उपवाक्य युक्त मिश्र वाक्य–**

इन उपवाक्यों में आश्रित उपवाक्य कोई विशेषण होता है। इनके दो प्रकार हैं –

3.1.1.1.2.1.2.2.1 **प्रधान उपवाक्य**	**विशेषण उपवाक्य**	**संख्या 25**
अपनों अदिन देखिहौं डरपत	जेहि विप वेलिवई है	2.78.2
टर्यो न चाप तिन्हतें	जिन्ह सुभटनि कौतुक कुधर उखारे	1.68.8
जाने सोई	जाके उर कसकै करक सी	1.44.2
एउ देखिहैं पिनाकु नेकु	जेहि नृपति लाज ज्वर जारे	1.68.4

3.1.1.1.2.1.2.2.2 **विशेषण उपवाक्य**	**प्रधान उपवाक्य**	**संख्या 9**
महाराज आयसु भो जोई	सोई सही है	5.24.4
कानन पठाए	पितु मातु कैसे ही के हैं	2.30.3
विरह विषम विष बेलि बढ़ी उर	ते सुख सकल सुभाय दहे री	5.49.2
निगम अगम मूरति महेस मति	सोई मूरति भइ जानि नयन पथ इकटक	
जुवति बराय बरी	तें न टरी	1.57.3

3.1.1.1.2.1.2.3 **क्रिया विशेषण उपवाक्य युक्त मिश्र वाक्य**

इस प्रकार के वाक्यों में आश्रित उपवाक्य कोई क्रिया विशेषण उपवाक्य होता है–इसके दो प्रकार हैं–

3.1.1.1.2.1.2.3.1 **प्रधान उपवाक्य**	**क्रिया विशेषण उपवाक्य**	**संख्या 45.**
बिबुध बैद बरबस आनौं धरि	तौ प्रभु अनुग कहावौं	6.8.3
उपमा एक अभूत भई	जब जननी पट पीत ओढ़ाए	1.26.6
बार बार हिहिनात हेरि उत	जो बोलै कोउ द्वारे	2.86.2
बरपिहैं सुमन भानुकुल मनि पर	तब मोको पवनपूत लै जैहैं	5.50.3

3.1.1.1.2.1.2.3.2 **क्रियाविशेषण उपवाक्य**	**प्रधान उपवाक्य**	**सं० 21**
जौ तनु रहै बरप बीते बलि	कहा प्रीति इहि लेखे	2.4.4
जौ चलिहैं रघुनाथ पयादेहि	सिला न रहिहि अवनी	1.58.2
बिधि दाहिनो होइ तौ	सब मिलि जनम लाहु लुटि लीजै	2.1.3
करि करुना भरि नयन बिलोकहु	तब जानौं अपनायो	5.44.3

3.1.1.1.2.2 **त्रिउपवाक्यीय वाक्य**

इन उपवाक्यों के तीन उपवाक्यों में से एक अनिवार्यतः प्रधान उपवाक्य होता

है। शेष दो उपवाक्यों में से एक प्रधान एक आश्रित, या दोनों प्रधान अथवा दोनों पाश्रित हो सकते हैं–

त्रि उपवाक्यीय वाक्य दो प्रकार के हैं–

1. संयुक्त त्रि उपवाक्यीय वाक्य

2. मिश्र त्रि उपवाक्यीय वाक्य

3.1.1 1.2.2.1 संयुक्त त्रि उपवाक्यीय वाक्य

एक से अधिक प्रधान उपवाक्यों वाले वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं। ये संयुक्त उपवाक्यीय वाक्य दो प्रकार के हो सकते हैं–

3.1.1.1.2.2.1.2–

प्रधान उपवाक्य$_1$ +	प्रधान उपवाक्य$_2$ +	प्रधान उपवाक्य$_3$	संख्या 92.
ऐसी ललना सलौनी न भई न है		न होनी	2.21.1
अवलोकहु भरि नैन	विकल जनि होउ	करहु सुविचार	2.29.5
पट उड़त	भूषन खसत	हसि हसि अपर सखी झुलावही	7.19.4

3.1.1.1.2.2.1.2 प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + आश्रित उपवाक्य

इन वाक्यों में दो उपवाक्य प्रधान व तीसरा कोई आश्रित उपवाक्य होता है। ये आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के मिले हैं। जो निम्नलिखित हैं –

3.1.1.1 2.2.1.2.1 प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + नामिक उपवाक्य

3.1.1.1.2,2.1.2.1.1 प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + नामिक उपवाक्य सं. 4

मातु मुदित मगल सजें कहै मुनि प्रसाद भए सकल सुमंगलमाई 1.10.3.5

प्र0 उपवाक्य$_1$ प्र0 उपवाक्य$_2$ ना0 उपवा0

3.1.1.1.1.2,1.2.1.2 प्र0 उपवा0$_1$ + नामिक उपवाक्य$_2$ + प्र0 उपवाक्य सं0 24,

कह्यो लषन हत्यो हरिन कोपि सिय हठि पठयो बरियाई 3.6.2

प्र0 उपवा0$_1$ ना0 उपवा0 प्र0 उपवा0$_2$

3.1.1.1.2.2.1.2.2

प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + विशेषण उपवाक्य

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार है,–

3.1.1.1.2.2.1.2.2 1

प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + विशेषण उपवाक्य सं0 1.

मेरो जीवन जानिय ऐसोइ जिऐ जैसो अहि जासु गई मनिफनकी 2.71.3

प्र0 उपवा0$_1$ प्र0 उपवा0$_2$ विशे0 उपवा0

3.1.1.1.2.2.1.2.2.2

विशेषण उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ सं0 4.

याके चरन सरोज कपट तजि- ते कुल जुगल सहित- यह न कछु
जे भजिहैं मन लाई तरिहैं भव अधिकाई 1.16.4

विशे0 उपवाक्य प्र0 उपवा0$_1$ प्र0 उपवा0$_2$

3.1.1.1.2.2.1.2.3

प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + क्रिया विशेषण उपवाक्य

आलोच्य ग्रन्थ में इसके निम्न प्रकार मिले हैं–

3.1.1.1.2.2.1.2.3.1

प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ + क्रियाविशेषण उपवाक्य संख्या 8.

दूधभात की दोनी सोने चोच मढ़ैहौं जब सिय सहित विलोकि नयन-
दैहौं भरि राम लषन उर लैहौं। 6.19.2

प्र0 उपवा0$_1$ प्र0 उपवा0$_2$ क्रियावि0 उपवा0

3.1.1.1.2.2.1.2.3.2

प्रधान उपवाक्य$_1$ + क्रियाविशेषण उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य$_2$ सं0. 5.

सुनहु पथिक जौ राम मिलहिं वन कहियो मात संदेसो 2.87.4

प्र0 उपवा0$_1$ क्रियावि0 उपवा0 प्र0 उपवा0$_2$

3.1.1.1.2.2.1.2.3.3

क्रियाविशेषण उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य$_1$ + प्रधान उपवाक्य$_2$ सं0. 2

जौ चलिहौ तौ चलौ चलिके वन सुनि सिय मन अवलंब लही है
2.9.2

क्रियावि0 उपवा0 प्र0 उपवा0$_1$ प्र0 उपवा0$_2$

3.1.1.1.2.2.2 **मिश्र त्रि उपवाक्यीय वाक्य**

इन उपवाक्यों में एक उपवाक्य प्रधान और शेष दो उपवाक्य आश्रित होते हैं। ये आश्रित उपवाक्य नामिक, विशेषण क्रिया विशेषण में से कोई भी दो हो सकते हैं और साथ ही इनका क्रम भी बदल सकता है। गीतावली में प्राप्त इस प्रकार के वाक्यों का प्रमुख सूत्र यह है–

मिश्र वाक्य— प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य$_1$ + आश्रित उपवाक्य$_2$

इसके तीन प्रकार आलोच्य ग्रन्थ में मिले हैं–

3.1.1.1.2.2.2.1

प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य$_1$ + आश्रित उपवाक्य$_2$

इसके दो प्रकार हैं–

(अ) नामिक उपवाक्य$_1$ + नामिक उपवाक्य$_2$ + प्रधान उपवाक्य सं0 2.

आयोसरन भजो न तजौ तिहि यह जानत रिपिराउ 5.45.2

ना0 उपवा0_1 ना0 उपवा0_2 प्र0 उपवा0

(ब) प्रधान उपवाक्य + नामिक उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य सं0 2.

अनुज दियो भरोसो तौलौ है सोचु खरो सो सिय समाचार प्रभु जौलौ न लहै 3.10. 3

प्र0 उपवा 0 ना0 उपवा0 क्रियावि0 उपवा0

3.1.1.1.2.2.2.2

प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य$_1$ + आश्रित उपवा0_2

इसके दो प्रकार मिले हैं—

(अ) विशेषण उपवाक्य$_1$ + विशेषण उपवाक्य$_2$ + प्रधान उपवाक्य सं. 3.

गावहि सुनहि नारि नर पावहिं सब अभिराम 2.47,22

विशे0 उपवा0_1 विशे0 उपवा0_2 प्र0 उपवा0

(ब) विशेषण उपवाक्य + प्रधान उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य सं. 1.

मोको जोइ लाइय लागे सोइ उत्पति है कुमातु ते तनको 2.71.4.

विशे0 उपवा0 प्र0 उपवा0 क्रियावि0 उपवा0

3.1.1.1.2.2.2.3

प्रधान उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य$_1$ + आश्रित उपवाक्य$_2$

इनके तीन प्रकार है--

(अ) प्रधान उपवा. + क्रियाविशेषण उपवा + क्रियाविशेषण उपवा. सं. 6.

गुरु वशिष्ठ समुझाय कह्यो तब हिय हरपाने जाने शेप सयन 1.51.2

प्र0 उपवा0 क्रियावि0 उपवा0_1 क्रियावि0 उपवा0_2

(ब) प्रधान उपवा0 + क्रियाविशेषण उपवा0 + नामिक उपवा0 सं. 2.

राम कामतरू .. रहौगी कहौगी तब साँची कही अंबा सिय 1.72.3

प्र0 उपवा0 क्रियावि0 उपवा0 ना0 उपवा0

(स) प्रधान उपवाक्य + क्रियाविशेषण उपवाक्य + विशेषण उपवाक्य सं. 1.

जानत हौ सबहीके मनकी तदपि कृपाल करो विनती सोइ सादर सुनहु दीन हित जानकी 2.71.1

प्र0 उपवा0 क्रियावि उपवा0 विशे0 उपवा0

3.1.1.1.2.3 **अधिक उपवाक्यीय वाक्य**

तीन से अधिक उपवाक्यों वाले वाक्य को अधिक उपवाक्यीय वाक्य के अन्तर्गत रखा जा सकता है इसकीभी कई कोटियाँ हो सकती है। गीतावली में इसकी मुख्य निम्न कोटियाँ प्राप्त हुई हैं–

1. चतुः उपवाक्यीय वाक्य
2. पंच उपवाक्यीय वाक्य

3.1.1.1.2.3.1 चतुः उपवाक्यीय वाक्य

इन वाक्यों के चार उपवाक्यों में से एक प्रधान दो आश्रित, दो प्रधान एक आश्रित तीनों प्रधान अथवा तीनों आश्रित हो सकते हैं –

ये दो प्रकार के हैं—

1. संयुक्त चतुः उपवाक्यीय वाक्य
2. मिश्र चतुः उपवाक्यीय वाक्य

3.1.1.1.2.3.1.1 संयुक्त चतु उपवाक्यीय वाक्य

एक से अधिक प्रधान उपवाक्यों वाले वाक्य को संयुक्त उपवाक्यीय वाक्य कहा जाता है। आलोच्य ग्रन्थ में संयुक्त चतुः उपवाक्यीय वाक्य तीन प्रकार के हैं–

3.1.1.1.2.3.1.1.1 प्र.उपवा.1 + प्र.उपवा 2 + प्र.उपवा.3 + प्र.उपवा 4 सं. 6

इन्हही ताडका मारी मगमुनितिय तारी ऋषि मख राख्यो रन दले हैं दुवन 1.83.2

प्र. उपवा. 1 प्र. उपवा. 2 प्र. उपवा. 3 प्र. उपवा. 4

3.1.1.1.2.3.1.1.2 प्र.उपवा.1 + प्र.उपवा.2 + प्र.उपवा.3 + आश्रित उपवाक्य

इसके तीन प्रकार हैं–

3.1.1.1.2.3.1.1.2.1 प्र. उपवा. + ना. उपवा. + प्र. उपवा. 2 प्र. उपवा. 3 सं.1

जानत न	को है।	कहा कीबो	सो बिसरिगे	2.32.3
प्र उपवा. 1	ना. उपवा.	प्र. उपवा. 2	प्र. उपवा. 3	

3.1.1.1.2.3.1.1.2.2 प्र. उपवा.1 + क्रिवि. उपवा. + प्र.उपवा.2 + प्र.उप.3 सं.3

कहन चहयो संदेस	नहिं कहयो	पिय के जिय की जानि	हृदय दुसह दुख दुरायो	5.15.2
प्र. उपवा. 1	क्रिवि. उपवा.	प्र. उपवा. 2	प्र. उपवा. 3	

3.1.1.1.2.3.1.1.2.3–

क्रिवि. उपवा. +	प्र. उपवा 1 +	प्र. उपवा.2 +	प्र. उपवा.3	सं. 1
जब रघुबीरपयानों कीन्हौं	क्षुभित सिंधु	डगमगत महीधर	सजिसारंग कर लीन्हौं	5.22.1
क्रिवि. उपवा.	प्र. उपवा. 1	प्र. उपवा. 2	प्र. उपवा. 3	

3.1.1.1.2.3.1.1.3–

प्र. उपवा. 1 + प्र. उपवा. 2 + आश्रित उपवा. 1 + आश्रित उपवा. 2

इसके तीन प्रकार प्राप्त हुए है–

3.1.1.1.2.3.1.1.3.1–

विशे. उपवा. 1 +	विशे. उपवा. 2 +	प्र. उपवा. 1 +	प्र. उपवा. 2	सं. 2
जे सुक सारिका	मतु ज्यों ललकि	तेऊ न पढ़त	न पढ़ावै मुनिबाल	3 9.3
पाले-विशे. उपवा. 1	लाले-विशे उपवा. 2	प्र. उपवा. 1	प्र. उपवा 2	

3.1.1.1.2.3.1.1.3.2–

प्र. उपवा. 1 +	प्र. उपवा. 2 +	क्रिवि. उपवा. 1 +	क्रिवि. उपवा. 2	सं. 2
विरथ विकल कियो	छीन लीन्हि सिय	घन घायनि अकुलान्यो	तव असि काढ़ि काटि पर पांवर लै प्रभु सिया परान्यो	3.8.2
प्र उपवा. 1	प्र. उपवा. 2	क्रिवि. उपवा. 1	क्रिवि. उपवा. 2	

3.1.1.1.2.3.1.1.3.3–

क्रिवि. उपवा. 1 +	प्र. उपवा. 1 +	क्रिवि. उपवा. 2 +	प्र. उपवा. 2	सं. 1
जीवौं	तौ बिपति सहौं- निसि बासर	मरौं	तौ मन पछि-	2 54.4
क्रिवि. उपवा. 1	प्र. उपवा. 1	क्रिवि. उपवा. 2	तायो-प्र.उपवा. 2	

3.1.1.1.2.3.1.2–मिश्र चतु उपवाक्यीय वाक्य–

इस श्रेणी के उपवाक्यों में एक उपवाक्य प्रधान और शेष तीन उपवाक्य आश्रित होते हैं जो नामिक, विशेषण अथवा क्रिया विशेषण कुछ भी, कहीं भी हो सकते है–

प्रस्तुत ग्रन्थ में इस प्रकार के वाक्य निम्नलिखित हैं–

3.1.1.1.2.3.1.2.1–

ना. उपवा. 1 +	ना. उपवा. 2 +	ना. उपवा. 3 +	प्र. उपवा.	सं 1
अवध गए घौ फिरि	कैधौ चढे विंध्य गिरि	कैधौ कहुं रहे	सो कछु न काहू कही है	2.41.1
ना. उपवा. 1	ना. उपवा. 2	ना. उपवा. 3	प्र. उपवा.	

3.1.1.1 2.3.1.2.2–

प्र उपवा. +	क्रिवि. उपवा. 1 +	क्रिवि. उपवा. 2 +	क्रिवि. उपवा. 3	सं. 1
करुनाकार की करुना भई	मिटीमीच	लहिलंक संक गई	काहूसोंन खुनिस खई	5.37.1
प्र. उपवा.	क्रिवि. उपवा. 1	क्रिवि. उपवा 2	क्रिवि. उपवा. 3	

3.1.1.1.2.3.2–पंच उपवाक्यीय वाक्य–

इन वाक्यों के पांच उपवाक्यों में से एक अनिवार्यतः प्रधान होता है। शेष चार में से कोई भी प्रधान व आश्रित हो सकते हैं। प्रस्तुत सामग्री में प्राप्त इन वाक्यों की संरचना इस प्रकार है–

3.1.1.1.2.3.2.1–

प्र. उपवा. 1 + प्र. उपवा. 2 + प्र.उपवा. 3 + प्र.उपवा. 4 + प्र.उपवा. 5 सं. 2
यह जलनिधि मथ्यो खन्यो लंघ्यो बांध्यो अंचयो है 6.11.5
प्र. उपवा. 1 प्र. उपवा. 2 प्र उपवा. 3 प्र. उपवा. 4 प्र. उपवा. 5

3.1.1.1.2.3.2.2–

प्र.उपवा. + ना.उपवा. 1 + ना.उपवा. 2 + ना.उपवा. 3 + ना.उपवा. 4 सं.1
सीता राम हेरि हेरि हेरि हेली हिय के
लषननिहारि हरत हैं 2.26.3
ग्राम नारिकहैं
प्र. उपवा ना. उपवा. 1 ना. उपवा. 2 ना. उपवा. 3 ना. उपवा. 4

3.1.2–उपवाक्य–

वह वहिकेन्द्रिक संरचना है जो गठन एवं अर्थ की दृष्टि से पूर्ण इकाई है। किसी वाक्य में एक अथवा अधिक उपवाक्य होते हैं–

3.1 2.1–विश्लेष्य पुस्तक के उपवाक्य–

संरचना की दृष्टि से गीतावली में दो प्रकार के उपवाक्य हैं। साधारण वाक्यों (जिनमें एक ही क्रियापद है) का भी विश्लेषण उपवाक्यों के साथ ही किया जा रहा है–

1. पूर्ण उपवाक्य
2. अपूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1–पूर्ण उपवाक्य–

वे उपवाक्य जो संरचना की दृष्टि से पूर्ण हैं अर्थात् जिनमें अनिवार्य घटक (कर्ता एवं क्रियापद) या तो उपस्थित रहते हैं या उनमें से किसी एक (दोनों नहीं) की अनुपस्थिति अनुभव की जाती है।

क्रिया की पूर्णार्थकता के विचार से पूर्ण उपवाक्य दो प्रकार के हैं–

1. पूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण वाक्य
2. अपूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.1.1–पूर्णार्थक किया युक्त पूर्ण उपवाक्य–

जिन उपवाक्यों में किसी पूरक की आवश्यकता नहीं होती वे इस कोटि के अन्तर्गत आते हैं। पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य दो प्रकार के हैं–

1. सकर्मक पूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य

2. अकर्मक पूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य

2.1.2.1.1.1.1–सकर्मक पूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य–

ये वे उपवाक्य है जिनमें क्रियापद एवं कर्म अनिवार्य रूप से हों – इनके दो प्रकार हैं —

1. कर्ता सहित सकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

2. कर्ता रहित सकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1;1.1.1.1 कर्ता सहित सकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्तपूर्ण उपवाक्य

वे उपवाक्य जिसमें कर्ता, कर्म और क्रियापद अनिवार्य घटक हों। इनके चार प्रकार प्रस्तुत ग्रन्थ में प्राप्त हुए है –

3.1.2.1.1.1.1.1.1 कर्ता + कर्म + क्रियासंरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार प्राप्त हुए हैं–

1. राम राजीव लोचन उघारे 1.37.5 सं, 42
कर्ता कर्म क्रिया

2. ब्रह्मादि प्रसंसत अवधवास 7.22.11 सं. 38
कर्ता क्रिया कर्म

3. पंथ कथा रघुनाथ चरित की तुलसीदास सुनि गाई 2.89.4 सं. 31
कर्म कर्ता क्रिया

4. मुनि मन हरत मंजु मसि बुंदा 1.31.4 सं. 31
कर्म क्रिया कर्ता

5. लाँघि न सके लोक विजयी तुम जासु अनुज कृत रेखु 6.1.6 सं. 5
क्रिया कर्ता कर्म

6. लगे पढ़न रक्षा ऋचा ऋषिराज 1.6.16 सं. 12
क्रिया कर्म कर्ता

3.1.2.1.1.1.1.1.2 कर्ता + कर्म + क्रियाविशेषण + क्रियासंरचना

गठन की दृष्टि से आलोच्य ग्रन्थ में इसके निम्न प्रकार मिले हैं—

तापसकिरातिनकोल मृदुमूरति मनोहर मन वरी 3.17.7 सं. 5
कर्ता कर्म क्रिवि० क्रि०

प्रिय निठुर वचन कहे कारन कवन 2.8.1 सं.3
कर्ता कर्म क्रि० क्रिवि०

सिष्य सचिव सेवक सखा सादर सिर नाए 1.6.2 सं. 15
कर्ता क्रिवि० कर्म क्रि०

मुनिवर करि छठी कीन्ही वारहे की रीति 7.35.1 सं 5

कर्ता क्रिवि० क्रि० कर्म

मुनि पदरेनु रघुनाथ माथे धरी है 1.92.1 सं.19

कर्म कर्ता क्रिवि० क्रि०

स्यामल गौर सुमुखि निरखु भरि नैंन 2.24.1 सं 3
किसोर पथिक दोउ

कर्म कर्ता क्रि० क्रिवि०

कौसल्या के विरह मुनि रोइ उठी सब रानी 2.53.4 सं.15

वचन कर्म क्रिवि० क्रिवि० कर्ता

मेरोइ हिय कठोर करिवे कहँ विधि कहुँ कुलिस लह्यो सं. 3

कर्म$_2$ क्रिवि० कर्ता कर्म$_1$ क्रि० 2.84.3

प्रेम निधि कहे मैं परुषवचन अघाइ 7.30.4 सं 5
पितु को

कर्म$_2$ क्रि० कर्ता कर्म$_1$ क्रि०वि०

विप्र वचन सुनि सखी सुआसिनि चली जानकिहि ल्याय सं. 2

कर्म 1 क्रिवि. कर्ता कर्म 2 1.90.10

एकहि वार आजु विधि मेरो सील सनेह निबेरो 2.73.2 सं. 24

क्रिवि. कर्ता कर्म क्रि.

विविध भाँति जाचक पाए भूषन चीर 7.21.24 सं. 3
जन

क्रि. वि. कर्ता क्रि. कर्म

प्रेम पुलकि सुवन सब कहति सुमित्रा मैया 1.9.1 सं. 18
उर लाइ

क्रि. वि. कर्म क्रि. कर्ता

राखी भगति भली भांति भरत 2.80.1 सं. 5
भलाई

क्रि. कर्म क्रिवि. कर्ता

3.1.2.1.1.1.1.1.3–

वे उपवाक्य जिनकी संरचना में + कर्ता + कर्म + क्रिया + अनुबंध आवश्यक रूप से हों। गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार मिले हैं–

पुरवासिन्ह प्रिय नाथ निजनिज संपदा लुटाई 1.1.5 सं. 5
हेतु

कर्ता अनु. कर्म क्रि.

चरचा चरनिसों चरची जानमनि रघुराइ 7.27.1 सं. 5

कर्म अनु० क्रि० कर्ता
काहू सों काहू समाचार ऐसे पाए 2.88.1 सं. 9
अनु० कर्ता कर्म क्रि०
मुदित मन आरती करें माता 1.110.1 सं. 4
अनु० कर्म क्रि० कर्ता
निज हित लागि मांगि आने मैं धर्मसेतु रखवारे 1.68.2 सं. 3
अनु० क्रि० कर्ता कर्म
दूरि करै को भूरि कृपा बिनु सोक जनित रुज मेरो सं. 2
क्रि० कर्ता अनु० कर्म 2.54.5

3.1.2.1.1.1.1.1.4–

वे उपवाक्य जिनकी संरचना में +कर्ता+कर्म+क्रियाविशेषण+अनुबंध+क्रिया ये तत्व पाए जाते हैं–

गठन की दृष्टि से ये निम्न प्रकार के हैं–

रावन रिपुहि राखि रघुवर बिनु को त्रिभुवन पति पाइहै सं. 2
कर्म2 क्रिवि. अनु० कर्ता कर्म 1 क्रि. 5.34.2
अंब अनुज गति लखि पवन भरतादि गलानि गरे हैं सं. 3
कर्म क्रिवि. कर्ता अनु० क्रि. 6.13.5
बार कोटि सिर काटि साटि लटि रावन संकर पै लई स. 2
क्रिवि. कर्म क्रिवि. कर्ता अनु. क्रि. 5.38.3
जनम जनम जानकि नाथ के गुनगन तुलसिदास गाए सं. 2
क्रिवि. अनु० कर्म कर्ता क्रि. 6.23.5
मेरे जान जानकी काहू खल छल करि हरि लीन्हीं स. 3
अनु० कर्म कर्ता क्रिवि. क्रि० 3.6.3
एक एक सो समाचार सुनि नगर लोग जहँ तहँ सब धायो सं. 2
अनु० कर्म क्रिवि० कर्ता क्रिवि. क्रि. 6.21.4

3.1.2.1.1.1.1.2–कर्ता रहित सकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

ये वे उपवाक्य है जिनमे कर्ता उपस्थित नही रहता है इस प्रकार के वाक्य निम्न प्रकार के हैं–

3.1.2.1.1.1 1.2.1 +कर्म+क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से ये सरचना दो प्रकार की है–

खेम कुसल रघुबीर लषन की ललित पत्रिका ल्याए 1.102.3 सं. 73
कर्म क्रि०

बरनौं किमि तिनकी दसहि 2.17.3 सं. 27
क्रि० कर्म

3.1.2.1.1.1.1.2.2 + कर्म + क्रिया विशेषण + क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से ये कई प्रकार के हैं–

कांच मनि लै अमोल मानिक गंवाए सं. 47
कर्म 1 क्रिवि० कर्म 2 क्रि० 2.39.5

पंचवटी पहिचानि ठाढ़ेई रहे 3.10.1
कर्म क्रिवि० क्रि०

सोभा सुधा पिए करिअंखियां दोनी 2 22.2 सं. 22
कर्म क्रि० क्रि० वि०

नय नगर बसाए विपिन झारि 2.49.2
कर्म 1 क्रि० कर्म 2 क्रिवि०

क्यों मारीच सुबाहु महाबल प्रबल मारी 1.109.2 सं. 49
क्रिवि० कर्म ताड़का क्रि०

काहे को खोरि कैकयिहि लावौं 2.63.1
क्रिवि० कर्म 1 कर्म 2 क्रि०

पचवटी बर कहैं कछु कथा पुनीता 3.3.1 स. 31
परन कुटी तर
क्रिवि० क्रि० कर्म

दिए दिव्य सुपास सावकास 1.84.3 सं. 21
आसन अति
क्रि० कर्म क्रिवि०

डारौं वारि अंग अंगनि कोटि कोटि सत 2.29.2 सं. 16
पर मार
क्रि० क्रि० वि० कर्म

3.1.2.1.1.1.1.2.3 + अनुबंध + कर्म + क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं–

राम लषन उर लाय लए हैं 6.5.1 सं. 2
कर्म अनु० क्रि०

इनके बिमल गुन गनत पुलकि तनु · 1.74.4 सं. 15
कर्म क्रि० अनु०

धरनि धेनु सब सोच नसाए 6.22,2 सं, 13
महिदेव साधु

सबके
अनु० कर्म क्रि०
मानों मख रुज पठए पतंग सं. 10
निसिचर हरिवे
को सुतपावक
के संग
अनु० क्रि० कर्म 1.53.2
क्यों तोर्‌यो कोमल कर कमलनि संभु सरासन भारी सं. 3
क्रि० अनु० कर्म 1.109.1

3.1.2.1.1.1.1.2.4 +कर्म+क्रिया विशेषण+अनुबंध+क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से ये निम्न प्रकार के हैं—

गनक बोलाय पांय परि पूछति प्रेम मगन मृदुबानी सं. 2
कर्म क्रिवि० क्रि० अनु० 6.19.3
कौसिक कथा एक एकनि सों कहत प्रभाउ जनाइके सं. 3
कर्म अनु० क्रि० क्रि०वि० 1.70.6
गुरु आयसु मंडप रच्यो सब साज सजाई 1.103.6 सं. 3
अनु० कर्म क्रि० क्रि० वि०
वहु राच्छसी-सहित तरु के तर तुम्हरे-विरह निज जनम विगोवति सं. 2
अनु० क्रि० वि० कर्म क्रि० 5.17.3
मोसे वीर सों चहत जीत्यो रारि रन में 5.23.1 सं. 2
अनु० क्रि० कर्म क्रि०वि०
पौढ़ाए पटु पालने सिसु निरखि मगन मन मोद सं 3
क्रि० क्रि०वि० कर्म क्रि०वि० अनु० 1.22.2

3.1.2.1.1.1.2 अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इस कोटि उपवाक्यों में केवल कर्ता और क्रियापद ही अनिवार्य घटक होते है —

इनके मुख्य दो प्रकार हैं —

1. सामान्य अकर्मक पूर्णार्थिक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य
2. गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थिक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.1.1.2.1 सामान्य अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इसमें कर्ता एवं क्रियापद अनिवार्य रूप से होते हैं अन्य तत्व जैसे अनुबंध, क्रिया विशेषण ऐच्छिक रूपेण हो सकते है —

इसे चार भागों में बांटा जा सकता है—

3.1.2.1.2.1.2.1.1 + कर्ता + क्रियापद संरचना–

गठन की दृष्टि से इसके दो प्रकार हैं—

चामर पताक वितान तोरन कलस दीपावली	बनी	1.5.1	सं. 71
कर्ता	क्रि०		
बैठे हैं	राम लषन अरु सीता	3.3.1	सं. 77.
क्रि०	कर्ता		

3.1.2.1.1.1.2.1.2 + कर्ता + क्रियाविशेषण + क्रियासंरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं—

भरत	भए ठाड़े	कर जोरि	2.70.1	सं. 59
कर्ता	क्रिया	क्रिवि०		
कोलिनि कोलकि रात	जहां तहाँ	बिलखात	3.9.2	सं. 46
कर्ता	क्रि०वि०	क्रि०		
भोर	जानकी जीवन	जागे	7.2.1	सं. 69
क्रिवि०	कर्ता	क्रि०		
मुनि के संग	विराजत	बीर	1.54.1	सं. 48
क्रिवि०	क्रि०	कर्ता		
ठाड़े हैं	लषन	कमल कर जोरे	2.11.1	सं. 29
क्रि०	कर्ता	क्रिवि०		
लगेइ रहत	मेरे नैननि आगे	राम लषन अरु सीता	2.53.2	सं. 12
क्रि०	क्रिवि०	कर्ता		

3.1.2.1.1.1.2.1.3 + कर्ता + अनुबन्ध + क्रियासंरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं –

देह गेह नेह नाते	मनसे	निसरिगे	2.32.3	सं. 22
कर्ता	अनु०	क्रि०		
हौं तो	समुझि रही	अपनो सो	2.85.1	सं. 22
कर्ता	क्रि०	अनु०		
सीय राम की- सुंदरता पर	तुलसीदास	बलि जाइ	1.90.11	सं. 23
अनु०	कर्ता	क्रि०		
सब के जिय की	जानत	प्रभु प्रवीन	5.8.1	सं. 16
अनु०	क्रि०	कर्ता		

3.1,2.1.1.1.2.1.4 + कर्ता + क्रियाविशेषण + अनुबंध + क्रियासंरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं —

नृप कर जोरि कह्यो गुरुपाही 2.1.1 सं. 4
कर्ता क्रिवि० क्रि० अनु०

मैं तुमसो सतिभाव कही है 2.9.1 सं. 2
कर्ता अनु० क्रिवि० क्रि०

सुरति बिसरि गई आपनी ओही 2.19.4 सं. 1
कर्ता क्रि० अनु० क्रिवि०

सिय वियोग सागर नागर मनु बूड़न लग्यो सहित चित चैन सं. 3
क्रिवि० कर्ता क्रि० अनु० 5.21.2

राम कृपा ते सोइ सुख अवध गलिन्ह रह्यो पूरि 7.21.23 सं.4
अनु० कर्ता क्रिवि० क्रि०

सुक सों गहबरहिये कहै सारो 2.66.1 सं. 2
अनु० क्रिवि० क्रि० कर्ता

धवल धाम तें निकसहिं जहं तहं नारि बरुथ सं. 2
अनु० क्रि० क्रिवि० कर्ता 7.21.20

कहँ गाधिनंदन मुदित रघुनंदन सो 1.87.2 सं. 2
क्रि० कर्त्ता० क्रिवि० अनु०

3.1.2.1.1.1.2.2 गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इन उपवाक्यों में गन्तव्य और क्रियापद आवश्यक तत्व है कर्ता की उपस्थिति के विचार ने गत्यर्थक उपवाक्यों के दो प्रकार हैं —

1 कर्ता सहित गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

2. कर्ता रहित गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.1.1.2.2.1 कर्ता सहित गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इनमें कर्ता की उपस्थिति आवश्यक होती है – इसके मुख्य तीन प्रकार हैं

3.1.2.1.1.1.2.2.1.1 + कर्ता + गन्तव्य + क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से ये इस प्रकार के हैं —

ते तौ राम लषन अवध ते आए 2.39.1 सं.2
कर्ता ग० क्रि०

जेहि जेहि मग सिय राम लषन गए 2.32.1 सं. 2
ग. कर्ता क्रि.

बाजत अवध गहागहे आनंद 1.6.1 सं. 3
क्रि. ग. बधाए-कर्ता

3.1.2 1.1.1.2.2.1.2–

+कर्ता+क्रियाविशेषण+गन्तव्य +क्रिया संरचना–गठन की दृष्टि से ये इस प्रकार हैं–

सानुज	भरत	भवन	उठि धाए	1.102.1	सं .1
क्रिवि.	कर्ता	ग.	क्रि.		
पंथ	चलत	मृदु पद कमलनि दोउ सील रूप		2.29.1	सं. 2
ग.	क्रि.	क्रिवि.	आगार-कर्ता		

3.1.2.1.1.1.2.2.1.3–

अनु.+कि +ग +कर्ता संरचना

जनक सुता समेत	आवत	गृह	परसुराम अतिमदहारी	7.38.3	सं. 1
अनु.	क्रि.	ग.	कर्ता		

3.1.2.1.1.1.2.2.2.–

कर्ता रहित गत्यर्थक अकर्मक पूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य–इनवाक्यों में कर्ता उपस्थित नहीं रहता है–इसके दो प्रकार मिले हैं–

3.1.2.1.1.1.2.2.2.1–क्रि. वि.+ग.+क्रि. गठन की दृष्टि से ये दो प्रकार के हैं–

ता दिन	श्रंगवेरपुर	आए	2.68.1	सं. 4
क्रिवि.	ग.	क्रि.		
एई बातैं कहत	गवन कियो	घर को	1.69.1	सं. 2
क्रिवि.	क्रि.	ग.		

3.1.2.1.1.1.2.2,2.2–अनु.+ग.+किया–

यथा–

कपिकुल लखन सुयस	सहित कुसल	निजनगर	सिधै हैं	सं.3
जय जानकि–अनु.		ग.	क्रि.	5.51.7

3.1.2.1.1.2–अपूर्णार्थक किया युक्त पूर्ण उपवाक्य–

जिन वाक्यों में पूरक की आवश्यकता होती है वे इस कोटि में आते हैं–अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य दो प्रकार के हैं–

1. सकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य
2. अकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.1.2.1–सकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य–

इन उपवाक्यों में अपूर्ण क्रिया के साथ अर्थ की पूर्णता किसी पूरक के द्वारा की जाती है साथ ही इनमें कर्म की उपस्थिति अनिवार्य रूपेण होती है–

ऐसे उपवाक्य दो प्रकार के हैं—

1. कर्ता सहित सकर्मक अपूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य

2. कर्ता रहित सकर्मक अपूर्णार्थक क्रिया युक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.1.2.1.1–कर्ता सहित सकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य–

इस प्रकार के उपवाक्यों की सख्या अति न्यून है–इसके तीन प्रकार हैं–

3.1.2.1.1.2 1.1.1– + कर्ता + कर्म + पूरक + क्रिया संरचना–

गठन की दृष्टि से ये तीन प्रकार के हैं–

1. + कर्ता + कर्म + पूरक + क्रिया संरचना–

तापसी कहि कहा पठवति नृपनि को मनुहारि 7.29.2 सं. 3
कर्ता क्रि. कर्म पू.

पालागनि दुलहियनि सिखावति सरिस सासु सत साता सं. 2
पू. कर्म क्रि. कर्ता 1.110.2

3.1.2.1.1.2.1.1.2–

+ कर्ता + कर्म + पूरक + क्रियाविशेषण + क्रिया–

प्रभु रुख निरखि निरास भरत भए 2.72.3 सं.2
कर्म क्रिवि० पू० कर्त्ता क्रि०

3.1.2.1.1.2.1.1.3—कर्त्ता + कर्म + पूरक + क्रियाविशेषण + क्रिया + अनु०

तेहि मातु ज्यों रघुनाथ अपने हाथ जल अन्जलि दई सं 3
कर्म त्रिवि० कर्त्ता अनु० पू० क्रि० 3.17.8

3.1.2.1.1.2.1.2—कर्त्ता रहित सकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

गठन को दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं—

3.1.2.1.1.2.1.2.1— + कर्म + पूरक + क्रिया संरचना

तेहि कुलहि कालिमा लावों 2.72.3 सं.4
कर्म पू० क्रि०

3.1.2.1.1.2.1.2.2— + क्रियाविशेषण + कर्म + पूरक + क्रिया संरचना

यह दो प्रकार के हैं—

तुव दरसन संदेश सुनि हरि को वहुत भई अवलंव प्रान की सं.2
कर्म$_1$ क्रिवि० कर्म$_2$ क्रि० पू० 5.11.4

ऐसी औ मूरति देखे रह्यो पहिलो विचारू 1.82.3 सं.2
कर्म क्रिवि० क्रि० पू०

जान्यो है सवहि भांति विधि वाँवों 2.72.3 सं.1
क्रि० क्रिवि० कर्म पू०

3.1.2.1.1.2,1.2.3 + अनुवंध + कर्म + पूरक + क्रिया

तापस हू वेप किए काम कोटि फीके हैं 2.30.1 सं.3
अनु० कर्म पू० क्रि०

3 1.2.1.1.2.2 अकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इन उपवाक्यों में अपूर्ण क्रिया के साथ अर्थ को पूर्णता किसी पूरक के द्वारा की जाती है लेकिन कर्म अनुपस्थित रहता है। ये उपवाक्य दो प्रकार के है —

1. कर्ता सहित अकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त उपवाक्य
2. कर्ता रहित अकमक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

3.1.2 1.1.2.2.1 कर्ता सहित अकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इन वाक्यों में कर्ता अनिवार्य रूप से रहता है –

इसके निम्न प्रकार गठन की दृष्टि से आलोच्य पुस्तक में मिले हैं–

3.1.2.1.1.2.2.1.1 + कर्ता + क्रिया + पूरक

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं–

जरठ जठेरिन्ह	आसिरवाद	दए हैं	1.11.4	सं. 9
कर्ता	पू०	क्रि०		
कैकेयी	करी धौं	चतुराई कौंन	2.83.1	सं. 7
कर्ता	क्रि०	पू०		
भूरिभाग	भए (है)	सब नीच नारि नर	2.45.5	स. 3
पू०	क्रि०	कर्ता		
चहत	महामुनि	जाग जयो	1.47.1	सं. 2
क्रि०	कर्ता	पू०		

3.1.2.1.1.2.2.1.2 + क्रियाविशेषण + कर्ता + क्रिया + पूरक

इसके निम्न प्रकार मिले है–

मागध सूत - द्वार बंदीजन	जहँ तहँ	करत	बड़ाई	1.1.6	सं. 2
कर्ता	क्रिवि०	क्रि०	पू०		
ऋधि	नृपसीस	ठगोरी सी	डारी	1.100.1	सं. 4
कर्ता	क्रिवि०	पू०	क्रि०		
देखत लोनाई	लघु (हैं)	लागत	मदन	2.26.2	सं. 6
क्रिवि0	पू०	क्रि०	कर्ता		
सब दिन	चित्रकूट	नीको	लागत	2.50.1	सं. 2
क्रिवि०	कर्ता	पू०	क्रि०		
करत	राउ	मनमों	अनुमान	2.59.1	सं. 1
क्रि०	कर्ता	क्रिवि०	पू०		

3.1.2,1.1.2.2.1.3 + कर्ता + क्रिया + अनुबंध + पूरक + संरचना

इसके निम्न प्रकार मिले हैं –

सो तुलसी चातक भयो जाचक राम श्याम सुंदर घनैं 5.40.4 सं. 2

कर्ता पू० क्रि० अनु०

विप्र साधु सुरधेन धरनि हित हरि अवतार लयो 1.47.2 सं. 3

अनु० कर्ता पू० क्रि०

3.1.2.1.1.2.2.1.4 + कर्ता + क्रिया + अनुबंध + क्रियाविशेषण + पू० संरचना

काम कौतुकी यहि विधि प्रभु हित कौतुक कीन्ह 2.47.17 सं. 2

कर्ता क्रिवि० अनु० पू० क्रि०

3.1.2.1.1.2.2.2 कर्ता रहित अकर्मक अपूर्णार्थक क्रियायुक्त पूर्ण उपवाक्य

इन वाक्यों में कर्ता अनुपस्थित रहता है, इसके निम्न प्रकार मिले हैं–

3.1.2.1.1.2.2.2.1 + पूरक + क्रिया संरचना

इसके दो प्रकार हैं –

स्वारथ रहित परमारथी कहावत हैं 1.64.2 सं. 7

पू० क्रि०

हौं रघुवंसमनि को दूत 5.6.1 सं. 9

क्रि० पू०

3.1.2.1.1.2.2.2.2 + क्रिया विशेषण + पूरक + क्रियासंरचना

इसके निम्न प्रकार मिले है–

राम निछावरि लेन को हठि होत भिखारी 1.6.24 सं. 14

क्रिवि० क्रिवि० क्रि० पू०

हाथ मींजिबो हाथ रह्यो 2.84.1 सं. 7

पू0 क्रिवि० क्रि०

3.1.2.1.1.2.2.2.3 + अनुबंध + क्रिया + पूरकसंरचना

इसके निम्न प्रकार मिले है—

करुनाकर की करुना भई 5.37.1 सं. 7

अनु० पू० क्रि०

दूसरो . न देखतु साहिव सम रामै 5.25.1 सं. 1

पू० क्रि० अनु०

परत दृष्टि दुष्ट तीके 1.12.2 सं. 2

क्रि० पू० अनु०

3.1.2.1.1.2.2.2.4 + क्रियाविशेषण + अनुबंध + क्रिया + पूरक संरचना

गठन की दृष्टि से इसके निम्न प्रकार हैं–

जिय जिय	जोरत	सगाई	राम लपन सों	1.64.4 सं. 2
क्रिवि०	क्रि०	पू०	अनु०	
तुलसी को	सब भांति सुखद	समाज	भो	सं. 1
अनु०	क्रि० वि०	पू०	क्रि०	2.33.3

3.1.2.1.2 **अपूर्ण उपवाक्य**

जो उपवाक्य संरचना की दृष्टि से पूर्ण न हो उन्हें अपूर्ण उपवाक्य कहते हैं। इस प्रकार के उपवाक्यों में कर्ता अथवा क्रिया दोनों में से किसी एक की अनुपस्थिति अनिवार्य होती है। कहीं कहीं दोनों भी अनुपस्थित हो सकते हैं अपूर्ण उपवाक्य दो प्रकार के हैं–

1. अंशतः अपूर्ण उपवाक्य
2. पूर्णतः अपूर्ण उपवाक्य

3.1.2.1.2.1 **अंशतः अपूर्ण उपवाक्य**–वे उपवाक्य जिनमें क्रिया उपस्थित हो अंशतः अपूर्ण उपवाक्य हैं। ये तीन प्रकार के हैं–

3.1.2.1.2.1.1 + क्रिया विशेषण + क्रिया संरचना

इसके दो प्रकार मिले हैं–

काज कै कुशल फिर एहि मग	ऐहै	2.37.1 सं. 43
क्रिवि०	क्रि०	
लगे देन	हिय हरषि कै हेरि हेरि हंकारी	1.6.23 सं 31
क्रि०	क्रिवि०	

3.1.2.1.2.1.2 + अनुबंध + क्रिया संरचना

इसके दो प्रकार हैं–

बंधु अपमान गुरु गलानि	चाहत गरन	5.43.3 सं. 20
अनु०	क्रि०	
चले बूझत	बन बेलि बिटप खगमृग अलि अवलि सुहाई	सं. 9
क्रि०	अनु०	3.11.3

3.1.2.1.2.1.3 + क्रिया विशेषण + अनुबंध + क्रिया संरचना

गठन की दृष्टि से ये इस प्रकार हैं–

सब भांति	बिभीषन की	बनी	5.39.1 सं. 21
क्रिवि०	अनु०	क्रि०	
हिय बिहंसि	कहत	हनुमान सों	5.33.1 सं. 6
क्रिवि०	क्रि०	अनु०	

मनसा	अनूप राम रूप रंग	रई है	1.96.3
अनु०	क्रि० वि०	क्रि०	सं. 4
सुन्दर वदन	ठाढ़े	सुरतरु सियरे	1.43.2 सं. 3
अनु०	क्रि०	क्रि० वि०	
चलत	महि	मृदुचरन अरुन वारिजि वरन	2.18.1 सं. 5
क्रि०	क्रि० वि०	अनु०	

3.1.2.1.2.2 पूर्णत. अपूर्ण वाक्य

वे उपवाक्य जिनमें क्रिया उपस्थित न हो सर्वथा अपूर्ण हैं। आलोच्य पुस्तक में इस प्रकार के वाक्यों की संख्या वाक्य एवं उपवाक्य दोनों ही स्तरों पर अत्यधिक है। इसका प्रमुख कारण कविता में छन्दाग्रह अथवा कहीं कहीं तुक के कारण क्रिया का लोप होना है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं–

इस प्रकार के कुल वाक्यों की संख्या 1515 है

छन भवन, छन वाहर विलोकति पथ भूपर पानि कैं 3.17.3

कर सर धनु कटि रुचिर निषंग 3.4.1

किधौ रवि सुवन मदन ऋतुपति, किधौं हरि हरवेष वनाए 1.65.3

अवध नगर अति सुन्दर वर सरिता के तीर 7.21.1

तुलसी गलिन भीर, दरसन लगि लोग अटनि आरोहैं 1.62.4

दूलह राम सीय दुलही री 1.106.1

हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै 6.15.1

नभ तल कौतुक, लंका विलाप 5.16.7

मतो नाथ सोई, जातें भल परिनामैं 5.25.3

सवको सासकु सव मैं, सव जामैं 5.25.2

चार्यो वेटा भले देव दसरथ राय के 1.67.1

ताते न तरनितें न सीरे सुधाकरहूनें 1.87.3

कैसे पितु मातु प्रिय परिजन भाई 2.40 4

मातु मौसी वहिनहू तें सासु ते अधिकाइ 7.34.4

हम सी भूरि भागिनि नभ न छौंनी 2.22.2

3.1.3 वाक्यांश

वाक्यांश शब्दों का ऐसा समूह है जो उपवाक्य के समान पूर्ण न होते हुए भी कभी कभी एक उपवाक्य के व्याकरणिक कार्य को पूरा करता है–

उदाहरणार्थ–

चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डांग 2.47.12

महामद अंध दसकंध न करत कान 5.24.2

वाक्यांश की व्याकरणिक कोटि का निर्धारण उस शब्द की व्याकरणिक कोटि से किया जाता है जिसके द्वारा वाक्यांश के स्थान की पूर्ति की जाती है— यथा—

दीन बंधु दीनदयाल देवर देखि अति अकुलानि 7.28.4 देवर-नामिक

3.1.3.1 निकटस्थ अवयव के विचार से वाक्यांश के भेद—

निकटस्थ अवयव-गठन की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ में निम्न भेद प्राप्त हुए हैं—

3.1.3.1.1 शीर्ष विशेषक वाक्यांश—

इन वाक्यांशों में वह भाग शीर्ष कहलाता है जो अकेला ही पूरे वाक्यांश के व्याकरणिक कार्य को पूरा कर सके। इस कोटि के वाक्यांश नामिक, विशेषण, क्रिया और क्रिया विशेषण का कार्य करते हैं।

इन वाक्यांशों को संरचना के विचार से अन्तः केन्द्रक मानना चाहिए।

3.1.3.1.1.1 शीर्ष विशेषक नामिक वाक्यांश

इन वाक्यांशों में शीर्ष भाग नामिक होता है। वाक्यांश के शेष शब्द उसी नामिक के विशेषक होते हैं। इन वाक्यांशों के निम्न भेद प्राप्त हुए हैं—

3.1.3.1.1.1.1 द्विपदीय शीर्ष विशेषक नामिक वाक्यांश

इसके निम्न प्रकार हो सकते हैं—

3.1.3.1.1.1.1.1 गुणवाचक विशेषक युक्त

यथा—रहि चलिए **सुंदर** रघुनायक 2.4.1

अमिय वचन सुनाइ मेटहि विरह ज्वाला जालु 5.3.1

3.1.3.1.1.1.1.2—परिमाण वाचक विशेषक युक्त—

यथा-मेरे जान ! तात **कछु दिन** जीजै 3.15.1

रावरे पुण्य प्रताप अनल महं अलप दिननि रिपु दहिहैं 3.16.2

3.1.3.1.1.1.1.3—संख्या वाचक विशेषक युक्त

यथा—तेहि औसर **सुत तीनि** प्रगट भए मंगल मुद कल्यान 1.2.7

बधू समेत कुसल **सुत द्वै** हैं 6.18.1

3.1.3.1.1.1.1.4—सम्बन्ध वाचक विशेषक युक्त

यथा—कोसलराय के **कुअंरोटा** 1.62.1

भली भांति **साहव तुलसी** के चलिहैं ब्याहि वजाइके 1.70.9

3.1.3.1.1.1.1.5—संकेत वाचक विशेषक युक्त—

यथा—**या सिसु** के गुन नाम वड़ाई 1.16.1

इन्ह नयनन्हि यहि भांति प्रानपति निरखि हृदय आनन्द न समैहैं 5.50,4

3.1.3.1.1.1.1.6–प्रबर्धक विशेषक युक्त–

जैसे–तव की तुही जानति अबकी हौं ही कहत 5.8.1

हौं ही दसन तोरिबे लायक कहा कहौं जो न आयसु पायो 6.4.4

3.1.3.1.1.1 1.7–आदर सूचक विशेषक युक्त–

जैसे–गिरिजा जू पूजिवे को जानकी जू आई हैं 1.71.3

राघौ जू श्री जानकी लोचन मिलिबे को मोद 1.71.4

3.1.3.1.1.1.1.8–प्रकार सूचक विशेषक युक्त–

जैसे–तू दसकंठ भले कुल जायो 6.2.1

3.1.3.1.1.1.2–वहुपदीय शीर्ष विशेषक नामिक वाक्यांश

इस कोटि के वाक्यांशों में एक से अधिक विशेषक होते हैं। ये विशेषक एक ही कार्य करने वाले भी हो सकते हैं और भिन्न-भिन्न कार्य करने वाले भी हो सकते हैं—

उदाहरणार्थ—

प्रजाहू को कुटिल दुसह दशा दई है 2.34 2

ध्वज पताक तोरन वितान वर विविध भांति वाजन वाजे 6.23.2

3.1.3.1.1.2–शीर्षविशेषक क्रिया वाक्यांश

इन वाक्यांशो मे क्रिय शीर्ष होती है और क्रियाविशेषण, निषेधात्मक तत्व आदि विशेषक होते हैं। आलोच्य ग्रन्थ में इसके निम्न उपभेद मिले हैं—

3.1.3.1.1.2.1–द्विपदीय शीर्ष विशेषक क्रिया वाक्यांश

ये कई प्रकार के हो सकते हैं –

3.1.3.1.1.2.1.1 परिमाण बोधक विशेषक युक्त

जैसे – मेरेजान इन्हे वोलिवे कारन चतुर जनक ठयो ठाट इतौरी 1.77.3

सुनु खल ! मैं तोहि बहुत बुझायो 6.4.1

3.1.3.1.1.2.1.2 कारण बोधक विशेषक युक्त

जैसे - कहा भौ चढ़ाए चाप व्याह ह्‌वै हैं वड़े खाए 1.95.1

तात ! विचारों धौं हों क्यों आवों 2.72.1

31.3.1.1.2.1 3— विधि वाचक विशेषक युक्त

जैसे— पथिक पयादे जात पंकज से पाय हैं 2.28 1

कैसे पितु मातु कैसे ते प्रिय परिजन हैं 2.26.1

3.1.3.1.1.2.1.4—स्थान वाचक विशेषक युक्त

यथा— चौतनी चोलना काछे सखि सोहैं आगे पाछे 1.74.1

नख सिख अंगनि ठगौरी ठौर ठौर है 1.73.4

3.1,3.1.1.2.1.5—दिशा वाचक विशेषक युक्त

जैसे—जानौं न कौंन, कहां तें धौं आए 2.35.3

आली ! काहू तो बूझी न पथिक कहां धौं सिधै हैं 2.37.1

3.1.3.1.1.2.1.6.—निषेध वाचक विशेपक युक्त

जैसे—मोपैं तौ न कछू ह्वै आई 6 6.1

मेरो कह्यो मानि बांधै जिनि बेरै 5.27.3

3.1.3.1.1.2.2—बहुपदीय शीर्ष विशेषक क्रिया वाक्यांश

नामिक वाक्यांशों की भाँति ही क्रिया वाक्यांश भी बहुपदीय हो सकता है। इन पदों में क्रिया शीर्ष तथा शेष विशेपक होंगे—यथा—

भली भांति साहब तुलसी के चलिहैं ब्याहि बजाइकै 1.70.9

चररि चौंचि चंगुन हय हति रथ खंड खंड करि डार्‌यो 3.8.1

3.1.3.1.1.3—शीर्ष विशेषक विशेषण वाक्यांश

इस कोटि के वाक्यांशों में विशेषण शीर्ष होता है और अन्य पद उसके विशेपक के रूप में होते हैं। आलोच्य ग्रन्थ में इस कोटि के वाक्यांश निम्नलिखित उपभेदों में मिले हैं—

3.1.3 1.1.3.1—परिमाण बोधक विशेषक युक्त

यथा—भरत सौगुनी सार करत है अति प्रिय जानि तिहारे 2.87.3

प्रजाहू को कुटिल दुसह दसा दई है 2.34.2

3.1.3.1.1.3.2—संख्या वाचक विशेषक युक्त

यथा—एकै एक कहत प्रगट एक प्रेमबस 1.88.5

पालागनि दुलहियनि सिखावति सरिस सासु सत साता 1.110.2

3.1.3.1.1.3.3—तुलनात्मक विशेषक युक्त

यथा—प्रेम हू के प्रेम रंक कृपिन के धन हैं 2.26.4

लाभ के सुलाभ सुख जीवन से जी के हैं 2.30.4

3.1.3.1.1.3.4—श्रेष्ठत्व बोधक विशेषक युक्त

यथा—सीय राम बड़े ही संकोच संग लई है 2.34.1

मेरे मन माने राउ निपट सयाने हैं 1.61.4

3.1.3.1.1.3.5—संकेत वाचक विशेषक युक्त

ये दोऊ दसरथ के बारे 1.68.1

ये अवधेस के सुत दोऊ 1.63.1

3.1.3.1.1.4—शीर्ष विशेषक क्रिया विशेषण वाक्यांश

इन वाक्यांशों में शीर्ष कोई क्रिया विशेषण पद रहता है और विशेपक प्रायः उसमें प्रवर्धन प्रकट करता है।

यथा—कहो सो विपिन है धौं केतिक दूर 2.13.1

आलोच्य ग्रन्थ में इसके निम्न उपभेद मिले हैं—

3.1.3.1.1.4.1 प्रवधंक विशेषक युक्त

जैसे – तुव दरसन संदेस सुनि हरि को बहुत भई अवलंव प्रान की 5.11.4
समय समाज की ठवनि भली ठई है 1.96.2

3.1.3.1.1.4.2 संबंध वाचक विशेषक युक्त

यथा– मेरे एकौ हाथ न लागी 3.12.1
मोपै तौ न कछू ह्वै आई 6.6.1

3.1.3.1.1.4.3 स्थिति सूचाक विशेषक युक्त

यथा– यातें विपरीत अनहितन की जानि लीवी 1.96.5
जनक मुदित मन टूटत पिनाक के 1.94.1

3.1.3.1.1.4.4 स्थान सूचाक विशेषक युक्त

यथा– चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाँग 2.47.12
सिरस सुमन सुकमार मनोहर बालक विध्य चढ़ाए 2.88.3

3.1.3.1.1.4.5 समय सूचाक विशेषक युक्त

यथा– तेहि निसा तहं सत्रुसूदन रहे विधिवस आइ 7.34.3
जो पहिले ही पिनाक जनक कहँ गए सौंपि जिय जानि हैं 1.80.2

3.1.31.1.4.6 विधि सूचाक विशेषक युक्त

यथा– बहुत कहा कहि कहि समुझावौं 2.72.1
मधुप मराल मोर चातक ह्वै लोचन बहु प्रकार धावहिंगे 5.10.2

3 1.3.1.1.4.7 संकेत सूचक विशेषक युक्त

यथा – राम गए अजहूँ हौं जीवत समुझत हिय अकुलान 2.59.4
तेहि औसर सुत तीन प्रगट भए मंगल मुद कल्यान 1.2.7

3.1.3.1.2 अक्ष संबंध वाक्यांश

इन वाक्यांशों में दो अनिवार्य युक्तग्राम रहते हैं जिनमें से एक को अक्ष कहते उस युक्तग्राम में नामिक, विशेपण, या क्रिया विशेपण हो सकते है। दूसरा एक परसर्ग होता है; जो वाक्यांश को वाक्य के अन्य वाक्यांशों से सम्बद्ध करता है। इस कोटि के वाक्यांशों के तीन भेद प्राप्त हूए हैं –

3 1.3.1.2.1 अक्ष संबंध नामिक वाक्यांश

उदाहरणार्थ –
कहै गाधिनंदन मुदित रघुनंदन सों 1.87.2
वार कोटि सिर काटि साटि लटि रावन संकर पै लही 5.38.3
ते तो राम लपन अवध तें आए 2.39.1

3.1.3.1.2.2 अक्ष संबंध विशेषण वाक्यांश

उदाहरणार्थ

बूझत जनक नाथ ढोटा दोउ काके हैं 1.64 1

आली ! काहू तौ बूझौ न पथिक कहां घौ सिधै है 2.37.1

काहू सौं काहू समाचार ऐसे पाए 2 88.1

3.1.3.1.2·3 अक्ष संबंध क्रिया विशेषण वाक्यांश

उदाहरणार्थ –

परसुराम से शूर सिरोमनि पल मैं भए खेत के धोखे 5.12.3

सखि ! नीके कै निरखि कोऊ सुठि सुन्दर बटोही 2.19.1

मन मैं मंजु मनोरथ हो री 1.104.1

3.1.3.1.3 समावयवी वाक्यांश

इस प्रकार के वाक्यांशों में दो शीर्ष होते हैं और किसी संयोजक के द्वारा एक दूसरे से संबद्ध रहते हैं–

उदाहरणार्थ–

लगेइ रहत मेरे नैंननि आगे राम लषन अरु सीता 2.53.2

अति बल जल वरषत दोउ लोचन, दिन अरु रैंन रहत एकहि तक 5.9.2

चल्यो नभ सुनत राम कल कीरति अरु निज भाग बड़ाई 3.16.3

3.1.3.1.4 शीर्ष विश्लेषक वाक्यांश

इन वाक्यांशों में दो अनिवार्य युक्तग्राम होते हैं जिनमें से एक दूसरे का विश्लेषण करने वाला होता है–

उदाहरणार्थ–

ऐसे समय, समर संकट हौं तज्यो लषन सो भ्राता 6.7.2

गेहिनी गुन गेहिनी गुन सुमिरि सोच समाहिं 7.26.3

रे कपि कुटिल ढीठ पसु पावंर मोहि दास ज्यौं डाटन आयो 6.3.1

3.1.3·1.5 संगुफित क्रिया वाक्यांश

इस प्रकार के वाक्यांशों के अन्तर्गत संयुक्त काल रचना का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक की संयुक्त काल रचना को इस प्रकार दिखाया जा सकता है–

संगुफित क्रिया वाक्यांश

+ मूल : {धातु} $\pm$ काल तत्व

+ { नहिन / न } मत + धातु { रह / सक } चुक + अनुरूपक { लिंग / वचन } पुरुष + सहायक क्रिया { हाँ / हूँ / हो / य } ± काल तत्व
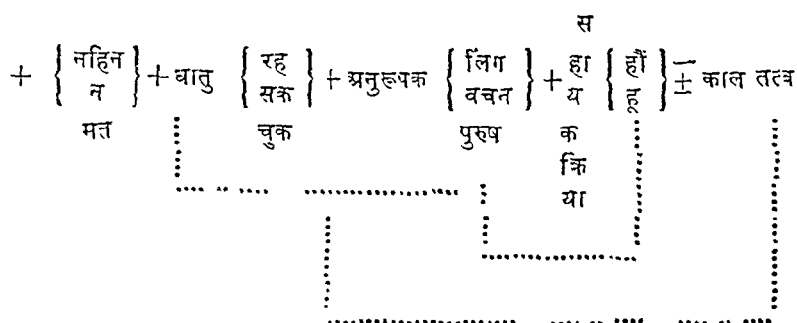
निर्धारक तत्व के अन्तर्गत उन क्रियाओं को रखा गया है जो सातत्य, शक्यता आदि का बोध कराती है।

अनुरूपक तत्व वे प्रत्यय हैं जो क्रिया के लिंग, वचन, पुरुष को कर्ता या कर्म के अनुरूप बनाते है। संगुफित क्रिया सूत्र से अनेक सरल सूत्र बन सकते है।

यथा

1. + मूल : {धातु} + काल तत्व {गए चल्यो}

काल तत्व मध्यम पुरुष आज्ञार्थक में नहीं लगता है।

2. + { धातु } + निर्धारक : { रह / सक् } + अनुरूपक : { लिंग / वचन / पुरुष }

+ सहायक क्रिया { है } + काल तत्व

उदाहरणार्थ–

ठाढ़े है लषन 2.11.1

धातु + निर्धारक + { लिंग / वचन / पुरुष } + सहायक क्रिया + { पु० / एक / वचन }

इसी प्रकार के अन्य उदाहरण हो सकते है–

जब तें चित्रकूट तें आए 2.79.1 अवलौ मैं तोसों न कहे री 5.49.1

अवसि हौ आयसु पाइ रहौंगो 2.77.1 प्रभुसौं मैं ढीठो बहुत दई है 2.78.1

मनमैं मंजु मनोरथ हो री 1.104.1

—— ——

4

बोलीगत वैविध्य

4 1–गीतावली में बोलीगत वैविध्य–

भाषा प्रयोग के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं को दो वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है—

(1) अवधी की रचनाओं का वर्ग।

(2) व्रजभाषा की रचनाओं का वर्ग।

अवधी की रचनाओं में रामचरितमानस, रामलला नहछू, बरवैरामायण, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल तथा रामाज्ञाप्रश्न आते हैं।

व्रजभाषा-वर्ग में कृष्ण गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, गीतावली, दोहावली तथा वैराग्य संदीपनी को रखा गया है।

डॉ० देवकीनन्दन श्रीवास्तव[1] के अनुसार व्रजभाषा वर्ग की रचनाओं के दो उपवर्ग हैं। (1) पूर्वी व्रजभाषा की रचनाओं का वर्ग – जिसमें कवितावली और श्रीकृष्ण गीतावली को गिना जा सकता है तथा (2) पश्चिमी व्रजभाषा की रचनाओं का वर्ग —जिसमें गीतावली, विनय पत्रिका, दोहावली और वैराग्य संदीपनी के नाम लिए जा सकते हैं। इसमें पूर्वी व्रजभाषा से भिन्न पश्चिमी व्रजभाषा की समस्त विशेषताएं मिलती हैं।

डा० धीरेन्द्र वर्मा[2] ने पश्चिमी व्रजभाषा की कुछ प्रवृत्तियों का उल्लेख इस प्रकार किया है—

"पूर्व कालिक कृदन्त के 'य' सहित रूप जैसे 'चल्यो' या 'चल्यौ', 'व' लगाकर क्रियात्मक संज्ञा बनाना, जैसे 'चलिवो', 'ग' भविष्य जैसे 'चलैगो', सहायक क्रिया के भूतकाल 'हो' आदि रूप, उत्तम पुरुष, एकवचन सर्वनाम 'हौं', तथा प्रश्नवाचक सर्वनाम का 'को' रूप पश्चिमी व्रजभाषा-प्रदेश की कुछ विशेषताएँ हैं।"

गीतावली के संदर्भ में उपर्युक्त विशेषताएँ पूर्णरूप से विद्यमान है। इसके अतिरिक्त गीतावली में अन्य बोलियों के प्रयोग भी मिलते हैं। भाषा-निष्कर्षों के आधार पर गीतावली में प्रयुक्त व्रजभाषा के अतिरिक्त अन्य बोलीगत वैविध्यों को निम्नलिखित वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है—

---

1. डॉ० देवकीनन्दन श्रीवास्तव : तुलसीदास की भाषा, पृष्ठ 362.
2. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : व्रजभाषा व्याकरण, पृष्ठ 16.

4.1.1–संस्कृत के पद-प्रयोग–

आलोच्य ग्रन्थ में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग बहुलता से मिलता है। कुछ प्रयोग उदाहरणीय हैं—

तनरुह 1.1.2, सुखसिंधु सुकृत सीकर 1.1.11, दस स्यंदन 1.2.6, कुंकुम अगर अरगजा 1.2.16 अंबुद 1.7.3, दृष्टि दुष्ट 1.12.2, डिंभ 1.11.4, मति मृगनयनि 1-18.2, कुटिल ललित लटकन भ्रू, नीलनलिन 1.23.2, कामधुक 1.22.9, हाटक मनि रत्न खचित रचित इन्द्र मंदिराभ 1.25.2, षडंध्रि मंडली, रसभंग 1.25.5, जलज संपुट, अनुभवति 1.27.5–6, रूप करह 1.29.2, दसरथ सुकृत विबुध बिरवा बिलसत 1.30.4, पूप 1.32.6, तमचुर मुखर, गत व्यलीक 1.36.2-1, इंदिरानंद मंदिर 1.37.4, प्रीति वापिकामराल 1.38.1, वपुप वारिद वरपि 1.40.2, कृतकृत्य 1.48.3, रुज 1.53.2, लसति ललित 1.55.5, विदेहता 1.64.2, नील पीत पाथोज 1.65.1, ब्रह्म जीव 1.65.2, मघा जल 1.68.7, चलदल 1.69.3, कोदंडकला 1.74.2, हेतुवाद, जातुधान पति 1.86.3.2, तुलसीस 1.87.4, अनुभवत, दीपक विहान 1.88.2-4, प्रलय पयोद 1.90.8, हुलसति 1.96.6, केलिगृह 1.107.3, मुख मयंक छवि 2.6.2, मधुप मृग विहग 2.17.3, अवनि द्रोही 2.18.3, सोभा सिंधु संभव 2.27.2, सींव 2.34.1, आलबाल 2.34.2, मलनिकंदिनी लोक लोचनाभिराम, जनकनंदिनी 2.43.1-4. मंदाकिनि तटनि तीर, मधुकर पिक बरहि मुखर 2.44.1-2, मज्जत 2.46,2, कदलि, कदंब, सुचंपक, पाटल, पनस, रसाल, ललित लता द्रुम संकुल, मनोज निकेत 2.47.4-6, भ्राजत 2.48.4, स्याम तामरस 2.54.3, विष वारुनी बधु 2.61.2, हय हति 3.8.1, पल्लव सालत. प्रान वल्लभा 3.10.2, पुण्य प्रताप अनल 3.16.2; भव दधिनिधि 4.2.4, समीर सुत 5.2.1, क्रोध विध्न, कलस भव 5.5.2, वचन पियूप 5.6.6, सरिस 5.7.2, मोहजनित भ्रम, भेद बुद्ध 5.10.5, रसराज, पुटपाक 5.13.2, सौमित्रि बंधु करुनानिधि 5.17.1, सुर निमेष सुरनायक नयन भार, दिग्गज कमठ कोल 5.22.6-8, उपल केवट गीध सबरी संसृति समन 5.43.1, जातुधानेस भ्राता 5.43.3, सिरसि जटा कलाप, पानि सायक चाप, उरसि रुचिर बनमाल 5.47.2, रिपुघातक, कंदुक 6.3.2, गिरि कानन साखामृग 6.7.3, ज्वालावलि, मूपक 6.8. अंब अनुज गति. पवनज भरतादि 6.13.5, खद्योत निकर, भ्राजत, कुसुमित किंसुक तरु समूह 6.16.2-3, अभिषेक, प्रभु प्रताप रवि अहित अमंगल अघ उलूक तम 6.22.5-8, करुनारस अयन, सत कंज कानन, ब्रह्म मंडली मुनीन्द्र वृंद मध्य, इंदुवरन, चिबुक अधर, द्विज रसाल, हृद पुंडरीक, चंचरीक निर्व्यलीक मानस गृह, 7.3., चंचला कलप, कनक निकर अलि, सज्जन चपभप निकेत, रूप, जलधि वपुप, मन गयंद 7.4.5, उरसि राजत पदिक 7.5.6, गज मनि माल 7.6.4, राज राज मौलि, दिनमणि, कंबु कंठ, कलिंदजा

7.7., रुचिर चिबुक रद ज्योति 7.10, कच मेचक कुटिल. चारू चिबुक, सुक तुंड विनिंदक भव त्रासा 7.12, त्रपा 7.13.5, रोम राजि, चामीकर, रविसुत मदन सोम द्युति 7.17, पाटीर, 7.18.2, लोहित पुर 7.20.3, असिधार व्रत, सहस द्वादस पंचसत 7.25, पुत्रि, तव, देवसरि, प्रबाधि 7.32, मख 7.38.2

4.1.2–ध्वनिकृत–पद—

संस्कृत शब्दों के समान ही ध्वनिकृत पदों की बहुलता भी गीतावली में मिलती है—कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

पाख (पक्ष), हुलास (उल्लास), गलानी (ग्लानि), जाचक (याचक), उछाह (उत्साह), 1.4, जागरन (जागरण), मूलिकामनि (मूलिका मणि) जंत्र (यंत्र), सिधि (सिद्धि), 1.5, अथरवणी (अथर्वणी), रच्छा ऋचा (रक्षाऋचा), 1.6 दियो (दीपक), लाहु (लाभ) 1.10, आसिरवाद (आशीर्वाद) 1.11, अनरस (अन्यमनस्क), ती (तिय) 1,12, पखारि (प्रक्षालित) 1,17, वेरिया (वेला) सुरगैया (सुरगाय = कामधेनु) 1.20, ऐन (अयन), मैन (मयन) 1.35, कँटभारे (कँटभारि), दारे (विदरित); भारे (भारिल) 1.38, सत्रुसालु (शत्रुशालक) 1.42.1 भुवालु (भूपाल) 1.42.4. पेखक (प्रेक्षक) 1.45.3 कीरति (कीर्ति) 1.50.3., पानि (पाणि), जग्य (यज्ञ) 1.52.2-6, कंध (स्कंध) 1.56.3 आरोहै (आरोहण) 1.62.4, उपवीति (यज्ञोपवीत) 1,71.1; भाग (भाग्य), खन (क्षण), सनेह (स्नेह), चित्रसार (चित्रशाला), 1.75, खयकारी (क्षयकारी) 1.109.4, अहिवात (अविधवात्व) 1,110.2, जनम लाहु (जन्म लाभ) 2.1 3, दुति (द्युति) 2.5.3, निठुर (निष्ठुर) 2.8.1 प्रान कृपान (प्राण कृपाण) 2.11.2, गोऊ (गुप्त), सुठि (सुष्ठि) 2.16, सोही (शोभित) 2,18.2, बिछोही (वियोगी) 2.19.2, लोनी (लावण्य युक्त) 2.22.1, छर (छल) 2.32.1, अजीरन (अजीर्ण) 2.32.3, अहेरी (आखेटक) 2.42.1, बिद्रयो (विदीर्ण) 2.57.2, बांवौ (वाम) 2.63.1, सारो (सारिका) 2.66.1, घाम (घर्म) 2.68.3, निवेरो (निर्वाह) 2.73.2, ढीठो (धृष्टता) 2.78.1, मसान (श्मशान) 2.84,2, पोखि (पोषण) 2.87.2, परन (पर्ण) 2.89.4, अकनि (अकर्ण्य) 3.11.4, अंबक (अम्ब) 3.17.3, भौन (भवन) 5.20.3, जामति (जन्मति) 5.38.5, छति लाहु (क्षति लाभ) 6.15.2, गौने (गमन) 7.31.1

4.1.3 – विदेशी भाषाओं के पद–

आलोच्य भाषा में केवल अरबी-फारसी शब्दों का ही प्रयोग मिला है, कुछ प्रयोग इस प्रकार है–

बजार 1.2.5, खसम 1.67.3, नेवनि 1.100.1, सुसाहिब 5.3.4, गरीब निवाज 5.29.1, जहाज, बाज 5.29.3, कसम 5.39.6, गनी गरीब 5.42.1, सीपर 6,5.4.

4,1.4 अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के पद

गीतावली में यत्र-तत्र क्षेत्रीय म षाग्रों के पदों का प्रयोग भी मिलता है – यथा

4.1.4.1 गुजराती – मोंगी – सुनु खग कहत अंब मोंगी रहि
समुझि प्रेम पथ न्यारो – 2.66.5

4.1.4;2 राजस्थानी – पूजो – पूजो मन कामना 1,72.2
मेलि – गाल मेलि मुद्रिका 5.1.1
सार्यो – लंकापुरी तिलक सार्यो 7.38.7

डॉ० श्रीवास्तव के अनुसार – 'ठोकि ठेंकि खये' मुहावरा भी राजस्थानी के प्रभाव को व्यक्त करता है – यथा –

'कंदुक वेलि कुसल हय चढ़ि चढ़ि मन कसि कसि ठोंकि ठोकि खये'
1.45.2

4 1.5 हिन्दी की बोलियों तथा उपबोलियों के प्रयोग

इसके अतर्गत अवधी बुन्देलखंडी, भोजपुरी ओर खड़ी बोली के प्रयोग भी गीतावली में मिले हैं –

4.1.5.1 – अवधो – डॉ० देवकीनन्दन श्रीवास्तव ने अवधी की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियां बताई है जिनका प्रयोग गीतावली में मिला है जो इस प्रकार है –

(क) अवधी में संज्ञा के ह्रस्व अकारान्त रूपों का बाहुल्य पाया जाता है। गीतावली में भी ऐसे प्रयोग देखने में आते है। यथा–

माला < माल	1.72-2,	पताका < पताक	7.18.1,
ध्वजा < ध्वज	8.18.1	कोकिला < कोकिल	7.19.2,
भौंरा < भौर	7.19.3,	खंभा < खंभ	7.18.2,

(ख) अवधी में विकारी बहुवचन रूपों के लिए 'न्ह' प्रत्यय मिलता है। गीतावली मे इस प्रत्यय का प्रयोग अत्यधिक है। यथा –

जुवतिन्ह 1.3.4, बंदिन्ह 1.3.4, ग्राम बधुन्ह 2.24.4, रितुन्ह 7.21.2, भोलिन्ह 7.22.2, सिसुन्ह 7.36.2 आदि…………

(ब) अवधी में बहुत से नामिक व विशेषणों के अकारान्त रूपों को उकारान्त रूप में प्रयोग करने की परम्परा पाई जाती है। गीतावली में भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं – यथा –

अनुरागु, फागु 2.47-9, वेपु, द्वेपु, सेपु, नरेपु–विसेपु, पेपु …· 7.9 आदि…………

(घ) अवधी में भूत निश्चयार्थ क्रिगाओं में कर्ताकारक 'ने' का व्यवहार नहीं है – गीतावली में भी इस प्रवृत्ति का प्रयोग मिलता है –
यथा –

सुनी मैं सखि मंगल चाह सुहाई 2.89.1
मैं सुनी बातें असैली 5.6.2
अबलौं मै तोसौं न कहे री 5.49.1
तैं मेरो मरम कछु नहि पायो 6.3.1
मै तोहि बहुत बुझायौ 6.4.1
आदि ·······

(ङ.) मूल धातु के साथ अन्त में 'ऐया' प्रत्यय जोड़कर अवधी में कर्तृवाचक संज्ञाएं बनाई जाती है गीतावली में भी इस प्रकार के प्रयोग मिले हैं यथा—

उखरैया 1.85.3, लुटैया, सुनैया, अन्हवैया, बसैया. 1.9, देखवैया 2.37.2 आदि

(च) क्रियार्थक संज्ञाओं के अवधी रूप गवनु, देन, करन, लेन आदि का व्यवहार भी गीतावली में मिला है यथा

बिपिन गवनु भले भूखे को सुनाजु भो 2.33.2
पठई है बिधि मग लोगन्हि सुख दैन 2,24.3
भ्रमर द्वै रविकिरनि ल्याए करन जनु उनमेखु 7.9.3
किधौं सिगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चित बितलैन 2.24.3

(छ) अवधी में संयुक्त क्रियाओं का निर्माण कृदन्तों के आधार पर होता है गीतावली में भी यह प्रवृत्ति मिलती है — यथा —

लगे सजन सेन 5.16.13
लागी असीसन राम सीतहि 7.18.4
मुंहा चाही होन लगी 1.84.8

(ज) भविष्य काल के अधिकांश रूप अवधी में मूल धातु के साथ 'ब' प्रत्यय के योग से बनते हैं — गीतावली में भी ऐसे प्रयोग मिले हैं — यथा—

तात ! जानिबे न ए दिन— 2.7?.2
···· परम मुद मंगल लहिबो 5.14.3
··· देखिबो बारि बिलोचनि बहिबो 5.14.3

(झ) क्रिया के सामान्य वर्तमान काल में केवल मूल धातु के व्यवहार की प्रवृत्ति भी अवधी की एक विशेषता है यत्र—तत्र गीतावली में भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, यथा—

जेहि राख राम राजीव नैन 2.48.5 बहुविधि बाज बधाई 1.1.5
बरप पवन सुखदाई 1.55.4 लस मसिबिंदु बदन बिधु नीको 1.24.6
आदि ··· ·· ····

अवधी क्षेत्र में प्रचलित कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग भी गीतावली में देखने को मिला है जैसे — —

• ख्याल : ख्याल दली ताड़ुका, देखि ऋषि देत असीस अघाई 1.55.6
स्वांग ; जनपुरवीथिन बिहरत छैल संवारे स्वांग 2.47.12
डोंगर डांग; चित्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डांग 2.47.12

गीतावली में 'इया' और 'इयाँ' प्रत्यय के योग से बने हुए कुछ रूप ऐसे मिलते हैं जो विशेषतः लघुत्व का बोध कराने में प्रयुक्त हुए हैं और ये प्रवृत्ति ठेठ पूर्वी प्रयोगों से प्रभावित हैं – यथा–

छोटी छोटी,गोड़ियां अगुरियां छबीली छोटी,
नख ज्यौति मोती कमल दलनि पर,
किंकिनी कलित कटि हाटक जटित मनि,
मंजु कर कंजनि पहुंचियो रूचिर तर, 1.33

यहाँ गोड़ियां, अंगुरियां, पहुचियां क्रमशः गोड़, अंगुरी. पहुची शब्दों से बने है – इसी प्रकार पैजनियाँ, नथुनियां, और चौतनियां क्रमशः पैंजनी 1 34.2 नथुनी 1 34,3, और चौतनी 1 34.4 के स्थान पर प्रयुक्त हैं –

सर्वनाम के अन्तर्गत अवधी के संबंध कारक रूप कुछ विशेष प्रकार के मिलते हैं यथा – मोर तोर आदि गीतावली में भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, यथा–

दुखवहु मोरे दास जनि मानेहु मोरि रजाइ 2.47.18
………… .. उपमा कहुँ न लहति मति मोरी 1.105 2
तौ तोरी करतूति मातु । सुनि प्रीति प्रतीति कहा ही 2.61.3

अवधी भाषा में प्रयुक्त 'जौन' सर्वनाम का प्रयोग भी गीतावली में हुआ है – यथा –

तुम्हरे विरह भई गति जौन 5.20.1

तुलसीकृत गीतावली में प्रयुक्त 'सब दिन' का प्रयोग पूर्वी क्षेत्रों से प्रभावित प्रयोग है – यथा–

सब दिन चित्रकूट नीको लागत 2.50.1

4.1.5.2 – बुन्देलखण्डी– गीतावली में कहीं कही बुन्देली प्रयोगों का व्यवहार भी देखने को मिला है – यथा –

क्रियाओं के अन्तर्गत 'डारिवी' , ' करिवी' , 'पालवी' आदि रूप बुन्देली क्षेत्र के अन्तर्गत विशेष रूप से व्यवहृत होते हैं जिनका प्रयोग गीतावली में भी मिला है–

लपन लाल कृपाल । निपटहि डारिवी न विसारि 7.29.3
तौलौं वलि, आपुहो कीवी विनय समुझि सुधारि 7.29.1
पालवी सब तापसनि ज्यौं राज धरम विचारि 7.29.3

इसके अतिरिक्त 'ड़' ध्वनि का 'र' में रूपान्तर हो जाना भी बुन्देली प्रभाव का द्योतक है । गीतावली में ऐसे प्रयोग मिलते हैं । जैसे—

लर्‍यो (लड़्यो), खरो (खड़ा हुआ) आदि

रामकाज खगराज आजु लर्‍यो, जियत न जानकि त्यागी— 3.8.3

अनुज दियो भरोसो, तौलौं है सोचु खरो सो 3.10.3

4.1.5.3—भोजपुरी—

'प्रभु कोमल चित चलत न पारे' 2.2.5

में 'पारे' भोजपुरी क्षेत्र में व्यवहृत विशेष प्रयोग है। जो गीतावली में प्रयुक्त है—

आदरार्थ मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम रूप 'राउर', 'रावरी', 'रावरे', 'रावरो' आदि भोजपुरी रूपों का व्यवहार भी गीतावली में मिला है, यथा—

चित्रकूट पर 'राउर' जानि अधिक अनुराग 2.47.9

मेरे बिसेषि गति रावरी 1.13.3

देखि मुनि रावरे पद आज 1.49.1

जस रावरो लाभ ढोटिनहूं 1.50.1

4.1.5.4—खड़ी बोली—गीतावली में यत्र-तत्र खड़ी बोली के प्रयोग भी मिलते हैं—

सर्वनामों के अन्तर्गत अन्य पुरुष एक वचन में खड़ी बोली का व्यापक एवं प्रचलित रूप 'वह' का प्रयोग गीतावली में मिलता है। यथा—

कब देखोगी नयन वह मधुर मूरति 5.47.1

नहिं बिसरति वह लगनि कान की 5.11.3

खड़ी बोली में प्रयुक्त सर्वनाम—मेरी, मेरे, हमारे, तेरी, तेरे, तुम्हारी आदि का व्यवहार गीतावली में मिला है—

कहत हिय मेरी कठिनई लखि गई प्रीति लजाइ 7.30.2

हृदय घाव मेरे पीर रघुवीरै 6.15.1

एक कहै कछु होउ सफल भए जीवन जनम हमारे 1.68.2

ताके अपमान तेरी बड़िए बड़ाई है 5.26.2

होंहि विवेक विलोचन निरमल सुफल सुसीतल तेरे 7.12.1

वेद विदित यह बानि तुम्हारी रघुपति सदा संत सुखदायक 2.3.2

क्रिया रूपों के अन्तर्गत 'देखो' 'करती है' आदि विशुद्ध आधुनिक खड़ी बोली में व्यवहृत क्रिया रूपों का व्यवहार गीतावली में मिला है। यथा—

देखो रघुपति छवि अतुलित अति 7.17.1

करि आई, करिहैं, करती हैं तुलसीदास दासनि पर छाहैं 7.13.9

इसी प्रकार 'रहिए' 'पूजिए' 'आए' तथा सहायक क्रिया 'है' आदि रूप भी खड़ी बोली से प्रभावित लगते हैं। यथा—

देखत ही रहिए नित ए, री 1.78.2

देव पितर ग्रह पूजिए 1.11.2

कहां तें आए हैं, को हैं 2.37.1

नामिकों के तिर्यक रूप 'बधाए' 'चौके' आदि खड़ी बोली के रूपों का प्रयोग भी आलोच्य ग्रन्थ में मिला है। यथा—

चित्र चारु चौके रचीं लिखि नाम जनाए 1.6.7

बाजत अवध गहागहे आनद बधाए 1.6.1

आदि—

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा[1] ने व्रजभाषा को तीन प्रमुख भागों में बांटा है—पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी। मैंनपुरी, एटा, इटावा, बदायूं, बरेली, पीलीभीत, फरुखाबाद, शाहजहाँपुर, हरदोई और कानपुर की बोलियाँ पूर्वी ब्रज के अन्तर्गत आती हैं। इनमें भी शाहजहांपुर, हरदोई और कानपुर अवधी क्षेत्र के निकट हैं। अतः यहां पर अवधी रूपों का विशेष मिश्रण मिलता है। पीलीभीत और फरुखाबाद जिलों की बोलियों पर भी कहीं-कहीं अवधी का प्रभाव पाया जाता है लेकिन मैनपुरी, एटा, इटावा, बदायूं और बरेली बाह्य प्रभाव से स्वतन्त्र हैं।

मथुरा. आगरा, अलीगढ़ और बुलन्दशहर की बोली पश्चिमी अथवा केन्द्रीय व्रज के अन्तर्गत आती हैं इसे विशुद्ध व्रज भी कहा जा सकता है।

भरतपुर, धौलपुर, करौली, पश्चिमी ग्वालियर और पूर्वी जयपुर की बोली पश्चिमी व्रज से मिलती जुलती है किन्तु उसमें कुछ राजस्थानी के चिन्ह मिलने लगते हैं इसी कारण इसे दक्षिणी व्रजभाषा कहा जाता है।

गीतावली को पश्चिमी व्रजभाषा के अन्तर्गत स्थान दिया जाता है परन्तु फिर भी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण होने वाले रूपान्तरों के कारण गीतावली में व्रजभाषा से अलग अन्य बोली रूपों का प्रयोग मिलता है। इसके अतिरिक्त तुलसी के जीवन का अधिकांश भाग शायद देशाटन में बीता है। जहां विभिन्न प्रान्तीय, क्षेत्रीय भाषा भाषियों, विभिन्न संप्रदाय एवं धर्म के लोगों का जमघट रहता था इसी कारण उनकी भाषा में अन्य बोली रूपों की व्याप्ति मिलती है। इन सब के अतिरिक्त तुलसी के ज्ञान की विशालता, व्यापक परिचय आदि भी इसमें सहायक रहे होंगे।

4.2–मूलाधार बोली–

गीतावली में प्रयुक्त बोली रूपों के आधार पर निष्कर्ष यह निकलता है कि यद्यपि इसमें अनेक बोलियों के रूप मिले हैं परन्तु उसकी मूलाधार बोली व्रज है जो विशुद्ध केन्द्रीय या पश्चिमी व्रज के अन्तर्गत आती है।

यद्यपि गीतावली में व्रज के अतिरिक्त संस्कृत, अरबी, फारसी, गुजराती, राजस्थानी, अवधी, बुन्देली, भोजपुरी और खड़ी बोली के रूपों के प्रयोग मिले हैं लेकिन इन रूपों की प्रयोगावृत्तियां बहुत कम है। संस्कृत रूपों के प्रयोग तुलसी की

---

1. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा : व्रजभाषा, पृष्ठ 35.

सभी रचनाओं में दिखाई देते हैं सम्भव है देववाणी की पवित्रता के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए अथवा आदर की भावना से अथवा सांस्कृतिक आदान के कारण इन रूपों का प्रयोग तुलसी ने किया हो।

अरबी, फारसी के पदों का प्रयोग भी तुलसी की सभी रचनाओं में मिला है जिसका कारण तुलसी का समन्वयात्मक दृष्टिकोण हो सकता है। अथवा सम्भव है कवि के रचनाकाल में ये जनभाषा के स्वाभाविक अंग रहे हों। गुजराती, राजस्थानी के रूपों का प्रयोग गीतावली में न्यूनतम है।

हिन्दी की बोलियों तथा उपबोलियों के अन्तर्गत तुलसी ने गीतावली में केवल अवधी, बुन्देली, भोजपुरी और खड़ी बोली के रूपों का ही प्रयोग किया है—सबसे अधिक प्रयोगावृत्तियाँ अवधी रूपों की हैं। इसका कारण यह है कि तुलसी का ब्रज के समान ही अवधी पर भी अधिकार था अतः अवधी रूपों का प्रयोग गीतावली में होना स्वाभाविक ही है। सम्भवतः यह उनकी अन्तश्चेतना का प्रतिफल हो जो उनकी जन्मभूमि या पोषण भूमि को इंगित करता हो।

तुलसी ने जहां अपनी ब्रज भाषा की रचनाओं में अवधी भाषा के प्रयोग किए हैं वहां अवधी की रचनाओं में ब्रज के रूपों के प्रयोग भी बराबर किए हैं—

भोजपुरी, बुन्देली आदि के प्रयोगों का कारण क्षेत्रीय प्रभाव हो सकता है सकता है लेकिन इन रूपों की प्रयोगावृत्तियाँ बहुत कम है।

अतः भाषा शास्त्रीय अध्ययन के आधार पर यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि गीतावली ब्रजभाषा की रचना है अथवा इसकी मूलाधार बोली ब्रज है। अन्य भाषाओं और बोलियों के प्रयोग इसके ही परिप्रेक्ष्य का प्रतिफल है। उनमें अपनी स्वतन्त्रता की बात नहीं है। वे सब ब्रज रूपों से या तो प्रभावित हैं या उसे सरल और रमणीय बनाने में सहायक।

5

5.1 उपसंहार

'तुलसी कृत गीतावली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन एवं वैज्ञानिक पद-पाठ' पर विस्तार से विचार के फलस्वरूप उसके विषय में निष्कर्षतः निम्नलिखित बातें कही जा सकती हैं–

5.1.1 अध्ययन में प्रयुक्त हस्तलिखित प्रति 'क' (जिसको प्रमाणित प्रति बना लिया गया है) में दस स्वर, छब्बीस व्यंजन, दो अर्धस्वर, अनुस्वार, अनुनासिक, शब्द संधिक, सुरसरणियां और सुरसरणि परिवर्तक मिले हैं–ऋ स्वर का प्रयोग कम है। ऋ के स्थान में 'रि' का व्यवहार प्रचुर मात्रा में हुआ है। उच्चारण के स्तर पर तो ऋ है ही नहीं क्योंकि तुलसी से पूर्व प्राचीन ब्रज में लिखित पोथियों में भी 'रि' का व्यवहार 'ऋ' के स्थान पर मिलता है। लेकिन उसके मात्रा रूप (ृ) का प्रयोग गीतावली में सर्वत्र मिलता है। उच्चारण के स्तर पर 'अ' केवल संयुक्त व्यंजनान्त शब्दों में ही शेष है-ऐसा अनुमान कर (जिसके लिए पर्याप्त कारण अध्ययन के बीच मौजूद हैं) शेष अकारान्त को व्यंजनांत माना गया है फिर भी उन्हें हलन्त के चिह्न से सूचित नहीं किया गया है।

हमारे आलोच्य ग्रंथ में कुछ ध्वनि संबंधी परिवर्तन मिलते हैं जो सर्वत्र नहीं दीख पड़ते हैं। निदर्शन बतौर कुछ परिवर्तन इस प्रकार हैं–

(1) मुक्ता के स्थान पर मुकुता — 7.17.6
मर्म और निश्चर के स्थान पर मरम और निसिचर — 6.3.
आदि–ये स्वर भक्ति के लोप का परिणाम है।

(2) कहीं कहीं अग्रागम के सहारे भी ध्वनि परिवर्तन हुआ है–यथा–
नहलाइके के स्थान पर अन्हवाइके — 1.10.1
स्तुति के स्थान पर अस्तुति — 7.38.9

(3) कहीं कहीं संयुक्त अक्षरों में भी ध्वनि परिवर्तन मिले हैं–
(क) क्ष का च्छ में रूपान्तर–यथा
काकपक्ष के स्थान में काकपच्छ — 1.60.2
(ख) ग्य का ग में रूपान्तर–यथा
'भूमितल भूप के बड़े भाग' — 1.29.1
में भाग्य के स्थान में भाग का प्रयोग
(ग) त्स का छ रूप में ग्रहण भी कई स्थानों में मिला है जैसे–वत्स तथा

उत्साह के स्थान में बछरु तथा उछाह आदि का प्रयोग
बछरु छबीलो 1.19.5
अनुदिन उदय उछाह 1.4.14

(4) स्फुट रूप से भी कुछ व्यंजनों में परिवर्तन मिले हैं–

(क) मूर्धन्य 'च' का अन्तस्थ ध्वनि 'य' में रूपान्तर–यथा–
लोचननि के स्थान पर लोयननि 2.37.2
बचनी के स्थान पर बयनी 1.81.1

(ख) 'ज' ध्वनि का लोप–'राजा' के स्थान पर 'राउ'–जैसे–
करत राउ मन मों अनुमान 2.59.1

(ग) 'ण' के स्थान में 'न' का प्रयोग–
प्राण के स्थान में प्रान–जैसे–
'बसति हृदय जोगी प्रिय परम प्रान की' 2.44.4

(घ) 'थ' तथा 'ध' के स्थान में 'ह' का व्यवहार–
नाथ के स्थान में नाह–
'समाचार मेरे नाह कहे री' 2.42.2
क्रोधी के स्थान में कोही–
'कौसिक से कोही बस किए दुहू माई हैं' 1.71.2

(ङ) 'भ' ध्वनि का 'ह' में रूपान्तर–
लाभ के स्थान पर लाहु–यथा–
'लोयननि लाहु देत जहाँ जहाँ जैहैं' 2.37.2
ये सब व्यंजन लोप के उदाहरण हैं। अल्पप्राण के स्थान पर श्रुति आ गई है।

(च) 'म' के स्थान में 'व' का व्यवहार–
गमन के स्थान में गवन–यथा–
'तिन्ह श्रवननि बन गवन सुनति हौं 2.4.3

(छ) 'व' का 'ब' ध्वनि में रूपान्तर–
दिव्य के स्थान में दिव्य–यथा–
'अहिल्या भई दिव्य देह' 1.67.3

(ज) 'य' का 'ज' ध्वनि में रूपान्तर–
योग्य, यग्य के स्थान में जोग, जग्य का प्रयोग–
सुनिके जोग वियोग राम को हौ न होउ मेरे प्यारे 2.63.2
जग्योपवीत विचित्र हेममय 1.108.6
यह मागधी वर्ग का प्रचलन बाहुल्य और आदान-प्रदान का फल प्रतीत होता है।

हमारे कवि ने उक्त ग्रन्थ में कहीं-कहीं एक ही पद का प्रयोग दो अर्थों में किया है जिसका निर्णय वाक्य के स्तर पर ही होता है। यथा–

जुग–

(1) 'अरुन कंज महं जनु जुग पाति रुचिर गज मोति' 7.21.8
(दो के अर्थ में)

(2) 'जुग सम निमिप जाहिं रघुनंदन बदन कमल बिनु देखे' 2.4.4
(युग के अर्थ में)

जोग–

(1) 'सुनिबे जोग वियोग राम को हौं न होउ मेरे प्यारे' 2.63.2
(योग्य के अर्थ में)

(2) 'जो सुख जोग, जाग, जप अरु तीरथ तें दूरि' 7.21.23
(योग के अर्थ में)

तीर–'एक कहै चित्रकूट निकट नदी के तीर परनकुटी करि बसे' 2.41.2
(तट के अर्थ में)

'एक तीर तकि हती ताड़का विद्या विप्र पढ़ाई 1.52.6
(तीर के अर्थ में)

बान–'पीत पत कटि तून बर कर ललित लघु धनु-बान' 1.41.2
(वाण के अर्थ में)

'वान जातुधान पति भूप दीप सातहू के' 1.86.2
(वाणासुर के अर्थ में)

विधि–'सखिन सहित तेहि औसर बिधि के संजोग' 1.71.3
(विधाता के अर्थ में)

'तू जनम कौन विधि भरिहैं' 2.60.4
(तरीका के अर्थ में)

हमारे विवेच्य ग्रन्थ में प्रयुक्त सभी स्वर पद की प्राथमिक, माध्यमिक और अन्तिम स्थितियों में मिलते हैं–सभी स्वरों में संस्वनात्मक वैविध्य भी मिला है–गीतावली में प्रयुक्त दो अर्धस्वर य और व है विभिन्न स्वरों के मध्य य' के चौवीस सयोग और 'व' के सत्तरह सयोग मिले है अनुनासिक स्वरों के साथ भी य' और 'व' के क्रमशः तीन और आठ संयोग मिलते हैं–

स्वर संयोगो के अन्तर्गत पैंसठ प्रकार के स्वर संयोग मिले हैं तथा उक्त ग्रन्थ की आक्षरिक सरचना के अन्तर्गत एक से पाच अक्षर तक के प्रयोग मिले हैं।

आलोच्य ग्रन्थ में अनुस्वार, अनुनासिकता दोनो के लिए अलग अलग संकेत हैं–सानुनासिक स्वर-स्वनिम पद के आदि, मध्य और अन्त सर्वत्र स्थित हैं। केवल

।ईँ। ।इँ।, ।एँ।, ।ऐँ। । ।उँ।, ।ओँ।, और ।औँ। स्वर स्वनिम पद की आदि स्थिति में नहीं हैं–

आलोच्य ग्रन्थ में दो प्रकार के व्यंजन स्वनिम मिलते हैं खंडीय एवं खंडेतर। खंडीय व्यंजन स्वनिम छब्बीस हैं सभी पद की प्राथमिक, माध्यमिक और अन्तिम स्थितियों में वर्णित हैं केवल ड़, ढ़, और ण प्राथमिक स्थिति में नही है। सभी स्वनिमों में संस्वनात्मक वैविध्य मिले हैं। गीतावली में प्रयुक्त न्ह,म्ह आदि को संयुक्त व्यंजन रूप में स्वीकार किया गया है। संयुक्त व्यंजनों के अन्तर्गत दो और तीन व्यंजनों के संयोग मिले हैं। दो व्यंजनों के संयोग प्राथमिक स्थिति में अठ्ठाईस, माध्यमिक स्थिति में तरेसठ है–तीन व्यंजनों के संयोग संख्या में आठ हैं इस प्रकार कुल निन्यानवें व्यंजन संयोग मिलते हैं। खण्डेतर स्वनिमों के अन्तर्गत विभाजक, सुरसरणियाँ और सुरसरणि परिवर्तक मिलते हैं–

5.1.2–आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त नामिकों के अन्तर्गत दो प्रकार के प्रातिपदिक मिले हैं–

(1) एक भाषिक इकाई वाले प्रातिपदिक

(2) एक से अधिक भाषिक इकाई के योग से निर्मित प्रातिपदिक।

एक भाषिक इकाई वाले प्रातिपदिक व्यंजनान्त और स्वरान्त दो प्रकार के हैं। स्वरान्त प्रातिपदिकों मे अकारान्त (संयुक्त व्यंजनान्त), आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ओकारान्त और औकारान्त प्रातिपदिक मिले हैं। एकारान्त व ऐकारान्त प्रातिपदिक नहीं मिले–कुल एक भाषिक इकाई वाले प्रातिपदिक संख्या में पन्द्रह सौ अट्ठावन हैं। प्रातिपदिकों में मुक्त-वैविध्य, स्वरीभूतरूप एवं अवधारण बोधक रूप मिले हैं।

गीतावली में प्राप्त प्रातिपदिकों की कारकीय संरचना दो प्रकार की है (1) विभक्ति मूलक संरचना, (2) चिह्नक मूलक संरचना।

विभक्ति मूलक संरचना वियोगात्मक व संयोगात्मक दो प्रकार की है–वियोगात्मक संरचना के अन्तर्गत पुल्लिग एवं स्त्रीलिंग दोनों रूपो में मूलरूप एकवचन में –0 रूपिम तथा मूलरूप बहुवचन में –0, –ए, ऐं, –अन, –अनि, –इन, –इन्ह और इयाँ रूपिम संयुक्त है।

तिर्यक रूप एक वचन में दोनों लिंगों में –0 रूपिम तथा –ए रूपिम मिला है –तिर्यक रूप बहुवचन में पुल्लिग रूपों में –व्तंजनान्त में –अन, –अनि, अन्हि रूपिम आकारान्त में –नि रूपिम, इकारान्त में –अनि, –इन, –इन्ह रूपिम ईकारान्त में –इन, –इन्ह रूपिम उकारान्त में –उन, –उन्ह रूपिम मिले हैं–सभी रूपिम परसर्ग रहित व परसर्ग सहित दोनों रूपों के साथ संपुक्त हैं।

स्त्रीलिंग के तिर्यक बहुवचन रूपों के अन्तर्गत व्यंजनान्त एवं अकारान्त में –अनि रूपिम, इकारान्त में –इन्ह –इन्हि रूपिम,, उकारान्त व ऊकारान्त में

–उन, और –उन्ह रूपिम मिले हैं जो परसर्ग रहित एवं परसर्ग सहित दोनों प्रकार के रूपों के साथ संयुक्त हैं।

संयोगात्मक संरचना के अन्तर्गत दोनों लिंगों में संप$_1$ में –0 रूपिम संप$_2$ + संप$_4$ में –इ, –उ, –ए, –ऐ, –एँ. –हि≃हिं और –0 रूपिम संयुक्त हैं। संप$_3$+संप$_5$ में –इ, –ए, –एँ और –हि रूपिम मिले हैं संप$_6$ में –उ, –ऐ, –हि और –0 रूपिम संयुक्त हुए हैं। संप$_7$ में –ए, –ऐ, –हि≃हिं और –0 रूपिम संयुक्त हैं।

गीतावली के संबोधन एक वचन के रूप तिर्यक रूप के एकवचन के रूपों के समान हैं।

गीतावली में प्रयुक्त चिह्नक मूलक संरचना के अन्तर्गत संप$_1$ में कोई परसर्ग नहीं है। संप$_2$+संप$_4$ में 'को', 'कहँ' परसर्ग, संप$_3$+संप$_5$ में 'ते' 'तैं', 'सो', सों, 'से', 'सन' परसर्ग, संप$_6$ में 'की', 'के', 'को', परसर्ग तथा संप$_7$ में 'पर', 'पै', 'महँ', 'माहिं', 'माहीं', 'मे', 'मो', और 'सि', परसर्ग मिलते हैं—

इसके अतिरिक्त अन्य परसर्गीय पदावली प्रयुक्त है जिसके अन्तर्गत परसर्गवत प्रयुक्त अनेक रुप वर्णित हैं—

आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त दो रुपिमों के योग से निर्मित प्रातिपादिक संरचना की दृष्टि से तीन कोटियों में विभाजित हैं—

(1) बद्धपदग्राम + मुक्त पदग्राम
(2) मुक्त पदग्राम + बद्धपदग्राम
(3) मुक्त पदग्राम + मुक्त पदग्राम

वद्ध + मुक्त संरचना के अन्तर्गत अ-, अन-; अनु-, अप-, अभि-, आ-, औं-, उप-, कु-, दु-, नि-, निर-, प्र-; पर-, परि-, प्रति-, वि-, स-, सम-, सन-, सु-, दु-, अ + वि- और वि + अ- वद्ध रुपग्राम मिले हैं।

मुक्त + वद्व संरचना के अन्तर्गत आ-, -अनी≃-आनी, -अरी≃-आरी, -आई-, -इक≃इका; -इन≃-इनी, -इया≃-इयाँ, -ई, -ईन, -ऐया, -ऊटी, -ऊरी, -औटा, -क, -ग, -ज≃-जा, -ता, -द -आद, -आत, -धि, -प, और -उआ,≃ओआ वद्ध पदग्रामों के संयोग से मुक्त पदग्रामों की संरचना हुई है।

मुक्त + मुक्त संरचना के अन्तर्गत नामिक + नामिक, विशेषण + नामिक, नामिक + विशेषण और नामिक + क्रिया मिलकर नामिकों का निर्माण करते हैं—

5.13 –आलोच्य ग्रन्थ में प्राप्त विशेषणों का अध्ययन तीन दृष्टियों से किया गया है—(1) संरचनात्मक, (2) अर्थगत, (3) प्रकार्यगत। संरचना की दृष्टि से विशेषण पद दो वर्गों में विभाजित हैं, (1) अरुपान्तरित, (2) रुपान्तरित।

अरुपान्तरित विशेषण अपने विशेष्य के लिंग, वचन, कारक के अनुसार कोई विभक्ति प्रत्यय स्वीकार नहीं करते हैं ऐसे विशेषणों का अध्ययन प्रातिपदिक, लिंग-विधान, वचनविधान, और कारकविधान की दृष्टि से किया गया है।

वे विशेषण जो विशेष्य के लिंग, वचन कारकानुसार प्रत्ययों को ग्रहण करते है, रूपान्तरित विशेषण हैं। आलोच्य पुस्तक में प्राप्त ऐसे विशेषण मूलपदग्रामीय और यौगिक पदग्रामीय दो वर्गों में विश्लेष्य है –

मूलपदग्रामीय विशेषण संख्या से एक सौ अड़तीस हैं जिनकी लिंग, वचन और कारकीय स्थिति को निरखा-परखा गया है। यौगिक पदग्रामीय विशेषण तीन कोटियों में विभक्त हैं –

(1) बद्ध पदग्राम + मुक्त पदग्राम
(2) मुक्त पदग्राम + बद्ध पदग्राम
(3) मुक्तपदग्राम + मुक्त पदग्राम

बद्ध + मुक्त संरचना के अन्तर्गत –अ, अन, अनु अभि, उत, कु, दु≃दुर नि≃निर, प्र≃पर,≃प्रति≃परि, वि, स≃सम≃सु, और अवि बद्ध पदग्राम मिले है।

मुक्त पदग्राम + बद्ध पदग्राम संरचना के अन्तर्गत-अनीय, अई, -ईक, -ईन, -आनी, -आल, -आरी, -इनी, -इक, -ऐत, -त, -द, -वारी, -तर, -ल,√लु, -ग, और तम≃तमा बद्धपदग्राम संयुक्त हुए हैं।

मुक्तपदग्राम + मुक्त पदग्राम संरचना के अन्तर्गत नामिक + नामिक, नामिक + क्रिया, नामिक + विशेषण, विशेषण + विशेषण तथा विशेषण + नामिक मिलकर विशेषणों का निर्माण करते है।

विशेषणों का दूसरा वर्गीकरण अर्थ के आधार पर है इसके अन्तर्गत विशेषणों के दो वर्ग मिले हैं। (1) सार्वनामिक विशेषण जो दो प्रकार के है – (1) वे सर्वनाम जो नामिकों के पूर्व आने के कारण विशेषण हो गए हैं – उनका अध्ययन सर्वनाम के साथ हुआ है, (2) दूसरे प्रकार के वे सार्वनामिक विशेषण जो मूल सर्वनामों में अन्य प्रत्यय लगाकर बने हैं – ऐसे विशेषण तीन प्रकार के मिले हैं। (1) रीतिवाचक सार्वनामिक विशेषण, (2) परिमाण वाचक सार्वनामिक विशेषण, (3) सख्यावाचक सार्वनामिक विशेषण।

अर्थ के आधार पर प्राप्त दूसरे विशेषण संख्या वाचक हैं जो तीन प्रकार से वर्गीकृत हैं – (1) निश्चित संख्यावाचक – जो पूर्ण, अपूर्ण, क्रम, आवृत्ति और समुदाय – पाँच भेदों के अन्तर्गत वर्गीकृत हैं, (2) अनिश्चित संख्यावाचक, (3) परिमाण वाचक।

विशेषणों का तीसरा वर्गीकरण प्रकार्यगत है जिसमें विशेषणों का अध्ययन उनके कार्यों के आधार पर वर्णित है। गीतावली में विशेषणों के लघु एवं दीर्घ रूप, अवधारण के लिए प्रयुक्त रूप एवं विशेषणों में तुलना भी देखी गई है।

5.1.4 उक्त ग्रन्थ में प्रयुक्त सर्वनाम–(1) पुरुष वाचक (उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष), (2) निश्चय वाचक (निकटवर्ती, दूरवर्ती), (3) अनिश्चय वाचक (प्राणिवाचक, अप्राणिवाचक), (4) प्रश्नवाचक (प्राणिवाचक, अप्राणिवाचक), (5) संबंध वाचक, (6) निजवाचक, (7) आदर वाचक, (8) समुदाय वाचक, (9) नित्य संबंधी और (10) संयुक्त सर्वनाम हैं।

5.1.5 हमारे कवि के उक्त ग्रन्थ में प्रयुक्त धातुएं दो प्रकार की मिलती हैं–(1) मूल धातु जो संख्या में कुल दो सौ तिरासी हैं और दो भागों में विभक्त है–(क) स्वरान्त–जिनकी कुल संख्या इक्तीस हैं और सभी लगभग एकाक्षरी है केवल एक-दो धातुएं द्वयक्षरी हैं। (ख) व्यंजनान्त धातुएं संख्या में दो-सौबावन है जो एकाक्षरी और द्वयक्षरी दोनों प्रकार की मिलती हैं।

(2) यौगिक धातुए तीन वर्गो में विभाजित हैं–

(क) सोपसर्गिक धातुए जो सख्या में एक सौ तेईस हैं। (ख) नाम धातुएं जिसमें नामिक व विशेषण पदों का प्रयोग धातु रूप में मिला है ऐसी धातुएं संख्या में बासठ मिली हैं। (ग) अनुकरणमूलक धातुएं–जो एक ही धातु को दोहराकर प्रयुक्त हुई है ऐसी धातुएं केवल ग्यारह है।

आलोच्य ग्रन्थ में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के रूप मिलते हैं एवं प्रेरणार्थक के प्रयो" भी प्रयुक्त हैं।

गीतावली में प्रयुक्त सहायक क्रियाओं को दो वर्गों में रखा गया है–(1) एक तो वे सहायक क्रियाए जो मुख्य क्रिया पदों के साथ प्रयुक्त हैं और (2) दूसरी वे जो मुख्य क्रिया के समान प्रयुक्त हैं। दोनों प्रकार की क्रियाओं के रूप समान है केवल प्रयोग अलग हैं।

उपरोक्त ग्रन्थ में वर्तमान काल में प्रयुक्त सहायक क्रियाएं 'हौं', 'हो', 'है', 'सकै', 'होइ', 'हे', 'अहै', 'रहै', 'होत', 'रहत', और 'होति' है–वतमान संभावनार्थ में 'होय', 'होइ' होहि', 'होउ', 'होहु', और 'होही' है–भूतकाल मे प्रयुक्त सहायक क्रियाएं 'हुतो', भया', 'भे', 'भो', 'भौ', 'हुते', 'भए', 'भइ', 'भई', 'हही', और 'भई', है भूत संभावनार्थ में 'होती', होते, सहायक क्रियाएं हैं तथा भविष्य निश्चयार्थ में 'ह्वैहौ', 'ह्वैहै', होहि', 'होइहै', 'होइगे', और 'हाइगी', सहायक क्रियाए प्रयुक्त हैं जो कि मुख्य क्रिया के साथ ही मिलकर लिखी गई है। मुख्य क्रिया के समान प्रयुक्त सहायक कियाएं 'हो', 'हुतो', 'हे', 'हो', 'भो', भो', 'भयो', 'भयो', 'भे', 'भये', 'भइ', 'भई', 'भई'', 'रहि', रही', और 'रह्यो' हैं–सभी अलग-अलग पुरुषों के साथ अलग-अलग कालों मे प्रयुक्त है।

आलोच्य ग्रन्थ में वर्तमानकालिक, तात्कालिक, अपूर्ण क्रिया द्योतक, भूतकालिक, क्रियार्थक संज्ञा, पूर्वकालिक और कर्तृवाचक संज्ञा आदि कृदन्तो का व्यवहार हुआ है। वर्तमान कालिक, तात्कालिक तथा अपूर्ण क्रिया द्योतक कृदन्त

के लिए –अत् रूपिम का प्रयोग हुआ है और उसके बाद लिंग वचनादि को द्योतित करने वाले रूपिम –0, –इ≃ई तथा अवधारण बोधक रूप हु≃हू≃हि≃ही आदि का व्यवहार हुआ है। भूतकालिक कृदन्त के लिए–0, –इ, –ई, –ए, –ओ, –आदि रूपिमों का प्रयोग हुआ है। क्रियार्थक संज्ञा के लिए प्रयुक्त रूपिम–अन, –(अ) वे, –(अ) बो, –ए, –ओ, –(अ) क, –आउ और 0 हैं–कहीं कहीं–अन् आदि प्रत्ययों के पश्चात् भी रूपिम संयुक्त हुए हैं।

पूर्वकालिक क्रिया के रूप दो प्रकार से प्रयुक्त हैं–(1) धातु + रूपिम (2) धातु + रूपिम + कै आदि परसर्ग युक्त क्रियारूप जिनका अध्ययन संयुक्त क्रियाओं के साथ हुआ हैं–

पूर्वकालिक क्रिया के लिए धातु के साथ प्रयुक्त होने वाले रूपिम –इ≃ई, –ए, –औ, –0 हैं।

कर्तृवाचक संज्ञा के लिए –अन, –हर –धर, –ऐया आदि रूपिम संयुक्त हैं–कहीं-कहीं इन रूपिमों के पश्चात् अन्य रूपिम भी संयुक्त हुए हैं।

आलोच्य ग्रन्थ की काल रचना तीन वर्गों में विभक्त है। (1) कृदन्त काल, (2) मूल काल, (3) संयुक्त काल। कृदन्त काल वे हैं जिनकी रचना कृदन्तों से हुई है इनके अन्तर्गत–(1) वर्तमान, (2) भूतकाल–दो काल आते हैं।

वर्तमान काल के अन्तर्गत उत्तम, मध्यम और अन्य पुरुष के लिए–[अत्] रूपिम संयुक्त हैं–स्त्रीलिंग के रूपों में–अत् के पश्चात् इया, ई रूपिम और लगे हैं–भूतकाल (निश्चयार्थ) के लिए प्रयुक्त होने वाले रूपिम–सभी पुरुषों में –∅ ,–ओ, –ए और स्त्रीलिंग में–इ≃ई हैं। भूत संभावनार्थ के रूपिम –अत्, –अत् + ओ, –ओ, –ए, –और–ई हैं।

मूलकाल के रूप न तो कृदन्तों से बने हैं न सहायक क्रिया के योग से–इसी कारण इन्हें मूलकाल की संज्ञा दी गई है इसके अन्तर्गत वर्तमान, आज्ञार्थ और भविष्यत काल आते हैं–वर्तमान काल के रूपों में पुरुष और वचन का अन्तर तो मिलता है परन्तु लिंग का नहीं–दोनों लिंगों में समान रूप प्रयुक्त हैं–वर्तमान निश्चयार्थ में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय-∅, –उँ≃अहुँ, –औ –ऐ, –इ≃ई, –उ, –ऐ और –अहिं≃अही है–वर्तमान संभावनार्थ में –अहि और –ऐ रूपिम मिलते हैं–आज्ञार्थ में संयुक्त होने वाले रूपिम मध्यम पुरुष में–∅, –इ, –अहि, –अहु, –इय, –इये, –इयो, –उ≃ऊ, –ऐ, –औ, –इबी, –इबे,–इबो, –और–एहु हैं। उत्तम पुरुष आज्ञार्थ में–औ और अन्य पुरुष आज्ञार्थ में–ऐ, –अहु, –औ तथा –∅ रूपिम संयुक्त हुए हैं–

भविष्य काल के रूप तीन प्रकार के हैं। 'ह' वाले रूप, 'ब' वाले रूप और

(1) शीर्ष विशेषक वाक्यांश ।
(2) अक्ष संबंध वाक्यांश ।
(3) समावयवी वाक्यांश ।
(4) शीर्ष विश्लेपक वाक्यांश ।
(5) संगुंफित क्रिया वाक्यांश ।

गीतावली में कुछ ऐसे विशिष्ट पद प्रयोग भी मिलते हैं जो कहीं सर्वनाम-वत् प्रयुक्त हैं, कहीं विशेषण का कार्य करते हैं और कहीं समुच्चय-बोधकवत व्यवहृत हैं–यथा-लखे औ लखाई, इहाँ किए सुभ सामैं 5.25 3 हिय ही और, और कीन्हीं विधि, राम कृपा और ठनी 5.39.2 दिन दस और दुसह दुख सहिवो 5 14.1

यहां 'और' पद प्रथम वाक्य में संयोजक, दूसरे वाक्य में अनिश्चिय वाचक सर्वनाम तथा तृतीय वाक्य में सार्वनामिक विशेषणवत् व्यवहृत है—

5.1.9 गीतावली में कुछ बोलीगत रजिस्टर भी मिले है इनके आधार पर तुलसी की समस्त रचनाए दो वर्गों में विभक्त की जा सकती हैं ( ) अवधी की रचनाओं का वर्ग (2) व्रज भाषा की रचनाओं का वर्ग । गीतावली को पश्चिमी व्रज भाषा वर्ग की रचनाओं में स्थान दिया जा सकता है । भाषा निष्कर्षो के आधार पर गीतावली में प्रयुक्त व्रज भाषा के अतिरिक्त अन्य बोली गत वैविध्य मिलते हैं–(1) गीतावली में संस्कृत के पदों का व्यवहार बहुलता से मिला है (2) विदेशी भाषा–(केवल अरबी, फारसी) के पदों के प्रयोग मिलते है, (3) अन्य क्षेत्रीय भाषाओ के पद–जिनमें गुजराती और राजस्थानी प्रयोग मिले हैं–(4) हिन्दी की बोलियों तथा उपबोलियों के प्रयोग जिसके अन्तर्गत अवधी बुन्देल-खंड़ी भोज्पुरी और खड़ी बोली के प्रयोग हैं ।

5.1.10 इन बोलीगत रजिस्टरों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गीतावली की भाषा व्रज है और इसका वैविध्य युगबोध एवं भौगोलिक कारणों से है । हमारे कवि और उसकी रचनाओं का संपर्क विभिन्न प्रान्तीय, क्षेत्रीय भाषियों, विभिन्न संप्रदाय एवं धर्म के लोगों से बना रहने के कारण, प्रस्तुत ग्रन्थ की भाषा भी अन्य प्रादेशिक बोलियों के प्रभाव से मुक्त न रह सकी लेकिन उक्त ग्रन्थ की मूलाधार बोली व्रज है और अन्य क्षेत्रीय बोलियों के रजिस्टर ने उसको समर्थ एवं संवेदनीय बनाकर उसमे अभिव्यक्ति और भाषा के एक नए आयाम का सयोग किया है जो सर्वांग में म्युत्य एवं अनुकरणीय है। इस अध्ययन के आधार पर कवि का भाषा एवं रचना ज्ञान स्पष्ट होता है तथा उससे संबंधित अनेक विवादों का समाधान मिलता है।

सहायक ग्रंथानुक्रमणिका

अशोक केलकर : स्टडीज इन हिन्दी-उर्दू (डैक्कन कौलेज पूना सन् 1968ई.

अर्कीबेल्ड हिल : एन इन्ट्रोडक्शन टू लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्स फ्रौम साउन्ड टू सेन्टेन्स इन इंगलिश, (न्यूयार्क, सन् 1958 ई.)

ई. ए. नाइडा : मौरफौलोजीद डैस्क्रिप्टिव एनेलेसिस, (यूनीवर्सिटी औफ मिशिगन प्रेस, (सन् 1949 ई.)

एडवर्ड सपीर : एलेंग्वेज: एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी आफ स्पीच (न्यूयार्क सन् 1921 ई.)

एसपर्सन, वेसिल ब्लेक बेल : ग्रोथ एण्ड स्ट्रक्चर औफ द इंगलिश लेंग्वेज (ओक्सफोर्ड, सन् 1938 ई.)

डॉ. उदयनारायण तिवारी : हिन्दीभाषा का उद्गम और विकास (लीडर प्रेस, प्रयाग, सं. 2018 वि०)

डॉ. उदयनारायण तिवारी : भाषाशास्त्र की रूप रेखा, (लीडर प्रेस, प्रयाग, सं. 2020 वि.)

ऑटो जेस्पर्सन : एमोडर्न इंगलिश ग्रामर ऑन हिस्टोरिकल प्रिंसपल्सपार्ट द्वितीय (लंदन एण्ड कापेन, हेगन सन् 1913 ई.)

ऑटो जेस्पर्सन : लेंग्वेज: इट्स नेचर डैवलपमेंट एण्ड ओरिजिन (लंदन एलीन, एण्ड अनविन सन् 1927 ई.)

आवेन वार फील्ड : हिस्ट्री इन इंगलिश वर्ड्स, (फावर, सन् 1962 ई.)

पं. कामताप्रसाद गुरू : हिन्दी व्याकरण, (ना०प्र०स० वाराणसी, सं. 2027वि.

पं. किशोरीदास वाजपेई : हिन्दी शब्दानुशासन, (ना०प्र०स० काशी, सं.2023वि.)

डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया : व्रजभाषा और खड़ी बोली का तुलनात्मक अध्ययन (सरस्वती पुस्तक सदन आगरा, सन् 1962 ई.)

डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया : हिन्दी भाषा में अक्षर तथा शब्द की सीमा, (काशी ना० प्र० स० वाराणसी, सं. 2027 वि.)

डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया : हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा तात्विक विवेचन (हि. ए. इलाहाबाद, सन् 1967ई.)

डॉ. कैलाशचन्द्र अग्रवाल : शेखावाटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन, (वि.वि.हि.प्र. लखनऊ, सन् 1964 ई.)

के. एल पाइक : फोनेटिक्सः ए क्रिटिकल एनेलेसिस ऑफ फोनेटिक थ्योरी एण्ड ए टैकनीक फोर द प्रैक्टिकल डैस्क्रिप्सन ऑफ साउन्ड्स (यूनीवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, सं.1943ई.)

के. एल.पाइक : फोनेमिक्सः ए टैकनीक फोर रिड्यूसिंग लेंग्वेज टू राइटिंग, (यूनीवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस, सन् 1947 ई.)

ग्रियर्सन (अनुवादक) : भारत का भाषा सर्वेक्षण (भाग 9)

निर्मलाशर्मा,सुरेन्द्रवर्मा : हिन्दी समिति (लखनऊ, सन् 1967 ई.)

गीतावली : गीताप्रेस गोरखपुर; ना० प्र० स०. वाराणसी; नवल–किशोर प्रेस, लखनऊ; खंग विलास प्रेस, बाँकीपुर; सरस्वती भंडार, पटना

गेंदालाल शर्मा : ब्रजभाषा और खड़ी बोली का तुलनात्मक अध्ययन, (प्रकाशन प्रतिष्ठान, मेरठ, सन् 1965 ई.)

डॉ. गोलोक विहारी धल : ध्वनि विज्ञान, (प्रेम बुकडिपो हास्पिटल रोड आगरा, सन् 1958 ई.)

एच. एस. कैलांग : ग्रामर आफ दि हिन्दी लेंग्वेज, (केगन पाल टेंच प्रकाशन ट्रबनर एंड कम्पनी लिमिटेड ब्राडवे हाउस 68–74 कार्टर लेन ई. सी. 4 सन् 1938 ई.)

चार्ल्स फ्रान्सिस होकेट : ए कोर्स इन मोडर्न लिंग्विस्टिक्स, (आक्स फोर्ड एण्ड, आई.बी.एच.पब्लिशिंग कं. न्यू देहली, कलकत्ता, बंबई, सन् 1964 ई.)

एच. ए. ग्लीसन : एन इंट्रोडक्शन टू डैस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स, (होल्ट रिनेहार्ट एण्ड न्यूयॉर्क, सन् 1961ई.)

चंद्रावली पांडेय : तुलसीदास, (ना. प्र. स. वाराणसी, स. 2014 वि.)

डॉ. चंद्रभान रावत : मथुरा जिले की बोली, (हि.ए.इलाहाबाद, सं. 1967ई.)

डॉ. छोटेलाल शर्मा : संस्कृत साहित्य शास्त्र और महाकवि तुलसीदास, (राजस्थान वि. वि., सन् 1963 ई.)

डॉ. जनार्दनसिंह : तुलसी की भाषा (सा० सं० 106/54 गाँधीनगर, कानपुर–12सन् 1976 ई०)

जान बीम्स : ए कम्पेरेटिव ग्रामर आफ द मॉर्डन आर्यन लैंग्वेज आफ इन्डिया, भाग–2 (उल्लेखों के आधार पर लंदन सन् 1875 ई०)

जैलिग समलई, हरिश्र : मैथड्स इनस्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स शिकागो यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, सन् 19:1 ई०

जे० आर० फर्थ : ए सिनोप्सिस ओफ लिंग्विस्टिक थ्योरी, (ओक्सफोर्ड, सन् 1957 ई०)

तेस्सीतेरी : पुरानी राजस्थानी,(ना०प्र०स०, काशी, सन् 1955ई०)

देवीशंकर द्विवेदी : हिन्दी भाषा और भाषिकी, (लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, प्र०सं०, सन् 1964 ई०)

डॉ० देवकीनंदन श्रीवास्तव: तुलसीदास की भाषा, (लखनऊ विश्वविद्यालय, सं० 2014 वि०)

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, (हि० ए० इलाहाबाद, सन् 1954 ई०)

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : ब्रजभाषा-व्याकरण, हि०ए० इलाहाबाद, सन् 1954ई०

डेनियल जोन्स : एन आउट लाइन ओफ इंग्लिश फोनेटिक्स, (न्यूयार्क, सन् 1940 ई०)

डॉ० प्रेमनारायण टंडन : सूर की भाषा, (हिन्दी साहित्य भंडार, गयाप्रसाद रोड, लखनऊ, सन् 1957 ई०)

डॉ० बाबूराम सक्सेना : इवोल्यूशन ऑफ अवधी, (इ० प्रे० लिमि० इलाहाबाद, सन् 1937 ई०)

डॉ० बाबूराम सक्सेना : संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका, (रामनारायणलाल इलाहाबाद, सन् 1965 ई०)

बाबा वेणीमाधवदास : मूल गोसाई चरित, गीता प्रेस, सं० 1993 वि०

ब्लोक एण्ड ट्रेगर : आउट लाइन ऑफ लिंग्विस्टिक, ऐनेलेसिस (स्पेशल पब्लिकेशन्स ऑफ द लिंग्विस्टिक सोसाइटी ओफ अमेरिका, सन् 1942 ई०)

डॉ० भगवतप्रसाद दुबे : कबीर काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, ने० प० हा० दिल्ली–6, सं. 2020 वि.

संपादक डॉ० भोलानाथ-तिवारी : भारतीय भाषा-विज्ञान की भूमिका, ने प.हा. दिल्ली–6 सन् 1972 ई.

डॉ० भोलाशंकर व्यास : संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, काशी, सन् 1966 ई.)

भद्रदत्त शास्त्री : तुलसी संबंधी प्राचीन ग्रन्थों की खोज, हिन्दुस्तानी, सन् 1940 ई.

भागीरथप्रसाद दीक्षित : तुलसीदास और उनके ग्रन्थ, अशोक प्रकाशन लखनऊ, सन् 1955 ई.

डॉ० माताप्रसाद गुप्त : तुलसीदास, प्रयाग वि.वि. हिन्दी परिषद, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, सन् 1946 ई.

डॉ० माताप्रसाद गुप्त : मंझनकृत मधुमालती, मि.प्र.प्रा. लिमि., इलाहाबाद, सन् 1961 ई.

डॉ० माताप्रसाद गुप्त : रामचरित मानस का पाठ हि. ए उत्तर प्रदेश, सं. 2005 वि.

एम.एस. कात्रे (अनुवादक): भारतीय पाठालोचन की भूमिका, (मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ
डॉ० उदयनारायण तिवारी अकादमी, भोपाल सन् 1971 ई)

मिर्जाखाँ (एम. ज्याउद्दीन द्वारा संपादित) : ग्रामर औफ ब्रजभाषा, (विश्वभारती, शांती निकेतन, सन् 1935)

मायाशंकर याज्ञिक : गोस्वामी तुलसीदास, (ना.प्र. पत्रिका, सन् 1927ई.)

डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र : तुलसीकृत गीतावली विमर्श (न.प्र. 24/16 बंगलो रोड़ शक्तिनगर, नई दिल्ली, सन् 1969 ई.)

डॉ रमेशचन्द्र महरोत्रा : हिन्दी ध्वनिकी और ध्वनिमी, (मुन्शीराम मनोहरलाल रानी झांसी, मार्ग, नई दिल्ली-55, प्रथम संस्करण, सन् 1970 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी : तुलसीदास और उनका काव्य, (राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, सन् 1953 ई.)

रामनरेश त्रिपाठी : तुलसीदास और उनकी कविता, (हिन्दी मन्दिर प्रयाग, सन् 1937 ई.)

रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल : बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, (वि.वि. हिन्दी प्र. लखनऊ, सन् 1963 ई.)

पं. रामचन्द्र शुक्ल : गोस्वामी तुलसीदास, काशी (ना.प्र. सं., षष्ठ संस्करण, सं. 2005 वि.)

रामकुमारी मिश्र : बिहारी सतसई का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, (लोकभारती इलाहाबाद, सन् 1970 ई.)

डॉ. रामकुमार वर्मा : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, (रामनारायणलाल इलाहाबाद, सन् 1954 एवं सन् 1958 ई)

राजेन्द्रप्रसादसिंह व्यौहार : गोस्वामी तुलसीदास की समन्वय साधना:प्रथम भाग, (काशी ना.प्र स., स. 2005 वि.)

डॉ. राजपति दीक्षित : तुलसीदास और उनका युग, (ज्ञान मंडल, वाराणसी, सं. 2009 ई.)

राजकुमार : तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन, (सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, सं 2012 वि.)

डॉ. रामदत्त भारद्वाज : गोस्वामी तुलसीदास, (भारतीय साहित्य मन्दिर, फवारा दिल्ली, सन् 1962 ई)

डॉ रामदत्त भारद्वाज : गोस्वामी तुलसीदास का काव्य सिद्धान्त, (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 3 जनवरी सन् 1960 ई)

रामरतन भटनागर : तुलसीदास एक अध्ययन (किताब महल, इलाहाबाद, सं. 2003 वि.)

रांगेय राघव : तुलसीदास का कथा शिल्प, (साहित्य प्रकाशन दिल्ली, सन् 1959 ई.)

लक्ष्मीधर मालवीय : देव ग्रन्थावली, प्रथम-खण्ड, (ने.प. हा. दिल्ली-7. सितम्बर, सन् 1958 ई.)

लूइस हरबर्ट ग्रे : फाउण्डेशन ऑफ लेंग्वेज, (न्यूयॉर्क, द मैकमिलन कं० सन् 1939 ई,)

लीयोनार्ड ब्लूमफील्ड (अनुवादक) : लेंग्वेज

डॉ. विश्वनाथ प्रसाद भाषा, (मोतीलाल, बनारसीदास, दिल्ली, वाराणसी, पटना, सन् 1968 ई.)

डॉ. विद्या निवास मिश्र : हिन्दी की शब्द संपदा, (राजकमल प्रकाशन, प्रा. लिमि. फैज बाजार दिल्ली, सन्. 1972 ई.)

डॉ. विद्या निवास मिश्र : भारतीय भाषा शास्त्रीय चिन्तन (राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ, अकादमी, जयपुर, सन् 1976 ई.)

डॉ. विमलकुमार जैन : तुलसीदास और उनका साहित्य, (साहित्य सदन, देहरादून, सन् 1957 ई.)

डॉ. श्याम सुन्दर दास : गोस्वामी तुलसीदास, (हि· ए., प्रयाग, सन् 1931 ई·)

डॉ. श्याम सुन्दर दास : हिन्दी भाषा, (इ. प्रे. पब्लिकेशन्स, प्रा. लिमि. प्रयाग सन् 1961 ई.)

डॉ. शशी प्रभा : मीरां की भाषा (स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र० सं० सन् 1972 ई.)

सत्यनारायण त्रिपाठी : हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, (वि. वि. प्रकाशन प्रथम संस्करण, सन् 1964 ई.)

शिव प्रसाद सिंह : सूर पूर्व ब्रजभाषा, (हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी; प्रथम संस्करण, अक्तूबर सन् 1958 ई.)

शिवनंदन सहाय गोस्वामी तुलसीदास, (बिहार राष्ट्रभाषा, परिषद, पटना सन् 1961 ई.)

सुनीत कुमार चटर्जी : ओरिजिन एण्ड डैवलपमैंट ऑफ द बंगाली लेंग्वेंज (कलकत्ता यूनीवर्सिटी, सन् 1926 ई.)

सुनीत कुमार चटर्जी : भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, (राजकमल दिल्ली, सन् 1954 ई.)

डॉ. हरदेव बाहरी– : हिन्दी उद्भव विकास और रूप, (किताब महल, इलाहाबाद, सन् 1965 ई.)

हर्डन. जी. : द एडवान्स्ड थ्योरी ऑफ लेंग्वेज, एज चॉइस एण्ड चांस (स्प्रिंगर–वरलाग बरलिन हैडलबर्ग–न्यूयार्क सन् 1966 ई.)

पत्र–पत्रिकाएं

आलोचना : राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

इण्डियन लिंग्विस्टिक्स– : लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ इण्डिया

गवेषणा– केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

नागरी प्रचारिणी पत्रिका : ना. प्र. स. वाराणसी

भाषा : केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय– भारत सरकार

भारतीय साहित्य ; कन्हैयालाल मुंशी – विद्यापीठ, आगरा

लेंग्वेज : लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ अमेरिका

सम्मेलन पत्रिका : हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

हिन्दी अनुशीलन : धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक

———

स्वर संयोग—तालिका

	–अ	–आ	–इ	–ई	–उ	–ऊ	–ए	–ऐ	–ओ	–औ	योग
–अ			0 ×	×	×		×				14
–आ			*0 ×	×	*0 ×	×	×				$^{2}2_{5}$
–इ		0					0 ×			×	22
–ई											
–उ	0 ×	0 ×	×	×			0			×	35
–ऊ											
–ए			0 ×	×	×	×					14
–ऐ							×				1
–ओ			0 ×	×	×	×	×				15
–औ		×									1
योग	11	22	$^{1}45$	5	$^{1}14$	3	25			2	$^{2}10_{27}$

दो स्वरों का संयोग

1. प्राथमिक स्थिति : * = 2
2. माध्यमिक स्थिति : 0 = 10
3. अंतिम स्थिति : × = 27

द्विव्यंजन संयोग तालिका—

आदि स्थिति = √ = 28
मध्य स्थिति = 0 = 63
= 91

	प	फ	ब	भ	त	थ	द	ध	ट	ठ	ड	ढ	च	छ	ज	झ	क	ख	ग	घ	म	न	ण	ङ	य	व	र
प					0																				√0		[illegible]
फ																											
ब																									√0		[illegible]
भ																									0		
त	0				0																	0			√0		[illegible]
थ																									0		
द								0																	√0	√0	
ध																									√0	√0	
ट																									0		
ठ																									0		
ड											0																
ढ																											
च														0											0	√	
छ																											
ज															0										√0	√	
झ																									0		
क					0												0								√0	√	
ख																									√0		
ग																			0						√0		
घ																									√0		
म			0																						0		
न								0														0			√0		
ण											0														0		
ङ																									0		
य																											
व																											
र			0																			0			√		
ल																									0		
श/स					0																				√0		
ष									0	0															√0	√0	√0
ह																									0		
																									0	√	
योग	1		2		4			2	1	1	2			1	1		1		1			3			13 / 25	7 / 3	8 / 9

$$\left.\begin{array}{l}=28\\=63\end{array}\right\}91$$

ङ	य	व	र	ल	श/स	ष	ह	योग
	√0		√0					2_3
	√0		√					2_1
	0		√0					1_2
	√0		√0		0			2_6
	0							1
	√0	√0	√0					3_4
	√0	√0	0					2_3
	0							1
	0							1
								1
	0	√						1_2
	√0	√	0					2_3
	0							1
	√0	√	√0					3_4
	√0							1_1
	√0		√0					2_3
	0							1
	0						0	3
	0						0	1_4
	√0							2
	0							1
	0							
	√							1
	0							3
	√0			0			0	1_3
	√0	√0	√0					3_4
	0							3
	0	√						1_2
	13	7	8					28
	25	3	9	1	1		3	63

	अ	–आ	–इ	–ई	–उ	–ऊ	–ए	–ऐ	–ओ	–औ	योग
–अ	0 ×	0 ×	×	0 ×		0	0	×	0		6_5
–आ	0 ×	0			0		0	×	0		5_2
–इ	0 ×	0 ×				0	0	0	0	0 ×	7_3
–ई	0 ×					0					2_1
–उ	×	×									2
–ऊ											
–ए	×		×	0 ×		()					2_3
–ऐ		0									1
–ओ	0 ×										1_1
–औ											
योग	5_7	4_3	2	2_2	1	4	3	1_2	3	1_1	24_{17}

अर्ध स्वर–तालिका य = 0 : 24 व = × : 17